वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 326
ISBN-978-93-80353-65-4

भजन संग्रह

–मंगल आशीर्वाद –

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–रचयित्री –

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष''
समापन-शरदपूर्णिमा महोत्सव-2012 के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2538, आश्विन शु. पूर्णिमा	मूल्य
1100 प्रतियाँ	29 अक्टूबर 2012	60/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

प्रार्थना दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति है जो सभी मनुष्यों को सुलभ है, इस प्रार्थनारूप में निकले हुए पौद्गलिक शब्द ही प्राणी की कर्मनिर्जरा में हेतु बनते हैं परन्तु आज के अत्याधुनिक युग में आजीविका पालन हेतु संघर्षरत प्रत्येक प्राणी कुछ समय प्राप्त करने पर रोचक सामग्री के माध्यम से अपना मनोरंजन चाहता है चाहे वह टी.वी. हो, भजन की कैसेट्स हो, साहित्य हो अथवा प्रार्थना के लिए प्रयुक्त शब्द ही क्यों न हों। मुख्यतः चिन्तन का विषय यह है कि ऐसे विषम समय में हम कैसे उन भव्य प्राणियों को धर्म में अनुरक्त कर सकें कि जब वह निम्न रोचक सामग्री के माध्यम से अपना मनोरंजन चाहते हैं।

हम स्वयं को पुण्यशाली मानते हैं, जो ऐसे समय में वर्तमान युग की आवश्यकता एवं परिस्थितियों को देखते हुए जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्यिक क्षेत्र में गद्य-पद्य आदि लगभग 300 अनमोल कृतियों के माध्यम से अपना अतुलनीय योगदान देकर जिनधर्म की महती प्रभावना के साथ-साथ भक्ति की ऐसी गंगा प्रवाहित की है कि सांसारिक उलझनों से संतप्त प्राणी कुछ क्षण आत्मशांति के लिए स्वयमेव ही पूज्य माताजी के द्वारा रचित कृतियों से लाभ लेकर शांति का अनुभव करता है। भक्ति गंगा की उसी शृँखला में पूज्य माताजी की शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी अनेक भजन, पूजन, चालीसा की संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं मे रचनाएँ की हैं, जिसे पढ़कर और सुनकर भव्य जीव धर्म में अनुरक्त हो अपने कर्मों की निर्जरा कर रहे हैं।

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी की लेखनी के समान ही चन्दनामती माताजी की सशक्त लेखनी से भी अब तक अनेक गद्य-पद्यमय पुस्तकों का लेखन हो चुका है, जिसमें से एक कृति ''भजन संग्रह'' भी है। पूर्व में पूज्य चन्दनामती माताजी द्वारा लिखित भजन की 4-5 पुस्तकें हम अपनी ग्रंथमाला से प्रकाशित कर चुके हैं। उसी शृँखला में इस पुस्तक का प्रकाशन भी हो रहा है, जिसके माध्यम से आप सब देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति कर महान पुण्य का संचय कर सकते हैं।

बन्धुओं! जिस प्रकार अमृत की एक बूँद भी गुणकारी है, उसी प्रकार इस पुस्तक में लिखित भजनों की सारभूत नाना पंक्तियों में से यदि एक पंक्ति भी आपके जीवन निर्माण में सहयोगी बन गई, तो वह अमृत का कार्य कर आपको दिव्य आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति करा देगी, अतः ज्ञानामृतरूपी इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुए सद्ज्ञान की प्राप्ति करें, यही इस पुस्तक की सार्थकता है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जैनागम में मुख्यतः तीन रत्न माने गये हैं–देव, शास्त्र और गुरु। इन तीनों रत्नों की उपासना भक्ति, आराधना से सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ऐसे तीन रत्नों की प्राप्ति होती है।

कविवर द्यानतराय जी ने कहा है–देव, शास्त्र, गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।।

वस्तुतः यह तीनों रत्न स्वयं में अनमोल होते हुए हमें रत्नत्रयरूपी निधि से अलंकृत कर देते हैं और उनकी भक्ति हमें भक्त से भगवान की श्रेणी में लाकर अवस्थित कर देती है।

भक्ति के सन्दर्भ में आचार्य समन्तभद्र स्वामी का कथन है कि–

भगवान से अनुराग के कारण जो पाप होता है, वह उससे उत्पन्न बहु पुण्यराशि की तुलना में अत्यल्प होता है। यह बहु पुण्यराशि भी उसी प्रकार दोष का कारण नहीं बनती जिस प्रकार कि एक कणिका शीत शिवाम्बुराशि समुद्र को दूषित करने में समर्थ नहीं होती। श्री कुंदकुंद आचार्य ने वीतरागियों में अनुराग करने वाले को सच्चा योगी कहा है, उन्होंने स्वयं दश भक्तियों की संरचना की है। उनका यह भी कथन है कि आचार्य, उपाध्याय और साधुओं में प्रीति रखने वाला सम्यग्दृष्टि हो जाता है। वस्तुतः भक्ति का सम्बन्ध मानसिक एकाग्रता से है जिसके कई उपाय हैं। भगवान के दर्शन एवं गुणों के स्तवन से प्रशस्त भाव होता है जो पुण्य बंध में निमित्त है। भजन, स्तवन आदि जब लयबद्ध होकर ध्वनि तरंगों के माध्यम से सामने आते हैं तो मात्र गायक को ही नहीं, श्रोताओं को भी मंत्रमुग्ध कर देते हैं। कई बार तो मानव भक्ति रस में आकण्ठ इतना डूब जाता है कि उसे अपने शरीर की भी सुध-बुध नहीं रहती है जिसके अनेकों दृष्टान्त ग्रन्थों में हैं जब भक्तगणों ने भक्ति रस में डूबकर स्व पर कल्याण कर लिया।

त्रिखण्डाधिपति रावण ने कैलाश पर्वत पर निर्मित भव्य जिनालय में जिनप्रतिमा के चरण सान्निध्य में संगीतमय अरहंत भक्ति के द्वारा सातिशय तीर्थंकर जैसी सर्वोत्कृष्ट नामकर्म की प्रकृति का बंध किया। नारायण श्रीकृष्ण ने बांसुरी के वादन से पतझड़ी मौसम में बसंत का सुमधुर संगीतमय वातावरण उत्पन्न कर दिया था। जन-प्रचलित तानसेन का संगीत, जिसके दीपक राग गाते ही बुझे हुए चिराग जगमगा उठे थे। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने भी अपने पुत्रों एवं पुत्रियों को संगीत की शिक्षा दी थी जिसका विवेचन ''भरतेश वैभव'' ग्रन्थ में विस्तार से किया

गया है। संगीत वह कला है जो रोते हुए को हंसा देती है, सोते को जगा देती है, चलते हुए को स्तंभित कर देती है, आबाल वृद्ध जिसे सुनकर झूमने लगते हैं, यहाँ तक कि देखा गया है कि जब हमारा भारत देश परतन्त्र हुआ तब देशभक्ति से ओत-प्रोत, हृदय के तारों को झंकृत कर देने वाले गीतों ने देश की आजादी में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भगवान की भक्ति के संदर्भ में कहा गया है कि "प्रार्थना दुनिया की वह सबसे बड़ी शक्ति है, जो सभी मनुष्यों को सरलतया सुलभ है।" पूजन, भजन, आरती, स्तुति आदि सब उसी के पर्यायवाची नाम हैं। इस शक्ति के द्वारा संसारी प्राणी इहलोक में भौतिक सुख और आगामी भव में आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति करने में सक्षम है। जब भक्त पूर्ण तन्मय होकर भक्ति करता है तब उसके मुख से निकले हुए शब्द पौद्गलिक होते हुए भी सिद्धशिला पर जाकर वहाँ का स्पर्श कर पुनः वापस आकर उसके मनोरथों की सिद्धि कर देते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में फिल्मी गीतों ने आधुनिक पीढ़ी पर इतनी गहरी छाप छोड़ी है कि कल जो बच्चा कुछ समझदार होते ही णमोकार मंत्र एवं विनती आदि याद करता था आज फिल्मी गानों की पंक्तियाँ अपनी तोतली भाषा में सुनाता है, जिसे सुनकर कुटुम्बीजन बहुत प्रसन्न होते हैं परन्तु यह राग के द्योतक और अशुभ प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले हैं और देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में रचित भजन आदि शुभ प्रवृत्ति की ओर ले जाकर पुण्य का बंध कराने वाले हैं। आज जन-जन को इस बात को समझकर हृदयंगम करना चाहिए कि हम बाल्यावस्था से ही बच्चों को धर्ममयी संगीत की शिक्षा दें और इसके लिए सुन्दर-सुन्दर भजनों की कैसेट्स, सी.डी., पुस्तकें आदि सहजता से प्राप्त हो जतीी हैं। वर्तमान में भले ही सामाजिक आवश्यकताएँ और परिस्थितियाँ बदल रही हैं इसलिए परम्परागत आदर्शों, शास्त्र-पुराणों के आलोढन आदि के द्वारा भगवान की भक्ति अथवा श्रावकों के षडावश्यक कर्तव्यों को शास्त्रानुसार परिपालन करने का समय दिनातीत होता जा रहा है। किन्तु ऐसे समय में ही आवश्यकता है कि उन्हें नए रूप से धर्म में अनुरक्त रखा जाए, किंचित् भी ज्ञान, भक्ति आदि में अभिरुचि रखने वालों की सहज प्रवृत्तियों एवं आवश्यकताओं के बीच एक सन्तुलन स्थापित रखा जाए। वस्तुतः ऐसे भौतिकवादी तथाकथित आधुनिक युग में प्राचीन आदर्शों को सहेजते हुए नए आदर्श अपनाना और समयानुसार उनका प्रस्तुतीकरण करना आवश्यक है और ऐसे समय में रत्नत्रय से विभूषित अपनी मिष्ट वाणी, सरल-सरस, हृदयग्राही, मन को भावविभोर कर देने वाली गद्य-पद्य आदि रचनाकर्त्री, गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने वाली राष्ट्रगौरव परमपूज्यनीय गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती

माताजी एक ऐसी साधिक हैं, जिनकी रचनाओं ने भव्य प्राणियों को भक्तिमार्ग द्वारा मोक्षमार्ग में अग्रसर करने में अचूक और औषधि का कार्य किया है।

वस्तुतः सन्त-साधु वह चेतन तीर्थ हैं जिनके द्वारा भव्य जीव संसार समुद्र को सहजता से पार कर लेता है। अलौकिक व्यक्तित्व की धनी वात्सल्यमूर्ति, आगमचर्या में दृढ़ परमपूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के बारे में कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के सदृश ही होगा। मात्र 13 वर्ष की लघुवय से ही भजन, पूजन, चालीसा आदि की रचना करने वाली पूज्य माताजी की लेखनी से निःसृत शब्दरश्मियाँ सुधी पाठक के अन्तर्मन को सराबोर करने के साथ-साथ ज्ञान का अमृतपान भी कराती हैं और नूतन चेतना का संचार करती हैं, गागर में सागर के समान उनके द्वारा रचित प्रत्येक शब्द सारभूत है। प्रस्तुत पुस्तक 'भजन संग्रह' में देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में रचित अनेकों सुन्दर-सुन्दर भजन हैं जिसके माध्यम से आप सब आनन्दानुभूति के साथ-साथ ज्ञानगंगा में अवगाहन कर सातिशय पुण्य का बंध करें और शुभ कर्मों की ओर प्रवृत्त होकर भक्ति के द्वारा अपनी कर्मश्रृंखला को काटकर शीघ्र ही परम पद की प्राप्ति में सक्षम बनें यही मंगल कामना है।

पुस्तक प्रकाशन के सहयोगीगण

(1)

श्रीमती अर्चना जयचंद कासलीवाल आमदार-चांदवड़ (महा.)

(2)

श्रीमती सुधाबाई जैन ध.प. स्व. श्री माणिकचंद जैन दगड़े, तत्पुत्र डॉ. मनोज जैन दगड़े, पुत्रवधू-सौ. सोनल जैन दगड़े, पंकज जैन दगड़े-सौ. रुचि जैन दगड़े, पौत्र-पौत्री-कु. रिया, चि. मयंक एवं कु. आर्या जैन, नासिक (महा.)

(3)

श्रीमती त्रिशला जैन ध.प. श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली

"इस पुस्तक के प्रकाशन में उपरोक्त महानुभावों ने अपना आर्थिक सहयोग प्रदान किया, एतदर्थ संस्थान की ओर से हम सभी दानी महानुभावों के प्रति धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करते हैं। आगे भी आप अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग इसी प्रकार धर्मकार्य में करते रहें, यही मंगल भावना है।"

-सम्पादक

परमपूज्य राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारत देश में आज हिंसा और अनैतिकता का बोलबाला है, पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है, ऐसे विषम समय में भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर स्वामी पर्यंत चौबीसों तीर्थंकर महापुरुषों के सिद्धान्तों एवं अनेक पूर्वाचार्य महामनीषियों के जीवन चरित्र को जानकर उसे निज में उतारने की अत्यधिक आवश्यकता है जिसके लिए एक सरल और रुचिपूर्ण माध्यम चाहिए जो कि लोगों के अन्तर में इन बातों को उतारकर भारत को अहिंसाप्रधान देश बनाने के साथ-साथ भव्य प्राणियों का जीवन निर्माण करते हुए उन्हें देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में अनुरक्त कर सके। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव होते हुए भी आज लोगों में संगीत के प्रति विशेष लगाव देखा जाता है, सांसारिक कार्यों से थका-हारा प्राणी कुछ क्षण अच्छे, सुमधुर संगीत को सुनकर स्वयं को स्फूर्तिमय महसूस करता देखा जाता है।

मुझे प्रसन्नता है मेरी शिष्या आर्यिका चन्दनामती जी इस कार्य में सिद्धहस्त हैं और मेरी एक प्रेरणा मात्र से ही समयोजित सुन्दर, सारगर्भित, आगमोक्त भजन, पूजन, नाटिका, चालीसा आदि की रचना कुछ ही समय में कर देती है। गुरुआज्ञा को सर्वोपरि समझने वाली आर्यिका चन्दनामती की हिन्दी भाषा के साथ-साथ संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा में भी विशेष रुचि है। काव्य रचना के साथ-साथ साहित्य लेखन में यह सिद्धहस्त हैं, इनके बनाए भजनों की अनेक पुस्तकें एवं कैसेट, सी.डी. आदि भी जनमानस के सम्मुख आ चुके हैं जो सबके द्वारा अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रहे हैं, वस्तुतः देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में प्रयुक्त किए गए शब्द निश्चित ही लेखन शक्ति को विकसित करने में कारण होते हैं।

मेरा आर्यिका चंदनामती जी के लिए मेरा बहुत-बहुत आशीर्वाद है कि वे इसी प्रकार अपनी सारगर्भित गद्य-पद्य रचनाओं द्वारा जन-जन को आगम का परिज्ञान कराकर उन्हें सद्मार्ग में प्रेरित करती रहें और सुधी पाठक इस पुस्तक के द्वारा देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुए महान पुण्य के भागी बनकर इस पाश्चात्य युग में भी अपनी आत्मा का कल्याण करने में सक्षम होवें।

पुस्तक की प्रेरणास्रोत, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)
जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना
माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन
क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती
आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।
साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका।
डी.लिट्. की मानद् उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।
महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**
शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।
रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका

श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नाम– प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम– ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि– 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई– चार (कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद)

बहन– आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

ब्रह्मचर्य व्रत– 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से।

धार्मिक अध्ययन– 1972 में सोलापुर से "शास्त्री" की उपाधि, 1973 में "विद्यावाचस्पति" की उपाधि

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत– सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

आर्यिका दीक्षा– हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि– 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

पीएच.डी. की मानद उपाधि– तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को विश्वविद्यालय में।

साहित्यिक योगदान– चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा "षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं "भगवान ऋषभदेव चरितम्" की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला', भगवान महावीर स्तोत्र की संस्कृत एवं हिन्दी टीका, समयसार ग्रंथ की सम्पूर्ण (444) गाथाओं के संस्कृत में मंत्र रचना, भगवान महावीर हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष, जैन वर्शिप (अंग्रेजी में पूजा, भजन, बारहभावना आदि) इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (लगभग 1000), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ एवं भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।
2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।
3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।
4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है– कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।
5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।
6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।
7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।
8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।
9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।
10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।
11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।
12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (थारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन, तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमर चंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
20. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।

विषय-सूची

क्रम	भजन	पृष्ठ
	(प्रथम खण्ड)	
	भगवान ऋषभदेव एवं उनके पंचकल्याणक स्थल से संबंधित भजन	
1.	सारे जग का तू सरताज – बाबा हो बाबा	1
2.	कभी तू बाबा लगता है, कभी तू राजा लगता है	2
3.	तीरथ अयोध्या जग में शाश्वत रहेगा	3
4.	आदिनाथ स्वामी का जनमस्थान है	3
5.	सरयू नदी की धार यशोगान कर रही	4
6.	तीरथ अयोध्या महान, इसका दर्शन करो	5
7.	सरयू किनारे प्रभु धाम, दरश सब कर जाना	6
8.	आदीश्वर झूले पालना, मरुदेवी लोरी गावें	7
9.	सब तीर्थों में प्रथम अयोध्या तीर्थ हमारा	7
10.	सरयू के तट पर बसी हुई है ये अयोध्या नगरिया	8
11.	तपस्थली तीर्थ सबकी आँखों का सितारा है	9
12.	मनवांछित फल देने वाला, पहला तीर्थ प्रयाग है	10
13.	तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग	11
14.	दीक्षा लेकर बने महामुनि, मोक्षमार्ग बतलाने को	12
15.	प्रभु ऋषभदेव का आहार हो रहा	13
16.	मूल से लेकर चूल शिखर तक, तीरथ का निर्माण	14
17.	तीर्थ प्रयाग में देखो कैसा हुआ भव्य निर्माण	15
18.	ऊँचा सा पहाड़ है, अष्टापद गिरिराज है	16
19.	शाश्वत तीरथ प्रथम जग में है, अयोध्या नगरिया	16
20.	हे प्रभुवर! तेरी प्रतिमा ही तेरा अन्तर दर्शाती है	17
21.	अरे बाबा, तेरी जनमभूमी की महिमा सुनी है बहुत भारी	18
22.	प्रभु ऋषभदेव के पुत्र भरत से	19
23.	ऋषभजयंती सब मनाओ	20
24.	आओ रे आओ रे सब मिल के आओ, जन्म जयंती मनाओ रे	21
25.	धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है	21
26.	निधियाँ कई दे दी हैं अयोध्या को मात ने	22

क्रम	भजन	पृष्ठ
27.	ऋषभदेव प्रभु को है मेरा	23
28.	अयोध्या तीर्थ हमारा, कहा शाश्वत है प्यारा	24
29.	कलश हाथों में लेकर, करूँ अभिषेक प्रभू पर	24
30.	देखो देखो देखो, जन्मभूमि देखो	25
31.	जिनवर का महामस्तकाभिषेक निराला है	26
32.	आदिनाथ प्रभु का जन्म हुआ आज	27
33.	प्रथम तीर्थनाथ का, प्रभु आदिनाथ का	27
34.	कृतयुग के प्रथम देव आदिनाथ को नमूँ	28
35.	अयोध्यापुरी में मस्तकाभिषेक	29

(द्वितीय खण्ड)

अन्य तीर्थंकरों से संबंधित भजन

36.	आओ रे आओ रे, सब मिल के आओ	30
37.	पद्म चिन्हयुत पद्मप्रभू के, श्रीचरणों में नमन करें	31
38.	करो रे अभिषेक प्रभू का	31
39.	क्षीरोदधि के जल से	32
40.	पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि में	33

(तृतीय खण्ड)

भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ एवं जन्मभूमि हस्तिनापुर (जम्बूद्वीप) से संबंधित भजन

41.	शांतिनाथ जी की जन्मभूमी को नमूँ	34
42.	पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्गपुरी में	35
43.	जिस धरा से जुड़ी हैं कहानी कई	36
44.	आया अवसर स्वर्णिम आया	36
45.	करो रे अभिषेक प्रभू का	37
46.	शांतिनाथ की जन्मभूमि, हस्तिनापुरी विख्यात	38
47.	शान्ति-कुंथु-अरहनाथ	39
48.	जहाँ जनमे तीन भगवान जी	40
49.	शांतिनाथ की जन्मभूमि से गूंज उठी शहनाई	41
50.	शांति-कुंथु-अरनाथ की प्रतिमा प्यारी हैं	42

क्रम	भजन	पृष्ठ
51.	हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन	43
52.	शांतिनाथ प्रभु को है, मेरा नमन	44
53.	तीर्थंकरत्रय का महामस्तकाभिषेक	44
54.	स्वर्गों में बाज उठे बाजे	45
55.	प्रभु गर्भकल्याण में बरसे रतन की धारा रे	45
56.	मेरे घर जिनवर आए हैं	46
57.	तीर्थंकर प्रभू को केवलज्ञान हो गया	47
58.	हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप की रचना स्वर्णमयी है	48
59.	तीन लोक यात्रा करो	49
60.	आओ हम सब करें वन्दना, तेरहद्वीप महान की	49
61.	तेरहद्वीपों की रचना जो, बनी है पहली बार	50
62.	तेरहद्वीप रचना का देखो चमत्कार	51
63.	तेरे हाथों की लकीर बदलेगी	52
64.	दुनिया में भगवन्तों के मंदिर अनेक हैं	53
65.	गंगा के तट पर बसी हुई है हस्तिनापुर नगरिया	54
66.	भगवान तुम्हारे दर्शन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है	55
67.	हस्तिनापुरी के दर्शन करने जाना है	55
68.	धरती वन्दन करती है, अम्बर वन्दन करता है	56
69.	जनम जनम में पाऊँ जिनवर दर्श तुम्हारा	57
70.	जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से, बात सुनी है	58
71.	हस्तिनापुर मशहूर, इसकी ख्याति दूर-दूर	59
72.	ऊँचे मेरू पर्वत वाला है, जम्बूद्वीप हमारा	60
73.	जम्बूद्वीप की महिमा अपरम्पार है	61
74.	देखो महाभारत इसी भूमि से चला	62
75.	यह ज्ञानज्योति सर्वदा जलती ही रहेगी	62
76.	ज्योति से ज्योति जलाते चलो	63
77.	जम्बूद्वीप विश्व की है एक रचना	64
78.	जय ज्ञान की ज्योति अमर विश्व में नव प्रकाश फैलाए	65
79.	जिस धरा पर सदा न्याय	65
80.	है स्वयंसिद्ध की मूर्ति जहाँ	66

क्रम	भजन	पृष्ठ
81.	सुमेरु गिरि पर मस्तकाभिषेक	67
82.	जय हो शांतिनाथ-2, जय हो शांतिनाथ	68
83.	यह जम्बूद्वीप महान्, बनाया आन, ज्ञानमति माता	69
84.	कमल के अन्दर, कमल के ऊपर, वीरप्रभु जी विराजे	70
85.	शास्त्रों से लाईं जम्बूद्वीप को निकाल के	71
86.	तीरथ करने चले सभी श्रीक्षेत्र हस्तिनापुरिवर को	72
87.	मेरु सुदर्शन पर करो मस्तकाभिषेक	73
88.	अहिंसा की जय हो, सत्यमेव जयते	74
89.	ताल मृदंग बजायके, सब नाचो गाओ रे	74
90.	इस युग की पहली कृती	76
91.	देखो, देखो, देखो जम्बूद्वीप देखो	77
92.	सब द्वीपों में पहला	78
93.	आओ आओ देखो तो ज्ञानी की महिमा	79
94.	गंगा के तट पर बह रही है, ज्ञानगंगा की धारा	80
95.	हस्तिनापुर है तीरथ, जैनशासन की कीरत	80
96.	केशरिया परिधान में सब नाचो गाओ रे	81
97.	सेना हो सेनाचली चक्री सम्राट की	82
98.	चक्रवर्ती की राजसभा में, राजा आए बड़े-बड़े	83
99.	जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के	83
100.	ज़म्बूद्वीप महोत्सव आया है	84
101.	क्षीरोदधि के जल से, जिनवर का न्हवन करो	85
102.	विश्वशांति की ज्योति जली	86
103.	अवसर सुहाना आया रे,....अवसर.....	86
104.	इस वन में जो आया....उसे चढ़ना ही पड़ेगा	87

(चतुर्थ खण्ड)

भगवान पार्श्वनाथ, सम्मेदशिखर एवं अन्य निर्वाणभूमियों से संबंधित भजन

105.	अहिच्छत्र तीर्थ के पार्श्वनाथ का	88
106.	अहिच्छत्र जी तीरथ का	89
107.	चलो बुलावा आया है	89
108.	भारत के जैनी वीरों, तुम सुन लो कथा पुरानी	90

क्रम	भजन	पृष्ठ
109.	चलो सब मिल यात्रा कर लो	91
110.	शाश्वत है तीरथ मेरा, सम्मेदगिरि नाम है	92
111.	धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है	93
112.	वंदना करूँ मैं प्रभू पार्श्वनाथ की	94

(पंचम खण्ड)

भगवान महावीर एवं जन्मभूमि कुण्डलपुर से संबंधित भजन

113.	नाम तिहारा तारनहारा	95
114.	वीर भज ले तू महावीर भज ले	96
115.	तेरी चंदन सी रज में, इक उपवन खिलाया है	97
116.	वीरा तेरे तीरथ का, मुझे दर्श जो मिल जावे	97
117.	महावीर के जन्मोत्सव पर	98
118.	कुण्डलपुर धरती वीरप्रभू के जन्म से धन्य हुई है	99
119.	माता हो त्रिशला के लाल	100
120.	मुझे पावापुर जाना है, मुझे जलमन्दिर जाना है	100
121.	जहाँ जन्मे वीर वर्द्धमान जी	101
122.	वीर प्रभू! तेरे शासन की, फिर से आज जरूरत है	102
123.	सर्वार्थ के सुत सिद्धार्थ, की ले बारात, चले वैशाली	103
124.	वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं	104
125.	वीरा की महिमा, सब मिल के गाओ	105
126.	वीरा मुक्तिपथ में मिलें, जो मुझे कांटे	105
127.	जय जय श्री वीर जिन, हम जपें रात दिन, तेरी माला	106
128.	मुनिराज बनके, जिनराज बनके	107
129.	महावीरा जन्मे, कुण्डलपुर में	108
130.	वीर जन्मभूमि सच्ची, कुण्डलपुरी ही है	109
131.	वीरा वीरा, श्री महावीरा, मेरे अतिवीरा	109
132.	आओ बच्चों! तुम्हें बतायें	110
133.	मेरा भाग्य सितारा चमका, मिला अवसर प्रभु दर्शन का	111
134.	उत्सव बहुत मनाया, जिनवर को भी रिझाया	112
135.	प्रभु ऋषभदेव महावीर का महोत्सव	113
136.	आज घड़ी शुभ आई रे, जय बोलो वीर की	113

क्रम	भजन	पृष्ठ
137.	ऋषभदेव से महावीर तक जन्मजयंती गान	114
138.	मत छानो माँ का दूध	114
139.	माता हो त्रिशला के लाल	115
140.	कुण्डलपर तीरथ को फिर से बचाना है	116
141.	है पाँच नाम विख्यात तेरे	117

(षष्ठ खण्ड)

सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी से संबंधित भजन

142.	मांगीतुंगी तीरथ पुराना	118
143.	ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी	119
144.	मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर	120
145.	सबसे बड़ी मूर्ति का, मांगीतुंगी तीर्थ का	120
146.	सबसे ऊँची प्रतिमा हमें बनाना है	121
147.	सबसे ऊँची प्रतिमा बनाएंगे	122
148.	ये तो जिनवर का दरबार है,	123
149.	जिनवर जयकारा हो, जिनधर्म प्यारा हो	124

(सप्तम खण्ड)

समवसरण से संबंधित भजन

150.	समवसरण दर्शन करो, तो भव्य कहलाओगे	124
151.	दर्शन को जाना है, मस्तक झुकाना है	125
152.	समवसरण आया अभिनंदन कर लो	126
153.	घड़िया सुहानी आईं रे	127
154.	ऋषभदेव के समवसरण का अतिशय कैसा छाया	127
155.	सच तो प्रभु समवसरण महिमा	128
156.	जिनधर्म के प्यारे भक्तों! सुनो समवसरण की कहानी	129

(अष्टम खण्ड)

माधोराजपुरा में दीक्षा तीर्थ पर विराजित भगवान पार्श्वनाथ से संबंधित भजन

157.	पारस प्रभु का मस्तकाभिषेक निराला है	130
158.	पार्श्वनाथ जय पार्श्वनाथ, गिरिवर पे विराजे	130
159.	दीक्षाभूमि की महिमा महान है	131

क्रम	भजन	पृष्ठ

(नवम खण्ड)

चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर एवं श्री वीरसागर महाराज से संबंधित भजन

160.	मेरा नम्र प्रणाम है, महावीर के लघु नंदन को	132
161.	दिगम्बर प्राकृतिक मुद्रा, विरागी की निशानी है	133
162.	सन्तों का तुम्हें नमन है	133
163.	गुरुवार शांतिसागर थे	134
164.	इस युग के पहले गुरुवर हैं, शांतिसागर जी	135
165.	श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सरताज, प्रथम ऋषिराजा	135
166.	सुनो हम कथा सुनाते हैं	136
167.	आओ बंधु! तुम्हें बताएँ, परिचय प्रथमाचार्य का	137
168.	सुनो इक संत कहानी	138
169.	दीक्षा लेकर बने शांतिसागर निजकर्म जलाने को	139
170.	सुनो इक पुण्यकथा सुन लो	140
171.	प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गुणगाथा सब मिल गाओ	141
172.	प्रथमाचार्य शांतिसागर का, अन्तिम प्रवचन सुन लो	142
173.	शांतिसिन्धु सूरिवर की वंदना करूँ	143
174.	श्री आचार्य वीरसागर की, ज्ञानवाटिका प्यारी	145
175.	गुरुपद से है प्रीति लगाना	146
176.	गुरुओं की भक्ति से सब सुख मिलते हैं	147
177.	कहानी मुनिवर की, कहानी गुरुवर की	148
178.	सभी मिल बोलो जय जय, जैन सन्तों की जय जय	148
179.	मुनिराज मुनिराज, वीरसागर मुनिराज	149

(दशम खण्ड)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से संबंधित भजन

180.	तू कितनी निस्पृह है, तू कितनी निश्छल है, तू माँ जिनवाणी है	150
181.	रोम-रोम से निकले माता नाम तुम्हारा	150
182.	इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है	151
183.	तेरे दर्शन को मन करता है	152

क्रम	भजन	पृष्ठ
184.	शारद माता का रूप दिखाया	153
185.	शरदपूनो का ये चांद हैं, गणिनी श्री ज्ञानमति मात हैं	154
186.	आ जा रि चांदनी, हमारो पूनो चांद लेके आ जा-2	155
187.	वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की	155
188.	ज्ञानमती माँ आईं प्रभु जी के द्वार	156
189.	ज्ञानमती माताजी की वाणी सुन लो	157
190.	माता तेरे चरणों में, हम वन्दन करते हैं	158
191.	यह शान्त छवी तेरी बड़ी सुन्दर लगती है	159
192.	सुनो! इक ध्यान कथा सुन लो	160
193.	चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के	162
194.	तीरथ करने चलीं ज्ञानमति, निज को तीर्थ बनाने को	163
195.	रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके	164
196.	श्री ज्ञानमती माता की, सुन करके त्याग कहानी	164
197.	हम ज्ञानमती माता को वन्दन करते हैं	165
198.	भारत की कुछ ललनाओं ने, भारत का मान बढ़ाया है	166
199.	मेरे देश की धरती ज्ञानमती माता से धन्य हुई है	167
200.	जयति जय जय ज्ञानमति माँ	168
201.	श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शीश नवाएं हम	169
202.	आई हैं आई हैं आई हैं, मां ज्ञानमती जी आई हैं	169
203.	माता जी मोहिनी की चाँद, ज्ञानमती मां आई हैं	170
204.	चन्दना सुनाती ज्ञानमती की कथा	171
205.	वन्दामि, वन्दामि, करते हैं हम	172
206.	ले करके ज्ञानदीप को जला दिया मशाल	173
207.	तव चरणों में नमन हमारा करो मात स्वीकार	174
208.	कभी तू माता लगती है, कभी तू बाला लगती है	175
209.	ओ मदर! मुझे दे दो, कुछ नालेज	176
210.	हम दर पे तेरे माँ आए हैं, ज्ञानामृत अर्जित कर लेंगे	177
211.	दरश दिखला जा, एक बार आ जा	177

क्रम	भजन	पृष्ठ
212.	ज्ञानमती माता की, कृतियाँ सभी निराली हैं	178
213.	मात पद वंदन कर लो	189
214.	हे मात आज तुमसे, वरदान मैं ये चाहूँ	180
215.	माता हो माता रे ज्ञान तेरा सांचा	181
216.	ज्ञानमती माता तेरा जग में बड़ा नाम है	181
217.	अरे माता! तेरे ज्ञान की महिमा जगत में छाई है भारी	182
218.	ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है	183
219.	वन्दन शत-शत बार है	184
220.	करती हूँ तुम्हारी भक्ति, स्वीकार करो माँ	185
221.	ज्ञानमती माँ को वंदन कर लो	185
222.	द्वारे आए, हे माँ तुझे शीश झुकाएं	186
223.	सुन लो ज्ञान की बात	187
224.	आज अभिनन्दन करना है, मातपद वन्दन करना है	187
225.	सब छोड़ कुटुम्ब परिवार, अथिर संसार	188
226.	दे दी जगत को ज्ञानमती	189
227.	मैय्या मगन निज धुन में, शास्त्र चिंतन में	190
228.	श्री ज्ञानमती जी के दर्शन से	191
229.	माता जिनमत का सार बताती हैं	191
230.	घड़ियाँ सुहानी आईं रे...घड़ियाँ	192
231.	जब से तेरा दर्श हुआ	193
232.	जयति जय ज्ञानमती जी, गणिनि माँ ज्ञानमती जी	194
233.	ऐसी लागी लगन, भक्ति में हो मगन	195
234.	हे ज्ञानमूर्ति, मां ज्ञानमती, तव ज्ञान किरण यदि पा जाऊं	196
235.	सुनते हैं चन्दा की शीतल, किरणों से अमृत झरता है	197
236.	कोटि-कोटि मस्तक ने तेरा, वरदहस्त जो पाया है	198
237.	वंदना के शुभ क्षणों में, मैं करूँ गुरुवंदना	199
238.	गौरवमयी पद जिन्होंने प्राप्त करके	199
239.	पूछकर शशि धरातल के चाँद को कुछ बहाने से	200

क्रम	भजन	पृष्ठ
240.	ज्ञानमती मातजी नो दुनिया मा नाम छे	201
241.	एक अकलंक धरती पे आया है फिर	202
242.	यह ज्ञानामृत से पूर्ण चाँद	203
243.	त्याग तपस्या की मूरत तुम, ज्ञान ध्यान की प्रतिमा हो	203
244.	तू पूनो का चन्दा, और मैं मावस की रात	204
245.	शरदपूर्णिमा का दिन आया, माँ ज्ञानमती ने जनम पाया	205
246.	जन्मदिन आया है वन्दन कर लो	206
247.	श्री ज्ञानमती माता की हो हो.....	207
248.	माता की जन्मजयंती है, सब मिलके मनाओ	208
249.	देखो जन्मजयंती आई, ज्ञानमती माताजी की	209
250.	शरदपूर्णिमा की आज, तिथि आ गई	209
251.	खुशी के गीत मिल गाओ, अवध का चाँद आया है	210
252.	हम सब मनाएं मिल खुशियाँ, मनाएं मिल खुशियाँ	211
253.	ज्ञानमती माता का जनमदिन आज है	211
254.	सूर्य किरण के पड़ते ही जग अंधकार भग जाता है	212
255.	रत्नमती माताजी को हम नित प्रति शीश झुकाते हैं	213
256.	दे दी जगत को ज्ञानमती मात सी मिसाल	215
257.	तीरथ करने चली मोहिनी, शान्ति मार्ग अपनाने को	215
258.	जय जय बोलो अभयमती माताजी की	216

(ग्यारहवाँ खण्ड)

आहारदान, रक्षाबंधन, दीपावली, दशलक्षण पर्व एवं वर्षायोग से संबंधित भजन

259.	मेरे मन खुशियाँ छाई हैं	217
260.	आओ रे आओ, खुशियाँ मनाओ, यह है मंगल बेला	217
261.	पर्व आया, प्रेम भर लाया, धरम पथ भाया	219
262.	अब तक बहुत मनाया, रक्षाबन्धन का त्योहार है	220
263.	आज दीवाली आई है	221
264.	पर्व दशलक्षण आया है	222
265.	क्षमा धर्म से अपनी बगिया सजाओ	222

क्रम	भजन	पृष्ठ
266.	धर्म मार्दव को सब मिल निभाना	223
267.	हे नाथ! आपसे मैं, वरदान एक चाहूँ	224
268.	सत्य धरम जब पालन होगा, पापों का प्रक्षालन होगा	225
269.	जिस गती में न उत्तम धरम मिल सके	226
270.	उत्तम संयम के पालन से, मानव को शिव का द्वार मिले	227
271.	हे वीतराग प्रभु! मुझे तपशक्ति दीजिए	227
272.	त्याग लेने का मन करता है	228
273.	धर अकिंचन धरम, कर ले तू शुभ करम, भव्य प्राणी	229
274.	ब्रह्मचर्य व्रत को निभाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना	230
275.	क्षमागुण को मन में धर लो, क्षमा को वाणी में धर लो	230
276.	जिनशासन में वर्षायोग की महिमा है	231
277.	आया वर्षायोग महान, करो गुरुभक्ती करो	232

(बारहवाँ खण्ड)

पंचकल्याणक संबंधी भजन

278.	केशरिया झण्डा मेरा, जिनमत की पहचान है	233
279.	जन जन के हितकारी हो प्रभु, युग के आदिविधाता	234
280.	गर्भकल्याणक (धरती का तुम्हें नमन है)	234
281.	जन्मकल्याणक (आदीश्वर तेरी नगरी में धूम मची है)	235
282.	पालना (आदीश्वर झूले पलना, मरुदेवी लोरी गावें)	236
283.	राजदरबार (लगा प्रभू दरबार, जय जयकार)	237
284.	दीक्षा के समय (प्रभु जी सिद्धि कांता वरने चल दिये)	237
285.	दीक्षा के समय (सब अथिर जान संसार, तजा घर बार)	238
286.	आहार गीत (प्रभु ऋषभदेव का आहार हो रहा)	239
287.	समवसरण गीत (बीते युगों में यहाँ पर समवसरण)	240
288.	ज्ञानकल्याणक गीत (आओ रे आओ खुशियाँ मनाओ)	241
289.	केवलज्ञान गीत (समवसरण दर्शन करो)	241
290.	सामूहिक नृत्य गीत (रंग छलके ज्ञान गगरिया से)	242
291.	निर्वाणकल्याणक गीत (ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव)	243

क्रम	भजन	पृष्ठ
	(तेरहवाँ खण्ड)	
	अन्य भजन	
292.	हे सरस्वती माता, अज्ञान दूर कर दो	244
293.	णमो अरिहंताणं, नमन है अरिहंत प्रभु को	244
294.	निज ध्यान करने, गुणगान करने	245
295.	ॐकार बोलो, फिर आँख खोलो	246
296.	चलो मन को अन्तर की, यात्रा कराएं	246
297.	शाम सबेरे दो घड़ी तू आतम ध्यान लगाया कर	247
298.	हे प्रभु! मैं अपने आतम, में ऐसा रम जाऊँ	248
299.	निज ध्यान करने से, आतम निधि मिलती है	248
300.	भोले प्राणी	249
301.	देव शास्त्र गुरु का ही, जीवन में सहारा है	250
302.	सांची कहूँ प्रभु दर्शन से हमरे	251
303.	मिल गया मानव जनम, भव भव के पुण्य प्रताप से	252
304.	ऐसी शक्ति मिले हमको भगवन्! पाप से दूर जब रह सकें हम	252
305.	मनवा! तेरी न कोई सीमा	253
306.	भक्ती की भर ली गगरिया	254
307.	सार्थक हो जीवन मेरा, पाया जो वरदान है	254
308.	सुनो रे, सुनो गंधोदक की महिमा	255
309.	अरे, जग जा रे चेतन! नींद से	256
310.	हम आए हैं निगोद से, आशाएँ संजो के	257
311.	स्वामी हम तो आए तेरे द्वारे पे, तेरी हम पे	258
312.	अहिंसा प्रधान मेरी इण्डिया महान है	258
313.	सुनो रे, सुनो रे कुन्दकुन्द की कहानी	259
314.	मुझ जैसे अज्ञानी को, तेरे जैसे ज्ञानी का	260
315.	मैं समयसार को निज आतम में ध्याऊँगा	260
316.	बीते युगों में यहाँ पर, एक सती आई थी	261
317.	इक बार की बात सुनो भाई	262
318.	जिनवाणी सुन प्राणी	263

क्रम	भजन	पृष्ठ
319.	कल्पद्रुम पूजा महा, कलियुग में वरदान है	264
320.	प्रभू की पूजन करना है, प्रभू की भक्ति करना है	265
321.	दुनिया में जैनधर्म सदा से ही रहा है	266
322.	प्रभु! मेरा मन कब पावन होगा	267
323.	उत्सव बहुत मनाया	268
324.	ज्ञानियों का कहना है कि संयम को सभी पालना	268
325.	यह सम्यग्ज्ञान का प्याला	269
326.	वन्दन बारम्बार है	270
327.	तीर्थंकर माता ने देखे सोलह सपने	271
328.	तीरथ का इसकी कीरत का	272
329.	जब तक सूरज चंदा का प्रकाश रहेगा	273
330.	चलो सब मिल पूजन कर लो	273
331.	तू भक्ति करके प्रभु की	274
332.	इक कहानी कहूँ, प्रभु की वाणी कहूँ	275
333.	तीर्थयात्रा का पुण्य विशाल है	276
334.	जन्म मानव का पाया है जो	277
335.	सभी मिल बोलो जय जय	278
336.	शिरडी के पारस प्रभू	278
337.	शिरडी वाले पारस प्रभू	279
338.	अन्धकार के मौन क्षणों में	280
339.	गोम्मटगिरि के बाबा तेरा रूप निराला	281
340.	पहले स्वपन में माता गज देख रही हैं	282
341.	गंधोदक का माहात्म्य	284
342.	तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय ज्ञान का आलय	286
343.	तीर्थंकर श्री महावीर विश्वविद्यालय परिसर न्यारा	286
344.	आओ रे आओ खुशियाँ मनाओ, वीर जयंती आई।	287
345.	जिनमंदिर का निर्माण, करो सब मिलके करो।	288

भजन-1

तर्ज–सारे जग में तेरी धूम.....

सारे जग का तू सरताज-बाबा हो बाबा।
तूने मोक्षमार्ग बतलाया, जग को जीवन कला सिखाया,
आदि ब्रह्मा तू कहलाया।। सारे.....।। टेक.।।

कर्मयुग के प्रथम आप अवतार हैं।
नाभिनन्दन को जग को नमस्कार है।।
माता मरुदेवी हर्षाईं, जिनके घर में बजी बधाई।
सबके मन में खुशियां छाईं-सारे जग का.....।।1।।

तुम अयोध्या में जन्मे व शासन किया।
अष्टापद गिरि पे जाकर के शिवपद लिया।।
तुमने पहले ब्याह रचाया, फिर जा वन में दीक्षा पाया।
सिद्धं नमः मंत्र को ध्याया-सारे जग का.....।।2।।

एक वरदान प्रभु मुझको दे दीजिए।
अपने चरणों में मुझको बुला लीजिए।।
मैंने तुझको शीश नवाया, मन में तेरा ध्यान लगाया।
फिर तो जो चाहा सो पाया-सारे जग का.....।।3।।

ज्ञानमति माँ तेरे, दर्श को आ गईं।
भेंट उनकी अयोध्या, स्वयं पा गई।।
बनी अयोध्या नगरी प्यारी, जग में पा गई ख्याति निराली,
कृतियां बनी "चन्दना" न्यारी सारे जग का.....।।4।।

मानो बाबा ने पुत्री को बुलवाया था।
ज्ञानमति मात को याद दिलवाया था।।
पुत्री ब्राह्मी यदि तुम आओ, अपनी कर्मठता दिखलाओ,
गणिनी माँ का रूप दिखाओ।। सारे.....।।5।।

भजन-2

तर्ज–कभी कुण्डलपुर जाना है.....

कभी तू बाबा लगता है, कभी तू राजा लगता है,
कभी महाराजा लगता है, स्वयं अधिराजा लगता है।
तू तीर्थ अयोध्या का महाराजा लगता है।
सबका पालक होने से तू बाबा लगता है।।
कभी तू बाबा लगता है, कभी तू राजा लगता है,
कभी महाराजा लगता है, स्वयं अधिराजा लगता है।
जय आदीश्वर, हो बोलो जय आदीश्वर-2, बोलो जय.....। टेक.।।

इस धरती पर भोगभूमि का अन्त समय जब आया।
असि मषि आदिक क्रिया बताकर जीवन कला सिखाया।।
तू तीर्थ अयोध्या का महाराजा लगता है।
सबका पालक होने से तू बाबा लगता है।।
कभी तू.....।।1।।

इक सौ एक पुत्र एवं दो पुत्री तुमने पाईं।
सबने दीक्षा ले अपने जीवन में ज्योति जलाई।।
तू तीर्थ अयोध्या का महाराजा लगता है।
सबका पालक होने से तू बाबा लगता है।।
कभी तू.....।।2।।

पुरी अयोध्या में जन्मे कैलाशगिरी से शिव पाया।
अतः "चंदनामती" जगत ने तुझको शीश नमाया।
तू तीर्थ अयोध्या का महाराजा लगता है।
सबका पालक होने से तू बाबा लगता है।।
कभी तू बाबा लगता है, कभी तू राजा लगता है,
कभी महाराजा लगता है, स्वयं अधिराजा लगता है।
जय आदीश्वर, हो बोलो जय आदीश्वर-2, बोलो जय.....।।3।।

भजन-3

तर्ज–सौ साल पहले.....

तीरथ अयोध्या जग में शाश्वत रहेगा-शाश्वत रहेगा।
पहले भी था और आगे भी रहेगा।।टेक.।।

असंख्यों तीर्थंकर इस ही धरा पर पहले जन्मे हैं।
असंख्यों और भी प्रभुवर यहीं आगे भी जन्मेंगे।।
तीरथ की कीरत हर कवि गाता रहेगा-गाता रहेगा।
पहले भी था और आगे भी रहेगा।।1।।

न जाने कितने इतिहासों की जननी यह नगरिया है।
प्रभू वृषभेश भरतेश्वर की जननी यह अयोध्या है।।
जननि जन्मभूमी का स्वर शाश्वत रहेगा-शाश्वत रहेगा।
पहले भी था और आगे भी रहेगा।।2।।

हमें तीर्थेश की महिमा जगत को अब सुनाना है।
जिओ खुद जीने दो सबको यही जग को बताना है।।
"चन्दनामती" तब जग में अमृत बहेगा-अमृत बहेगा।
पहले भी था और आगे भी रहेगा।।3।।

भजन-4

तर्ज–काली तेरी चोटी है.....

आदिनाथ स्वामी का जनम स्थान है।
अयोध्यापुरी में देखो कैसी धूमधाम है।।
सारा जग करता जिनके चरणों में नमन,
तीर्थंकर हैं प्रथम।। टेक.।।
पिता नाभिराय मरुदेवी के महल में।
आये थे ऋषभदेव महाप्रभु बनके।।

बजी थी बधाई मरुदेवी आंगन,
तीर्थंकर हैं प्रथम।।1।।

शचि इन्द्राणी का भाग्य खिला था।
जिन्हें प्रभुजी का पहला दर्श मिला था।।
मायामयी बालक को सुलाया माँ के पास में।
माताजी को निद्रामग्न कर दिया आपने।।
इन्द्र हुआ प्रभुजी को देखके मगन,
तीर्थंकर हैं प्रथम।।2।।

पांडुकशिला पे, प्रभु न्हवन किया था।
क्षीरसागर से प्रासुक, जल को भरा था।।
शचि ने फिर उनको, सजाया था खुशी से।
पालने में प्रभु को, झुलाया था खुशी से।।
इन्द्र करे ताण्डव, नृत्य वहाँ झूम के।
सभी "चन्दनामती" भक्ती में विभोर थे।।
नाभिराय नगरी में लुटाते थे रतन,
तीर्थंकर हैं प्रथम।।3।।

भजन-5

तर्ज–इस जग में जो आया.....

सरयू नदी की धार यशोगान कर रही।
निज स्वर में तीर्थक्षेत्र का सम्मान कर रही।।टेक.।।
इस तीर्थ अयोध्या को कोई जीत न सका।
शासन यहाँ चला कभी प्रभु आदिनाथ का।। छह खंड के.....
छह खंड के अधिपति भरत को याद कर रही-2
निज स्वर में तीर्थक्षेत्र का सम्मान कर रही।।1।।
इक्ष्वाकुवंश में यहाँ के बहुत से राजा।
पुत्रों को राज्य सौंप बने थे मुनीराजा।। उनकी यशो.....

उनकी यशोगाथा स्वयं बखान कर रही-2
निज स्वर में तीर्थक्षेत्र का सम्मान कर रही।।2।।

भगवान ऋषभदेव राम की जनमथली।
प्रभु बाहुबली ब्राह्मी सुन्दरी यहीं पली।। सीता की.....
सीता की अग्नि परीक्षा का ध्यान कर रही-2
निज स्वर में तीर्थक्षेत्र का सम्मान कर रही।।3।।

श्री ज्ञानमती आर्यिका गणिनी यहाँ आई।
प्रभु मस्तकाभिषेक योजना थी बताई। उनको पदों.....
उनके पदों में नीर से प्रक्षाल कर रही-2
निज स्वर में तीर्थक्षेत्र का सम्मान कर रही।।4।।

सरयू नदी इस तीर्थ की पहचान बन गई।
इससे ही "चन्दना" यहाँ की शान बढ़ गई।। वृषभेश के.....
वृषभेश के युग का ही मानो भान कर रही-2
निजस्वर में तीर्थक्षेत्र का सम्मान कर रही।।5।।

भजन-6

तर्ज–बम्बई से आया.....

तीरथ अयोध्या महान, इसका दर्शन करो।
जन्मे ऋषभ भगवान, उनका वन्दन करो।। टेक.।।

आत्मा को भवसिंधु से, जो तिरवाए वह तीर्थ है।
द्रव्य भाव के भेद से, कहलाते दो तीर्थ हैं।।
तीरथ की कीरत महान, इसका दर्शन करो।। जन्मे.....।।1।।

ऋषभ, अजित भगवान ने, लिया यहाँ अवतार।
अभिनन्दन, सुमती तथा, श्री अनन्त सुखकार।।
पाँचों का यह जन्मधाम, इसका वन्दन करो।। जन्मे.....।।2।।

भरत सगर चक्रीश ने भी, किया यहीं पर राज।
छह खण्डों पर कर विजय, पाया शिव साम्राज्य।।
नगरी विनीता है नाम, इसका दर्शन करो।। जन्मे.....।।3।।

वर्तमान में राम की भी, जन्मभूमि कहलाई।
ऋषभदेव के दर्श को, माँ ज्ञानमती जी आईं।।
"चन्दना" बढ़े इसका नाम, इसका दर्शन करो।। जन्मे.....।।4।।

भजन-7

तर्ज–नदिया किनारे.....

सरयू किनारे प्रभु धाम, दरश सब कर जाना।
ऋषभ जन्मभूमि महान, प्रभू के घर आ जाना।। टेक.।।

शाश्वत है यह तीरथ अयोध्या।
तीर्थंकरों की कीरत अयोध्या।।
बनते यहाँ सभी काम, दरश सब कर जाना।। सरयू.....।।1।।

चक्री भरत की यह राजधानी।
सबने सुनी है इसकी कहानी।।
जन्में यहीं श्रीराम, दरश सब कर जाना।। सरयू.....।।2।।

सीता ने अग्नी को जल बनाया।
अपनी परीक्षा का फल था पाया।।
सतियों में हुईं वे प्रधान, दरश सब कर जाना।। सरयू.....।।3।।

ज्ञानमती माता अयोध्या में आईं।
निधियां कई अपने संग में लाईं।।
'चन्दना' यहीं सारे धाम, दरश सब कर जाना।। सरयू.....।।4।।

भजन-8

तर्ज–महावीरा झूले पालना नेक हौले.....

आदीश्वर झूले पालना, मरुदेवी लोरी गावें-2।
मरुदेवी लोरी गावें, सब देवी उसे सुलावें।। आदी.....।। टेक.।।

कहाँ प्रभू को जनम भयो है-2
कौन झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

नगरि अयोध्या में जनम भयो है-2
इन्द्र झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

कौन पिताश्री धन्य हुए हैं-2
किनने जायो ललना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

नाभिराय पितु धन्य हुए हैं-2
मरुदेवी जायो ललना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

स्वर्ग से इन्द्र-इन्द्राणी आए-2
सभी झुलायें पालना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

नगरि अयोध्या के नर-नारी-2
सभी झुलायें पालना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

यही "चन्दना" मैं भी चाहूँ-2
पाऊँ प्रभु सा ललना, मरुदेवी लोरी गावें।। आदी.....।।

भजन-9

तर्ज–रोम-रोम से निकले.....

सब तीर्थों में प्रथम अयोध्या तीर्थ हमारा।। हां तीर्थ.....।
ऐसा हुआ विकास कि जग में फैला नाम निराला।। सब.....।।टेक.।।

युग की आदि में तीर्थंकर श्री आदिनाथ जी जन्मे।
अजितनाथ, अभिनन्दन, सुमति औ अनन्त जी जन्मे।।
इसी भूमि ने भूत, भावि सब तीर्थंकर अवतारा।। सब.....।।1।।

ज्ञानमती माताजी जब प्रभु दर्शन करने आईं।
साथ में अपने त्रय-चौबीसी भेंट चढ़ाने लाईं।।
उनके ही करकमलों से हो गया तीर्थ उद्धारा।। सब.....।।2।।

आदीश्वर की खड्गासन उत्तुंग यहाँ प्रतिमा है।
महामस्तकाभिषेक से बढ़ गई तीर्थ महिमा है।।
देश-देश के नर-नारी आ करते जय-जयकारा।। सब.....।।3।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने चातुर्मास रचाया।
सूने तीरथ को विकसित करने का भाव जगाया।।
तभी "चंदनामती" तीर्थ का हुआ शीघ्र उद्धारा।
सब तीर्थों में प्रथम अयोध्या तीर्थ हमारा।। सब.....।।4।।

भजन-10

तर्ज–मन मंदिर में आय जाइयो.....

सरयू के तट पर बसी हुई है ये अयोध्या नगरिया।
अयोध्या नगरिया, प्यारी प्यारी नगरिया-2।।सरयू के...।। टेक.।।

धनद ने था यह नगर बसाया,
बीचोंबीच जिनमंदिर बनाया।
आदि प्रभू की जनमभूमि है, ये अयोध्या नगरिया।।
सरयू के.....।।1।।

ब्राह्मी माता यहीं की निधी थीं,
आदिनाथ की बड़ी पुत्री थीं।
उनकी ही सच्ची करमभूमि है, ये अयोध्या नगरिया।।
सरयू के.....।।2।।

ज्ञानमती माताजी ब्राह्मी स्वरूप हैं,
कलियुग में बालसति का पहला रूप हैं।।

उनकी ही प्रेरणा से झूम रही है, ये अयोध्या नगरिया।।
सरयू के.....।।3।।

अब तीर्थ की कीर्ति जग में बढ़ी है,
तीन चौबीसी की रचना बनी है।
जिनप्रतिमाओं से शोभ रही है, ये अयोध्या नगरिया।।
सरयू के.....।।4।।

समवशरण भी बना है यहाँ पर,
मस्तकाभिषेक प्रभु आदिनाथ पर।
"चन्दना" खुशियाँ मनाय रही है, ये अयोध्या नगरिया।।
सरयू के.....।।5।।

भजन-11

तर्ज–एक तेरा नाम.....

तपस्थली तीर्थ सबकी आँखों का सितारा है,
तपस्थली तीर्थ सबकी आँखों का सितारा है।।
ये आँखों का सितारा है।। टेक.।।

एक तरफ चले छुक-छुक गाड़ी, एक तरफ चले मोटर।
बीच में तपस्थली तीरथ पर, गिरि कैलाश मनोहर।
ऊपर ऋषभदेव प्रतिमा का, दृश्य ही निराला है।
तपस्थली.....।।1।।

एक तरफ बह रही त्रिवेणी, एक तरफ है बनारस।
बीच में उत्तरमुखी भूमि पर, बना है सुन्दर तीरथ।
जहाँ बहत्तर मंदिर से, संयुत कैलाश निराला है।
तपस्थली.....।।2।।

एक तरफ दीक्षाकल्याणक, का है बना तपोवन।
एक तरफ है समवसरण की, रचना ज्ञान का उपवन।।

कैलाश गुफा के अन्दर प्रभु का, मंदिर अतिशय प्यारा है।
तपस्थली.....।।3।।

पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, सभी दिशा यशगान करें।
तीर्थ की संप्रेरिका ज्ञानमति, माता का गुणगान करें।।
जन-जन का कल्याण 'चंदनामती', करे यह प्यारा है।
तपस्थली.....।।4।।

भजन-12

तर्ज–आओ बच्चों.....

मनवांछित फल देने वाला, पहला तीर्थ प्रयाग है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।। टेक.।।

ऋषभदेव जब ध्यान लीन थे, राजपुत्र दो आए थे।
जंगल में एकांत देख, प्रभु से मन की कह पाए थे।।
नमि-विनमी बोले हे प्रभुवर, हमें भी लेना राज्य है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।।1।।

राज्य मांगते देख उन्हें, धरणेन्द्र देवता प्रगट हुए।
ध्यान में विघ्न उपस्थित करते, देखा तो वे बोल पड़े।।
जाओ राज्य भरत से मांगो, प्रभु ने किया सब त्याग है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।।2।।

कच्छ सुकच्छ के पुत्र नमी, विनमी ने उनको डाँट दिया।
तुम होते हो कौन हमें तो, लेना प्रभु से राज्य यहाँ।।
देंगे प्रभुजी ही सब कुछ, हमको ऐसा विश्वास है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।।3।।

देखा जब धरणेन्द्र ने उनकी, भक्ती बहुत विचार किया।
बोला उनके कानों में, प्रभुजी ने तुमको राज्य दिया।।
विजयारध गिरि पर ले जाकर, दिया उन्हें साम्राज्य है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।।4।।

भक्ती का यह चमत्कार, तीरथ प्रयाग से प्रगट हुआ।
उस प्राचीन धरा पर नूतन, तीर्थ 'चंदना' उदित हुआ।।
ऋषभदेव की तपस्थली का, करना पूर्ण विकास है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।।5।।

तुम भी इस तीरथ पर प्रभु से, जो इच्छा हो माँग करो।
श्रद्धा भक्ती से जिनवर के, सम्मुख सदा प्रणाम करो।।
पा जाओगे भौतिक सुख, एवं शिव का साम्राज्य है।
सुनोगे सच्ची कथा तो तुमको, भी होगा रोमांच है।।
दीक्षा तीर्थ प्रथम, यह है अतिशय तीर्थ प्रथम-2 ।।6।।

भजन-13

तर्ज–बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की, तपस्थली है प्रयाग।
संगम के तट पर प्रभु का, तीरथ बना है पहली बार।। टेक.।।

इस धरती के पहले राजा, ऋषभदेव कहलाए।
हम सबको जीवन जीने के, सूत्र उन्होंने बताए।।
असि मसि आदि क्रिया बताकर, किया जगत उद्धार।
संगम के तट पर प्रभु का, तीरथ बना है पहली बार।।1।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, युग के आदि विधाता।
जा प्रयाग में दीक्षा धारी, वृषभेश्वर जगत्राता।।

उसी तीर्थ पर बहे 'चंदनामती', त्रिवेणी धार।
संगम के तट पर प्रभु का, तीरथ बना है पहली बार।।2।।

तपस्थली पर देखो सुन्दर, ऋषभदेव की प्रतिमा।
समवसरण कैलाशगिरी, वटवृक्ष की अद्भुत महिमा।।
ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा हुई साकार।
संगम के तट पर प्रभु का, तीरथ बना है पहली बार।।3।।

भजन-14

तर्ज–तीरथ करने चली.....

दीक्षा लेकर बने महामुनि, मोक्षमार्ग बतलाने को।
ऋषभदेव ने करी तपस्या, धर्म तीर्थ प्रगटाने को।। टेक.।।

राज्य भोग के बाद प्रभू ने, जब दीक्षा स्वीकार किया।
चार हजार अन्य राजाओं, ने भी सब कुछ त्याग दिया।।
लेकिन सब पथभ्रष्ट हुए, जब मिला न कुछ भी खाने को।
मिला न कुछ भी खाने को।। दीक्षा लेकर.....।।1।।

ऋषभ प्रभू ने देख समस्या, अपना ध्यान समाप्त किया।
कैसे चले मुक्ति का मारग, मन में यही विचार किया।।
चले जैन मुनियों की तब, आहार क्रिया बतलाने को।
आहार क्रिया बतलाने को।। दीक्षा लेकर.....।।2।।

उन्हें देख अज्ञानीजन, भोजन वस्त्रादिक लाते थे।
कोई धन वैभव कन्या, ला लाकर उन्हें दिखाते थे।।
मंद मंद मुस्काते प्रभु, चल देते राह बताने को।
चल देते राह बताने को।। दीक्षा लेकर.....।।3।।

एक वर्ष उनतालिस दिन, पश्चात् हस्तिनापुर पहुँचे।
तब नवधा भक्ती करने श्रेयांस सोमप्रभ थे प्रगटे।।

दिया प्रथम आहार इक्षुरस, अक्षय संपति पाने को।
अक्षय संपति पाने को।। दीक्षा लेकर.....।।4।।

अक्षय तृतिया पर्व उसी दिन, से जग में विख्यात हुआ।
जैन साधुओं की आहार, क्रिया का तब से ज्ञान हुआ।।
वही क्रिया 'चंदनामती', दिखला दो सभी जमाने को।
दिखला दो सभी जमाने को।। दीक्षा लेकर.....।।5।।

भजन-15

तर्ज–एक परदेशी मेरा.....

प्रभु ऋषभदेव का आहार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जय-जयकार हो रहा।। टेक.।।

प्रथम प्रभू का प्रथम पारणा, प्रथम बार जब हुआ महल में। हुआ.....
पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई थी, चौके का भोजन अक्षय हुआ तब।। अक्षय.....
भक्ति में विभोर सब संसार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जय-जयकार हो रहा।।1।।

भरत ने नगरी अयोध्या से आकर, श्रेयांस का सम्मान किया था। सम्मान.....
दानतीर्थ के प्रथम प्रवर्तक, कहकर उन्हें बहुमान दिया था।। बहुमान .....
राजा के महलों में मंगलाचार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जय-जयकार हो रहा।।2।।

सब मिल अक्षय तृतिया को, आहारदान का पर्व मनाओ। पर्व.....
'चंदनामति' आहार दे गुरु को, इक्षूरस का प्रसाद बँटवाओ। प्रसाद.....
देखो कैसा धर्म का प्रचार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जय-जयकार हो रहा।।3।।

भजन-16

तर्ज–फूल कमल का फूल.....

मूल से लेकर चूल शिखर तक, तीरथ का निर्माण।
ऋषभदेव की तपोभूमि है, तीर्थ प्रयाग महान।। टेक.।।
सुनते थे अब तक केवल, इतिहास पुराणों में।
अब आई आवाज एक, हम सबके कानों में।।
संगम तट पर जाकर.....
संगम तट पर जाकर करना, है आतम स्नान।।
मूल से.....।।1।।

वहीं एक वटवृक्ष तले, ध्यानस्थ ऋषभ की प्रतिमा।
केवलज्ञानी के प्रतीक में, समवसरण की महिमा।।
श्री कैलाशगिरी पर.....
श्री कैलाशगिरी पर, माणिकवर्णी मूर्ति महान।।
मूल से.....।।2।।

ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा का यह प्रतिफल है।
नवयुग में प्राचीन विषय, बतलातीं वे हर पल हैं।।
इसीलिए तीर्थों के.....
इसीलिए तीर्थों के हो, जाते हैं नव निर्माण।।
मूल से.....।।3।।

शहर इलाहाबाद ही अब, तीरथ प्रयाग कहलाया।
ऋषभदेव की तपस्थली का, नाम है इसने पाया।।
युग युग तक यह तीर्थ.....
युग युग तक यह तीर्थ 'चंदना', करेगा जनकल्याण।।
मूल से.....।।4।।

भजन-17

तर्ज–देख तेरे संसार.....

तीर्थ प्रयाग में देखो कैसा, हुआ भव्य निर्माण,
बन गया तीरथराज महान।।टेक.।।

ऋषभदेव की तपोभूमि है।
जिनशासन की यशोभूमि है।।
कोड़ाकोड़ी वर्ष बाद सब भूल गए थे नाम,
बन गया तीरथराज महान।।1।।

ज्ञानमती माता ने बताया।
भक्तों ने तब तीर्थ बनाया।।
एक यही प्रेरणा विश्व के लिए बनी वरदान,
बन गया तीरथराज महान।।2।।

तपकल्याणक का उपवन है।
ज्ञानकल्याणक समवसरण है।।
बीचोंबिच कैलाश शिखर पर ऋषभदेव भगवान,
बन गया तीरथराज महान।।3।।

तीर्थ पुराना नाम नया है।
सुन्दर नवनिर्माण हुआ है।।
तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की तपस्थली शुभ धाम,
बन गया तीरथराज महान।।4।।

नई सदी का पुण्य उदय है।
मिला उसे जब तीरथ नव है।।
सभी "चन्दनामती" तीर्थ को करते कोटि प्रणाम,
बन गया तीरथराज महान।।5।।

भजन-18

तर्ज–जिया बेकरार है.....

ऊँचा सा पहाड़ है, अष्टापद गिरिराज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।। टेक.।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, तीर्थंकर प्रभु प्रथम हुए।। तीर्थंकर.....
राजपाट सब त्याग वनों में, जाकर मुनिवर प्रथम हुए।। जाकर.....
मन में हुआ विचार है, नश्वर सब संसार है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।1।।

चौदह दिन की आयु रही जब, अष्टापद पर पहुँच गए। अष्टापद.....
योग निरोधा कर्म नष्ट कर, सिद्धालय को प्राप्त हुए।। सिद्धालय.....
सुख का वह साम्राज्य है, तीन लोक सरताज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।2।।

आओ खोज करें उस गिरि की, कहाँ आज वह लुप्त हुआ।। कहाँ.....
चक्रवर्ती भरतेश्वर ने जहाँ, रत्नमूर्ति निर्माण किया।। जहाँ.....
कहते ग्रन्थ पुराण हैं, इतिहासों में नाम है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।3।।

मिली प्रेरणा ज्ञानमती की, जय जय का स्वर गूँज उठा।। जय जय.....
दीप 'चंदनामती' असंख्यों, लेकर भक्तसमूह चला।। लेकर.....
देखो कैसा ठाठ है, सुन्दर पर्वतराज है,
ऋषभदेव के मोक्षगमन से, पावन गिरि कैलाश है।।4।।

भजन-19

तर्ज–मन मंदिर में.....

शाश्वत तीरथ प्रथम जग में है, अयोध्या नगरिया,
अयोध्या नगरिया, प्यारी-2 नगरिया।।
शाश्वत तीरथ.....।। टेक.।।

तीर्थंकर यहाँ जन्मे अनंतों, इन्द्र देव तब हरषे असंख्यों।
प्रभू की अनादि जनमभूमि है, ये अयोध्या नगरिया।।
शाश्वत तीरथ.....।।1।।

वर्तमान में चौबिस जिनेश्वर, जन्मे अयोध्या में पाँच तीर्थंकर।
आदीप्रभु की जनमभूमि है, ये अयोध्या नगरिया।।
शाश्वत तीरथ.....।।2।।

अब तीर्थ की कीर्ति जग में बढ़ी है, ज्ञानमती माता की दृष्टि पड़ी है।
उनकी बनी यह करमभूमि है, ये अयोध्या नगरिया।।
शाश्वत तीरथ.....।।3।।

तीन चौबीसी का मंदिर बना है, समवसरण भी सुन्दर घना है।
जिनवर की शाश्वत जनमभूमि है, यह अयोध्या नगरिया।।
शाश्वत तीरथ.....।।4।।

प्रति पाँच वर्षों में उत्सव यहाँ पर, होता है मस्तकाभिषेक प्रभुजी पर।
'चंदनामती' हरषाय रही है, ये अयोध्या नगरिया।।
शाश्वत तीरथ.....।।5।।

भजन-20

तर्ज–हे वीर तुम्हारे.....

हे प्रभुवर! तेरी प्रतिमा ही तेरा अन्तर दर्शाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही प्राकृतिक रूप दर्शाती है।। टेक.।।

बिन बोले ही इस काया से मुक्ती का पथ बतलाते हो।
निज मन्द मन्द मुस्कानों से मानो खुशियाँ झलकाते हो।।
तव मूर्ति अचेतन होकर भी चेतन को पथ दर्शाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही प्राकृतिक रूप दर्शाती है।।1।।

इस प्रतिमा के सम्मुख ध्याता जब ध्यानमग्न हो जाता है।
जग के संकल्प विकल्पों से तब मुक्त स्वयं हो जाता है।।

अनिमिष दृग से देखो इसको तो परमशांति बरसाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही प्राकृतिक रूप दर्शाती है।।2।।

देखीं हैं बहुत कलाएँ पर, यह वीतराग छवि नहिं देखी।
प्रभु आदिनाथ जीवन जैसी, सचमुच इसकी भी छवि देखी।।
नख से शिख तक इसका दर्शन, कृतकृत्य भाव दर्शाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही प्राकृतिक रूप दर्शाती है।।3।।

इस शाश्वत तीर्थ अयोध्या का, इतिहास यही बतलाता है।
वृषभेश्वर आदिक पाँच प्रभू का, जन्मतीर्थ कहलाता है।।
इस तीरथ का वन्दन करने से, भव बाधा नश जाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही प्राकृतिक रूप दर्शाती है।।4।।

इस कारण ही यहाँ ऋषभदेव, प्रभु की खड्गासन प्रतिमा है।
सब नर-नारी बिन भेदभाव, इनकी गाते गुणगरिमा हैं।।
'चंदनामती' हम सबको यह, पावन सन्देश सुनाती है।
यह नग्न दिगम्बर मुद्रा ही प्राकृतिक रूप दर्शाती है।।5।।

भजन-21

तर्ज–सावन गीत.....

अरे बाबा, तेरी जनमभूमी की महिमा सुनी है बहुत भारी।। टेक.।।

सतयुग में तेरी, कहानी बनी थी।
कृतयुग में पहली, निशानी बनी थी।।
अरे बाबा, तूने बताई जग को जीवन कला की विधि सारी।।
अरे.....।।1।।

देखा न तेरा, जनम प्रभु हमने।
देखी न तेरी, छवी प्रभु हमने।।
अरे बाबा, देखी अयोध्याजी में प्रतिमा तुम्हारी बहुत प्यारी।।
अरे.....।।2।।

तुम पर बहती है जब क्षीर धारा।
कर्पूर केसर, मिली नीर धारा।।
अरे बाबा, फूलों की वृष्टी द्वारा निखरती है तेरी छवि न्यारी।।
अरे.....।।3।।

ज्ञानमती माता की, प्रेरणा मिली जब।
मस्तकाभिषेक की, योजना बनी तब।।
अरे बाबा, सारी प्रजा ने पाई तेरे महोत्सव की उजियारी।।
अरे.....।।4।।

कैलाश गिरि से, शिवपद को पाया।
जग को भी मुक्ती, का पथ है बताया।।
अरे बाबा, पाऊँ 'चंदनामती' मैं, तुम सम सिद्धशिला प्यारी।।
अरे.....।।5।।

भजन-22

तर्ज–है प्रीत जहाँ की रीत सदा.....

प्रभु ऋषभदेव के पुत्र भरत से, भारतदेश सनाथ हुआ।
यह आर्यावर्त इण्डिया हिन्दुस्तान नाम से सार्थ हुआ।। टेक.।।

यहाँ तीर्थंकर प्रभु लार्ड गॉड, साधूजन सेन्ट कहाते हैं। हो.....
यहाँ गुलदस्ते की भांति कई, जाती व पंथ आ जाते हैं।। हो.....
चैतन्य तत्त्व की प्राप्ती का-2, संचालित यहाँ से पाठ हुआ।
यह आर्यावर्त इण्डिया हिन्दुस्तान नाम से सार्थ हुआ।।1।।

भारत को भारत रहने दो, इण्डिया न यह बनने पाए। हो.....
इसकी आध्यात्मिक संस्कृति का, अपमान नहीं होने पाए।। हो.....
यहाँ ऋषभ, राम, महावीर, बुद्ध-2, का अमर सदा सिद्धान्त हुआ।
यह आर्यावर्त इण्डिया हिन्दुस्तान नाम से सार्थ हुआ।।2।।

यहाँ की सीता सम नारी पर, छाया न किसी की पड़ पाए। हो.....
यहाँ जन्मीं ब्राह्मी माता सम, माँ ज्ञानमती के गुण गायें।। हो.....
"चन्दनामती" भारत की संस्कृति-2, का तब ही उत्थान हुआ।
यह आर्यावर्त इण्डिया हिन्दुस्तान नाम से सार्थ हुआ।।3।।

भजन-23

तर्ज–दीदी तेरा.....

ऋषभजयंती सब मनाओ, महावीर के गुणों को भी गाओ।
तीर्थंकर की महिमा बताओ, महावीर के गुणों को भी गाओ।।
जय जय.....प्रभो।।टेक.।।

धरा पर थी जब भोगभूमि व्यवस्था, सभी कल्पवृक्षों से फल माँगते थे।
पुनः जब हुई कर्मभूमि व्यवस्था, ऋषभदेव जिनवर जनम धारते थे।।
उनकी जीवनगाथा सुनाओ, महावीर के गुणों को भी गाओ।।
ऋषभ.....।।1।।

दुःखी जनता को षट्क्रियाएँ बताकर, जीवन कला को सिखाया प्रभू ने।
पुनः मुक्तिपथ पर स्वयं चल के भव्यों को, मुक्ती का पथ भी दिखाया प्रभू ने।।
वहीं पंथ जग को दिखाओ, महावीर के गुणों को भी गाओ।।
ऋषभ.....।।2।।

मिली प्रेरणा ज्ञानमति माताजी से, ऋषभदेव का जन्म उत्सव मनाओ।
ऋषभ वीर कोई भी जिनधर्म के, संस्थापक नहीं हैं जगत को बताओ।।
जिनधर्म की महिमा फैलाओ, महावीर के गुणों को भी गाओ।।
ऋषभ.....।।3।।

जो कर्मों को जीतें वे जिन हैं तथा, उनके सब भक्तों को जैन कहते हैं आगम।
मनुज क्या पशू भी इसे धार सकते, यही "चन्दनामती" बताते जिनागम।।
घर-घर में ये ज्योति जलाओ, महावीर के गुणों को भी गाओ।।
ऋषभ.....।।4।।

भजन-24

तर्ज–कांची हो कांची रे.....

आओ रे आओ रे सब मिल के आओ जन्म जयंती मनाओ रे।
गाओ रे गाओ रे सब मिल के गाओ ऋषभदेव के गुण गाओ रे।।टेक.।।

प्रभु ऋषभदेव का जन्मोत्सव करो,
उत्सव ही नहीं महामहोत्सव करो।
नगरी सजाय के, तोरण लगाय के, रथयात्रा मेला भराओ रे।
आओ रे आओ रे.....।।1।।

भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता,
जिनधर्म के सूर्य मुक्ती के नेता।
प्रभु आदिनाथ हैं, यही प्रमुख बात है, इसको जगत में बताओ रे।।
आओ रे.....।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती जी ने बताया,
जयंती महोत्सव का रूपक बनाया।
धर्म का प्रचार हो, जिनवर जयकार हो, ऐसी सुरभि फैलाओ रे।
आओ रे.....।।3।।

राजधानी दिल्ली केन्द्रबिंदु बनी,
अयोध्या, प्रयाग, हस्तिनापुर में भी।
सारे ही देशों में, शहर और प्रदेशों में "चन्दनामती" गुण गाओ रे।।
आओ रे.....।।5।।

भजन-25

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
चंदा सूरज करें आरती, छुटते जनम मरण हैं।।
सौ सौ बार नमन है।
ऋषभदेव जिनवर को युग का सौ सौ बार नमन है।।टेक.।।

प्रभु का गर्भकल्याणक उत्सव इंद्र मनाया करते।
छह महिने पहले कुबेर रत्नों की वर्षा करते।।
तीर्थंकर माँ के आँगन में, बरसे खूब रतन हैं।
सौ सौ बार नमन है।।ऋषभदेव....।।1।।

पिता उन्हीं रत्नों को, जनता में वितरित कर देते।
रत्न प्राप्त कर श्रावकजन, निज भाग्य धन्य कर लेते।।
धरती स्वर्णमयी बन जाती, पुलकित हुआ गगन है।
सौ सौ बार नमन है।।ऋषभदेव....।।2।।

एक रत्न उनमें से प्रभु, यदि आज मुझे मिल जावे।
तब मेरा दुर्भाग्य "चंदनामति", निश्चित खिल जावे।।
तुम सम गर्भागम मेरा भी, होवे यही जतन है।
सौ सौ बार नमन है।।ऋषभदेव....।।3।।

भजन-26

तर्ज –हम लाए हैं तूफान से.....

निधियाँ कई दे दी हैं अयोध्या को मात ने।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।टेक.।।

आए थे कभी देशभूषण जी महामुनी।
जिनकी कृपा से ऋषभदेव मूर्ति है बनी।।
उपकार उनका लिख गया इस तीर्थ भाल पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।1।।

वीरान हो गई थी पुनः पुरी अयोध्या।
जिनधर्म की प्रभावना न हुई थी यहाँ।।
प्रचलित है रामजन्मभूमि की मिसाल से।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।2।।

इस अवध की अनमोल मणी ज्ञानमती माँ।
गणिनीशिरोमणी तथा चारित्रचन्द्रिका।।
उनकी गई इक दृष्टि अयोध्या विकास पे।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।3।।

निज संघ सहित आ गई इस आदि तीर्थ पर।
फिर छा गई यह ऋषभजन्मभूमि जगत पर।।
अतिशायि कार्य हो गये हैं अल्पकाल में।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।4।।

फिर ना कभी वीरान हो जावे ये बगीचा।
श्री देशभूषण ज्ञानमती ने इसे सींचा।।
चैतन्य तीर्थ "चंदनामती" गुरु त्रिकाल में।
अब तीर्थ को रखना मेरे भक्तों! संभाल के।।5।।

भजन-27

तर्ज –बहुत प्यार.....

ऋषभदेव प्रभु को है, मेरा नमन।
चरण में समर्पित-2, हैं भक्ती सुमन।।ऋषभेदव.।।टेक.।।

मरुदेवी माता के घर, रत्न खूब बरसे।
अयोध्यापुरी में पिता, नाभिराय हरषे।।
चैत्र वदी नवमी को-2, हुआ प्रभु जनम।।ऋषभेदव.।।1।।

इस युग के आदिब्रह्मा, ऋषभदेव स्वामी हैं।
पुरुदेव तीर्थंकर की, पदवी से नामी हैं।।
अवध की प्रजा व धरती-2, हुई धन्य धन।।ऋषभेदव.।।2।।

राजसुख को भोग उसको, त्याग दिया क्षण में।
बनकर के जिनवर राजे, समवसरण में।।
"चंदनामती" वे अपने, आप में मगन।।ऋषभेदव.।।3।।

भजन-28

तर्ज–अरे रे.....

अयोध्या तीर्थ हमारा, कहा शाश्वत है प्यारा,
तीर्थंकरों की जन्मभूमि है।
जहाँ नये मंदिर का हुआ है निर्माण, मंदिर में विराजे ऋषभदेव भगवान।
यही ऋषभदेव का है जनमस्थान, जिसे नमन करने से बनते हैं काम।।
अयोध्या.।।टेक.।।

बड़ी चमत्कारिक ऋषभदेव टोंक है, जहाँ चरणों में सभी देते धोक हैं।
यहाँ कभी जलता घी का दीप दिखा था, तभी जैन शासन का सौभाग्य जगा था।।
अयोध्या.।।1।।

एक बार गणिनी ज्ञानमती माताजी।
ऋषभदेव प्रभु जी के पास पधारीं।।
तभी तीर्थ का विकास शुरू हो गया।
ऋषभ जन्मभूमि का उद्धार हो गया।।अयोध्या.।।2।।

प्रतिमा के निर्माण जैसा पुण्य न दूजा।
मंदिर के निर्माण का है पुण्य अनूठा।।
करने व कराने वाले सुखी हों सदा।
"चन्दनामती" वे हों जयशील सर्वदा।।अयोध्या.।।3।।

भजन-29

तर्ज-दमादम मस्त कलन्दर.....

कलश हाथों में लेकर, करूँ अभिषेक प्रभू पर,
आदिनाथ प्रभु करना कृपा अब मुझ पर, हे प्रभु मुझ पर-2
जयति जय आदिजिनेश्वर-2 ।।टेक.।।

नाभिराय मरुदेवी के नंदन, तीर्थंकर जिनसूर्य को वंदन।
असि मसि आदि क्रिया बतलाई हे जिनवर, आदिजिनेश्वर-2 ।।1।।

नगरि अयोध्या के तुम राजा, दीक्षा लेकर बने मुनिराजा।
फिर मुनिचर्या बतलाई हे जिनवर, आदिजिनेश्वर-2।।2।।

कैलाशगिरि से शिवपद पाया, तप करके सब कर्म जलाया।
मुक्तिगमन की विधि बतलाई हे जिनवर, आदिजिनेश्वर-2।।3।।

आदिनाथ का उत्सव आया, तीर्थ अयोध्या में अवसर पाया।
ज्ञानमती जी की प्रेरणा पाई हे जिनवर, आदिजिनेश्वर-2।।4।।

न्हवन करो सब ऋषभप्रभू का, महामहोत्सव है इन प्रभु का।
"चंदनामती" तभी खुशियाँ हैं छाईं हे जिनवर, आदिजिनेश्वर-2।।5।।

भजन-30

तर्ज-दिल्ली का कुतुबमीनार देखो....

देखो देखो देखो, जन्मभूमि देखो,
ऋषभ जन्मभूमि का विकास देखो, अयोध्यापुरी का प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो-2 ।।टेक.।।

कहते हैं जिनशासन का, पहला शाश्वत तीर्थ यही।
तीर्थंकर भगवन्तों के, जन्म सदा होते हैं यहीं।।
उनकी ही महिमा का सार देखो, तीरथ अयोध्या विकास देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।1।।

वर्तमान चौबीसी के, पाँच तीर्थंकर जन्मे हैं।
उनके पाँचों टोंक यही, पुण्य कथानक कहते हैं।।
उन सबका हो रहा विकास देखो, जिनवर के गुण का प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।2।।

ज्ञानमती माताजी की, मिली प्रेरणा है सबको।
शाश्वत तीर्थ अयोध्या का, खूब प्रचार करो भक्तों।।
"चन्दनामती" यह प्रयास देखो, जिनमत का होगा प्रकाश देखो।
सारे जगत में इस तीर्थ का, फैला है नाम तुम आज देखो।।
हो देखो देखो, अयोध्या देखो.।।3।।

भजन-31

तर्ज-सपने में.....

जिनवर का महामस्तकाभिषेक निराला है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।टेक.।।

जब जल की धारा पड़ती, चन्दा के किरण सम लगती।
शीतल हो जाती धरती, पावन होते नरतन भी।।
हैं पुण्यवान वे जो करते जलधारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।1।।

जब दूध से न्वहन करें हम, क्षीरोदधि स्मरण करें हम।
ऊपर से नीचे बहती, तब दुग्धमयी हो धरती।।
प्रभु तन पर कर लो तुम भी दूध की धारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।2।।

जब दही की धारा पड़ती, मोती की लड़ियाँ लगती।
सर्वौषधि कलश ढुराएं, हम तन को स्वस्थ बनाएँ।।
केशर से प्रभु का रंग केशरिया प्यारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।3।।

करो शांतिधारा प्रभु पर, हो जावे शांति धरा पर।
"चंदनामती" जिन भक्ती, सबके भवकल्मष हरती।।
कलियुग में प्रभु भक्ती ही एक सहारा है।
क्या सुन्दर लगती पंचामृत की धारा है।।4।।

भजन-32

तर्ज–मेरे अंगने में.....

आदिनाथ प्रभु का जनम हुआ आज है।
मरुदेवी माता पिता नाभिराज हैं।। टेक.।।

अयोध्या की धरती रतनमयी हो रही।
पन्द्रह महिने से यहाँ रत्नवृष्टि हो रही ।।
सारे नर नारी-2, करें जयकार हैं।। आदिनाथ.....।।1।।

पूर्व दिशा सूरज को पाकर लाल हुई।
माता तीर्थंकर को पाके निहाल हुई।।
स्वर्गों में भी बाजे-2, बजे शंखनाद है।। आदिनाथ.....।।2।।

नरकों में भी क्षण भर को शांति मानो छा गई।
सारी धरती 'चंदनामती' बधाई गा रही।
मानो आज सबको-2, मिला साम्राज्य है।। आदिनाथ.....।।3।।

भजन-33

तर्ज-मेरी तो पतंग कट गई रे.....

प्रथम तीर्थनाथ का, प्रभु आदिनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।टेक.।।

आदितीर्थ अयोध्यापुरी में।
ऋषभदेव जनम की नगरी में।।
उन प्रभु की है विशाल प्रतिमा।
तीर्थ अयोध्या की है जो गरिमा।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, प्रभु आदिनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।1।।

एक बार देशभूषण मुनिवर।
अयोध्या में थे पधारे गुरुवर।।
उनकी प्रेरणा से बनी प्रतिमा।
"चन्दनामती" है जिसकी महिमा।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, प्रभु आदिनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।2।।

पुनः गणिनी ज्ञानमती माता।
अयोध्या पधारीं सुनो गाथा।।
मस्तकाभिषेक प्रथा डाली।
निधियाँ कई तीर्थ को दे डाली।।
उन्हीं तीर्थनाथ का, प्रभु आदिनाथ का, मस्तकाभिषेक हो रहा है,
प्रभु का जयजयकार हो रहा है।।3।।

भजन-34

–शेर छंद –

कृतयुग के प्रथम देव आदिनाथ को नमूँ।
कलियुग के महासूरि कुन्दकुन्द को नमूँ।।
उस शृँखला के सूरि शान्तिसिंधु को नमूँ।
सदि बीसवीं के प्रथम महासूरि को नमूँ।।1।।

उनके ही प्रथम शिष्य वीरसिंधु को नमूँ।
आचार्य शिरोमणि के प्रथम पट्ट को नमूँ।।
श्री वीरसिंधु शिष्या ज्ञानमती को नमूँ।
सदी बीसवीं की प्रथम बालसती को नमूँ।।2।।

ये आर्यिका शिरोमणि गणिनी स्वरूप हैं।
ये युगप्रवर्तिका हैं माँ ब्राह्मी का रूप हैं।।
ये शान्तिसिंधु वाटिका की शान्तिदूत हैं।
ये वीरसिंधु शिष्यावलि की अग्रदूत हैं।।3।।

भवभोगों का स्पर्श भी जिनने नहीं किया।
सुकुमार अवस्था में ब्रह्मचर्य व्रत लिया।।
आगर्भ ब्रह्मचारिणी पावन पवित्र हैं।
इनकी तपोशक्ती जगत में सुप्रसिद्ध है।।4।।

हे माँ! मैं करूँ याचना वरदान दीजिए।
भव भव में रहे भक्ति तेरी ध्यान दीजिए।।
निज ख्याति लाभ पूजा से दूर रह सकूँ।
बस 'चन्दनामति' रत्नत्रय को पूर्ण कर सकूँ।।

भजन-35

अयोध्यापुरी में मस्तकाभिषेक-2
जय-जय आदिनाथ जी-2।

पूर्व दिशा में सूरज जैसे.....SS
मरुदेवी मां के सुत जैसे.....SS
नाभिराय प्रभु तात श्री,
जय-जय आदिनाथ जी।। अयोध्यापुरी में.....।।1।।

तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया.....SS
धर्म तीर्थ का अर्थ बताया.....SS
बने ऋषभ भगवान जी
जय-जय आदिनाथ जी।। अयोध्यापुरी में.....।।2।।

वृषभेश्वर की ऊँची प्रतिमा.....SS
कहती मानो निज गुण गरिमा.....SS
महिमा अपरम्पार जी,
जय-जय आदिनाथ जी।। अयोध्यापुरी में.....।।3।।

ज्ञानमती माताजी के मन में.....SS
इक विचार आया चिन्तन में.....SS

होवे तीर्थ प्रचार जी,
जय-जय आदिनाथ जी।। अयोध्यापुरी में.....4।।

ब्राह्मी माँ का रूप है मानो.....SS
इनको जिनवर कन्या मानो.....SS
युग निर्मात्री मातश्री,
जय-जय आदिनाथ जी।। अयोध्यापुरी में.....।।5।।

प्रभु के तन पर बहती धारा.....SS
लगती क्षीरोदधि की धारा.....SS
जग में हर्ष अपार जी,
जय-जय आदिनाथ जी।। अयोध्यापुरी में.....।।6।।

भजन-36

तर्ज –कान्ची हो कान्ची रे.....

आओ रे आओ रे सब मिल के आओ, प्रभु जी का उत्सव मनाओ रे।
हो.....
गाओ रे गाओ रे सब मिलके गाओ, पुष्पदंतनाथ गुण गाओ रे।।
हो.....।।टेक.।।

नवमें तीर्थेश जो जगत् ईश हैं, पुष्पदंत प्रभु का मस्तकाभिषेक है।
स्वर्ण कलश हाथ में, लेके सबको साथ में,
जिनवर पे कलशा ढुराओ रे.....हो....ओ.....।।आओ रे.।।1।।

नीर क्षीर धार कैसी मनोहारी है, इनसे प्रभु की छवि लगती प्यारी-प्यारी है।
देखो वीतराग छवी, इनकी करो भक्ति सभी,
जय जय से नभ को गुंजाओ रे.....हो....ओ....।।आओ रे.।।2।।

केशर से केशरियानाथ बन गये, "चंदनामती" ये तीर्थनाथ बन गये।
होली खेलो संग में, प्रभु के भक्ति रंग में,
रंग गुलाल उड़ाओ रे.....हो.....ओ.....।।आओ रे.।।3।।

भजन-37

तर्ज–आओ बच्चों तुम्हें.....

पद्मचिन्हयुत पद्मप्रभू के, श्रीचरणों में नमन करें।
कौशाम्बी के तीर्थ प्रभासगिरी को सब मिल चमन करें।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2।। टेक.।।

कौशाम्बी में धरणराज की, रानी एक सुसीमा थीं।
जिनके सुख वैभव की धरती पर नहिं कोई सीमा थी।।
इन्द्रों द्वारा पूज्य वहाँ की, पावन रज को नमन करें। कौशाम्बी.....।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2 ।।1।।

चार कल्याणक पद्मप्रभू के, इन्द्र ने यहीं मनाये हैं।
आज वही कौशाम्बी और, प्रभाषगिरी कहलाये हैं।।
यमुना तट पर बसे तीर्थ पर, मुनिगण आतमरमण करें। कौशाम्बी.....।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2 ।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, इस तीरथ के दर्श किये।
मिली प्रेरणा महावीर, चन्दनबाला वहाँ प्रगट हुए।।
पद्मप्रभू की अतिशयकारी, मूर्ति 'चंदना' नमन करें। कौशाम्बी.....।।
वन्दे जिनवरम्, वन्दे जिनवरम्-2 ।।3।।

भजन-38

तर्ज –अरे रे मेरी .....

करो रे अभिषेक प्रभू का, पुष्पदंतेश प्रभू का,
जयरामा माता के लाल का।।करो रे.।।
काकंदी जी तीर्थ में प्रभू विराजमान,
यही नगरी है इनका जनमस्थान।
पुष्पदंत प्रभु को है मेरा प्रणाम,
इनका नाम जपने से बनते हैं काम।।करो रे.।।टेक.।।

नवमें तीर्थंकर पुष्पदंतनाथ हैं,
शुक्रग्रह शांतिकारक प्रभु आप हैं।
काकंदी में देखो कैसा आनन्द हो रहा,
प्रभु जी के दर्श करके हर्ष हो रहा।।करो रे.।।1।।

राजधानी दिल्ली से उपहार मिला है,
काकंदी में देखो नया मंदिर बना है।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली,
भक्तों के हृदय में ज्योति ज्ञान की जली।।करो रे.।।2।।

सभी भक्त स्वस्थ व चिरायु बनेंगे,
अपनी मनोकामनाएं पूरी करेंगे।
रोग शोक अपने सभी नष्ट करेंगे,
"चंदनामती" वे सुख भण्डार भरेंगे।।करो रे.।।3।।

भजन-39

तर्ज –जय जय माँ.....

क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।
श्री पुष्पदंत प्रभु का, मस्तकाभिषेक करो।।टेक.।।

काकंदी नगरी में, यह मंगल अवसर है।
जहाँ नूतन मंदिर में, नवमें तीर्थंकर हैं।।
उन तीर्थंकर पद में, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।1।।

गणिनी माँ ज्ञानमती, की सम्प्रेरणा मिली।
प्रभु जन्मभूमि में तब, पावन नवज्योति जली।।
उस तीरथ के पद में, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।2।।

प्रभु दर्श करें जो भी, वे स्वस्थ चिरायु रहें।
प्रभु प्रतिमा जग भर को, सुख शांति प्रदान करे।।
सुखकारी प्रभु पद में, वन्दन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।3।।

ग्रह शुक्र शांतिकारक, हैं पुष्पदंत स्वामी।
"चंदनामती" इनकी, भक्ती है कल्याणी।।
ग्रह शांति हेतु प्रभु को, वंदन सिर टेक करो।
क्षीरोदधि के जल से, मस्तकाभिषेक करो।।4।।

भजन-40

तर्ज –माई रे माई.....

पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि में, गूँज उठी शहनाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।टेक.।।

काकंदी वह पुण्यभूमि है, पुष्पदंत जहाँ जनमे।
जयरामा सुग्रीव मात-पितु हर्षे थे निज मन में।।
इन्द्रों की टोली स्वर्गों से, काकंदी में आई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियाँ की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।1।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा सबको।
जीर्णोद्धार विकास तीर्थ का, करो कराओ भक्तों।।
इसी भावना के कारण, उत्सव की घड़ियाँ आईं।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।2।।

पुष्पदंत प्रभु शुक्र-अरिष्ट, निवारक माने जाते।
भौतिक सम्पति पाने हेतू, भक्त शरण में आते।।

इसीलिए "चंदनामती", उन प्रभु की महिमा गाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।3।।

भजन-41

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले.....

शांतिनाथजी की जन्मभूमि को नमूँ,
भूमि को नमूँ, जन्मभूमि को नमूँ।।
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांति.।।टेक.।।

माता ऐरावति को स्वप्न दिखे जहाँ,
विश्वसेन पितु दान किमिच्छक दें जहाँ।
धनकुबेर ने रत्नवृष्टि की थी जहाँ,
उत्सव करने इन्द्र स्वयं आये जहाँ।।
उस तीर्थ को, वन्दन करो-2,
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांतिनाथ...।।1।।

ऐसे ही प्रभु कुंथु अरह के जन्म से,
इस नगरी के नर-नारी सब धन्य थे।
मात-पिता उनके भी सुर-नर वंद्य थे,
आत्मगुणों से जिनवर खुद अभिवंद्य थे।।
उस तीर्थ को, वंदन करो-2,
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांतिनाथ...।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती की प्रेरणा,
पाकर तीरथ में आई नवचेतना।
धरती का यदि स्वर्ग तुम्हें है देखना,
इसकी छवि "चंदनामती" बस देखना।।
उस तीर्थ को, वंदन करो-2
हस्तिनापुरी शुभ धाम है, जहाँ जम्बूद्वीप महान है।।शांतिनाथ...।।3।।

भजन-42

तर्ज–पंखिड़ा.....

पंखिड़ा तू उड़ के जाना स्वर्गपुरी में।
कहना इन्द्र से कि चलो मध्यलोक में।।पंखिड़ा.....।।टेक.।।

मध्यलोक में श्री जिनवरों के नाथ जन्मे हैं।
उनके माता-पिता और तीनों लोक हरषें हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।1।।

देखो मध्यलोक में ही सारे तीर्थक्षेत्र हैं।
प्रभु के मोक्ष से पवित्र यहीं सिद्धक्षेत्र हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।2।।

मध्यलोक में सदा ही साधु-सन्त रहते हैं।
विश्वशांति का सदा ही वे प्रयत्न करते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।3।।

स्वर्गपुरि से देव-इन्द्र मध्यलोक आते हैं।
"चंदनामती" वे जिनवरों के गीत गाते हैं।।
पूजा करो, भक्ति करो, वन्दना करो।
भक्ति करके प्रभु की आत्मशक्ति को भरो।।पंखिड़ा.....।।4।।

भजन-43

तर्ज –जिस गली में तेरा.....

जिस धरा से जुड़ी हैं कहानी कई,
वह धरा हस्तिनापुर की विख्यात है।
जिस धरा से जुड़ी अब कहानी नई,
वह धरा हस्तिनापुर की जग मान्य है।।टेक.।।

पहले जिनवर को आहार देकर प्रथम,
राजा श्रेयांसजी हो गये धन्य धन।। राजा...
जिससे मुनिमार्ग के खुल गये रास्ते,
वह धरा हस्तिनापुर की विख्यात है।।1।।

सात सौ मुनियों को बलि ने जब दुःख दिया।
आये विष्णू मुनि दूर सब कुछ किया।। आये...
रक्षाबन्धन का उत्सव चला तब से ही,
वह धरा हस्तिनापुर की विख्यात है।।2।।

शांति, कुंथू, अरहनाथ प्रभु के जहाँ,
चार कल्याणकों का महोत्सव मना।। चार...
तीन पदवी भी सार्थक हुई हैं जहाँ,
वह धरा हस्तिनापुर की विख्यात है।।3।।

भजन-44

तर्ज–मैंने पायल है छनकाई.....

आया अवसर स्वर्णिम आया,
जन-जन में है खुशियाँ लाया।
हो...हो...हो आया...हो आया...आया अवसर...।।
शांति-कुंथू-अर प्रभू महान, जिनके हुए हैं पंचकल्याणक।।टेक.।।

हस्तिनापुर में जन्मे, धरा यह पावन जग में,
ऐतिहासिक है तीरथ, इसको वंदन
इसको...
इसको धनद से खूब सजाया, चार कल्याणक यहाँ मनाया।
शांति-कुंथू-अर प्रभू महान, जिनके हुए हैं पंचकल्याण।।1।।

तीनों तीर्थंकर देखो, तीन पदवी के धारी,
कामदेव चक्रवर्ती, तीर्थकर ये
इकतिस...
इकतिस-इकतिस फुट की प्रतिमा, बनीं धरा पर प्रथम अनुपमा।
शांति-कुंथू-अर प्रभू महान, जिनके हुए हैं पंचकल्याण।।2।।

ज्ञानमती माताजी के, ज्ञान का अतिशय भारी,
जो कृतियाँ जग को दी हैं, सभी अनुपम
'चंदना'...
'चंदना' हम क्या करें बड़ाई, जैन संस्कृति की कीर्ति बढ़ाई।
शांति-कुंथू-अर प्रभू महान, जिनके हुए हैं पंचकल्याण।।3।।

भजन-45

तर्ज–अरे रे.....

करो रे अभिषेक प्रभू का, तीन तीर्थेश प्रभू का।
श्री शांति-कुंथू-अरहनाथ का।

शांतिनाथ शांतिनाथ बोलो सुबह शाम,
कुंथु अरहनाथ जी के पद में प्रणाम।
हस्तिनापुरी है इनका जनमस्थान,
इनका नाम जपने से बनते हैं काम।। करो रे...।।टेक.।।

चक्रवर्ती कामदेव तीनों आप हैं,
नवनिधि स्वामी तीनों प्रभु आप हैं।

सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् का रूप हैं,
राज्य भोग त्याग बने जिनवर आप।। करो रे...।।1।।

सतयुग में बनी थी इनकी कहानी,
कलियुग में भी देखो इनकी निशानी।
तीन-तीन प्रतिमाएँ बनी हैं अनोखी,
हस्तिनापुरी में पहली बार देखी।। करो रे...।।2।।

तीन प्रभु का महामस्तकाभिषेक है,
देखो कैसा पावन पंचामृत अभिषेक है।
मानो क्षीरसागर धरती पे लहरा रहा,
जग में नया संदेश पहुँचा रहा।। करो रे...।।3।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी की,
प्रेरणा मिली "चंदनामती" उन्हीं की।
उनकी दिव्यशक्ति से बनते सारे काम,
उन मातुश्री को मेरा शत शत प्रणाम।। करो रे...।।4।।

भजन-46

तर्ज–पारस प्रभू जी मेरी नैया लगा दो पार.....

शांतिनाथ की जन्मभूमि, हस्तिनापुरी विख्यात।
जम्बूद्वीप की रचना से, पावन हुई वो धरती आज।। टेक.।।

विश्वसेन नृप ऐरा देवी, का था महल जहाँ पर।
धनकुबेर ने पन्द्रह पहिने, रत्नवृष्टि की जहाँ पर।।
उसी तीर्थ का वंदन करके, करूँ जनम साकार।
जम्बूद्वीप की रचना से, पावन हुई वो धरती आज।।1।।

चक्रवर्ति अरु कामदेव की, पदवी उन्हें मिली थी।
आत्मज्ञान की ज्योती उनके, मन में यहीं जली थी।।

नश्वर जग को छोड़ा क्षण में, षट्खंड का साम्राज।
जम्बूद्वीप की रचना से, पावन हुई वो धरती आज।।2।।

शांति कुंथु अरनाथ प्रभू के, जन्म से है यह पावन।
तीनों प्रभु के चार चार, कल्याणक से मनभावन।।
तीनों ही तीर्थंकर चक्री, कामदेव से ख्यात।
जम्बूद्वीप की रचना से, पावन हुई वो धरती आज।।3।।

इसी भूमि पर ऋषभदेव का, हुआ प्रथम आहार।
जुड़ा यहीं से है समझो, रक्षाबंधन त्योहार।।
मुनि उपसर्ग दूर करने को, आये विष्णुकुमार।
जम्बूद्वीप की रचना से, पावन हुई वो धरती आज।।4।।

गणिनी माता ज्ञानमती, जब से तीरथ पर आईं।
नई-नई रचनाएं देकर, महिमा खूब बढ़ाई।।
करे "चंदनामती" वंदना, गुरु पद में भी आज।
जम्बूद्वीप की रचना से, पावन हुई वो धरती आज।।5।।

भजन-47

तर्ज–कभी राम बनके.....

शान्ति-कुंथु-अरहनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।टेक.।।

जैनधर्म के ये तीन तीर्थंकर।
हस्तिनापुर में जन्में तीनों जिनवर।।
तीन पदवी से सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।1।।

तीर्थंकर चक्रवर्ती कामदेव हैं।
ये तो सभी देवताओं के भी देव हैं।।

जग को करते ये सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।2।।

चौदह रत्न नव निधि के ये स्वामी।
छह खण्डों के अधिपति नामी।।
चक्ररत्न से सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।3।।

राज्य किया फिर तज दिया सबको।
वन में गये दीक्षा धारी किया तप को।।
केवलज्ञान से सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।4।।

जम्बूद्वीप में हैं इनकी बड़ी प्रतिमा।
"चंदनामति" बहुत जिनकी महिमा।।
इनसे तीर्थ है सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।5।।

भजन-48

तर्ज–जरा सामने तो आओ.....

जहाँ जन्मे तीन भगवान जी, श्री शांति कुंथु अरहनाथ जी।
उस हस्तिनापुरी की करूँ वंदना, जय हो तीन तीर्थंकर महान की।।टेक.।।

चौबिस तीर्थंकर में केवल, तीन तीर्थंकर ऐसे हैं।
जो तीर्थंकर-कामदेव-चक्री तीनों पद धरते हैं।।
उनके वैभव से धरती महान थी, जिसकी दूजी न कोई मिशाल थी।
उस हस्तिनापुरी की करूँ वंदना, जय हो तीन तीर्थंकर महान की।।1।।

चक्रवर्ति साम्राज्य त्यागकर, तीनों ने दीक्षा धारी।
योगलीन हो आत्मध्यान कर, केवलज्ञान निधी पा ली।।

उनकी समवसरण लक्ष्मी महान थी, जिसकी दूजी न कोई मिशाल थी।
उस हस्तिनापुरी की करूँ वंदना, जय हो तीन तीर्थंकर महान की।।2।।

ज्ञानमती माताजी ने, जहाँ जम्बूद्वीप बनाया है।
वहीं 'चंदनामती' तीन, प्रतिमा विशाल पधराया है।।
करो जय जय सभी जिनराज की, जिनवर के पिता अरु मात की।
उस हस्तिनापुरी की करूँ वंदना, जय हो तीन तीर्थंकर महान की।।3।।

भजन-49

तर्ज–माई रे माई.....

शांतिनाथ की जन्मभूमि से गूंज उठी शहनाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्व धर्म की जय, अहिंसा परम धर्म की जय।। टेक.।।

दुनिया के सब देश चाहते, आपस में मैत्री हो।
फिर भी क्यों आतंक बढ़ा है, यह विचार गोष्ठी हो।।
धर्म अहिंसा ने ही देश को.....
धर्म अहिंसा ने ही देश को, आजादी दिलवाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्वधर्म की जय, अहिंसा परम धर्म की जय.....।।1।।

जहाँ कभी प्रभु शांतिनाथ ने, छह खण्ड राज्य चलाया।
धर्मनीति अरु राजनीति का, सच्चा पाठ पढ़ाया।।
सत्य-न्याय की वही भूमि.....
सत्य न्याय की वही भूमि, हस्तिनापुरी कहलाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्वधर्म की जय, अहिंसा परम धर्म की जय..।।2।।

भारत की सर्वोच्च आर्यिका गणिनी ज्ञानमती माता।
राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने जोड़ा उनसे नाता।।

तभी "चंदनामती" देश ने.....
तभी चंदनामती देश ने, नव उपलब्धी पाई।
विश्वशांति के हेतु राष्ट्रपति जी ने ज्योति जलाई।।
जय हो विश्वधर्म की जय, अहिंसा परमधर्म की जय...।।3।।

भजन-50

तर्ज–सोनागिरी में सोना.....

शांति-कुंथु-अरनाथ की प्रतिमा प्यारी हैं।
उनके पंचकल्याण की महिमा न्यारी है।।
तीन लोक की रचना सुन्दर बन गई,
ज्ञानमती माताजी की भावना रही।।
शांति-कुंथु-अरनाथ की प्रतिमा प्यारी हैं।
उनके पंचकल्याण की महिमा न्यारी है।।टेक.।।

हस्तिनापुर तीर्थ की धरती हुई पावन।
जो तीन तीर्थंकर प्रभू के जन्म से है धन्य।।
त्रय बार पन्द्रह मास तक बरसे जहाँ रतन।
उस तीर्थ अरु तीर्थंकरों को हम करें वंदन।।
जिनकी महिमा तीन लोक में न्यारी है,
उनके पंचकल्याण की महिमा न्यारी है।।1।।

तीनों प्रभू हैं तीन पदवी से सहित कहे।
तीर्थेश एवं चक्रवर्ती कामदेव रहे।।
छह खण्ड की तब राजधानी हस्तिनापुर थी।
फिर चार-चार कल्याणकों से भी पवित्र हुई।।
सुरनर वंदित जिनकी माँ अति प्यारी हैं,
उनके पंचकल्याण की महिमा न्यारी है।।2।।

प्रतिमा विशाल बनीं प्रथम ही बार प्रभु त्रय की।
श्री शांतिनाथ व कुंथु अर तीनों जिनेश्वर की।।

इक साथ हो गया मस्तकाभिषेक तीनों का।
अब पूर्ण हो गया स्वप्न माता ज्ञानमति जी का।।
यही "चन्दनामती" खुशी अब भारी है,
उनके पंचकल्याण की महिमा न्यारी है।।3।।

भजन-51

तर्ज–वह शक्ति.....

हे विश्वशांति के उपदेष्टा, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।
हे धर्म अहिंसा के नेता, श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।टेक.।।

उपकार करूँ सारे जग का, यह भाव हृदय में आता है।
दुःखियों को देख हृदय रोता, मन करुणा से भर जाता है।।
दो शक्ति मुझे मैं सब जग का, दुख दूर कर सकूँ कभी स्वयं।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।1।।

भारत इक था गुलजार चमन, हिंसा ने उसको नष्ट किया।
सच्चाई के इस उपवन को, स्वार्थी तत्वों ने भ्रष्ट किया।।
ऐसी शक्ती हो प्रगट सभी में, विश्वशांति से करूँ चमन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।2।।

भगवान न यदि बन सकूँ तो मैं, इंसान की श्रेणी पा जाऊँ।
यदि साधु नहीं बन सकूँ तो मैं, सज्जन की श्रेणी पा जाऊँ।।
है भाव यही 'चंदनामती', खिल जावे भारत का उपवन।
हे विश्वशांति के उपदेष्टा,
श्री शांतिनाथ प्रभु तुम्हें नमन।।3।।

भजन-52

तर्ज–बहुत प्यार करते हैं हम.....

शांतिनाथ प्रभु को है, मेरा नमन।
चरण में समर्पित-2 हैं भक्ती सुमन।। शांतिनाथ.....।। टेक.।।

माँ ऐरादेवी के घर, रत्न खूब बरसे।
हस्तिनापुरी में पिता, विश्वसेन हरषे।।
ज्येष्ठ वदी चौदश को-2, हुआ प्रभु जनम।। शांतिनाथ.....।।1।।
चक्रवर्ती पाँचवें वे, शांतिनाथ स्वामी हैं।
कामदेव तीर्थंकर की, पदवी से नामी हैं।।
हस्तिनापुरी की धरती-2, हुई धन्य धन।। शांतिनाथ.....।।2।।
राजसुख को भोग उसको, त्याग दिया क्षण में।
बनकर के जिनवर राजे, समवसरण में।।
'चंदना' हुए वे अपने-2, आप में मगन।। शांतिनाथ.....।।3।।

भजन-53

तर्ज–बाहुबलि भगवान का महामस्तकाभिषेक.....

तीर्थंकरत्रय का महामस्तकाभिषेक,
जन्मभूमि में प्रथम बार, तीर्थंकरत्रय अभिषेक।
मस्तकाभिषेक, तीर्थंकरत्रय का महामस्तकाभिषेक।। टेक.।।
सोलहवें तीर्थंकर जिनवर शांतिनाथ कहलाये।
उनके जन्म में हस्तिनापुर में देव-इन्द्र सब आये।
राजा विश्वसेन हरषे थे, माँ ऐरा को स्वप्न दिखे थे।
रत्नवृष्टि करने आया था धनकुबेर सिर टेक।। मस्तकाभिषेक.।।1।।
इसी तरह से कुंथु-अरह जिनवर क्रम से जन्मे।
तीनों ही तीर्थंकर चक्री कामदेव पदयुत थे।।
इनके गौरव की गाथाएं, वर्णित हैं शास्त्रों में कथाएं।
चार कल्याण मनाने उनके, आए इन्द्र अनेक।। मस्तकाभिषेक.।।2।।

लाखों वर्षों बाद बनी, उनकी विशाल प्रतिमाएं।
जिन पर आज करें सब मिलकर, क्षीर कलश धाराएं।।
ज्ञानमती माताजी की महिमा, जिनकी कृपा से बनी हैं प्रतिमा।
वे प्रसन्न "चंदनामती", हो रहीं महोत्सव देख।। मस्तकाभिषेक.।।3।।

भजन-54

तर्ज–मंदिर में बाज रहे घंटे.....

स्वर्गों में बाज उठे बाजे, इन्द्रों ने मुकुट झुकाए हैं।
जिनवर का जनम हुआ भू पर, धनपति ने रतन लुटाए हैं।। टेक.।।

देवों का परिकर लेकर, इन्द्र-इन्द्राणी आए हैं-2 ।
देखा जो शिशु तीर्थंकर, नेत्र हजार बनाये हैं।
सुन्दरता लखकर प्रभुवर की, फिर भी तृप्ती ना पाये हैं।। जिनवर.....।।1।।

स्वर्गों के वस्त्राभूषण, इन्द्राणी ने पहनाए हैं।
रत्नों के पलने में फिर, जिनवर को सभी झुलाए हैं।।
प्रभु के संग खेलने को, सबके मन ललचाए हैं।। जिनवर.....।।2।।

माता का प्रभु दूध न पीते, फिर भी तो बलशाली हैं।
स्वर्गों से भोजन आता है, महिमा यही निराली है।।
'चंदनामती' उन प्रभुवर के, मात-पिता हर्षाये हैं।। जिनवर.....।।3।।

भजन-55

तर्ज–सपने में.....

प्रभु गर्भकल्याण में बरसे रतन की धारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।।टेक.।।

इक पुण्यशालिनी माँ जब, देखे सोलह सपने तब।
तीर्थंकर सुत को पाती, निज जन्म धन्य कर पाती।।

उस समय पिता का, खुल जाता भण्डारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।1।।

त्रय ज्ञान सहित तीर्थंकर, आते हैं माँ के गरभ जब।
माँ की महिमा बढ़ जाती, वे प्रश्न सहज सुलझातीं।।
अज्ञान तिमिर हर देतीं ज्ञान उजारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।2।।

प्रभु गर्भकल्याण मनाएं, हम भी ऐसा फल पाएं।
अब ऐसी माँ से जन्में, जो देखे सोलह सपने।।
"चंदनामती" यह उत्सव कितना प्यारा रे।
कहे धनकुबेर भी, धन्य है भाग्य हमारा रे।। प्रभु...।।3।।

भजन-56

तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे.....

मेरे घर जिनवर आए हैं-2
तीर्थंकर श्री शांतिनाथ मुनि बनकर आए हैं।।मेरे.।।टेक.।।

छह खण्ड धरा को जीता तो चक्रवर्ति कहलाए।
वैराग्य हुआ तो सब कुछ तज महामुनी कहलाए।।
मेरे घर जिनवर आए हैं।
सिद्धं नमः कह दीक्षा ग्रहण कर योगी कहाए हैं,
मेरे घर जिनवर आए हैं।।1।।

दीक्षा से पहले इनका भोजन था स्वर्ग से आता।
दीक्षा के बाद न इनका रह गया किसी से नाता।।
मेरे घर जिनवर आए हैं।
नवधा भक्ति से आहार ले वे मुनिवर कहाए हैं,
मेरे घर जिनवर आए हैं।।2।।

श्री शांतिनाथ महामुनिवर आहार हेतु जब निकले।
राजा सुमित्र मन्दरपुर का भाग्य खिला सचमुच में।।

मेरे घर जिनवर आए हैं।
दे खीर का आहार प्रथम फूले ना समाए हैं,
मेरे घर जिनवर आए हैं।।3।।

किया धनकुबेर ने रत्नादिक पंचाश्चर्य की वृष्टी।
"चन्दनामती" जय जय ध्वनि से गूँज उठी वह नगरी।।
मेरे घर जिनवर आए हैं।
आज हस्तिनापुर में महोत्सव के क्षण आए हैं,
मेरे घर जिनवर आए हैं।।4।।

भजन-57

तर्ज-एक परदेशी.....

तीर्थंकर प्रभू को केवलज्ञान हो गया,
आतमा परमातमा भगवान हो गया।।टेक.।।
घातिकर्म को क्षय करके प्रभु ने, दिव्यज्ञान को प्राप्त किया है।
...प्राप्त किया है.....
तत्क्षण धनद ने आकरके नभ में, समवसरण की रचना किया है।।
रचना.....
बारह सभा का उसमें निर्माण हो गया,
आतमा परमातमा भगवान हो गया।।1।।
मनपर्यय ज्ञानयुत गणधर मुनि, प्रभु दिव्यध्वनि का विस्तार करते।
.....विस्तार.....
ओंकार ध्वनि सुन अन्तर्मुहूर्त में, द्वादशांगमय जिनशास्त्र कहते।
जिन.....
दिव्यध्वनि से सबको सच्चाज्ञान हो गया,
आतमा परमातमा भगवान हो गया।।2।।
समवसरण में गाय-शेर व साँप-मोर सब एक साथ रहते। एक
साथ.....

अपने जनमजात वैर भी तजकर "चन्दनामती" वे प्रेम भाव धरते।।
प्रेमभाव.....
जग के सारे भव्यों का कल्याण हो गया,
आतमा परमातमा भगवान हो गया।।3।।

भजन-58

तर्ज-मेरे देश की धरती.....

हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप की रचना स्वर्णमयी है....
हस्तिनापुरी में.....।। टेक.।।
जहाँ खुले गगन में जम्बूद्वीप की, रचना जनमनहारी है।
वहीं जिनमंदिर में तेरहद्वीप की, रचना लगती प्यारी है।।
चउशत अट्ठावन चैत्यालय.....
चउशत अट्ठावन चैत्यालय में जिनवर बिम्ब विराज रहे।
उस गोलाकार विशाल जिनालय में स्वर्णिम जिनधाम रहे.....
हस्तिनापुरी में.....।।1।।
जहाँ ध्यान का मंदिर और कमल मंदिर रचनाएं प्यारी हैं।
वहीं तेरहद्वीप जिनालय में पर्वत नदियां भी न्यारी है।।
इक सौ सत्तर हैं समवसरण.....
इक सौ सत्तर हैं समवसरण, प्रतिमाएं चतुर्मुखी राजें।
बीचोंबिच देखो पंचमेरु पर्वतों की स्वर्ण छवी भासे.....
हस्तिनापुरी में.....।।2।।
इस मानव निर्मित स्वर्ग का सुख, सब सुख से ज्यादा सुखकर है।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती की, तप किरणों से मनहर है।।
हर शीश जहाँ झुक जाता है.....
हर शीश जहाँ झुक जाता है, दर्शन से अन्तर ज्योति जगे।
"चन्दनामती" इस तीर्थ की महिमा हर तीरथ से अलग लगे।
हस्तिनापुरी में.....।।3।।

भजन-59

तर्ज–सबसे बड़ी मूर्ति का.....

तीन लोक यात्रा करो, सिद्धशिला तक भी चलो,
सिद्ध प्रभु का दर्शन मिलेगा, आत्मतत्व का कमल खिलेगा।। टेक.।।

जम्बूद्वीप हस्तिनापुरी में।
रचनाएँ मनोहर बनी हैं।।
तीन लोक भी बना है सुन्दर।
जिसमें बने हैं महल व मंदिर।।

देखो जरा ठीक से, रचना को नजदीक से,
ज्ञानदीप मन में तब जलेगा, आत्मतत्त्व का कमल खिलेगा।। तीन.।।1।।

सात नरक अधोलोक में हैं।
जहाँ मात्र दुख ही अनंते हैं।।
जिनभवन भी हैं प्रथम धरा में।
खर व पंक भाग दिख रहा है।।

पाप ना कमाना कभी, नरक में न जाना कभी,
अशुभ कर्म तब नहीं बंधेगा, आत्मतत्त्व का कमल खिलेगा।। तीन.।।2।।

मध्यलोक जिनवरों का दर्शन।
करो ऊर्ध्वलोक का भी वंदन।।
सिद्धशिला अर्धचन्द्र सम है।
वहाँ राजे सिद्धों को नमन है।।

"चन्दनामती" चलो, सीढ़ियाँ चढ़े चलो,
दर्श सिद्ध प्रभु का अब मिलेगा, आत्मतत्त्व का कमल खिलेगा।। तीन.।।3।।

भजन-60

तर्ज–आओ बच्चों तुम्हें.....

आवो हम सब करें वन्दना, तेरहद्वीप महान की।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।। टेक.।।

तीनलोक में मध्यलोक है, द्वीप समुद्रों तक फैला।
द्वीप असंख्यों में तेरह-द्वीपों का वर्णन है करना।।
ढाई द्वीप में पाँच मेरु हैं, अस्सी चैत्यालय संयुत।
तीर्थंकर जन्माभिषेक से, पावन हैं वे पर्वत नित्य।।
उन पावन गिरिराजों को, वंदन करते मुनिराज भी।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।।1।।

तेरहद्वीपों में चउशत, अट्ठावन चैत्यालय होते।
स्वयंसिद्ध जिनप्रतिमाओं से, जिनमंदिर शोभित होते।।
इन सब मंदिर की ही पूजन, इन्द्रध्वज में करते हैं।
जिनमंदिर पर ध्वजा चढ़ाकर, प्रभु गुण कीर्तन करते हैं।।
कार्यसिद्धि के लिए अर्चना, करो सिद्ध भगवान की।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।।2।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने उसे बताया है।
हस्तिनापुर की धरती पर, उसको साकार कराया है।।
तेरहद्वीप जिनालय का, स्वर्णिम दिख रहा नजारा है।
धरती पर भूगोल जैन अब देख रहा जग सारा है।।
करे "चन्दनामती" वन्दना, अकृत्रिम जिनधाम की।
चार शतक अट्ठावन मंदिर, उनके जिन भगवान की।।
सिद्धों को नमन, सिद्धों को नमन-2।।3।।

भजन-61

तर्ज –पारस प्रभू जी मेरी.....

तेरहद्वीपों की रचना जो, बनी है पहली बार।
हस्तिनापुरी में देखो, फैला है उसका चमत्कार।। टेक.।।

इन्द्र जहाँ जा करके, तेरहद्वीप की पूजन करते।
जिनमंदिर पर ध्वज फहराके, जयजयकार उचरते।।
वही इन्द्रध्वज की पूजन, इस रचना में साकार।
हस्तिनापुरी में देखो, फैला है उसका चमत्कार।।1।।

ज्ञानमती माताजी ने, इन्द्रध्वज पाठ बनाया।
और उन्होंने तेरहद्वीप का, भी निर्माण कराया।।
जैन भूगोल बताने वाली, रचना की साकार।
हस्तिनापुरी में देखो, फैला है उसका चमत्कार।।2।।

पांच मेरु पर्वत विजयारध, औ वक्षारगिरी हैं।
भरतैरावत अरु विदेह में, समवसरण लक्ष्मी है।।
नंदीश्वर रचना में बावन, मंदिर हैं सुखकार।
हस्तिनापुरी में देखो, फैला है उसका चमत्कार।।3।।

तेरहद्वीप जिनालय का है, सुन्दर शिखर सुहाना।
जिनप्रतिमाओं सहित शिखर का, दर्शन कर सुख पाना।
यही ''चन्दनामती'' जगत में, है नरभव का सार।
हस्तिनापुरी में देखो, फैला है उसका चमत्कार।।4।।

भजन-62

तर्ज –श्याम तेरी बंशी.....

तेरहद्वीप रचना का देखो चमत्कार,
हस्तिनापुरी में हुई जो साकार।
ज्ञानमती माताजी का है ये उपकार,
छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।टेक.।।

ग्रंथों में इसका वर्णन है आता।
धरा पर बना है तो कितना सुहाता।।
चार सौ अट्ठावन हैं प्रतिमा सुखकार,
छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।2।।

देखो ठीक से तो सारा समझ में है आता।
ढाई द्वीप तक है मात्र मनुष्यों का नाता।।
वहीं पाँच मेरू बने हैं सुखकार,
छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।2।।

सिद्ध मंदिरों के साथ देवभवन राजें।
समवसरण एक शतक सत्तर विराजें।।
ज्ञानमती माताजी के ज्ञान का है सार,
छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।3।।

सोने जैसे चमक रहे मंदिर ये सारे।
वंदना करेंगे इनकी सूर्य चांद तारे।।
'चंदनामती' का नमन होगा स्वीकार,
छाया चमत्कार देखो छाया चमत्कार।।4।।

भजन-63

तेरे हाथों की लकीर बदलेगी, तेरी सोई तकदीर जगेगी,
जरा तू आजमा के देख ले,
मिल जाएगा-मिल जाएगा खोया खजाना, तू तेरहद्वीप आके देख ले।। टेक.।।

शांति कुंथु अरनाथ प्रभू की-2।
चार-चार कल्याणक की भूमी-2।।
तेरे ज्ञान की ज्योति जलेगी, अन्तर की कली खिलेगी,
तू ध्यान लगा के देख ले, मिल जाएगा.....।।1।।

जब से यहाँ आईं ज्ञानमती माता-2।
जम्बूद्वीप से जुड़ गया नाता-2।।
तुझे मेरु का दर्श मिलेगा, कर्मों का बंध खुलेगा,
तू पास में जा के देख ले, मिल जाएगा.....।।2।।

तेरहद्वीप की रचना निराली-2।
स्वर्णिम है इसकी छवि प्यारी-प्यारी-2।।

हैं इक्किस सौ जिनप्रतिमा, दर्शन की है बड़ी महिमा,
तू शीश झुका के देख ले, मिल जाएगा.....।।3।।

इक सौ सत्तर समवसरण हैं-2।
दर्शन से मिलता इच्छित फल है-2।।
"चन्दनामती" का कहना, प्रभु भक्ति में रत सब रहना,
तू पुण्य कमा के देख ले, मिल जाएगा.....।।4।।

भजन-64

तर्ज-काली तेरी चोटी है.....

दुनिया में भगवन्तों के मंदिर अनेक हैं।
लेकिन जम्बूद्वीप की रचना केवल एक है।।
हस्तिनापुरी में उसका करो दर्शन, जम्बूद्वीप को नमन।। टेक.।।

विद्वानों के मुख से सुना जाता था।
मन्त्रों में जम्बूद्वीप नाम आता था।
उनके अर्थ पे न गया किसी का भी मन, जम्बूद्वीप को नमन।।1।।

एक बार ज्ञानमती माताजी के ध्यान में।
श्रवणबेलगोला बाहुबली जी के पास में।।
सूर्य चाँद जैसा इक प्रकाश पुंज आया था।
उसने जम्बूद्वीप का दृश्य दिखाया था।।
शास्त्रों में भी देखा वही, झूम उठा मन, जम्बूद्वीप को नमन।।2।।

देखो कैसा जुड़ा प्राचीन इतिहास है।
हस्तिनापुरी में हुए राजा श्रेयांस हैं।।
कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व उन्हें स्वप्न हुआ था।
मेरू गिरि देख उन्हें बड़ा हर्ष हुआ था।।
प्रातःकाल ऋषभदेव आए थे महल में।
राजा दे आहार प्रथम बार खुश मन में।।
देवों ने भी आकर के लुटाये थे रतन, जम्बूद्वीप को नमन।।3।।

वही मेरूपर्वत साकार यहाँ हुआ है।
मानो नई कृति ने प्राचीनता को छुआ है।।
इसीलिए 'चंदना' यह धरती है चमन, जम्बूद्वीप को नमन।।4।।

भजन-65

तर्ज-चलत मुसाफिर.....

गंगा के तट पर बसी हुई है, हस्तिनापुर नगरिया।
गजपुर नगरिया, हस्तिनापुर नगरिया।।
गंगा के तट पर.....।। टेक.।।

आदी प्रभू का आहार हुआ था, सपना एक साकार हुआ था।
तबसे ही जग में अमर हुई है, हस्तिनापुर नगरिया।
गंगा के तट पर.....।।1।।

शांति कुंथु अर की कर्मभूमी, इन तीनों की यह साम्राज्य भूमी।
कई इतिहासों को कह रही है, हस्तिनापुर नगरिया।
गंगा के तट पर.....।।2।।

अनहोना संयोग बना है, सुन्दर जम्बूद्वीप बना है।
दुनिया की दृष्टी में छाय गई है, हस्तिनापुर नगरिया।
गंगा के तट पर.....।।3।।

वीरान तीरथ ने पाई धरोहर, ज्ञानमती माताजी की कृतियाँ मनोहर।
उनकी ही सच्ची तपोभूमि है, हस्तिनापुर नगरिया।
गंगा के तट पर.....।।4।।

महामहोत्सव पाँच वर्षों में होते, प्रतिवर्ष कितने ही उत्सव होते।
'चंदना' सबको बुलाय रही है, हस्तिनापुर नगरिया।
गंगा के तट पर.....।।5।।

भजन-66

तर्ज–हे वीर तुम्हारे.....

भगवान तुम्हारे दर्शन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।
चरणों में तुम्हारे वंदन से, निज अन्तर्मन खिल जाता है।। टेक.।।

जैसे अंगार दहकता है, जल सबकी प्यास बुझाता है।
सूरज जैसे देकर प्रकाश, धरती का तिमिर भगाता है।।
वैसे ही प्रभु मुख दर्शन से, मानो सब सुख मिल जाता है।
भगवान तुम्हारे दर्शन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।।1।।

दर्शन के भाव हुए जिस क्षण, उपवास का फल प्रारम्भ हुआ।
चलकर जब पहुँच गए मंदिर, लक्षोपवास फल सहज हुआ।।
प्रभु सम्मुख जा गद्गद मन से, भव भव का अघ धुल जाता है।
भगवान तुम्हारे दर्शन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।।2।।

भक्ती में शक्ति अचिन्त्य कही, यह भुक्ति मुक्ति सब कुछ देती।
जिनप्रतिमा भले अचेतन हैं, फिर भी चेतन को फल देतीं।।
पौराणिक कथन 'चंदनामति', कलियुग में भी फलदाता है।
भगवान तुम्हारे दर्शन से, सम्यग्दर्शन मिल जाता है।।3।।

भजन-67

तर्ज–अच्छा सिला दिया.....

हस्तिनापुरी के दर्शन करने जाना है।
शांतिनाथ प्रभु का वन्दन करने जाना है।। टेक.।।

यहाँ कभी शांतिनाथ प्रभु जनमे थे।
कुंथु अरहनाथ जी भी यहीं जनमे थे।।
उनकी पावन रज को नमन करके आना है।
हस्तिनापुरी के दर्शन करने जाना है।।1।।

इन्द्र यहाँ रत्नवृष्टि करने तब आता था।
सभी कल्याणक बड़े उत्सव से मनाता था।।
वही इतिहास सुमिरन करने जाना है।
हस्तिनापुरी के दर्शन करने जाना है।।2।।

जब से वहाँ जम्बूद्वीप रचना बनी है।
तब से हस्तिनापुर की कीरत बढ़ चली है।।
स्वर्ग जैसे सुख का अनुभव करने जाना है।
हस्तिनापुरी के दर्शन करने जाना है।।3।।

भव से जो तिरावे वही तीर्थ कहलाता है।
आत्मा ही सच्चा भावतीर्थ कहा जाता है।।
परमातम का पाठ वहाँ पढ़ने जाना है।
हस्तिनापुरी के दर्शन करने जाना है।।4।।

भजन-68

तर्ज–संतों का तुम्हें.....

धरती वन्दन करती है, अम्बर वन्दन करता है।
सूरज चाँद सितारों के संग, तुम पद में झुकता है।
धरती.....।। टेक.।।

तेरे जनम में इस धरती पर, रत्न बहुत बरसे थे।
बाँट-बाँट कर उन रत्नों को, मात पिता हरषे थे।।
इन्द्र बना किंकर चरणों में, सदा नमन करता है।
धरती.....।।1।।

एक रत्न भी उनमें से प्रभु, आज यदी मिल जाता।
तब यह सारा विश्व दिव्यता, को तेरी लख पाता।।
फिर भी हर कवि ग्रन्थों में, गुणगान तेरा करता है।
धरती.....।।2।।

कृत्रिम नवरत्नों को हम भी, तुझ पर बरसाएंगे।
तभी 'चंदनामती' प्रभू सम पद हम भी पाएंगे।।
तेरी यशगाथा सुनने को, हर पल मन करता है।
धरती.....।।3।।

भजन-69

तर्ज–रोम रोम से.....

जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा-हाँ दर्श तुम्हारा।
जम्बूद्वीप की रचना सा, ना देखा कहीं नजारा।। जनम.....।।टेक.।।

देखो तो स्वर्णाचल मेरू, कैसी छवि दरशाता।
सूर्य चन्द्र की किरणों से, प्राकृतिक न्हवन करवाता।।
गंगा सिन्धू नदियों की, बहती है निर्मल धारा।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा-हाँ दर्श तुम्हारा।।1।।

अपनी सुन्दरता के कारण, जम्बूद्वीप प्रसिद्ध हुआ।
श्वेत कमल का मंदिर अतिशय, चमत्कारमय सिद्ध हुआ।।
खिली हुई पंखुड़ियों से, यह मंदिर जग में न्यारा।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा-हाँ दर्श तुम्हारा।।2।।

ध्यान का मंदिर हर दर्शक का, मन आकर्षित करता है।
पास में जाकर कुछ क्षण, ध्यान लगाने का मन करता है।।
ध्यान में खोकर देखो मिलता, ज्ञान का रूप निराला।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा-हाँ दर्श तुम्हारा।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, ये अनमोल धरोहर हैं।
इसी एक शिल्पी की 'चंदनामती' सभी कृति सुन्दर हैं।।
इतिहासों में युग-युग तक, चमकेगा भाग्य सितारा।
जनम जनम में पाऊँ, जिनवर दर्श तुम्हारा-हाँ दर्श तुम्हारा।।4।।

भजन-70

तर्ज–जंगल जंगल धूम मची है.....

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर से, बात सुनी है।
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है।-2
जम्बूद्वीप से पता चली है, बात सुनी है, बात सुनी है।
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।टेक.।।

ज्ञानमती, माताजी की, प्रेरणा मिली है।
इसीलिये, भक्तों में नव, चेतना खिली है।-2
मैंने टी.वी. के माध्यम से, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।1।।

अधोलोक में, नरक भयावह, देखो कितने।
पापकर्म, करने वाले, जाते हैं उनमें।।
मध्यलोक से मोक्षगमन की, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।2।।

ऊर्ध्वलोक में, स्वर्ग देखकर, मन ललचाता।
पुण्यकर्म, करने से मानव, स्वर्ग में जाता।।
अर्धचन्द्रसम सिद्धशिला की, बात सुनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।3।।

यूँ तो सिद्ध, शिला से वापस, कोई न आता।
शाश्वतकाल, वहीं आत्मा, सुख-शांती पाता।।
उस सुख की तुलना संसार में, कहीं नहीं है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।41।।

कृत्रिम सिद्ध, शिला का भाव से, दर्शन करना।
सदा हृदय में, सिद्ध प्रभू का, सुमिरन करना।।
यही 'चंदनामती' आज, भावना बनी है।
अरे, तीन लोक की रचना सुन्दर वहाँ बनी है।-2
तीन लोक की रचना सुन्दर, वहाँ बनी है, वहाँ बनी है।।5।।

भजन-71

तर्ज–तेरी दुनिया से दूर.....

हस्तिनापुर मशहूर, इसकी ख्याति दूर-दूर, शांतिनाथ स्वामी।। टेक.।।

शास्त्र पुराणों में, इस धरती की कहानी, सुनी जाती थीं,
सुनी जाती थीं और पढ़ी जाती थीं।
शांतिनाथ, कुन्थू, अरह जिनवर की, कथाएँ आती थीं,
कथाएँ आती थीं, व्यवस्थाएँ आती थीं।।
तीनों कर्मों को चूर, गए मुक्तिपथ की ओर, शांतिनाथ स्वामी।।1।।

आदिनाथ प्रभु का, प्रथम आहार, इसी नगरी में हुआ,
नगरी में हुआ, इसी धरती पे हुआ।।
पर्व सलूनो, महाभारत का भी युद्ध, इसी धरती पे हुआ,
धरती पे हुआ, इसी धरती पे हुआ।।
इतिहासों में मशहूर, लेकिन ख्याति से थी दूर, शांतिनाथ स्वामी।।3।।

जब से हस्तिनापुर में, ज्ञानमती माँ के, चरण हैं पड़े,
चरण हैं पड़े, इनके चरण पड़े।
तब से सारे जंगल, उद्यान बन करके, सम्मान से बढ़े,
सम्मान से बढ़े, अपनी शान से खड़े।।
ज्योति फैली दूर-दूर, इसकी कथा मशहूर, शांतिनाथ स्वामी।।4।।

जम्बूद्वीप रचना भूगोल व जिनमंदिर का रूप बन गयी,
रूप बन गयी, उभय रूप बन गयी।

कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, तेरहद्वीप, तीनलोक की रचना बन गई,
रचना बन गयी, सुन्दरता बढ़ गयी।।
'चंदना' गुणों से पूर, गजपुर नगरी है मशहूर, शांतिनाथ स्वामी।।5।।

भजन-72

तर्ज–ऊँचे ऊँचे शिखरों वाला.....

ऊँचे मेरू पर्वत वाला है, जम्बूद्वीप हमारा।
द्वीप हमारा, सारे जग में निराला।। ऊँचे.....।। टेक.।।

शास्त्रों में इसकी रचना लिखी थी, केवलज्ञानी को सच में दिखी थी।
गजदंतगिरि से सुहाना है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।1।।

प्रभु गोमटेश्वर के श्री चरणों में, ज्ञानमती माता के आया था मन में।
उसका ही दर्शन कराता है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।2।।

गंगा सिन्धू नदियों की धारा, आर्यखंड में है विश्व सारा।
छह कुलपर्वत वाला है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।3।।

क्षेत्र विदेहों में तीर्थंकर हैं, भरतादि क्षेत्रों में भी मंदिर हैं।
दश कल्पवृक्षों से प्यारा है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।4।।

मेरू सुदर्शन में चार वन हैं, सोलह जिनालय से युक्त वन हैं।
मणियों की आभा वाला है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।5।।

पांडुकशिला पर होता न्हवन है, तीर्थंकरों को मेरा नमन है।
लवणोदधीयुत प्यारा है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।6।।

मेरू को स्वर्णाचल कहते हैं, ऋषिगण वहाँ हर पल रहते हैं।
"चंदनामती" यह निराला है, जम्बूद्वीप हमारा।। ऊँचे मेरू.....।।7।।

भजन-73

जम्बूद्वीप की महिमा अपरम्पार है,
हस्तिनापुर में छाई अजब बहार है।
शांतिनाथ का खुला जहाँ दरबार है,
ज्ञानमती का भरा ज्ञान भण्डार है।। टेक.।।

कोड़ाकोड़ी वर्ष पूर्व में, लिया जहाँ आहार प्रभू ने।
नृप ने स्वप्न सुमेरू देखा, किया अतिथि सत्कार समेता।।
आये थे चक्री भरतेश्वर, पूजन करने आदि जिनेश्वर।
स्वागत नृप श्रेयांस का कीना, दानप्रवर्तक पदवी दीना।।
तब से मुनि दीक्षा का हुआ प्रचार है,
हस्तिनापुर में छाई अजब बहार है।।1।।

इसीलिए इस वसुन्धरा पर, ज्ञानमती माता ने आकर।
जम्बूद्वीप रचना बनवाई, ज्ञान की ज्योति अखण्ड जलाई।
तीनमूर्ति मंदिर है सुन्दर, वृषभ, बाहुबलि, भरत, शिवंकर।
कमलासन पर पार्श्वनाथ हैं, शंखचिन्ह युत नेमिनाथ हैं।।
लगता मानो स्वर्ग यहीं साकार है,
हस्तिनापुर में छाई अजब बहार है।।2।।

एक कमल के फूल का मंदिर, वीर विराजे जिसके अन्दर।
महावीर का अतिशय भारी, वांछित फल पाते नर नारी।।
कल्पवृक्ष महावीर कहाते, त्रिशलानन्दन वीर कहाते।
जम्बूद्वीप को निरख निरख कर, तृप्त हो रहे मानो प्रभुवर।।
नमन "चंदनामती" तुम्हें शत बार है,
हस्तिनापुर में छाई अजब बहार है।।3।।

भजन-74

तर्ज-चंदना पुकारे स्वामी द्वार पे खड़ी.....

देखो महाभारत इसी भूमि से चला,
सीखो तुम भी इससे धर्मनीति की कला।
कौरव पाण्डवों के बीच युद्ध जो चला,
हस्तिनापुरी का इतिहास बदला।। टेक.।।

पाण्डुपुत्र, पाँचों पांडव तो, न्यायनीति पर अडिग रहे थे-अडिग रहे थे।
गान्धारी सुत, शत कौरव, अन्यायमूर्ति बन प्रगट हुए थे-प्रगट हुए थे।
न्याय अन्याय का सम्मेलन जो चला,
हस्तिनापुरी का इतिहास बदला।।1।।

कंचन कामिनी कीर्ति के हेतू, युद्ध सदा ही चलते रहे हैं-चलते रहे हैं।
सत्य मार्ग पर, चलने वाले, शत्रु सैन्य से विजयी हुए हैं-विजयी हुए हैं।
दुर्योधन दुशासन का कुचक्र जो चला,
हस्तिनापुरी का इतिहास बदला।।2।।

जुए के व्यसन से, धर्मराज भी, धर्म मार्ग से विचलित हुए थे-विचलित हुए थे।
राज्यपाट तज, पाँचों भाई "चन्दनामती" देखो वन में गये थे-वन में गये थे।
द्रौपदी सती को दुशासन ने था छला,
हस्तिनापुरी का इतिहास बदला।।3।।

भजन-75

तर्ज-इस जग में जो आया उसे.....

यह ज्ञानज्योति सर्वदा जलती ही रहेगी।
अज्ञान अन्धकार को हरती ही रहेगी।।टेक.।।

इस ज्योति के भ्रमण ने जम्बूद्वीप बताया।
करणानुयोग शास्त्र का सिद्धान्त सुनाया।।

यह वीर की.....
यह वीर की वाणी सदा चलती ही रहेगी-2
अज्ञान अन्धकार को हरती ही रहेगी।। यह ज्ञानज्योति.....।।1।।

इक स्वप्न कोटि वर्ष पूर्व नृप ने था देखा।
पर्वत सुमेरु जिसपे प्रभु का न्वहन हुआ था।।
उस मेरु की.....
उस मेरु की साकारता वहाँ आज मिलेगी-2
अज्ञान अन्धकार को हरती ही रहेगी।। यह ज्ञानज्योति.....।।2।।

वह हस्तिनापुरी जहाँ चक्रीश थे जन्मे।
शान्तीश प्रभु का राज्य जिसे देव भी नमें।।
तीर्थस्थली.....
तीर्थस्थली की कांति यों बढ़ती ही रहेगी-2
अज्ञान अन्धकार को हरती ही रहेगी।। यह ज्ञानज्योति.....।।3।।

माँ ज्ञानमती से ये ज्ञानदीप है जला।
अनुपम विषय जो 'चंदनामति' विश्व को मिला।।
यह दीपशिखा.....
यह दीपशिखा सर्वदा जलती ही रहेगी-2
अज्ञान अन्धकार को हरती ही रहेगी।। यह ज्ञानज्योति.....।।4।।

भजन-76

तर्ज-ज्योति से ज्योति.....

ज्योति से ज्योति जलाते चलो, ज्ञान की ज्योति जलाते चलो।
सत्य अहिंसा अनेकांतमय, वीर की वाणी सुनाते चलो।। टेक.।।

जम्बूद्वीप विशद रचना का, रूपक धरती पर आया।
हस्तिनागपुर पावन तीरथ, का गौरव द्विगुणित पाया।।
मेरु के दर्शन कराते चलो, ज्ञान की ज्योति जलाते चलो।।1।।

देखो यह सुन्दर श्रीदेवी, दिव्य कमल के बीच रहे।
यह देखो गंगा की धारा, आदि ब्रह्म के शीश बहे।।
क्षेत्र विदेह बताते चलो, ज्ञान की ज्योति जलाते चलो।।2।।

ज्ञानमती माताजी की यह, ध्यान साधना फल लाई।
जग उपकृत चन्दनामती है, ऐसी अद्भुत निधि पाई।।
लवणोदधि में नहाते चलो, ज्ञान की ज्योति जलाते चलो।
ज्योति से ज्योति जलाते चलो, ज्ञान की ज्योति जलाते चलो।।3।।

भजन-77

तर्ज-छोटे-छोटे भाइयों.....

जम्बूद्वीप विश्व की है, एक रचना।
इससे बढ़ी हस्तिनापुरी की महिमा।।
उसमें ऊँचे मेरु पर्वत पे चढ़ना।
अपनी इच्छाएं सभी पूरी करना।। टेक.।।

जिस धरती पर रहते हम, उसकी ही एक रचना है।
ग्रन्थ पुराणों में वर्णित भूगोल की ही यह घटना है।।
भूले इतिहासों को याद करना,
इससे बढ़ी हस्तिनापुरी की महिमा।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमती, की प्रेरणा मिली सुन्दर।
तभी तो जम्बूद्वीप में लहरा, रहा है भक्तों का समन्दर।।
'चंदनामती' यह महा तीर्थ समझना,
इससे बढ़ी हस्तिनापुर की महिमा।।2।।

वहाँ कहीं प्रभु भक्ति करो, ध्यान से आतमशक्ति भरो।
श्री सुमेरु पर्वत पर चढ़कर, सिद्ध प्रभू के दर्श करो।।
धरती का स्वर्ग इसे समझना,
इससे बढ़ी हस्तिनापुरी की महिमा।।3।।

भजन-78

तर्ज–मेरे देश की धरती सोना उगले.....

जय ज्ञान की ज्योति अमर विश्व में नव प्रकाश फैलाए।
जय ज्ञान की ज्योति.....।। टेक.।।

जैनी संस्कृति का दिग्दर्शक यह जम्बूद्वीप सुहाना है।
हस्तिनापुरी की पुण्य धरा पर इसका रूप दिखाना है।।
देखा जहाँ भव्य जिनालय से शोभित सुमेरु मन भाए।
जय ज्ञान की ज्योति.....।।1।।

सागर सुमेरु वन निर्झर से युत दिव्य कमल जिनमंदिर है।
बत्तीस विदेह नगरियों में विहरण करते तीर्थंकर हैं।।
गंगा सिन्धू की धारा से छह खण्ड सहज बन जाएँ।
जय ज्ञान की ज्योति.....।।2।।

दर्शन सिद्धान्त खगोल और भूगोल हमें बतलाते हैं।
माँ ज्ञानमती के सदृश ही कुछ खोज करो सिखलाते हैं।।
मिथ्यातम का क्षय करे 'चंदनामती' ज्योति प्रगटाएँ।
जय ज्ञान की ज्योति.....।।3।।

भजन-79

तर्ज–जिस गली में तेरा.....

जिस धरा पर सदा न्याय की जय हुई,
वह धरा पांडवों की विजयभूमि है।
जिस धरा पर न अन्याय विजयी हुआ,
कौरवों के पराजय की वह भूमि है।।टेक.।।
हस्तिनापुर बनी राजधानी कभी,
कौरवों पांडवों की निशानी कभी-2

लाख के घर में जलते हुए बच गए।
वह धरा पांडवों की विजयभूमि है।।1।। जिस धरा.....

द्यूत क्रीड़ा युधिष्ठिर ने खेली जहाँ,
राज्य भी हार आपत्ति झेली जहाँ।-2
द्रौपदी की जहाँ शील रक्षा हुई,
वह धरा पांडवों की विजयभूमि है।।2।। जिस धरा.....

अन्त में युद्ध का भी, बिगुल बज उठा,
दोनों पक्षों का संग्राम दल चल पड़ा।-2
अंत कौरव का हो न्याय जीता जहाँ,
वह धरा पांडवों की विजयभूमि है।।3।। जिस धरा.....

राज्य कर पाँचों पाण्डव ने दीक्षा लही,
गिरि शत्रुंजय पे उनकी परीक्षा हुई।-2
कुर्युधर ने किया अग्नि उपसर्ग था,
वह धरा पांडवों की विजयभूमि है।।4।। जिस धरा.....

तीन शिव पा गए दो ने स्वर्ग लहा,
वे भी पाएंगे निर्वाण नरभव में आ।-2
"चन्दनामति" बने कर्मविजयी जहाँ,
वह धरा पांडवों की विजयभूमि है।।5।। जिस धरा.....

भजन-80

तर्ज–है प्रीत जहाँ की.....

हैं स्वयं सिद्ध की मूर्ति जहाँ, हम उसकी बात बताते हैं।
हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप के, दर्शन चलो कराते हैं।।टेक.।।

तीनों लोकों में मध्यलोक के, अन्दर द्वीप असंख्य कहे।
उनमें से तेरहद्वीपों की, रचना में ही जिनबिम्ब रहें।।

चउशत अट्ठावन अकृत्रिम, मंदिर की कथा सुनाते हैं।
हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप के, दर्शन चलो कराते हैं।।1।।

ये रचनाएँ जिनशास्त्रों में श्री ज्ञानमती माता ने पढ़ी।
बस इसीलिए तो जम्बूद्वीप व तेरहद्वीप की कृती बनी।।
जो बात तुम्हें मालूम न थीं, उनका परिचय करवाते हैं।
हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप के, दर्शन चलो कराते हैं।।2।।

जहाँ ढाईद्वीप में पंचमेरु, इक सौ सत्तर हैं समवसरण।
लगता है जीवन सफल हुआ, करके इस रचना का दर्शन।।
"चन्दनामती" धरती पर देखो, स्वर्ग तुम्हें दिखलाते हैं।
हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप के, दर्शन चलो कराते हैं।।3।।

हर कार्यसिद्धि के लिए सदा, सिद्धों का सुमिरन किया करो।
इस तेरहद्वीप जिनालय के, जिनवर का वंदन किया करो।।
मनवांछित फल की प्राप्ति करो, हम यही भावना भाते हैं।
हस्तिनापुरी में तेरहद्वीप के, दर्शन चलो कराते हैं।।4।।

भजन-81

तर्ज–सुमेरु गिरि पर मस्तकाभिषेक.....

सुमेरु गिरि पर मस्तकाभिषेक,
शांतिनाथ जिनराज का।.....शांतिनाथ जिनराज का।।टेक.।।
पूर्व दिशा में सूरज जैसे।।हो.....SS
ऐरादेवी के सुत वैसे।।हो.....SS
विश्वसेन के लाल का,
शांतिनाथ जिनराज का।।सुमेरु गिरि.....।।1।।
तीर्थंकर बन तीर्थ चलाया।।हो.....SS
धर्म तीर्थ का अर्थ बताया।।हो.....SS
तभी खुला शिवमार्ग था,
शांतिनाथ जिनराज का।। सुमेरु गिरि.....।।2।।

शांतिनाथ की सुन्दर प्रतिमा।।हो.....SS
कहती मानो निज गुण गरिमा।।हो.....SS
अभिषव उन भगवान का,
शांतिनाथ जिनराज का।।सुमेरु गिरि.....।।3।।
ज्ञानमती माताजी के मन में।।हो.....SS
इक विचार आया चिन्तन में।।हो.....SS
उत्सव हो जिननाथ का,
शांतिनाथ जिनराज का।।सुमेरु गिरि.....।।4।।
प्रभु के तन पर बहती धारा।।हो.....SS
लगे "चन्दना" क्षीर की धारा।।हो.....SS
न्हवन करो भगवान का,
शांतिनाथ जिनराज का।।सुमेरु गिरि.....।।5।।

भजन-82

तर्ज–राम जी की सेना चली.....

जय हो शांतिनाथ-2, जय हो शांतिनाथ-2,
जय शांतिनाथ, जय शांतिनाथ-2।
विश्व में शांति हो-2, एक नई क्रांति हो-2,
सब मिल प्रयास करो, जग में प्रकाश भरो-2 ।।
जय हो शांतिनाथ-2, अहिंसा हो साथ में-2,
संगठन हो हाथ में-2,
अपना प्रयास करो, जग में प्रकाश भरो-2 ।।टेक.।।

धर्म अहिंसा का पावन, सन्देश जहाँ से गूंजा था,
सन्देश जहाँ से गूंजा था।
हस्तिनापुर की वह धरती, इंद्र भी आकर छूता था,
इंद्र भी आकर छूता था।।

उस रज को जब ज्ञानमती, माताजी ने स्पर्श किया,
माताजी ने स्पर्श किया।
अपनी त्याग तपस्या से, इस धरती को स्वर्ग किया,
इस धरती को स्वर्ग किया।।
स्वर्ग जैसी शांति हो-2, मन कभी न भ्रान्त हो-2,
देश का विकास करो, जग में प्रकाश भरो-2 ।।
जय हो शांतिनाथ-2, जय हो शांतिनाथ-2 ।।1।।

यह नगरी वह तीरथ है, जहाँ तीर्थंकर त्रय जन्मे थे,
तीर्थंकर त्रय जन्मे थे।
यह संस्कृति की कीरत है, जहाँ चक्रवर्ति भी रहते थे,
चक्रवर्ति भी रहते थे।।
रक्षाबंधन और महाभारत की घटना घटी जहाँ,
घटना घटीं जहाँ।
"चंदनामती" बस धर्म न्याय को, सदा विजयश्री मिली जहाँ,
सदा विजयश्री मिली जहाँ।।
सबके मन में शांति हो-2, कहीं न अशांति हो-2,
ऐसा प्रयास करो, जग में प्रकाश भरो-2 ।।
जय हो शांतिनाथ-2, जय हो शांतिनाथ-2 ।।2।।

भजन-83

तर्ज–चल दिया छोड़ घर बार.....

यह जम्बूद्वीप महान्, बनाया आन, ज्ञानमति माता।
हो गया जगत विख्याता।। टेक.।।

नगरी प्राचीन सुहानी थी, छाई उसमें वीरानी थी,
इतिहास यही हस्तिनापुरी का आता।
हो गया जगत विख्याता।।1।।

पच्चीस सौवां निर्वाणोत्सव,
बन गया तीर्थ का दीपोत्सव,
तब आईं संघ सह यहाँ ज्ञानमति माता।
हो गया जगत विख्याता।।2।।

इतिहासों से है भरा हुआ,
युग की आदी से जुड़ा हुआ,
आदीश्वर के आहार प्रथम से ख्याता।
हो गया जगत विख्याता।।3।।

रक्षाबंधन का पर्व यहीं,
महाभारत का भी युद्ध यहीं,
अन्याय न्याय से हुआ पराजित आता,
हो गया जगत विख्याता।।4।।

श्री शांति, कुंथु, अर तीर्थंकर,
कल्याणक चार हुए सुखकर,
इतिहास पुराणों से यह जाना जाता,
हो गया जगत विख्याता।।5।।

भजन-84

तर्ज–मिलो न तुम तो.....

कमल के अन्दर, कमल के ऊपर, वीरप्रभू जी विराजे
अतिशय छा गया है-2 ।। टेक.।।
कमल फूल जैसा मंदिर, अभिनव कला को दर्शाता है। हो.....
श्वेत कमल मंदिर ऊपर, केसरिया झण्डा लहराता है।। हो.....
अलग-अलग पंखुड़ियों से, वह खिला पुष्प मन भाए
अतिशय छा गया है।।1।।

सात हाथ ऊँची मनहर, महावीर की खड्गासन प्रतिमा है। हो.....
मन्द-मन्द मुस्कुराती, मानो कहती सचमुच निज की महिमा है।। हो.....
बीचोंबिच, कमलासन ऊपर, खड़े सुगुण रत्नाकर
अतिशय छा गया है।।2।।

महावीर बाबा तेरे द्वार पे जो इच्छा लेकर आता है। हो.....
कल्पवृक्ष वीरा तेरे, सम्मुख उसे सब कुछ मिल जाता है।। हो.....
भक्त तेरी, भक्ती करने को, हस्तिनागपुर आते
अतिशय छा गया है।।3।।

चरणकमल तेरे भगवन, हृदय कमल में हम अपने ध्याएंगे। हो.....
तब तक करेंगे भक्ती, जब तक न तुझ सा हम बन जाएंगे।। हो.....
करे 'चंदनामती' वंदना, वीर करो भव पार
अतिशय छा गया है।।4।।

भजन-85

तर्ज–हम लाये हैं.....

शास्त्रों से लाई जम्बूद्वीप को निकाल के।
माँ ज्ञानमती की कृती है बेमिसाल ये।।टेक.।।

इतिहास के पन्नों में छिपी थी जो कहानी।
आचार्य उमास्वामि यतीवृषभ की वाणी।।
भूगोल वो साकार हुआ वर्तमान में।
माँ ज्ञानमती की कृती है बेमिसाल ये।।1।।

उपजाऊ भूमि बीज को पाकर के खिल उठी।
तब हस्तिनापुर की धरा प्रसन्न हो उठी।।
छाई है सूर्य की तरह दुनिया के भाल पे।
माँ ज्ञानमती की कृती है बेमिसाल ये।।2।।

जिनवर के सिद्धकूट अठत्तर यहाँ बने।
देवों के भवन एक सौ तेइस भी हैं बने।।

इन सबमें जैनमूर्तियाँ विराजमान हैं।
माँ ज्ञानमती की कृती है बेमिसाल ये।।3।।

मेरू की सीढ़ियाँ सभी उपवन को दिखातीं।
पांडुकशिला प्रभु के न्हवन से पूज्य कहाती।।
चढ़ने से इस पे होती ना किंचित् थकान है।
माँ ज्ञानमती की कृती है बेमिसाल ये।।4।।

जब तक रहे आकाश में सूरज व चन्द्रमा।
जयशील हो तब तक ये जम्बूद्वीप 'चंदना'।।
देता रहे भूगोल प्रेरणा त्रिकाल में।
माँ ज्ञानमती की कृती है बेमिसाल ये।।5।।

भजन-86

तर्ज–तीरथ करने चली सही.....

तीरथ करने चले सभी श्रीक्षेत्र हस्तिनापुरिवर को।
प्रभु के जन्म न्हवन से पावन श्रीसुमेरुगिरि वन्दन को।। टेक.।।

जम्बूद्वीप मध्य इक स्वर्णाचल मेरू कहलाता है।
सूर्यचन्द्र की प्रदक्षिणा रात्री-दिन भेद कराता है।।
जिन बालक के जन्म न्हवन से पावन उस गिरि अनुपम को।
प्रभु के जन्म न्हवन से पावन श्रीसुमेरुगिरि वन्दन को।।1।।

इस गिरि की चारों विदिशा में, गजदंताचल चार कहें।
सबमें जिनवर मंदिर जिनमें, चैत्य एक सौ आठ रहें।।
चैत्य वन्दना करने को, सब चले हस्तिनापुरिवर को।
प्रभु के जन्म न्हवन से पावन, श्रीसुमेरुगिरि वन्दन को।।2।।

हस्तिनापुर की पावन भू पर, यह रचना कृत्रिम पाई।
ज्ञानमती माताजी के शुभ, ध्यान की ज्योति ज्वलित आई।।

इक दिन ध्यान किया बाहूबलि, गोमटेश के चरणन को।
प्रभु के जन्म न्हवन से पावन, श्रीसुमेरुगिरि वन्दन को।।3।।

देश विदेशों के जिज्ञासू, शोध हेतु यहाँ आते हैं।
जैन शास्त्र का मर्म समझकर, कुछ नवीनता पाते हैं।।
'चंदनामति' इतिहास बताता, पावनता के कर्मन को।
प्रभु के जन्म न्हवन से पावन, श्रीसुमेरुगिरि वन्दन को।।4।।

भजन-87

मेरु सुदर्शन पर करो मस्तकाभिषेक-2
जन्मकल्याणक का प्रतीक जिनवर का महाभिषेक।।
मस्तकाभिषेक।।टेक.।।

आदिनाथ से महावीर तक जितने जिनवर हैं।
सबके अभिषेकों से पावन सुमेरु गिरिवर है।।
क्षीर सिन्धु का निर्मल जल ले,
इन्द्र सहस्र कलशों में भरते।
एक साथ सौधर्म इंद्र ले, ढोरें कलश अनेक।।मस्तकाभिषेक.।।1।।

उसी मेरु की प्रतिकृति, धरती पर साकार बनी।
पांडुक आदि शिलाएँ, आगम के अनुसार बनीं।।
हस्तिनागपुर में यह रचना,
बनी विश्व में प्रथम अनुपमा।
ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा रही बस एक।।मस्तकाभिषेक।।2।।

पाँच वर्ष में इंतजार की, घड़ियाँ आती हैं।
महामहोत्सव में भक्ती से जनता आती है।।
जम्बूद्वीप देखकर सच में,
आनंदित होते सब मन में।
सभी 'चन्दनामती' प्रभू पर, ढोरें कलश अनेक।।मस्तकाभिषेक।।3।।

भजन-88

तर्ज –मेला मइय्या दा.....

अहिंसा की जय हो-2, सत्यमेव जयते।
अहिंसा ही सबको-2, शांति और सुख दे।।टेक.।।
सारे जग में शांति और सुख इसके ही बल पर हो,
अहिंसा की जय हो-2।।टेक.।।

जब-जब धरती पर अन्याय तथा हिंसा भड़की है।
तब-तब सन्त महापुरुषों से धन्य हुई धरती है।।
इसीलिए सर्वदा न्याय की होती रही विजय है.....अहिंसा की जय हो....।।1।।

इन्सानों में ही हैवान का रूप छिपा रहता है।
उनमें ही भगवान का सच्चा रूप कभी दिखता है।।
मानव में मानवता का गुण जैसे बने प्रगट हो...अहिंसा की जय हो।।2।।

ज्ञानमती माता का आशीर्वाद है राष्ट्रपति को।
प्रतिभा पाटिल जी आईं, सम्मेलन उद्घाटन को।।
जिओ और जीने दो यह "चंदनामती" सुखप्रद हो....अहिंसा की जय हो।।3।।

भजन-89

तर्ज–चूनरिया शिवधाम की.....

ताल मृदंग बजायके, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।
शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ, हस्तिनापुर को शीश झुकाओ।। ताल मृदंग...।।टेक.।।

प्रथम जिनेश्वर ऋषभदेव ने, यहीं प्रथम आहार लिया।
नृप श्रेयांस ने नवधाभक्ति से, इक्षूरस आहार दिया।।
उनकी गाथा याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।1।।

इसी धरा पर शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभु ने जनम लिया।
धनकुबेर ने रत्नवृष्टि कर अपना जीवन धन्य किया।।
उनके युग को याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।2।।

इन तीनों तीर्थंकर के, यहाँ चार-चार कल्याण हुए।
फिर सम्मेदशिखर पर्वत से, कर्म नाश शिवधाम गए।।
उनका जीवन याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।3।।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में तीन विशाल मूर्तियाँ हैं।
जैनधर्म का प्रमुख केन्द्र यह कहे धर्म की महिमा है।।
इनका वैभव याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।4।।

इसी हस्तिनापुर में सात शतक मुनि पर उपसर्ग हुआ।
विष्णु कुमार मुनीश्वर ने उनके उपसर्ग को दूर किया।।
रक्षाबन्धन याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।5।।

कौरव-पाण्डव का महाभारत युद्ध हुआ इस धरती पर।
पाण्डव विजयी हुए, न्याय का बिगुल बजा इस ही भू पर।।
उनका शासन याद कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।6।।

जम्बूद्वीप की रचना ने, इतिहास पुनः जीवन्त किये।
देश विदेशों के यात्रीगण, आते हैं दर्शन करने।।
उस सौंदर्य को देखकर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।7।।

गणिनी ज्ञानमती जी ने, जंगल में स्वर्ग बनाया है।
तभी "चंदनामती" तीर्थ ने, स्वर्णिम गौरव पाया है।।
इनके ज्ञान को देखकर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।8।।

स्वर्णिम तेरहद्वीप की रचना, देखके जनता झूम उठी।
इक्किस सौ सत्ताइस प्रतिमाओं की जय जय गूँज उठी।।
उसका अतिशय देखकर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।9।।

तीनलोक की रचना कैसी, लगती प्यारी-प्यारी है।
इसका दर्शन करके सब, हर्षित होते नर-नारी हैं।।
सिद्धशिला का दर्श कर, सब नाचो गाओ रे, शांतीनाथ प्रभू गुण गाओ।।10।।

भजन-90

तर्ज –फूलों सा.....

इस युग की पहली कृती, सौन्दर्य की खान है।
जम्बूद्वीप नाम है, विश्व में महान है, गजपुर की ये शान है।।इस युग...।।टेक.।।

कलियुग का मानव है भाग्यशाली,
मेरु पे चढ़ने का अवसर मिला।
माँ ज्ञानमती जी का उपकार है यह,
भूगोल का ज्ञान सबको मिला।

हस्तिनापुरी में, देखो सुरगिरी पे, पाण्डुक शिलाएँ बनीं चार हैं।
जिनवर के अभिषेकों से, पावन वो स्थान है।
जम्बूद्वीप नाम है, विश्व में महान है, गजपुर की ये शान है।।इस युग.।।1।।

जम्बू व शाल्मलि वृक्षों में देखो,
जिनवर स्वयंसिद्ध के बिम्ब हैं।
लगता है उनमें जामुन लटकते,
सचमुच के पेड़ों के प्रतिबिम्ब हैं।।

क्षेत्र विदेहों के, मध्य नगरियों में, जिनवर सदा विहरण कर रहे।
सीमन्धर की वाणी यहाँ, खिरती परमधाम है।
जम्बूद्वीप नाम है, विश्व में महान है, गजपुर की ये शान है।।इस युग.।।2।।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में,
छह खंड का रूप दरशाया है।
विजयार्ध पर्वत पे चक्रवर्ती का,
अर्ध विजय झण्डा लहराया है।।

भोगभूमियों की, कर्मभूमियों की, 'चंदना' व्यवस्था बनी है वहाँ।
सब मिलकर, वंदन करो, मिट जाता अज्ञान है।
जम्बूद्वीप नाम है, विश्व में महान है, गजपुर की ये शान है।।इस युग.।।3।।

भजन-91

तर्ज –दिल्ली का कुतुबमीनार.....

देखो देखो देखो, जम्बूद्वीप देखो।
हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप देखो।।
द्वीप के बीच में सुमेरु देखो।
भद्रसाल और सौमनसं।
नन्दन वनों की बहार देखो।।
पाण्डुक वन के, जिनालय देखो।
सिद्धप्रतिमा का, नजारा देखो।।टेक.।।
भरत हैमवत आदि सात यह क्षेत्र हैं कितने प्यारे।
छह कुल पर्वत पर कमलों में देवी भवन निराले।।
क्षेत्र विदेह की बहार देखो।।
सीमंधर और युगमंधर।
करते हैं धर्म का प्रचार देखो।।देखो....।।1।।
गजदंतों पर जिनभवन अकृत्रिम अविकारी।
विजयारथ के जिनसदन सिद्धक्षेत्र सुखकारी।
एक एक जिनवर का द्वार देखो।।
पर्वत से आई गंगधार देखो।
महाप्रभू के मस्तक पर।
गिरती है गंगा की धारा देखो।।
वहाँ प्रभुवर का, नजारा देखो।
देखो देखो देखो, जम्बूद्वीप देखो।।2।।
हस्तिनागपुर में बनी रचना यही अनोखी
तीर्थंकर के कल्याणक से पावन धरा अनूठी
चक्री का वैभव अपार देखो।
शांतिप्रभू का दरबार देखो।।

आदीश्वर का हुआ आहार।
पांडव का राज साम्राज्य देखो।।
शांति प्रभुवर का नजारा देखो।
सिद्ध प्रतिमा का नजारा देखो।।देखो.....।।3।।
शांति कुंथु अरनाथ के गर्भ जन्म तप हुए यहाँ।
यहीं मुनी उपसर्गों से रक्षाबंधन शुरू हुआ।
नगरी बहुत प्राचीन देखो।
लगती है, "चन्दना" नवीन देखो।।
तीनलोक व कमल मंदिर।
तेरहद्वीप की बहार देखो।।
वहाँ प्रभुवर का नजारा देखो।
देखो देखो देखो, जम्बूद्वीप देखो।।4।।

भजन-92

तर्ज-चन्दा प्रभु के दर्शन करने.....

सब द्वीपों में पहला जम्बूद्वीप देखकर आएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे।।टेक.।।
सोलह चैत्यालय से शोभित गिरि की छटा निराली है।
चारों वन के चार तरफ में सिद्ध मूर्तियाँ प्यारी हैं।।
इनके दर्शन वंदन करके अतिशय पुण्य कमाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे।।1।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर के गर्भ जन्म तप हुए जहाँ।
उनकी पावन स्मृतियाँ चक्री पद का साम्राज्य जहाँ।।
हर मंदिर अद्भुत सुन्दर हैं उन दर्शन को जाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे।।

तीर्थंकर त्रय के कल्याणक चार हुए जनमनहारी।
उनकी भव्य विशाल हैं प्रतिमा, जिनका दर्शन सुखकारी।।

आदिनाथ का इक्षूरस आहार देखने जाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे।।

कमल जिनालय वीरप्रभू का शुभ संदेश सुनाता है।
भक्त प्रभू के चरणों में जा, इच्छित फल को पाता है।।

जिओ और जीने दो "चन्दनामती" वीर गुण गाएंगे।
श्री सुमेरुगिरि वंदन करने हस्तिनागपुर जाएंगे।।

भजन-93

तर्ज–आई आई अन्तर में.....

आओ आओ देखो तो ज्ञानी की महिमा,
शोर मचा चारों ओर,
आज मेरा नाच रहा मन मोर।। आओ.....।। टेक.।।

ज्ञान का सूरज चमका जो जग में,
एक नई कृति पाई है हमने,
पाई निधी बेजोड़।। आज मेरा.....।। आओ.....।।1।।

मेरू सुदर्शन का अतिशय है भारी,
जम्बूद्वीप की रचना है प्यारी,
छाई खुशी चारों ओर।। आज मेरा.....।। आओ.....।।2।।

दूर दूर से हैं भक्त आए,
चरणों में माता के शीश झुकाएं,
आनन्द से आतम विभोर।। आज मेरा.....।। आओ.....।।3।।

भजन-94

तर्ज –ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है.....

गंगा के तट पर बह रही है, ज्ञानगंगा की धारा।
ज्ञान की धारा, ज्ञानमती जी के द्वारा।।गंगा के तट पर.।।टेक.।।

वीरान नगरी का भाग्य खिला है, सानिध्य माता का जब से मिला है।
ज्ञान का दीप जलाय रही हैं, ज्ञानज्योती के द्वारा।।गंगा के तट.।।1।।

जम्बूद्वीप बना है जब से, जंगल में मंगल हुआ है तब से।
स्वर्ग की उपमा दिखाय रही है, रचनाओं के द्वारा।।गंगा के तट.।।2।।

जनता कहे ज्ञानमति जी की कृति है, माता कहें यह तुम्हारी कृती है।
आगम की रचना दिखाय रही है, जिन शास्त्रों के द्वारा।।गंगा के तट.।।3।।

नेता भी आते अभिनेता भी आते, जम्बूद्वीप को मस्तक झुकाते।
जीवन की बगिया महकती है, आशीषों के द्वारा।।गंगा के तट.।।4।।

सूरज की लाली स्वागत है करती, संध्या समय आरति करके कहती।
किरणें सुधा बरसाय रही हैं, निज प्रतिभा के द्वारा।।गंगा के तट.।।5।।

गंगा का जल इक नदिया का जल है, जम्बूद्वीप ज्ञानसरिता का फल है।
हस्तिनापुर में बह रही है, दोनों नदि की धारा।।गंगा के तट.।।6।।

कितनी ही कृतियाँ नूतन बनी हैं, मंदिर जिनालय की महिमा घनी है।
"चंदना" नगरी महक रही है, नंदनवन के द्वारा।।गंगा के तट.।।7।।

भजन-95

तर्ज–अरे रे.....

हस्तिनापुर है तीरथ, जैनशासन की कीरत,
धरती का स्वर्ग यह महान है।।टेक.।।

जब से जम्बूद्वीप का हुआ है निर्माण, तब से हस्तिनापुरी की बढ़ गई शान।
दुनिया में फैला हस्तिनापुरी का नाम, ऐसा इस तीर्थ को मिला है वरदान।।

हस्तिनापुर है तीरथ.....।।1।।
शांति-कुंथु-अरहनाथ जी के जन्म से, पावन हुई धरती माता पिता धन्य थे।
उनके चार-चार कल्याणक यहाँ हुए, पुनः शिखर जी से वे मोक्ष गये।।
हस्तिनापुर है तीरथ.....।।2।।
अन्य और कई इतिहास जुड़े हैं, ज्ञानमती माताजी ने कार्य किये हैं।
तभी इस तीर्थ का विकास हो गया, "चन्दनामती" सभी को ज्ञात हो गया।।
हस्तिनापुर है तीरथ.....।।3।।

भजन-96

तर्ज–चाँदनपुर के गाँव में.....

केशरिया परिधान में सब नाचो गाओ रे,
शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।
शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ, उनका उत्सव खूब मनाओ।।केशरिया.।।टेक.।।

जब गर्भकल्याणक आता, धनपती रतन बरसाता।
तुम भी रतन लुटाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।1।।

जब जन्मकल्याणक आता, जन्मोत्सव इन्द्र मनाता।
सब मिल खुशी मनाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।2।।

प्रभु दीक्षाकल्याणक में, ले गये पालकी वन में।
त्याग के भाव बनाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।3।।

जब ज्ञानकल्याणक आता, प्रभु समवसरण बन जाता।
ज्ञान का दीप जलाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।4।।

जब शिवपद पाया प्रभु ने, तब उत्सव किया इन्द्रों ने।
मोक्षकल्याण मनाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।5।।

तीनों के चार कल्याणक, हुए हस्तिनापुर तीरथ पर।
उनकी धूम मचाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।6।।

इनकी विशाल प्रतिमाएँ, बनीं जम्बूद्वीप प्रांगण में।
इनकी जय-जय गाओ रे, शांति-कुंथु-अरह गुण गाओ।।केशरिया...।।7।।

भजन-97

तर्ज-कांची हो कांची रे.....

सेना हो सेना चली चक्री सम्राट् की,
तीर्थेश श्री शांतिनाथ की।.....हो सेना.....
हस्तिनापुरी में शांतिनाथ जी हुए।
छह खण्ड जीत चक्रवर्ति वे हुए।।
सोलवें तीर्थेश वे, बारहवें चक्रीश थे, कामदेव पदवी भी साथ थी।.....
हो सेना.....।।1।।

उनके बाद कुंथुनाथ चक्री हुए।
वे भी तीर्थंकर कामदेव जी हुए।।
पुनः अरहनाथ में, अठारवें जिनराज में, तीनों ही पदवी साकार थीं।.....
हो सेना.....।।2।।

चक्ररत्न इनके आगे-आगे चल रहा।
हस्तिनापुरी में यह प्रवेश कर रहा।।
धरती-आकाश में, गूंजे जयकार है, तीनों प्रभू की एक साथ ही।.....
हो सेना.....।।3।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी से।
प्रेरणा मिली है चलो उत्सव करें।।
नगरी सजाय के, तोरण लगाय के, प्रभु की करो जयकार भी।.....
हो सेना.....।।4।।

इनकी भक्ति करके चक्रवर्ती बनो।
भौतिक सुख व संपदा के स्वामी बनो।।
"चंदनामती" सभी, कर लो प्रभु की भक्ति ही, शिवपथ का है यही सार भी।.....
हो सेना.....।।5।।

भजन-98

तर्ज-देखो तेरहद्वीप के अंदर.....

चक्रवर्ती की राजसभा में, राजा आए बड़े-बड़े।
इन्द्रदेव सब किंकर बनकर, स्तुति करते खड़े-खड़े।।चक्रवर्ती.....

देखो शांतिनाथ जिनवर ने, छह खंड वसुधा जीत लिया।
चक्ररत्न के द्वारा उनने, चक्रवर्ति पद प्राप्त किया।।
उनके चक्ररत्न के आगे, झुक गये राजा बड़े-बड़े।
चक्रवर्ती की राजसभा में, राजा आए बड़े-बड़े।।1।।

ये तो चक्रवर्ति तीर्थंकर, कामदेव कहलाते हैं।
भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों सुख इनको भाते हैं।।
इनके सम्मुख भेंट चढ़ाने, राजा आये बड़े-बड़े।
चक्रवर्ती की राजसभा में, राजा आए बड़े-बड़े।।2।।

आज पुनः हस्तिनापुरी में, वही दृश्य दिखलाए हैं।
शांतिनाथ की सभा में राजा, देश देश से आए हैं।
आशिर्वाद मिले हम सबको, विनती करते खड़े-खड़े।
चक्रवर्ती की राजसभा में, राजा आए बड़े-बड़े।।3।।

भजन-99

तर्ज-जइयो न लला.....

जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के।
माता-पिता सबसे, ममता को तोड़ के।।टेक.।।

ये सारा वैभव बेटा, तेरी तो माया है।
सारी धरा पर बेटा, तेरी ही छाया है।।
कैसे जाएगा इनसे, मुखड़े को मोड़ के।
जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के।।1।।

ऐसा क्या सोचा तूने, तुझको क्या हो गया।
मेरा ये राजा बेटा, वैरागी हो गया।।
महलों के सुख को कैसे, जाएगा छोड़ के।
जाएगा कहाँ, मेरा लाल मुझे छोड़ के।।2।।

भजन-100

तर्ज-समवसरण मेरी नगरी में.....

जम्बूद्वीप महोत्सव आया है।
पाँच वर्ष में.....पाँच वर्ष में अवसर पाया है।। टेक.।।

शान्तिनाथ की जन्मभूमि है।
हस्तिनापुर यह धन्यभूमि है।।
पुण्ययोग से.....
पुण्ययोग से मिली प्रभु छाया है।। जम्बूद्वीप महोत्सव.....।।1।।

कुंथु अरहप्रभु भी यहीं जन्मे।
तीर्थंकरत्रय को हम नम लें।।
तीनों ने.....
तीनों ने चक्री पद भी पाया है।। जम्बूद्वीप महोत्सव.....।।2।।

तीन लोक में सबसे पावन।
मेरु सुदर्शन है मनभावन।।
उस पर प्रभु.....
उस पर प्रभु अभिषेक कराया है।। जम्बूद्वीप महोत्सव.....।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी।
ऐसी पुण्य प्रेरणा देतीं।।
तभी चन्दना.....
तभी "चन्दनामति" क्षण आया है।। जम्बूद्वीप महोत्सव.....।।4।।

सब मिल महाभिषेक करें हम।
चलो हस्तिनापुरी चलें हम।।
शांतिनाथ.....
शांतिनाथ स्वामी ने बुलाया है।। जम्बूद्वीप महोत्सव.....।।5।।

भजन-101

तर्ज–ऐ मेरे दिले.....

क्षीरोदधि के जल से, जिनवर का न्हवन करो।
तीर्थंकर प्रभु पद में, झुक झुक कर नमन करो।।

जब जब इस धरती पर, तीर्थंकर जन्म हुआ।
इन्द्रों ने अभिषव कर, निज जन्म को धन्य किया।।
तुम भी उस अवसर का, मन में स्मरण करो।। क्षीरो.....।।1।।

दीक्षा ले जब प्रभु को, कैवल्यज्ञान होता।
धनपति तब समवसरण, निर्माण स्वयं करता।।
वह समवसरण लखकर, सार्थक निज जनम करो।। क्षीरो.....।।2।।

तेरहद्वीपों के ये, हैं सुन्दर समवसरण।
सब कर्मभूमियों के, हैं ये इक सौ सत्तर।
छह सौ अस्सी प्रतिमा को शत शत नमन करो।। क्षीरो.....।।3।।

यह दृश्य अनोखा है, जो मिल न कहीं सकता।
हस्तिनापुर में ही प्रथम, इस रचना को देखा।।
तेरहद्वीपों के सब, जिनवर को नमन करो।। क्षीरो.....।।4।।

भजन-102

तर्ज–ज्योति से ज्योति जलाते चलो.....

विश्वशांति की ज्योति जली, ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली।
राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के, द्वारा अहिंसा की ज्योति जली।। टेक.।।

धर्म और विज्ञान ने धरती का, सदैव शृंगार किया।
इक दूजे के पूरक बनकर, नामों को साकार किया।।
दोनों की जोड़ी है लगती भली, विश्वशांति की ज्योति जली।।1।।

कलियुग में विज्ञान ने अपना, धर्म से नाता तोड़ लिया।
अणुबम एटमबम निर्मित कर, मानवता को छोड़ दिया।।
इसीलिए गुरूओं की प्रेरणा मिली, विश्वशांति की ज्योति जली।।2।।

बिन लगाम का घोड़ा जैसे, आतंकी बन जाता है।
बिना धर्म के वैसे ही, विज्ञान भी धोखा खाता है।।
इसीलिए दोनों की जोड़ी बनी, विश्वशांति की ज्योति जली।।3।।

शांतीवर्ष दो हजार नौ, शांतिदूत बनकर आया।
मैत्री का संदेश "चंदनामती" सभी ने तब पाया।।
गूंजे अहिंसा की जय हर गली, विश्वशांति की ज्योति जली।।4।।

भजन-103

तर्ज –पुरवा सुहानी आई रे.....

अवसर सुहाना आया रे.....अवसर....
जम्बूद्वीप महोत्सव का, उनके पावन उत्सव का
सुन्दर ये क्षण आया रे।....अवसर।।टेक.।।
शान्तिनाथ प्रभु की जनमभूमि है ये। हो ...हो....
उन्हीं जिनवर की करमभूमि है ये।हो.....
कण-कण सुपूज्य है, हर क्षण अमूल्य है, प्रभु का दरश पाया रे।।अवसर.।।1।।

वीरान थी भूमि अब खिल उठी है। हो....
वीणा के तारों से झंकृत हुई है।।हो...
पावन धरा पर, पावन पड़े पग, तब भाग्य खिल आया रे।।अवसर.।।2।।

गणिनी श्री ज्ञानमती माँ जब से आईं। हो....
जम्बूद्वीप की रचना बनाई।।हो.....
दुनिया में एक है, पर सबसे श्रेष्ठ है, जग भग में यश छाया रे।।अवसर.।।3।।

प्रति पाँच वर्षों में होते महोत्सव। हो.....
हर वर्ष कितने ही होते हैं उत्सव।।हो.....
"चंदनामती" यह, सब अद्वितीय है, महामहोत्सव आया रे।।अवसर.।।4।।

भजन-104

तर्ज-इस जग में जो जन्मा उसे.....

इस वन में जो आया, उसे चढ़ना ही पड़ेगा।
मेरू की वन्दना उसे करना ही पड़ेगा।।टेक.।।

इस मेरु की प्रदक्षिणा दो सूर्य कर रहे,
चन्दा भी सदा इनके संग-संग चल रहे।
रजनी दिवा.....
रजनी दिवा इस हेतु से बनना ही पड़ेगा।।मेरू की.।।1।।
यह भद्रसाल सौमनस वनों से शोभता।
नन्दन औ पांडुवन को देख हृदय मोहता।।

पांडुकशिला.....
पांडुकशिला पे जिनन्हवन करना ही पड़ेगा।।मेरू की.।।2।।
नरजन्म सब रतन में है अनमोल इक रतन।
जब पा ही लिया क्यों न करें मेरु पर न्हवन।

करके न्हवन.....
करके न्हवन भवसिंधु से तरना ही पड़ेगा।।मेरू की.।।3।।

अकृत्रिम हैं चैत्य भूल न जाना रे पुजारी।
तब "चन्दनामति" सार्थक हो प्रीति तुम्हारी।।

यह सिद्धचैत्य.....
यह सिद्धचैत्य वंदना करना ही पड़ेगा।।मेरू की.।।4।।

भजन-105

तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर.....

अहिच्छत्र तीर्थ के पार्श्वनाथ का अतिशय देखो छाया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया।।टेक.।।
प्राचीन जिनालय में पारस प्रभु ध्यानमग्न बैठे हैं।
हाँ ध्यानमग्न.....
मानों कमठासुर के संकट को आज भी वे सहते हैं।।
हाँ आज भी.....
उनके दर्शन-वंदन से बनती शक्तिमान यह काया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया।।1।।
श्री तीस चौबीसी मंदिर से भी तीर्थ का मान बढ़ा है।
हाँ तीर्थ की .....
उस मंदिर में प्रभु पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा है।।
हाँ खड्गासन.....
वहीं पार्श्वनाथ पद्मावति मंदिर का भी अतिशय छाया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया।।2।।
जिनके तन-मन का रोम-रोम प्रभु भक्ती में अर्पित है।
प्रभु भक्ती में.....
उन गणिनी ज्ञानमती जी की प्रेरणा शक्ति सुरभित है।।
प्रेरणा शक्ति.....
"चन्दनामती" उनके सानिध्य में उत्सव सबने मनाया,
जिनधर्म का ध्वज लहराया।।3।।

भजन-106

तर्ज-जय जय माँ ज्ञानमती.....

अहिच्छत्र जी तीरथ का, इतिहास पुराना है।
उन पार्श्व जिनेश्वर का, संदेश सुनाना है।।
जहाँ जैनी संस्कृति का, भण्डार भरा सचमुच।
उपसर्ग की वह घटना, स्मरण कराती युग।।
उस तीरथ की रजकण, मस्तक पे लगाना है।
अहिच्छत्र.....।।1।।

यह तीर्थक्षेत्र पावन, कण-कण इसका पूजित।
वंदना इसका करके, मन होता है प्रमुदित।।
पारस की जय करके, अब पुण्य कमाना है।
अहिच्छत्र.....।।2।।

सुर नर वंदित तीरथ, प्राचीन ये प्रतिमा है।
दुनिया में बढ़ी है अब, इसकी गुण गरिमा है।।
संदेश अहिंसा का, सबको पहुँचाना है।
अहिच्छत्र.....।।3।।

गणिनी माँ ज्ञानमती की सम्प्रेरणा मिली।
"चन्दनामती" प्रभु के, उत्सव की ज्योति जली।।
इसलिए सभी मिलकर गौरव को बढ़ाना है।
अहिच्छत्र.....।।4।।

भजन-107

चलो बुलावा आया है,
पारसनाथ ने बुलाया है,
अहिच्छत्र में पार्श्वनाथ का,
अतिशय छाया है।। चलो.।।टेक.।।

प्रेम से बोलो जय पारस की,
सब मिल बोलो जय पारस की।। चलो.।।

तप में लीन पार्श्व प्रभु पर जब कमठ ने आ उपसर्ग किया।
पद्मावति धरणेन्द्र ने आ उपसर्ग दूर कर भक्ति किया।।
वही तीर्थ अहिच्छत्र नाम से ग्रंथों में पाया है।।
चलो.....।।1।।

उसी जगह भूगर्भ से इक, प्रभु पार्श्व की प्रतिमा निकल पड़ी।
उन तिखाल वाले बाबा की, जय जय जनता बोल पड़ी।।
चमत्कार अब अहिच्छत्र का, जग में छाया है।।
चलो.....।।2।।

एक हजार साल का उत्सव, उनका सबने मनाया है।
ज्ञानमती माताजी के संग, अहिच्छत्र चमकाया है।।
चलो "चन्दनामती" प्रभू का अतिशय छाया है।।
चलो.....।।3।।

भजन-108

तर्ज-ऐ मेरे वतन के लोगों.....

भारत के जैनी वीरों, तुम सुन लो कथा पुरानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।। टेक.।।

इक नहीं अनन्तों जिनवर, साकेतपुरी में जन्मे।
सम्मेदशिखर से शिवपद, पा सिद्धशिला पर पहुँचे।।
उस रज को सिर पर धर लो, जो कहती अमर कहानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।1।।

बन करके दिगम्बर मुनिवर, इस गिरि पर ध्यान किया है।
कितनों ने तपस्या करके, कर्मों का नाश किया है।।

उन सब सिद्धों को नम लो, जो बने आत्म श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।2।।

यह सिद्धक्षेत्र जिनवर का, जैनी इसके अधिकारी।
इसका दर्शन वन्दन है, हर मानव को हितकारी।।
पर्वत को वन्दन कर लो, सब जिनमत के श्रद्धानी।।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।3।।

यह तीर्थ अहिंसा का शुभ, सन्देश सुनाता जग को।
भावों को शुद्ध बनाकर, तिरना सिखलाता सबको।
"चन्दनामती" हम सबमें, सार्थक हो अब प्रभुवाणी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।4।।

ये धर्मतीर्थ न कभी भी, बेचे व खरीदे जाते।
हर मानव की श्रद्धा के, ये केन्द्रबिन्दु कहलाते।।
निजमत जिनमत में बदलो, बनकर सच्चे श्रद्धानी।
सम्मेदशिखर पर्वत है, सिद्धों की अमिट निशानी।।5।।

भजन-109

तर्ज–चलो मिल सब.....

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।। टेक.।।
ऋषभ-अजित-अभिनंदन-सुमती, अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे, जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो...।।1।।
श्रावस्ती में संभव, कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व-पारस प्रभु को वंदूँ।।

चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो...।।2।।

पुष्पदन्त काकन्दी, शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो...।।3।।

कम्पिलजी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति-कुंथु-अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो,
मल्लिनाथ-नमिनाथ जन्मभूमी वंदन कर लो।। चलो...।।4।।

राजगृही में मुनिसुव्रत, नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें, महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर, जन्म सफल कर लो।। चलो...।।5।।

गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से हि "चन्दना" आत्मशुद्धि कर लो।। चलो...।।6।।

भजन-110

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा.....

शाश्वत है तीरथ मेरा, सम्मेदगिरि नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।। टेक.।।

कहते हैं इस गिरि की वन्दना से,
तिर्यंच नरकायु मिलती नहीं है।
श्रद्धा सहित इसकी अर्चना से,
भव्यत्व कलिका खिलती रही है।।
रात अंधेरी हो, भक्ति सहेली हो, लगता न डर पर्वत पर कभी।
अतिशय से गूँजे यहाँ, सांवरिया का नाम है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।1।।

इस युग के चौबिस तीर्थंकरों में,
मोक्ष गए बीस जिनवर यहाँ से।
कितने करोड़ों मुनियों ने भी,
तप करके शिवालय पाया यहाँ से।।
तीर्थ पुराना है, श्रेष्ठ खजाना है, सबको तिराता है संसार से।
तीरथ की कीरत अमर, कर सकता इंसान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।2।।

जिनधर्म निधि को पाकर के उसका,
सच्चा सदुपयोग करना है हमको।
आपस में मैत्री, दीनों पे करुणा,
का भाव जग में सिखाना है सबको।।
स्वार्थ त्याग करके, शीघ्र जाग करके, जैनत्व की सब रक्षा करो।
तीरथ की रज "चन्दनामति" मस्तक का परिधान है।
गिरिवरों में श्रेष्ठ है, आदि सिद्धक्षेत्र है, मधुवन परम धाम है।।3।।

भजन-111

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
तीन लोक के सौ इन्द्रों ने, किया तुम्हें वंदन है।।
सौ-सौ बार नमन है-2
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सौ-सौ बार नमन है।।टेक.।।

तीन तीर्थ माने हैं जिनके, पंचकल्याण से पावन,
वाराणसि, अहिच्छत्र और सम्मेदशिखर मनभावन।
इनके दर्शन से भक्तों के, पावन होते मन हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।1।।

वर्तमान में पार्श्वनाथ का, अतिशय खूब बखाना,
अंतरिक्ष, शिरपुर, चंवलेश्वर, मक्सी, अडिन्दा जाना।
अतिशायी कचनेर में जाकर, करो प्रभू दर्शन है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।2।।

कर्नाटक के बीजापुर में, सहस्रफणा पारस हैं,
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, चिन्तामणि पारस हैं।
भारत के अनेक नगरों में, पारस प्रभु मंदिर हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता, कहती हैं सब भक्तों को,
पारस प्रभु के अतिशय से, परिचित करवाओ सबको।
सभी "चन्दनामती" हमेशा, उत्सव करो सफल है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।4।।

भजन-112

तर्ज–पंखिड़ा.....

वंदना करूँ मैं प्रभू पार्श्वनाथ की।
अश्वसेन और माता वामा लाल की।।
वंदना.....वंदना.....वंदना.....वंदना.....।। टेक.।।

देखो वाराणसी से प्रभू के भक्त आये हैं।
प्रभु के जन्म की खुशी में सुन्दर रत्न लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।1।।

देखो अहिच्छत्र से प्रभू के भक्त आए हैं।
केवलज्ञान की खुशी में सुन्दर गीत गाये हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।2।।

देखो गिरि सम्मेद से प्रभू के भक्त आए हैं।
प्रभु के मोक्ष की खुशी में सभी लाडू लाए हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।3।।

सारे देश के पुजारी भक्त दर पे आते हैं।
'चन्दनामती' ये भक्ति करके पुण्य पाते हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके पुण्य भरो जी।। वंदना.....।।4।।

भजन-113

नाम तिहारा तारनहारा कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।। टेक.।।

जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।1।।

पृथ्वी के सुन्दर परमाणू, सब तुझमें ही समा गए।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गए।।
इसीलिए तुझ सम सुन्दर नहिं, कोई नर सुन्दर होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।2।।

मन में तव सुमिरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करें तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।

आज "चंदनामती" प्रभू का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।3।।

भजन-114

तर्ज–बजे कुण्डलपुर में.....

वीर भज ले तू महावीर भज ले,
काम सारे बन जायेंगे, वीर भज ले।। टेक.।।

क्यों भूला तू महावीर को-2
महावीर नैय्या तिरवायेंगे, वीर भज ले.....।।1।।

क्यों भूला तू मंदिर को-2
जीने की कला बतलायेंगे, वीर भज ले.....।।2।।

क्यों भूला तू मंदिर को-2
मंदिर ही तुझे तिरवायेंगे, वीर भज ले.....।।3।।

क्यों भूला तू सच्चे देव को-2
वही तो देव बनवायेंगे, वीर भज ले.....।।4।।

क्यों भूला तू शास्त्रों को-2
वे ही तो ज्ञान सिखलायेंगे, वीर भज ले.....।।5।।

क्यों भूला तू गुरूओं को-2
वे ही तो पथ दर्शायेंगे, वीर भज ले.....।।6।।

क्यों भूला तू मात-पिता को-2
वे ही तो तेरा हित चाहेंगे, वीर भज ले.....।।7।।

क्यों भूला तू भाई-बहन को-2
वे ही तो प्रेम सिखलायेंगे, वीर भज ले.....।।8।।

मत भूल तू धरम करम को-2
ये ही तो ज्ञान सिखलायेंगे, वीर भज ले.....।।9।।

ले ले "चंदना" तू वीर का शरणा-2
ये ही तो मोक्ष दिलवायेंगे, वीर भज ले.....।।10।।

भजन-115

तर्ज–सज धज कर.....

तेरी चंदन सी रज में, इक उपवन खिलाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।टेक.।।

जन्मे जहाँ खेले जहाँ, त्रिशला माँ के नन्दन।
उस कुण्डलपुर की माटी का, सचमुच कण-कण चन्दन।।
चन्दन सी उस माटी को अब सिर पर लगाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।1।।

सोने का नंद्यावर्त महल, सिद्धारथजी का था।
मणियों के पलंग पर त्रिशला ने, सपनों को देखा था।।
उन सपनों को सच्चे करके, फिर से दिखाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।2।।

प्राचीन इक मंदिर प्रभू का, कुण्डलपुर में है।
"चंदनामती" महावीर विराजे, उस मंदिर में हैं।।
भावना सभी भक्तों की जो, प्रभु तक पहुँचाया है।
कुण्डलपुर के महावीरा, तेरा महल बनाया है।।3।।

भजन-116

तर्ज–गुरुवर तेरे चरणों की.....

वीरा तेरे तीरथ का, मुझे दर्श जो मिल जावे।
तीरथ के दरश पाकर, मन उपवन खिल जावे।। टेक.।।

वह कुण्डलपुर नगरी, वीरान हुई प्रभुजी।
वह वीरानी लखकर, पत्थर भी पिघल जावे।। वीरा.।।1।।

माँ ज्ञानमती जी को, दैवी प्रेरणा मिली।
उस प्रेरणा के बल पर, वह तीरथ बन जावे।। वीरा.।।2।।

जब चरण चले उनके, सचमुच उद्धार हुआ।
उद्धार की श्रेणी में, श्रुतसार भी मिल जावे।। वीरा.।।3।।

यदि रोम रोम मेरा, हो जाए समर्पित प्रभु।
"चन्दनामती" जीवन, की कलियाँ खिल जावें।। वीरा.।।4।।

भजन-117

तर्ज–जैन धर्म के हीरे मोती.....

महावीर के जन्मोत्सव पर, रतन लुटाओ गली गली।
आया है यह स्वर्णिम अवसर, धूम मचाओ गली गली।। टेक.।।
रतन लुटाने वाला मानव, धनकुबेर कहलाएगा।
इस भव में धनहीन भले हो, धनपति वह बन जाएगा।।
मन खुश कर लो रतन बांटकर, नाचो गाओ गली-गली।
आया है यह स्वर्णिम अवसर, धूम मचाओ गली गली।।1।।

हिंसा के इस ताण्डव युग में, कुछ तो शांती आएगी।
राम कृष्ण महावीर की धरती, अब कुछ क्रान्ती लाएगी।।
जग की सारी भ्रांति हटाकर, ढोल बजाओ गली गली।
आया है यह स्वर्णिम अवसर, धूम मचाओ गली गली।।2।।

इन रत्नों को जड़कर अपने, आभूषण बनवा लेना।
स्वस्थ निरोगी जीवन में फिर, सदाचार अपना लेना।।
मानव तन अनमोल रतन, यह गाते जाओ गली-गली।
आया है यह स्वर्णिम अवसर, धूम मचाओ गली गली।।3।।

कुण्डलपुर का वीर लाडला, त्रिशलानन्दन महावीरा।
सिद्धारथ के पुत्र जैनशासन के सूरज प्रभु वीरा।।
करो "चन्दनामति" अब उत्सव, जय जय गाओ गली-गली।
आया है यह स्वर्णिम अवसर, धूम मचाओ गली गली।।4।।

भजन-118

तर्ज-मेरे देश की धरती.....

कुण्डलपुर धरती वीरप्रभू के जन्म से धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।। टेक.।।

छब्बिस सौ वर्षों पूर्व जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।
रानी त्रिशला के सपने सुन, सिद्धार्थराज हरषाये थे।।
तीर्थंकर सुत को पाकर त्रिशला माता धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।1।।

पलने में देख वीर प्रभु को, मुनियों की शंका दूर हुई।
इक देव सर्प बनकर आया, उसकी शक्ती भी चूर हुई।।
कुण्डलपुर की ये सत्य कथाएं जिन आगम में कही हैं।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।2।।

गणिनी माताश्री ज्ञानमती के, चरण पड़े कुण्डलपुर में।
अतएव वहाँ पर नंद्यावर्त, महल मंदिर भी शीघ्र बने।।
महावीर जन्मभूमी विकास की घड़ियां धन्य हुई हैं।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।3।।

उस जन्मभूमि के दर्शन कर, तुम भी निज शंका दूर करो।
महावीर प्रभू के सन्मुख अपनी, इच्छाएँ परिपूर्ण करो।।
"चन्दनामती" उसके दर्शन पाकर के धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।4।।

भजन-119

माता हो त्रिशला के लाल, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।। टेक.।।
माता के गर्भ आए, सपने दिखाए-
सोलह सपने दिखाए।
जन्मे तो इन्द्र आए, उत्सव मनाए-
जन्म उत्सव मनाए।।
सिद्धार्थ राजा के लाल, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।1।।
धरती पुकारे तुम्हें, हिंसा मिटाओ-
वीर हिंसा मिटाओ।
अपना प्राचीन रूप, फिर से दिखाओ-
वीर फिर से दिखाओ।।
चौबीसवें अवतार, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।2।।
विचलित हो राजा प्रजा, तुमको भुलाया-
वीर तुमको भुलाया।
वैभव की होड़ लगा, सब कुछ लुटाया-
वीर सब कुछ लुटाया।।
"चन्दना" यह कलियुग का राज, वीर यहाँ फिर आओ ना।
कुण्डलपुरी के युवराज, वीर यहाँ फिर आओ ना।।3।।

भजन-120

तर्ज-कभी तू.....

मुझे पावापुर जाना है, मुझे जलमन्दिर जाना है,
वहाँ लाडू चढ़ाकर दीवाली का पर्व मनाना है।
जय जय दीवाली हो.....जय जय दीवाली हो...।। टेक.।।

महावीर प्रभु कर्म नाशकर, मोक्षधाम जब पहुंचे।
पावापुर के जलमंदिर में, देव इन्द्र सब पहुंचे, देव इन्द्र.....
उनकी ही यादों में, अब दीप जलाना है।
घर घर में धन लक्ष्मी का, भण्डार भराना है।। मुझे.....।।1।।

वह पावापुरी सरोवर, अब तक भी लहर रहा है।
प्राचीन वहाँ जलमंदिर, का उपवन महक रहा है, हाँ उपवन.....
आती है याद वहाँ, महावीर प्रभू जी की।
जिनको वन्दन करती, है भारत की धरती।। मुझे.....।।2।।

महावीर वीरसंवत्सर, मंगलमय हो सब जग में।
निर्वाण की ही स्मृति में, जो शुरू हुआ भारत में, जो शुरू.....
"चन्दनामती" सबको, दीवाली मंगल हो।
जीवन में हर क्षण सबके, नव खुशियाँ शामिल हों।। मुझे.....।।3।।

भजन-121

तर्ज–जरा सामने तो.....

जहाँ जन्मे वीर वर्द्धमान जी,
जहाँ खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।। टेक.।।

कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थी,
सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।1।।

राजहंस से मानसरोवर जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभुजन्म से जन्मनगर पावन बन जाता है।।

जय जय होती है प्रभु पितु मात की,
इन्द्र गाता है महिमा महान जी।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।2।।

प्रान्त बिहार में नालन्दा के, निकट वही कुण्डलपुर है।
छब्बीस सौवें जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमती स्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की,
हुई दर्शन से "चन्दना" निहाल भी।।
उस कुण्डलपुरी को पहचान लो,
जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।3।।

भजन-122

वीर प्रभू! तेरे शासन की, फिर से आज जरूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।। टेक.।।

तूने इस भारत का गौरव, दुनिया भर में फैलाया।
सत्य अहिंसा अनेकान्त का, झण्डा जग में लहराया।।
सर्वोदय सिद्धान्तों की, प्रगटे अब सच्ची मूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।।1।।

माँ त्रिशला पितु सिद्धारथ के, पुत्र भले तुम कहलाए।
लेकिन जन-जन के मानस में, तुम सूरज बन कर छाये।।
सिद्धशिला के वासी प्रभु, महावीर की आज जरूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।।2।।

तू कुण्डलपुर में जन्मा, लेकिन हो गया अजन्मा है।
सत्कर्मों को दिखलाकर, तू तो हो गया अकर्मा है।।
बनो "चन्दनामती" वीर सम, युग को यही जरूरत है।
क्योंकि यहाँ के मानव में, दिखती दानव की सूरत है।।3।।

भजन-123

तर्ज–चल दिया छोड़ परिवार.....

सर्वार्थ के सुत सिद्धार्थ, की ले बारात, चले वैशाली
कुण्डलपुर के नर नारी।। टेक.।।

इक राजवधू यहाँ आएगी,
नूतन इतिहास बनाएगी।
यह सोच के खुश सिद्धार्थ की माता प्यारी,
कुण्डलपुर के नर नारी।।1।।

कुण्डलपुर से बारात चली,
वैशाली के प्रांगण पहुँची।
वहाँ ब्याही चेटक पुत्री राजकुमारी,
कुण्डलपुर के नर नारी।।2।।

नृप चेटक की पुत्री त्रिशला,
सिद्धारथ की रानी त्रिशला।
महावीर को देकर जन्म बनी माँ प्यारी,
कुण्डलपुर के नर नारी।।3।।

छब्बिस सौ वर्षों की घटना,
सिद्धार्थ पुत्र महावीर बना।
वह बना विरागी वीर बाल ब्रह्मचारी,
कुण्डलपुर के नर नारी।।4।।

तप कर कैवल्य को प्राप्त किया,
पावापुरि से निर्वाण लिया।
"चन्दनामती" प्रभु बने सिद्ध पदधारी,
कुण्डलपुर के नर नारी।।5।।

भजन-124

तर्ज–कभी प्यासे को पानी.....

वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा ?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं,
तो महोत्सव मनाने का फल क्या रहा ?।। टेक.।।

हमने इतिहासकारों की बातें सुनीं,
आधुनिक बातें सुन एक चिन्तन जगा।
शास्त्र की सच्ची बातें बताई नहीं,
उनको ही दोष देने का फल क्या रहा ?।।
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा ?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.....।।1।।

हमने कुण्डलपुरी की परिस्थिति सुनी,
उससे अन्तर्हृदय मानो रोने लगा।
वहाँ हमने जयंती मनाई नहीं,
उनकी जयकार करने का फल क्या रहा ?
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा ?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.....।।2।।

दो चरण ज्ञानमति जी के जब चल पड़े,
कोटि पग फिर तो उस ओर ही चल पड़े।
"चन्दनामति" बजी अब बधाई वहीं,
जन्म उत्सव मनाना सफल हो गया।।
वीर की जन्मभूमि सजाई नहीं।
जन्म उत्सव मनाना सफल क्या रहा ?
अपनी निधियाँ अगर हमने पाई नहीं.....।।3।।

भजन-125

तर्ज–मौज मनाओ.....

वीरा की महिमा, सब मिल के गाओ,
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।। टेक.।।

त्रिशला के लाल प्रभु, सन्मति महावीर हैं।
कुण्डलपुरी में जन्में, जिनवर अतिवीर हैं।।
रत्नों की वृष्टि, फिर से कराओ,
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।1।।

जिनके न पाप किंचित्, वे ही भगवान हैं।
वीरा के लिए सभी, प्राणी समान हैं।।
वही सर्वोदय शासन, फिर से दिखाओ,
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।2।।

अपना मकान तो, सब ही बनाते हैं।
लेकिन प्रभु का महल, बिरले बनाते हैं।।
कुण्डलपुरी को सभी, मिलके सजाओ।
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।3।।

मिश्री का मीठा फल, मिलता प्रभु भक्ति से।
"चन्दनामती" करो, भक्ती भी शक्ति से।।
शक्ति के बिना अपनी, श्रद्धा दिखाओ।
खुशियाँ मनाओ, खुशियाँ मनाओ।।4।।

भजन-126

तर्ज–कौन दिशा में.....

वीरा मुक्तिपथ में, मिले जो मुझे कांटे-2
उन्हें फूल बना दो, अनुकूल बना दो, मेरे वीरा हो,
महावीरा हो।।टेक.।।

सोच लिया जब वीरा तेरे, चरणों की रज लेना है।
तुझको पाने हेतु प्रभो! चाहे, कुछ भी पड़े मुझे देना है।।
कुण्डलपुर है जन्म नगरिया, तभी वहाँ हम जाते।।
वीरा.....।।1।।

तुमने अपने पथ के शूलों, को भी फूल बनाया था।
राजसुखों को छोड़ सभी, कांटों का पथ अपनाया था।।
बालयति बन ध्यान किया वन, में तुमने प्रभु जाके।
वीरा.....।।2।।

मुझको भी इस नश्वर तन से, अविनश्वर पद पाना है।
इस चंचल दानव मन में, निश्चल प्रभु तुझे बिठाना है।।
यही "चन्दनामति" आशा ले, हम तेरे गुण गाते।
वीरा.....।।3।।

भजन-127

तर्ज–तुमसे लागी लगन.....

जय जय श्री वीर जिन, हम जपें रात दिन, तेरी माला,
शांत हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।टेक.।।

एक मेंढक ने भी भक्ति करके।
देवपद पाया निज शक्ति करके।।
उसकी श्रद्धा जगी, वीर से लौ लगी, पाप टाला,
शांत हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।1।।

राजा श्रेणिक ने तेरी शरण ले।
नरक की आयु भी कम की अपने।।
क्षायिक सम्यक्त्व से, भावी जिनवर बने, भव सुधारा,
शांत हो जिससे कर्मों की ज्वाला।।2।।

चन्दना की कटी बेड़ियाँ थीं।
तुमको आहार दे धन्य वो थी।।
प्रमुख गणिनी बनी, सबकी जननी बनी, एक बाला,
शान्त हो जिससे कर्मो की ज्वाला।।3।।

आज भी शक्ति प्रभु भक्ति में है।
"चन्दनामती" यही सत्य जग में।।
मुझको भी ज्ञान दो, आत्मविज्ञान दो, हो उजाला,
शान्त हो जिससे कर्मो की ज्वाला।।4।।

भजन-128

तर्ज-कभी राम बनके.....

मुनिराज बनके, जिनराज बनके, चले आए, महावीर चले आए।।टेक.।।
कौशाम्बी की है एक घटना।
जहाँ बेड़ियों में जकड़ी थी चन्दना।।
उद्धार करने, संकट टालने उसके, चले आए, महावीर चले आए।।1।।
देखा चन्दना ने जब महावीर को।
आंसू भरकर पुकारा उसने वीर को।।
आवाज सुनके, बंधन काटने उसके, चले आए, महावीर चले आए।।2।।
टूटी बेड़ियाँ चन्दना की तत्क्षण।
ज्यों ही हुआ महावीर का दर्शन।।
वीतराग बनके, उसका भाग्य बनके, चले आए, महावीर चले आए।।3।।
श्रद्धा भक्ति से पड़गाया प्रभु को।
दिया चन्दना ने आहार प्रभु को।।
चमत्कार करने, आहार करने, चले आए, महावीर चले आए।।4।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने बताया।
इसी इतिहास को दर्शाया।
चिरस्थाई बनके, तीरथ धन्य करने, चले आए, महावीर चले आए।।5।।

जिला कौशाम्बी में तीर्थ प्यारा।
"चन्दनामति" प्रभाषगिरी न्यारा।।
उसकी कीर्ति बनके, नूतन तीर्थ बनके, चले आए, महावीर चले आए।।6।।

भजन-129

तर्ज-होली खेलें मुनिराज.....

महावीरा जन्मे, कुण्डलपुर में।
कुण्डलपुर में, सिद्धारथ के घर में-2।। महावीरा.....।। टेक.।।

कौन से महल में जनम भयो है,
किस माता से तुम जनमे।। महावीरा.....।।1।।

नन्द्यावर्त था महल तुम्हारा,
माता त्रिशला से जनमे।। महावीरा.....।।2।।

किसके संग खेले थे वीरा,
भोजन कहाँ का किया उनने।। महावीरा.....।।3।।

देवबालकों के संग खेले,
स्वर्ग का भोजन किया प्रभु ने।। महावीरा.....।।4।।

दीक्षा ले कहाँ ज्ञान हुआ था,
मोक्ष कहाँ पाया प्रभु ने।। महावीरा.....।।5।।

ऋजुकूला तट पे ज्ञान हुआ था,
मोक्ष लहा पावापुर में।। महावीरा.....।।6।।

विपुलाचल पर समवसरण बना,
ज्योति वहीं से जलाई प्रभु ने।। महावीरा.....।।7।।

करो "चन्दनामति" प्रभु भक्ती,
उससे ही शक्ति मिलेगी मन में।। महावीरा.....।।8।।

भजन-130

तर्ज–सौ साल पहले.....

वीर जन्मभूमि सच्ची, कुण्डलपुरी ही है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।।टेक.।।

जैनग्रन्थों, पुराणों में, सभी मुनियों ने बताया है।
तभी कुण्डलपुरी का नाम, सबके मन समाया है।।
ऋषि-मुनि-कवियों ने भी, गाई उसकी कीर्ति है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।।1।।

आज कुछ स्वार्थी तत्वों ने, करी उसकी उपेक्षा है।
किन्तु अब गणिनी माता ज्ञानमति के मन में इच्छा है।।
प्राचीन नगरी अब यह, बने इक धरोहर है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।।2।।

वीर के वंशजों! तुम उस, धरा को मत भुलाना अब।
तीर्थयात्रा में कुण्डलपुर, वीर के पास जाना सब।।
राजगिरि व पावापुर के, पास वही भूमी है।
सदियों से थी और सदा ही रहेगी।।4।।

भजन-131

तर्ज–फिरकी वाली.....

वीरा वीरा, श्री महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति शुभ नाम है।
सारे जग का सितारा वर्द्धमान है।। टेक.।।

हिंसा की तांडव लीला जब, सारे जग में छाई थी।
कुण्डलपुर नगरी में त्रिशला, के घर बजी बधाई थी।।
सिद्धारथ का, मनसिज हरषा, हुई रतन की वर्षा।

वीरा वीरा, श्री महावीरा, मेरे अतिवीरा, सन्मति तेरा नाम है।
सारे जग का सितारा वर्द्धमान है।।1।।

चैत्र सुदी तेरस के दिन जब, जन्मकल्याणक आया था।
स्वर्गों से इन्द्रों ने आकर, उत्सव खूब मनाया था।।
ऐरावत पर, तुमको लाकर, चला इन्द्र सह परिकर।
वीरा तुमको, सुमेरू पर्वत, की पांडुशिला पर, किया विराजमान है।
जन्म अभिषव कर पुकारा तेरा नाम है।।2।।

यौवन में ही दीक्षा लेकर, बालयती कहलाए थे।
केवलज्ञान प्राप्त कर प्रभु जी, समवशरण में आए थे।।
दिव्यध्वनि से, सारे जग के, जीवन हुए प्रतिबोधित।
वीरा तेरी, सुहानी वाणी, को सुनकर ज्ञानी, बने भगवान हैं।।
सारे जग का सितारा वर्धमान है।।3।।

कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, सिद्ध अवस्था पाई थी।
पावापुरी नगरी में सबने, दीपावली मनाई थी।।
युग के अंतिम, तीर्थंकर तुम, करे "चंदना" वन्दन।
वीरा तेरी, अमर है कहानी, सभी ने जानी, न तुझ सी कोई शान है।
सारे जग का सितारा वर्धमान है।।4।।

भजन-132

तर्ज–आओ बच्चों तुम्हें.....

आओ बच्चों! तुम्हें बतायें, परिचय प्रभु महावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो.।।टेक.।।

कुण्डलपुर में पितु सिद्धारथ, माँ त्रिशला से जन्म लिया।
अपने शौर्य पराक्रम से, महावीर नाम को धन्य किया।।

वीर बहादुर बनना हो तो, नाम जपो श्रीवीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-2।।1।।

प्यारे बच्चों! तुम्हें देश में, महावीर युग लाना है।
कभी न अण्डा केक पेस्टी, चाकलेट नहिं खाना है।।
दीप जलाओ जन्मदिनों पर, भोजन खाओ खीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-2।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती का, सम्बोधन है तुम सबको।
शाकाहारी बनो बनाओ, तुम बच्चों! हर बालक को।।
बच्चा बच्चा करे "चन्दना", नमन सदा महावीर का।
हर बच्चे में छिपा हुआ है, तेज प्रभू महावीर सा।।
जय जय वीर प्रभो, बोलो जय महावीर प्रभो-2।।3।।

भजन-133

तर्ज–तेरे हाथों की लकीर.....

मेरा भाग्य सितारा चमका, मिला अवसर प्रभु दर्शन का,
कि देखो कमाल हो गया,
मुझे मिल गया, खोया खजाना,
कि मैं तो मालामाल हो गया।। टेक.।।

कुण्डलपुरी की महिमा सुनी ये-2।
कभी यहाँ आये दो-दो मुनी थे-2।।
निःशंक हुए वे प्रभु लख, पा गये प्रश्न का उत्तर,
कि देखो कमाल हो गया,
मुझे मिल गया खोया खजाना, कि मैं तो मालामाल हो गया।।1।।

कुण्डलपुरी का अतिशय है भारी-2।
महावीर प्रतिमा है चमत्कारी-2।।

हर इच्छा होती पूरी, कोई मांग रहे न अधूरी,
कि देखो कमाल हो गया,
मुझे मिल गया खोया खजाना, कि मैं तो मालामाल हो गया।।2।।

कुण्डलपुरी में नवग्रह मंदिर-2।
आदिनाथ और तीन चौबीसी मंदिर-2।।
सबमें प्रतिमाएँ सुन्दर, जहाँ भक्ति का भरा समन्दर,
कि देखो कमाल हो गया,
मुझे मिल गया खोया खजाना, कि मैं तो मालामाल हो गया।।3।।

ज्ञानमती माताजी ने बताया-2।
नंद्यावर्त महल बनवाया-2।।
"चंदनामती" सब बोलो, प्रभु वीर की जय जय बोलो,
कि देखो कमाल हो गया,
मुझे मिल गया खोया खजाना, कि मैं तो मालामाल हो गया।।4।।

भजन-134

तर्ज–चूड़ी मजा न देगी.....

उत्सव बहुत मनाया, जिनवर को भी रिझाया।
जन-जन को जिनधरम से, परिचित नहीं कराया।। टेक.।।
जाती व सम्प्रदायों, में धर्म को न बाँटो।
इन्सान बँट गया अब, भगवान को न बाँटो।। भगवान को.....
उत्तम सुखों का दायक, यह धर्म ही बताया।। उत्सव.....।।1।।
नहिं धर्म कोई कहता, आपस में वैर करना।
मतभेद हो भले ही, मनभेद ना समझना।। मनभेद ना.....
मानव की भद्रता का, परिचय यही बताया।। उत्सव.....।।2।।
है प्राकृतिक अनादी, सृष्टी सुरम्य जैसे।
जिनधर्म की व्यवस्था, सर्वोदयी है वैसे।। सर्वोदयी.....
ईश्वर को वीतरागी, इस धर्म ने बताया।। उत्सव.....।।3।।

इक प्रेरणा मिली है, गणिनी माँ ज्ञानमती की।
प्रभु ऋषभ देशना ही, दुनिया को स्वस्थ करती।।
इस हेतु 'चंदना' अब, सबने बिगुल बजाया।। उत्सव.....।।4।।

भजन-135

तर्ज–कौन दिशा में लेके.....

प्रभु ऋषभदेव महावीर का महोत्सव-2,
सभी मिलकर मनाएँ, सभी खुशियाँ मनाएँ
जय जय कर लें, जय जय करें।।प्रभु.....।।टेक.।।
वर्तमान चौबीसी के हैं प्रथम तीर्थंकर वृषभेश्वर।
महावीर स्वामी हैं उनमें से ही अंतिम तीर्थेश्वर।।
इन दोनों के मध्य हुए हैं, बाइस प्रभु अतिशय संयुत।।प्रभु.....।।1।।
प्रथम और अंतिम दोनों के जन्म चैत्र महिने में हुए।
ऋषभदेव ने ब्याह किया महावीर बालब्रह्मचारि रहे।।
मोक्ष और संसार व्यवस्था, का प्रतिपादन किया कुशल।।प्रभु.....।।2।।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली कुछ कार्य करो।
जन्मदिवस निर्वाण महोत्सव आयोजित जिनवर के करो।।
तभी "चन्दनामती" सभी की, भ्रान्तधारणा होंगी विफल।।प्रभु.....।।3।।

भजन-136

आज घड़ी शुभ आई रे, जय बोलो वीर की।।टेक.।।
माता त्रिशला बड़ी बड़भागिन-बड़ी बड़भागिन।
वीरा की माता कहाई रे। जय बोलो वीर की.।।1।।
राजा सिद्धारथ वीरप्रभू को–वीर प्रभू को।
गोदी में ले हरषाए रे।।जय.....।।2।।
कुण्डलपुर के सब नरनारी-सब नरनारी।
गावत आज बधाई रे।।जय.....।।3।।

महावीर के जन्म से पावन-जन्म से पावन
कुण्डलपुरी हरषाई रे।।जय.....।।4।।
इस तीरथ की रज सिर धर लो-रज सिर धर लो।
'चन्दना' पुण्य कमाई रे।।जय.....।।5।।

भजन-137

र्ज–देख तेरे संसार.....

ऋषभदेव से महावीर तक जन्म जयंती गान, हमारा भारत देश महान।।
चौबीसों जिनवर का सब मिलकर गाओ गुणगान,
हमारा भारत देश महान।। टेक.।।
ऋषभदेव पहले तीर्थंकर।
चौबीसवें महावीर जिनेश्वर।।
चैत्र कृष्ण नवमी से शुक्ला त्रयोदशी वरदान, हमारा भारत देश महान।।1।।
चैत्र मास का अतिशय भारी।
महापुरुष जब हों अवतारी।।
चक्रवर्ती सम्राट भरत एवं जन्मे प्रभु राम, हमारा भारत देश महान।।2।।
सबका ही गुणगान करें हम।
ऋषभ वीर का ध्यान करें हम।।
तभी "चंदनामती" हमारे सुधरेंगे सब काम, हमारा भारत देश महान।।3।।

भजन-138

तर्ज–चल दिया छोड़.....

मत छानो माँ का दूध, बनो मजबूत, अटल श्रद्धानी,
यह कहती माँ जिनवाणी।।टेक.।।
कलियुग में नहिं तीर्थंकर हैं।
उनके वच विश्व हितंकर हैं।।

उसको समझो साक्षात् जिनेश्वर वाणी,
यह कहती माँ जिनवाणी।।1।।

पहले जिनशास्त्रों को पढ़ लो।
उन पर पक्की श्रद्धा कर लो।।
यह ही सम्यग्दर्शन की प्रथम निशानी,
यह कहती माँ जिनवाणी।।2।।

अपने पितु की पहचान तुम्हें।
करवाती है निज मात तुम्हें।।
पहचान पड़ोसी से न पिता की मानी,
यह कहती माँ जिनवाणी।।3।।

ऐसे ही तीर्थ व तीर्थंकर।
जिनवाणी बतलाते गुरूजन।।
नहिं अन्य वचन हो सकते जनकल्याणी,
यह कहती माँ जिनवाणी।।4।।

कभी माँ का दूध न छनता है।
क्योंकि वह शुद्ध ही रहता है।।
"चन्दनामती" वैसे ही शुद्ध प्रभु,
यह कहती माँ जिनवाणी।।5।।

भजन-139

तर्ज-तेरी दुनिया से दूर.....

माता त्रिशला के लाल, कुण्डलपुर के युवराज, महावीर स्वामी।।टेक.।।

जन्मे वीरा जब तुम, तो इन्द्रों ने भी आकर, रतन बरसाया,
रतन बरसाया-जन्म उत्सव मनाया।
राजा सिद्धारथ ने, खुशी में झूम करके, भण्डार खुलवाया,
भण्डार खुलवाया, सबको दान बंटवाया।
दिन वह बना इतिहास, अहिंसा का बजा नाद, महावीर स्वामी।।1।।

तुमने वीरा हमको तो, दे दी सारी निधियाँ, हम सोते ही रहे,
हम सोते ही रहे, निधियाँ खोते ही रहे।
तेरी जन्मनगरी, न विकसित किया हमने, बस रोते ही रहे,
रोते ही रहे, सब कुछ खोते ही रहे।।
किया कर्तव्य न याद, करते रहे केवल बात, महावीर स्वामी।।2।।

अब तो घड़ियाँ आईं, जब ज्ञानमती माता की, प्रेरणा मिली,
प्रेरणा मिली, उनकी प्रेरणा मिली।
तेरी जन्मनगरी, उस कुण्डलपुरी नगरी में, ज्योति इक जली,
ज्योति इक जली, नई ज्योति इक जली।
"चन्दनामती" यह बात, सचमुच बनी इतिहास, महावीर स्वामी।।3।।

भजन-140

तर्ज-अच्छा सिला दिया.....

कुण्डलपुरी तीर्थ को फिर से बचाना है।
असली जन्मभूमि महावीर की बचाना है।।टेक.।।

इन्द्र ने यह कुण्डलपुरी नगरी बसाई थी।
दर्शन करने जहाँ सारी स्वर्गपुरी आई थी।।
उसी का अब जीर्णोद्धार करने जाना है।
असली जन्मभूमि महावीर की बचाना है।।1।।

कोई अपनी शक्ती अच्छे कामों में लगाते हैं।
कोई बने काम भी बिगाड़ने को आते हैं।।
अपने कर्मों का फल सबको खुद ही पाना है।
असली जन्मभूमि महावीर की बचाना है।।2।।

सबको जो तिराता तीर्थ कैसे डूब सकता है।
उसको तो डुबाने वाला खुद ही डूब सकता है।।

तीरथ की भक्ति से अब खुद को तिराना है।
असली जन्मभूमि महावीर की बचाना है।।3।।

वैशाली को वीर जन्मभूमि नहीं कहना।
वैशाली को उनकी ननिहाल ही समझना।।
"चन्दनामती" हमें कुण्डलपुर जाना है।
असली जन्मभूमि महावीर की बचाना है।।4।।

भजन-141

तर्ज–तेरे पाँच हुए कल्याण प्रभो.....

हैं पांच नाम विख्यात तेरे, महावीर वीर अतिवीर प्रभो।
सन्मति एवं प्रभु वर्द्धमान, त्रिशलानन्दन महावीर प्रभो।। टेक.।।
जन्म हुआ कुण्डलपुर नगरी, बहुत रतन वहाँ बरसे थे।
चैत्र सुदी तेरस थी तिथि, जब पितु सिद्धारथ हरषे थे।।
बनी रत्नमयी धरती.....धरती
बनी रत्नमयी धरती तब से, हे त्रिशलानन्दन वीर प्रभो।।
हैं पांच नाम.....।।1।।
पावापुर से मोक्ष पधारे, जलमंदिर वहाँ लहराया।
अपने प्रभु का पादप्रक्षालन, करना मानो उसने चाहा।
दीवाली मनी तब से.....तब से,
दीवाली तब से शुरू हुई, हे जगदानन्दन वीर प्रभो।।
हैं पांच नाम.....।।2।।
छब्बिस सौवाँ जन्ममहोत्सव, सबने मनाया है तेरा।
तेरे उत्सव से ही "चन्दनामति", जग में गौरव फैला।
जय जय हो तेरी.....तेरी
जय जय हो तेरी युग-युग तक, हे त्रिशलानन्दन वीर प्रभो।।
हैं पांच नाम.....।।3।।

भजन-142

तर्ज –दीदी तेरा.....

मांगीतुंगी तीरथ पुराना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।
तुंगी पर्वत ऊँचा सुहाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।टेक.।।
न पर्वत हैं तीरथ, न सरवर हैं तीरथ,
जिनेन्द्रों की महिमा से बनते हैं तीरथ।।
भवसिन्धु से जो तिरावे जगत को,
वही माने जाते हैं सच्चे तीरथ।।
तीरथ की कीरत बढ़ाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।1।।

इसी गिरि से निन्यानवे कोटि मुनियों ने,
तप करके शिवलक्ष्मी पाया उन्होंने।
उन्हीं की तपस्या का अतिशय वहाँ पर,
दिखा करता है दर्श पाया जिन्होंने।।
वन्दन करके पुण्य कमाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।2।।

चौबीस जिनबिम्ब से युत जिनालय,
जिनवर श्री मुनिसुव्रत मूलनायक।
श्रेयांससागर गुरू की प्रेरणा से
बना है वृहत्काय मंदिर सुखालय।
सबको श्रद्धा से सिर झुकाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।3।।

इस तीर्थ पर प्रभु ऋषभदेव की,
इक सौ अठफुट की प्रतिमा प्रगट हो रही है।
कलिकाल की सबसे ऊँची ये प्रतिमा,
प्रभु कीर्ति को "चन्दना" कह रही है।।
पर्वत वंदन करके ही जाना, प्रभु राम को मोक्ष यहीं माना।।4।।

भजन-143

तर्ज –राम जी निकली.....

ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी, बने पर्वत पे ऊँची निराली-निराली।
धरती से सोलह सौ फुट ऊँचाई, पर है अखंड शिला एक प्यारी।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।टेक.।।

है ऐतिहासिक निर्वाण भूमि।
निन्यानवे कोटि मुनि सिद्धभूमी।।
महाराष्ट्र का सम्मेदशिखर है।
श्री मांगीतुंगी तीरथ प्रवर है।।

प्राचीन तीरथ, मुनियों की कीरत, बतलाती है वह धरती निराली।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।1।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी ने।
कर ध्यान एवं तपस्या गिरी पे।।
दी प्रेरणा मूर्ति निर्माण होवे।
जिनसंस्कृति कीर्तीमान होवे।

गुरुप्रेरणा से, भक्तों के धन से, साकार हुई योजना यह निराली।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।2।।

हो कार्य सिद्धी बन जाए प्रतिमा।
श्री एक सौ आठ फुट ऊँची प्रतिमा।।
सब मिल करो मंत्र का जाप्य भक्तों।
निर्विघ्न हो 'चंदना' कार्य भक्तों।

देखेंगे हम भी, देखोगे तुम भी, पर्वत पे प्रगटेगी जब प्रतिमा प्यारी।
ऋषभदेव की मूर्ति प्यारी.....।।5।।

भजन-144

तर्ज –माई रे माई.....

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर, स्वर्णिम अवसर आया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।
बोलो ऋषभदेव की जय, बोलो ऋषभदेव की जय.।।टेक.।।

जहाँ कभी श्री रामचंद्र ने मोक्षधाम पाया था।
निन्यानवे कोटि मुनियों ने भी शिवपद पाया था।।
उस पर्वत पर ऋषियों ने भी, आतमध्यान लगाया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।बोलो ऋषभदेव.।।1।।

वही ध्यान की परम्परा, जीवन्त हुई है अब फिर।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमति का, चौमास हुआ तीरथ पर।।
सन् उन्निस सौ छियानवे में, उनका चिन्तन आया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।बोलो ऋषभदेव.।।2।।

इस अद्भुत निर्माण को करने, वाले सभी सफल हों।
स्वस्थ चिरायू बने "चंदनामति" उन यश उज्ज्वल हो।
कोष खोल दो तुम भी अपना.....
कोष खोल दो तुम भी अपना, है यह चंचल माया।
युग की सबसे ऊँची प्रतिमा, बनने का क्षण आया।।बोलो ऋषभदेव.।।3।।

भजन-145

तर्ज–जब से प्रभु दर्श मिला.....

सबसे बड़ी मूर्ति का, मांगीतुंगी तीर्थ का,
दुनिया में नाम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।टेक.।।

ऋषभदेव प्रभुजी की प्रतिमा-2।
बनेगी धरा की यह गरिमा-2।।

जैन संस्कृति की धरोहर-2।
होगी यह सचमुच मनोहर-2।।
देखो जा के पास में, भक्ति लेके साथ में,
पर्वत पे काम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।1।।

गणिनी माता ज्ञानमती जी-2।
प्रेरणा मिली है उन्हीं की-2।।
भक्त सभी, उसमें जुट पड़े-2।
सबके, भाव दान में बढ़े-2।।
तुम भी प्रभु का ध्यान करो, जितना बने दान करो,
सबसे बड़ा काम हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।2।।

प्रतिमा इक सौ, आठ फुट की है-2।
विश्व की अनमोल यह कृती है-2।।
भाव है ये "चन्दनामती"-2।
शीघ्र बनके प्रगट हो मूर्ती-2।।
हो प्रतिष्ठा ठाठ से, हम सभी हों साथ में,
सबको यही भान हो रहा है, मूर्ति का निर्माण हो रहा है।।3।।

भजन-146

तर्ज –सोनागिरि में .....

सबसे ऊँची प्रतिमा हमें बनाना है।
ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।
ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा मिली, मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र को निधी मिली।।
सबसे ऊँची.....।।टेक.।।

निन्यानवे करोड़ मुनियों को मिली मुक्ती।
श्रीराम हनुमन्तादि ने पाई जहाँ सिद्धी।।

तुंगीगिरी पर आज उनकी मूर्तियां दिखतीं।
मानो तपस्या कर रही हैं मूर्तियां उनकी।।
ऊपर चढ़कर वंदन करने जाना है, ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।1।।

सन् उन्निस सौ छियानवे का वर्षायोग था।
गणिनी माता ज्ञानमती का संघ था वहाँ।।
उनके वर्षायोग में संयोग बना ऐसा।
सोने में मानो आ गई सुगंधी के जैसा।।
बदल गया उस तीरथ का नजराना है, ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।2।।

अब प्रतीक्षा की घड़ी हों पूर्ण जल्दी से।
भगवान का निर्माण हो संपूर्ण जल्दी से।।
शीघ्र प्रभु का मस्तकाभिषेक करना है।
प्रभु चरण में वंदना सिर टेक करना है।।
यही "चंदनामती" भावना भाना है, ऋषभदेव का नाम हमें चमकाना है।।3।।

भजन-147

तर्ज –मन मंदिर में.....

सबसे ऊँची प्रतिमा बनाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।
पर्वत के ऊपर, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.....।।टेक.।।

हमने न देखे वे आचार्य गुरुवर
जिस प्रेरणा से बने गोम्मटेश्वर।
फिर से वही रूप लाएँगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।1।।

हम पुण्यशाली हैं आज भक्तों,
श्री ज्ञानमती मात के दर्श कर लो।
उनका ही चिंतन दिखाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।2।।

है एक सौ आठ फुट ऊँची प्रतिमा,
दुनिया में इक मात्र फैलेगी गरिमा।
ऐसा चमत्कार पाएँगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।3।।

तन, मन व धन सार्थक कर लो सब जन,
इक मंत्र का जाप्य भी करना प्रतिदिन।
जिससे देव भी आएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।4।।

करने, कराने वाले सुखी हों
'चंदनामती' तीर्थ की उन्नती हो।
अब भक्त सब सिद्धि पाएंगे, मांगीतुंगी गिरी पर।।ऊँची.।।5।।

भजन-148

तर्ज–जिंदगी प्यार का गीत है.....

ये तो जिनवर का दरबार है,
यहाँ भक्ती ही करना पड़ेगा।
प्रभु के पद में ही शिवद्वार है,
उस पे क्रम से ही चलना पड़ेगा।।
देवपूजा गुरूपास्ति कर, फिर है स्वाध्याय संयम व तप।

दान ये मिजलके षट्कार्य हैं,
इन्हें श्रावक को करना पड़ेगा।।1।।

देशव्रत अरु महाव्रत को भी, शक्ति अनुसार पालों सभी।
इनसे ही मिलता शिवद्वार है,
इनका पालन तो करना पड़ेगा।।2।।

ध्यान की साधना भी करो, आत्म आराधना भी करो।
मिलता पद इससे परमात्म है,
किन्तु निज में तो रमना पड़ेगा।।3।।

"चन्दनामति" यही साधना, पूर्ण कर देगी हर भावना।
ज्ञान स्वाध्याय के बाद भी,
आचरण शुद्ध करना पड़ेगा।।4।।

भजन-149

तर्ज –अब ना छुपाऊँगा.....

जिनवर जयकारा हो, जिनधर्म प्यारा हो।
भारत क्या दुनिया भर में, गूंजे इक नारा हो,
मांगीतुंगी में बने शीघ्र सबसे ऊँची प्रतिमा।।टेक.।।
ऋषभदेव प्रभु प्रगटेंगे, हम उनकी छवि निरखेंगे।
इक सौ अठ फुट प्रतिमा की, अनुपम कृति को देखेंगे।
जिनवर जयकारा हो, जिनधर्म प्यारा हो,
भारत क्या दुनिया भर में, गूंजे इक नारा हो,
मांगीतुंगी में बने शीघ्र सबसे ऊँची प्रतिमा।।1।।
धन जो इसमें लगाते हैं, अपना भाग्य जगाते हैं।
ऋद्धि समृद्धि पाते हैं, तन को स्वस्थ बनाते हैं।
जिनवर जयकारा हो.....।।2।।
गणिनी माता ज्ञानमती, इस युग की चैतन्य कृती।
उनकी ही प्रेरणा मिली, ज्योति "चन्दनामती" जली।।
जिनवर जयकारा हो.....।।3।।

भजन-150

तर्ज–तुम तो ठहरे परदेशी.....

समवसरण दर्शन करो, तो भव्य कहलाओगे।
यदि तुम अभव्य हुए तो दर्श नहीं पाओगे।। टेक.।।
प्रभु जी की धर्म सभा, में जो भी आता है।
तुम भी दिव्यध्वनि को सुनो, तो भव से तिर जाओगे।। समवसरण.....।।1।।

गूँगे भी वहाँ जाकर, बोलने लग जाते हैं।
तुम भी आज श्रद्धा करो, तो आत्मसुख पाओगे।। समवसरण.....।।2।।

इन्द्रभूति गौतम का भी, मान गलित हुआ था जहाँ।
देखो वही मानस्तम्भ, मुक्तिपथ पाओगे।। समवसरण.....।।3।।

दर्शनों के भावों से, मेढक ने देवगती ली।
दर्शन करो तुम भी तो, देवगति पाओगे।। समवसरण.....।।4।।

तुम भव्य हो या अभव्य, इसका परीक्षण करो।
दर्शन से भव्यत्व की, श्रेणी में आओगे।। समवसरण.....।।5।।

भजन-151

तर्ज–अब ना छुपाऊँगा.....

दर्शन को जाना है, मस्तक झुकाना है,
प्रभु की सुहानी छवि मन में बिठाना है,
समवसरण में भव्य प्राणी ही जाते हैं-2।। टेक.।।

जिस आत्मा में भक्ती है, प्रभु बनने की शक्ति है।
चारों गति के जीवों में भव्य शक्ति हो सकती है।।
नहिं अभव्य वहाँ जा सकते, प्रभु के दरस नहिं पा सकते।
दर्शन को जाना है.....।।1।।

मानस्तम्भों का दर्शन, करता है अभिमान गलन।
तब होवे सम्यग्दर्शन, दूर भगे मिथ्यादर्शन।।
फिर प्रभु के सम्मुख जाकर, दिव्यध्वनि का करो श्रवण।।
दर्शन को जाना है.....।।2।।

समवसरण की यह प्रतिकृति, ऋषभदेव प्रभु की मूरत।
है साक्षात् जिनेश्वर सम, आदिब्रह्म की प्रतिमूरत।।
इनके दर्शन वन्दन से, होते सब मनरथ पूरण।।
दर्शन को जाना है.....।।3।।

गणिनी माता ज्ञानमती, को वन्दन करती धरती।
उनकी प्रबल प्रेरणा से, समवसरण की मिली कृती।।

यही 'चंदनामति' ग्रन्थों में, तीर्थंकर की सभा कही।
दर्शन को जाना है.....।।4।।

भजन-152

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई.....

समवसरण आया अभिनन्दन कर लो,
वंदन कर लो, अभिनन्दन कर लो।
यह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।। टेक.।।

केवलज्ञानी तीर्थंकर विहरण करें,
चरण कमल तल इन्द्र कमल स्वर्णिम धरें।
उन पर भी चतुरंगुल प्रभू अधर चलें,
वीतरागता उनकी सदा अमर रहे।।
दर्शन करो, वंदन करो,
यह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।।1।।

जिनवर की उपदेश सभा जो दिव्य है,
समवसरण उसको ही कहते भव्य हैं।
आज नहीं साक्षात् हमें वे दिख रहे,
उनकी प्रतीकृती की हम रचना करें।।
दर्शन करो, वंदन करो,
यह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।।2।।

मिथ्यात्वी का मान भंग हो दर्श से,
सम्यग्दर्शन प्रगटित करते हर्ष से।
मानव क्या पशु भी तज देते वैर को,
समवसरण 'चंदना' दिखावे दृश्य वो।।

दर्शन करो, वंदन करो,
वह केवलज्ञान प्रतीक है, जग भर में अलौकिक एक है।।
समवसरण.....।।3।।

भजन-153

तर्ज-पुरवा सुहानी आई रे.....

घडियाँ सुहानी आईं रे....घड़ियाँ।
श्री जिनवर का समवसरण, आज करूँ मैं अभिनंदन, बात यही मन भाई रे....।
घड़ियाँ, घड़ियाँ.....।।टेक.।।

नहीं कल्पवृक्षों के फूल मेरे पास। हो ओ ओ.....
केवल भक्ति सुमनों से पूजा करूँ नाथ।।हो ओ.....
स्वागत का भाव ले, वंदन का चाव ले, जनता उमड़ आई रे....घड़ियाँ।।1।।

मणियों का दीप प्रभु लाऊँ मैं कहाँ से।।हो ओ.....
कंचन का थाल भी सजाऊँ मैं कहाँ से।।हो ओ....
माटी का दीप ले, बाती की प्रीति ले, आरति सजाई रे....घड़ियाँ।।2।।

समवशरण में दिव्यध्वनि हम सुनेंगे।।हो ओ.....
"चंदनामती" प्रभु को वंदन करेंगे।। हो ओ.....
आपस में प्रेम हो, जग भर में क्षेम हो, यही बात मन भाई रे....घड़ियाँ।।3।।

भजन-154

तर्ज-माई रे माई.....

ऋषभदेव के समवसरण का अतिशय कैसा छाया।
ज्ञानमती माता ने विश्व में, धर्म का अलख जगाया।
बोलो जय जय जय.....

आज विश्व को ऋषभदेव का है सन्देश सुनाना।
प्राणिमात्र को जैनधर्म का हितकर मार्ग बताना।।
जिओ और जीने दो सबको, प्रभु ने यही सिखाया।
ज्ञानमती माता ने विश्व में, धर्म का अलख जगाया।
बोलो जय जय जय.....।।1।।
आज नहीं साक्षात् प्रभू का समवसरण बनता है।
फिर भी कृत्रिम समवसरण में प्रभु दर्शन मिलता है।।
दर्शन करके श्री जिनवर का, नर तन सफल बनाया।
ज्ञानमती माता ने विश्व में, धर्म का अलख जगाया।
बोलो जय जय जय.....।।2।।
"जैन" मात्र इक धर्म है इसको सम्प्रदाय मत समझो।
इसका लक्ष्य जितेन्द्रियता का पाठ पढ़ाना समझो।।
यह पावन संदेश 'चन्दनामती', सभी ने पाया।
ज्ञानमती माता ने विश्व में, धर्म का अलख जगाया।
बोलो जय जय जय.....।।3।।

भजन-155

(मुक्तक)

सच तो प्रभु समवसरण महिमा जनता पहचान न पाई है।
इसलिए ज्ञानमति माता ने शास्त्रों की बात बताई है।।
है तीन लोक में सर्वश्रेष्ठ लक्ष्मी यह दिव्यविभूती है।
सच पूछो तो जग में इससे बढ़कर कोई न विभूती है।।1।।

लक्ष्मी यदि तुम लेना चाहो तो समवसरण का दर्श करो।
प्रभु चरण कमल के शुभ प्रतीक में स्वर्णकमल का स्पर्श करो।।
वह घर पावन हो जाएगा जहाँ चरणकमल दर्शन होगा।
सुख शांति समृद्धी फैलेगी आरोग्यमयी जीवन होगा।।2।।

जो बतलाते इस कलियुग में सतयुग का दर्श नहीं होगा।
प्रभु समवसरण का दर्शन कर वह भी आश्चर्यचकित होता।।
जो कहते इसके दर्शन से भव्यत्व कली कैसे खिलती।
उनके आतम में एक सहज अनुभूती ज्ञानज्योति जलती।।3।।

तीर्थंकर प्रभु का समवसरण जन-जन में शांति प्रदान करे।
जिस जगह गया पावन यह रथ सतयुग सा नव निर्माण करे।।
यह नई चेतना का प्रतीक, युग युग तक क्षेम करे जग में।
मैत्री का स्रोत प्रवाहित हो, भरतेश्वर के इस भारत में।।4।।

भजन-156

तर्ज –ऐ मेरे वतन.....

जिनधर्म के प्यारे भक्तों! सुनो समवसरण की कहानी।
इस समवसरण में विराजे, तीर्थंकर केवलज्ञानी।

तीर्थंकर जब तप करके, केवलज्ञानी बनते हैं।
तब इन्द्राज्ञा से धनपति, ये समवसरण रचते हैं।।
रत्नों की राशि लुटाकर, देते वे दिव्य निशानी।
इस समवसरण में विराजे, तीर्थंकर केवलज्ञानी।।1।।

श्री ऋषभदेव का पहला, बना समवसरण वसुधा पर।
महावीर प्रभू का अंतिम, बना विपुलाचल पर्वत पर।।
संदेश विश्व को देकर, वरने को चले शिवरानी।
इस समवसरण में विराजे, तीर्थंकर केवलज्ञानी।।2।।

वही रूप दिखाने हेतू, बनी समवसरण की रचना।
आगमयुत शुभ रचना यह, धरती पर बनी अनुपमा।।
गणिनी माँ ज्ञानमती की, यह कृति "चंदना" सुहानी।
इस समवसरण में विराजे, तीर्थंकर केवलज्ञानी।।3।।

भजन-157

(गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ-माधोराजपुरा के संदर्भ में)

तर्ज-सपने में.....

पारस प्रभु का मस्तकाभिषेक निराला है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।टेक.।।

है प्रतिमा अतिशयकारी, सांवरिया छवि मनहारी।
खड्गासन मूरति प्यारी, है सबके लिए सुखकारी।।
तीर्थंकर पारसनाथ का नाम निराला है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।1।।

गणिनी श्री ज्ञानमती की, दीक्षा आर्यिका हुई थी।
उस माधोराजपुरा की, पावन हो गई धरा थी।।
वहाँ गूंजे पारसनाथ का जयजयकारा है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।2।।

सदियों के बाद यहाँ पर, हुआ पंचकल्याण महोत्सव।
नगरी में धूम मची थी, दुलहन की तरह सजी थी।।
"चन्दनामती" यह तीर्थ बन गया प्यारा है।
क्या सुन्दर लगती तन पर दूध की धारा है।।3।।

भजन-158

तर्ज-गोमटेश जय गोमटेश.....

पार्श्वनाथ जय पार्श्वनाथ, गिरिवर पे विराजे-2
हम चरण वन्दना करते हैं।
वंदना करते हैं, सब जन मन में नव ज्योति जले
सब जन मन में नवज्योति जले, हर जिह्वा पर प्रभु नाम रहे,
हम चरण वंदना करते हैं।।टेक.।।

वाराणसी में नृप अश्वसेन, वामा माता से जन्म लिया। वामा.....
फिर बालयती बन तप करके, इस भारत भू को धन्य किया।।इस.....
अहिच्छत्र में केवलज्ञान तथा-2, सम्मेदशिखर से मोक्ष गये,
हम चरण वन्दना करते हैं।।1।।

तेईसवें तीर्थंकर पारस प्रभु की, भक्ति से सब कष्ट टलें।।प्रभु.....
हो क्षमा व धैर्य की प्राप्ति हमें, उपसर्ग सहन की शक्ति मिले।।उपसर्ग.....
भगवान नहीं बन सकें तो हम-2, इंसान के गुण को प्राप्त करें,
हम चरण वन्दना करते हैं।।2।।

नवग्रह में केतु अरिष्टनिवारक, पार्श्वनाथ कहलाते हैं। पार्श्वनाथ.....
"चन्दनामती" ये कालसर्प का, योग भी शीघ्र मिटाते हैं।।योग भी.....
सांवरिया पारसनाथ प्रभू-2, हम सबको सिद्धि प्रदान करें,
हम चरण वन्दना करते हैं।।3।।

भजन-159

तर्ज-जरा सामने.....

दीक्षा भूमी की महिमा महान है, जहाँ तीरथ बना शुभ धाम है।
गणिनी ज्ञानमती की दीक्षा भूमि का, माधोराजपुरा शुभ नाम है।।टेक.।।

प्रथमाचार्य शांतिसागर के, प्रथम हि पट्टाचार्य गुरू।
वीरसिंधु से प्रथम ज्ञानमति, का दीक्षाक्रम हुआ शुरू।।
प्रथम बाल ब्रह्मचारिणी महान हैं, ज्ञानमती माताजी जिनका नाम है।
गणिनी ज्ञानमती की दीक्षा भूमि का, माधोराजपुरा शुभ नाम है।।1।।

पारसप्रभु के गर्भकल्याणक, तिथि में दीक्षा धारण की।
सन् उन्निस सौ छप्पन में, वैशाख कृष्णा दुतिया तिथि थी।।
सार्थक हो गया ज्ञानमति नाम है, रचे ढाई सौ ग्रंथ महान है।
गणिनी ज्ञानमती की दीक्षा भूमि का, माधोराजपुरा शुभ नाम है।।2।।

पार्श्वनाथ की खड्गासन, प्रतिमा पर्वत पर राज रही।
और 'चन्दनामती' तीर्थ पर, चौबिस मूर्ति विराज रहीं।।
उनके दर्शन का पुण्य महान है, निकट में पदमपुरा तीर्थ धाम है।
गणिनी ज्ञानमती की दीक्षा भूमि का, माधोराजपुरा शुभ नाम है।।3।।

भजन-160

तर्ज –वन्दन शत शत बार है.....

मेरा नम्र प्रणाम है,
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।
कलियुग में भी जिनका दर्शन करता जग कल्याण है।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।टेक.।।

जिनके तप की कथा सदा, ग्रन्थों में पढ़ी पुरानी है।
कवियों ने जिन मुनियों की, कविता में कही कहानी है।।
भारत की धरती ही उन, सन्तों की मानो खान है।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।।1।।

सदी बीसवीं में गुरु शांतीसागर प्रथमाचार्य हुए।
घोर तपस्या करके युग को, कई संत मुनिराज दिये।।
तभी आज मुनियों के दर्शन ही मानो शिवधाम हैं।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।2।।

काय में उत्तम बल नहिं है, फिर भी चर्या प्राचीन है।
वही मूलगुण वही परीषह, शास्त्रों के आधीन हैं।।
तभी "चन्दनामति" उन गुरु के पद में ही शिवधाम है।
महावीर के लघुनंदन को मेरा नम्र प्रणाम है।।3।।

भजन-161

तर्ज–सुहानी जैनवाणी.....

दिगम्बर प्राकृतिक मुद्रा, विरागी की निशानी है।
कमण्डलु पिच्छिधारी नग्न मुनिवर की कहानी है।। टेक.।।
दिशाएँ ही बनीं अम्बर न तन पर वस्त्र ये डालें।
महाव्रत पाँच समिति और गुप्ती तीन ये पालें।।
त्रयोदश विधि चरित पालन करें जिनवर की वाणी है।। कमण्डलु.....।।1।।
बिना बोले ही इनकी शान्त छवि ऐसा बताती है।
मुक्ति कन्यावरण में यह ही मुद्रा काम आती है।।
मोक्षपथ के पथिकजन को यही वाणी सुनानी है। कमण्डलु.....।।2।।
यदि मुनिव्रत न पल सकता तो श्रावक धर्म मत भूलो।
देव-गुरु-शास्त्र की श्रद्धा परम कर्तव्य मत भूलो।।
बने मति 'चन्दना' ऐसी यही ऋषियों की वाणी है।। कमण्डलु.....।।3।।

भजन-162

तर्ज–धरती का.....

सन्तों का तुम्हें नमन है, युग पुरुषों का वन्दन है।
प्रथमाचार्य शांतिसागर को, सौ सौ बार नमन है।।
सौ सौ बार नमन है-2।। टेक.।।
आदिनाथ से महावीर तक जिनचर्या बतलाई।
कुन्दकुन्द ने उसी तरह की मुनिचर्या अपनाई।।
शांतिसिन्धु भी उसी श्रृंखला के ही लघुनन्दन हैं।
सौ सौ बार नमन है.....।।1।।
दक्षिण भारत वसुन्धरा का है इतिहास गवाही।
भोजग्राम माँ सत्यवती का पुत्र मुक्तिपथ राही।।
प्रथम बने आचार्यप्रवर युगप्रमुख तुम्हें वन्दन है।
सौ सौ बार नमन है.....।।2।।

लुप्तप्राय यतिचर्या को जीवन्त किया था तुमने।
नग्न दिगम्बर मुद्रा को श्रुतवंत किया था तुमने।।
इसीलिए "चन्दनामती" जग करता तव वन्दन है।
सौ सौ बार नमन है.....।।3।।

भजन-163

तर्ज–तेरी दुनिया से दूर.....

गुरुवर शांतीसागर, थे इस युग के रत्नाकर, उन्हें याद रखना।। टेक.।।
सुनते हैं जो इनकी मुनिचर्या की कहानी, रोमाँच होता है,
रोमाँच होता है, मन में भान होता है।
उनके जैसा त्यागी, तपस्वी कोई मुनिवर, न प्राप्त होता है,
न प्राप्त होता है, न प्राप्त होता है।।
थे वे ज्ञान के भण्डार, उनमें शांति थी अपार, उन्हें याद रखना।।1।।
बीसवीं सदी के, चारित्र चक्रवर्ती, श्री शांतिसागर जी,
श्री शांतिसागर जी, गुरुवर शांतिसागर जी।
मुनिपथ प्रदर्शक, आचार्य प्रथम थे, वे चउसंघ नायक जी,
चउसंघ नायक जी, गुरुवर मूलनायक जी।।
थे दश धर्मों के भण्डार, उनमें धैर्य था अपार, उन्हें याद रखना।।2।।
भादों सुदी दुतिया, को पुण्यतिथि उनकी, मनाते हैं सभी,
मनाते हैं सभी, उनको ध्याते हैं सभी।
उनकी स्मृतियों के, दर्पण में निज को, सजाते हैं सभी,
सजाते हैं सभी, निज को ध्याते हैं सभी।।
उनकी यादों का संसार, 'चंदनामती' है सार, उन्हें याद रखना।।3।।

भजन-164

तर्ज–मैं चंदन बनकर.....

इस युग के पहले गुरुवर, हैं शांतीसागर जी।
इस युग के पहले मुनिवर हैं, शांतीसागर जी।। इस...।। टेक.।।

दक्षिण भारत कर्नाटक, में जनम हुआ था इनका।
माँ सत्यवती के नंदन, श्री शांतीसागर जी।।1।।

देवेन्द्रकीर्ति मुनिवर से, क्षुल्लक अरु मुनि दीक्षा ली।
आचार्य प्रथम कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।2।।

मूलाचारादिक पढ़कर, मुनिचर्या बतलाई थी।
गुरुओं के गुरु कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।3।।

धवला आदिक ग्रंथों का, भी जीर्णोद्धार कराया।
उपसर्गजयी कहलाए, श्री शांतीसागर जी।।4।।

"चन्दनामती" उन गुरुवर, को कोटी कोटि नमन है।
वे शीघ्र मोक्षपद पाएं, श्री शांतीसागर जी।।5।।

भजन-165

तर्ज –चल दिया छोड़.....

श्री शांतिसिंधु मुनिराज, जगत सरताज, प्रथम ऋषिराजा
युग के मुनि मार्ग विधाता।।
थे भोजग्राम के राजकुंवर।
माँ सत्यवती के पुत्रप्रवर।।
जन्मे जग के कल्याण हेतु सुखदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।1।।
जैसे रवि तिमिर भगाता है।
जग में प्रकाश फैलाता है।
यूं ही मिथ्यात्व तिमिरनाशक गुरु गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।2।।

मुनि के दर्शन जब दुर्लभ थे।
देवेन्द्रकीर्ति इक गुरुवर थे।।
वे बने शांतिसागर मुनि के निर्माता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।3।।
मुनिचर्या तब जीवन्त हुई।
जिनवाणी सार्थक सिद्ध हुई।।
कलियुग भी सत्पुरुषों का जन्मप्रदाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।4।।
है वर्तमान गौरवशाली।
उस एक वृक्ष की ही डाली।।
फल फूल रही वंशावलि गौरव गाथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।5।।
आचार्य प्रथम वे मान्य हुए।
युग में सबसे प्राधान्य हुए।।
उत्कृष्ट समाधिमरण से जोड़ा नाता।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।6।।
हम भी परोक्ष यशगान करें।
गुरुवर का मन में ध्यान करें।।
"चन्दनामती" वन्दना करें नत माथा।
युग के मुनिमार्ग विधाता।।7।।

भजन-166

सुनो हम कथा सुनाते हैं-2,
प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गाथा गाते हैं।। सुनो...।।टेक.।।

दक्षिण भारत के भोजग्राम, में भीमगौंड पाटिल थे।
वे सत्यवती पत्नी के संग, सुखदुख में शामिल थे।।
उन्हीं का पुण्य बताते हैं,
इस पुत्र को दे जन्म बड़ा वे हर्ष मनाते हैं।।सुनो..।।1।।

सन् अट्ठारह सौ बहत्तर, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी थी।
तेजस्वी बालक को पा, माँ सत्यवती हर्षी थीं।
दान तब पिता लुटाते हैं,
नाम सातगौंडा रख पुत्र का, उत्सव मनाते हैं।।सुनो..।।2।।

शैशव से बाल्य अवस्था, पाई बालक ने जैसे।
इक कन्या के संग उसका, रच दिया ब्याह बस सबने।।
दुखद इक बात बताते हैं,
पत्नी की मृत्यू छह मास के ही बाद दिखाते हैं।।सुनो..।।3।।

इस बाल विवाह से उनका, संबंध न कोई रहा था।
ब्रह्मचारी रहकर उनने, दूजा न विवाह किया था।।
सातगौंडा बतलाते हैं,
जिनधर्म की रक्षा के लिए वे आगे आते हैं।।सुनो..।।4।।

पितुमात के मोह के कारण, घर त्याग नहीं कर पाए।
लेकिन स्वाध्यायादिक कर, नित मन वैराग्य बढ़ाए।।
धर्म का पथ अपनाते हैं,
वे "चंदनामति" माता-पिता का मन न दुखाते हैं।।सुनो..।।5।।

भजन-167

तर्ज –आओ बच्चों.....

आवो बन्धू! तुम्हें बताएँ, परिचय प्रथमाचार्य का।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।टेक.।।

देव-शास्त्र-गुरु भक्त युवक थे, श्री सातगौंडा पाटिल।
मात-पिता की सेवा करके, जीत लिया था उनका दिल।।
कहते हैं उनके जीवन में, धैर्य व शौर्य अपार था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।1।।

गाँव के श्रावक दिन भर खेत में, खेती करने जाते थे।
लेकिन सातगौंड पाटिल, दो घंटे खेत पे जाते थे।।
फिर भी उनको फसल से अपनी, मिलता खूब अनाज था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।2।।

खेत में पक्षी दाना चुगते, उनको नहीं भगाते थे।
पानी भी उनको देकर, पक्षियों की प्यास बुझाते थे।।
इसी दया के कारण उनका, भरा सदा भण्डार था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।3।।

उनका पुण्यपुराण 'चन्दनामती' जगत में गूँज रहा।
प्रौढ़-युवावस्था में उनको, ज्ञान लाभ भी खूब रहा।।
उनके मन में तो दीक्षा, लेने का पुण्य विचार था।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।
वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।4।।

भजन-168

तर्ज –अरे रे.....

सुनो इक संत कहानी, कहूँ निर्ग्रन्थ कहानी,
श्री शांतिसागर मुनिराज की।।
शांतिसागर शांतिसागर बोलो बारम्बार,
बोलो सभी मिलके उनकी जयजयकार।
मुनिचर्या इनसे ही हुई है साकार,
उन गुरूणां गुरु को है नमस्कार।।सुनो.।।टेक.।।

ईसवी सन् उन्निस सौ बारह तक में,
उनके माता-पिता गये स्वर्गलोक में।

उनके सभी भाइयों का ब्याह हो गया,
सातगौंडा को अब घर से मोह न रहा।।सुनो.।।1।।
सन उन्निस सौ चौदह ज्येष्ठ शुक्ला तेरस थी,
उत्तूर में आये देवेन्द्रकीर्ति मुनि श्री।
उनसे विनयपूर्वक क्षुल्लक दीक्षा ले लिया,
अपनी मनोकामना को पूर्ण कर लिया।।सुनो.।।2।।
फिर तो कई नगरों का उद्धार हो गया,
क्षुल्लक सातगौंडा का प्रचार हो गया।
सन् उन्निस सौ बीस में यरनाल आ गये,
वहाँ अपने गुरु जी को फिर से पा गये।।सुनो.।।3।।
गुरुवर से दीक्षा का निवेदन किया था,
अपने त्याग भाव का प्रदर्शन किया था।
फाल्गुन शुक्ला चौदस मुनिदीक्षा हो गई,
शांतिसागर नाम से प्रसिद्धी हो गई।।सुनो.।।4।।
पुनः मूलाचार आदि ग्रंथ पढ़ लिया,
अपने गुरु को भी उसी रूप कर लिया।
यह थी मुनि शांतिसागर की विशेषता,
"चन्दनामती" ये रत्नत्रय का तेज था।।सुनो.।।5।।

भजन-169

तर्ज–तीरथ करने चली सती.....

दीक्षा लेकर बने शांतिसागर निजकर्म जलाने को।
कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।दीक्षा..।।टेक.।।
एक बार कोन्नूर गुफा में, शांतिसिंधु ध्यानस्थ हुए।
नागराज आकर मुनिवर के, पावन तन पर भ्रमण करे।।
मानो वे पाषाण बन गये, निज आतम निधि पाने को
निज आतम निधि पाने को.....।।दीक्षा...।।1।।

दो ब्रह्मचारी एक बार, मुनिवर के सम्मुख पहुँच गये।
बोले कलियुग में नहिं ऋद्धि, अतः आप मुनिवर नहिं हैं।।
गुरु ने आम्रवृक्ष का उदाहरण, दिया उन्हें समझाने को,
दिया उन्हें समझाने को।।दीक्षा...।।2।।
वे ही आगे बने वीरसागर व चन्द्रसागर मुनिवर।
शांतिसिंधु जैसा गुरु पाकर, किया उन्होंने जन्म सफल।।
बने तभी आचार्य प्रथम वे, चउविध संघ चलाने को,
चउविध संघ चलाने को।।दीक्षा...।।3।।
संघ सहित करके विहार, गुरुवर कुंथलगिरि पहुँच गये।
वहाँ देशभूषण कुलभूषण, मुनि चरणों के दर्श किये।।
उनकी प्रतिमा बनवाई, उनका इतिहास बताने को,
उनका इतिहास बताने को।।दीक्षा...।।4।।
जिनशासन का भाग्य खिल गया, ऐसे तपसी गुरु पाकर।
सहे बहुत उपसर्ग परीषह, गुरुवर ने मुनि पद पाकर।।
बने "चन्दनामती" और भी, मुनि मुक्तीपद पाने को,
मुनी मुक्तिपद पाने को।।दीक्षा...।।5।।

भजन-170

तर्ज–चलो सम्मेदशिखर चालो.....

सुनो इक पुण्यकथा सुन लो, पंचअणुव्रत की कथा सुन लो,
अणुव्रत का अतिशय लख तुम अणुव्रत धारण कर लो।।सुनो.।।टेक.।।
इक श्रावक ने गुरु से पंचअणुव्रत ग्रहण किया।
सत्य अहिंसा अरु अचौर्य, ब्रह्मचर्य का नियम लिया।।
परिग्रह का प्रमाण सुन लो,
पाँच पाप स्थूल त्याग का, चमत्कार सुन लो।।सुनो..।।1।।
परिग्रह सीमा बढ़ी तो श्रावक, मुनिसंघ में आए।
वे पूनमचंद घासीलाल जी, श्रेष्ठी कहलाए।।

गुरुभक्ती की कथा सुन लो,
श्री सम्मेदशिखर यात्रा का, भाव बना सुन लो।।सुनो..।।2।।

श्री आचार्य शांतिसागर का, संघ चला आगे।
संघभक्त वे श्रावक भी चले, यात्रा करवाने।।
यही इतिहास सभी सुन लो,
उत्तर भारत में मुनिसंघ विहार कथा सुन लो।।सुनो..।।3।।

यह सम्मेदशिखर की यात्रा, बनी चमत्कारी।
प्रथम पंचकल्याण महोत्सव, हुआ वहाँ भारी।।
गुरु उपकार कथा सुन लो,
परतंत्र के युग में स्वतंत्र मुनि संघ कथा सुन लो।।सुनो..।।4।।

राजाखेड़ा में प्राणांतक, हमला हुआ संघ पर।
फिर भी अभयदान दे सबको, क्षमा धरी उन पर।।
गुरु की महिमा तुम सुन लो,
संकट अरु उपसर्ग सहन की, शक्ति प्रगट कर लो।।सुनो..।।5।।

संघपती जौहरी श्री मोतीलाल ने दीक्षा ली।
जिनमंदिर बनवा गेंदनमल, ने भी दीक्षा ली।।
यही संस्कार कथा सुन लो,
ऐसे गुरु के चरण "चन्दनामती" सदा नम लो।।सुनो..।।6।।

भजन-171

तर्ज–एक था बुल और एक थी बुलबुल.....

प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गुणगाथा सब मिल गाओ।
हे भव्यात्मन्! उनकी गौरव-गाथा सबको बतलाओ।।
प्रथमाचार्य.....।।टेक.।।

श्री कुम्भोज में बाहुबली, प्रतिमा निर्माण प्रेरणा दी।
श्री समन्तभद्र मुनिवर को, तीर्थ विकास प्रेरणा दी।।
कहा उन्होंने कल्पवृक्ष सम प्रतिमा तीर्थ पे पधराओ।।
प्रथमाचार्य....।।1।।

सन् उन्निस सौ चव्वालिस में, गुरुवर को यह ज्ञात हुआ।
ताड़पत्र पर लिखित धवल, ग्रंथों का बहुतहि घात हुआ।।
बोले श्रुत की रक्षा हेतू विद्वानों को बुलवाओ।।
प्रथमाचार्य....।।2।।

संघपती ने खोज कराकर, उन ग्रंथों को मंगवाया।
ताम्रपट्ट पर उत्कीरण कर, उन्हें सुरक्षित करवाया।।
गुरु ने कहा अब हिन्दी में अनुवाद सभी का करवाओ।।
प्रथमाचार्य....।।3।।

श्रुतरक्षा के प्रति गुरु का, उपकार सदा स्मरण करो।
फल्टण अरु बम्बई में विराजित, उन ग्रंथों को नमन करो।।
अपने मंदिर में भी हिन्दी सहित ग्रंथ को पधराओ।।
प्रथमाचार्य....।।4।।

हीरक जन्म महोत्सव गुरु का, फल्टन नगरी में आया।
हाथी पर धवला ग्रंथों का, महाजुलूस निकलवाया।।
आज भी तुम "चन्दनामती" गुरु उपकारों को दरशाओ।।
प्रथमाचार्य....।।5।।

भजन-172

तर्ज–माई रे माई.....

प्रथमाचार्य शांतिसागर का, अन्तिम प्रवचन सुन लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।टेक.।।

जिनवर के लघु नन्दन मुनिवर, मुनिव्रत पालन करते।
उग्र-उग्र तप करने हेतू, किये अनेकों व्रत थे।।
दस हजार उपवास की संख्या, सुनकर चिंतन कर लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।1।।

बारह वर्षीय सल्लेखना, धारण की थी गुरुवर ने।
अन्त समाधि से दस दिन पहले, प्रवचन किया था उनने।।
वही अमर संदेश था अंतिम, ध्यान से उसको सुन लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।2।।

वीर सिन्धु मुनिवर को अपना पट्टाचार्य बनाया।
संघपती से पत्र लिखाकर जयपुर में भिजवाया।।
पट्टाचार्य प्रथम की महिमा, भी ग्रंथों में पढ़ लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।3।।

बिन संयम सम्यक्त्व के जीवन, में संभव न समाधी।
संयम धारण करो-डरो मत, मिटेगी तब भव व्याधी।।
कहा धर्म का मूल दया, 'चन्दनामती' सब सुन लो।
हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।
बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।4।।

भजन-173

तर्ज–धीरे धीरे बोल.....

शांतिसिन्धु सूरिवर की वंदना करूँ,
वंदना करूँ-गुरुवन्दना करूँ।
वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।टेक.।।

सन् उन्निस सौ पचपन में कुंथलगिरि,
पर्वत पर अन्तिम समाधि घोषित करी।
जन सागर उमड़ा कुंथलगिरि तीर्थ पर,
लाखों जनता धन्य हुई गुरु दर्श कर।।

वन्दन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।1।।

ज्ञानमती माताजी थीं तब क्षुल्लिका,
गुरु समाधि दर्शन हेतू पहुँची वहाँ।
संग में एक विशालमती थीं क्षुल्लिका,
और न जाने कितने श्रावक श्राविका।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।2।।

छत्तिस दिन की यम सल्लेखना पूर्ण की,
भादों शुक्ला दुतिया की तिथि आ गई।
कहा "ॐ सिद्धाय नमः" बस चल दिये,
नश्वर तन को छोड़ स्वर्ग में बस गये।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।3।।

धर्मसूर्य हो गया अस्त मानो यहाँ,
किन्तु रश्मियों को अपनी बिखरा गया।
इसीलिए मुनि परम्परा जीवन्त है,
तभी "चन्दनामती" धरा पर सन्त हैं।।
वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।4।।

शांतिसागराचार्य वर्ष यह चल रहा,
गुरुवर का उपकार स्मरण कर रहा।
ज्ञानमती माताजी की सम्प्रेरणा,
है यह सबके मन में जागे चेतना।।

वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे,
इस युग के लिए वरदान थे।।
शांतिसिंधु...।।5।।

भजन-174

तर्ज –माई रे माई.....

श्री आचार्य वीरसागर की, ज्ञानवाटिका प्यारी।
उनके ज्ञान पुष्प से तुम, महका लो अपनी क्यारी।।
जय हो वीर सिन्धु की जय, जय हो वीर सिंधु की जय.।।टेक.।।

सदी बीसवीं के श्री प्रथमाचार्य शान्तिसागर हैं।
उनके प्रथम शिष्य व पट्टाचार्य वीरसागर हैं।।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी की, महिमा बड़ी निराली।
उनके ज्ञानपुष्प से तुम, महका लो अपनी क्यारी।।
जय हो वीरसिन्धु की जय.....4।।1।।

महाराष्ट्र के वीर ग्राम में, जन्म हुआ था इनका।
शान्तिसिंधु के दर्शन करके धन्य किया तन मन था।।
बाल ब्रह्मचारी यति बनकर, किया तपस्या भारी।
उनके ज्ञान पुष्प से तुम, महका लो अपनी क्यारी।।
जय हो वीरसिन्धु की जय.....4।।2।।

शरदपूर्णिमा दो हजार ग्यारह को दीप जलाया।
गणिनी माता ज्ञानमती ने नूतन वर्ष चलाया।।
इसीलिए 'चन्दनामती' इस वर्ष की महिमा निराली।
उनके ज्ञान पुष्प से तुम, महका लो अपनी क्यारी।।
जय हो वीरसिन्धु की जय.....4।।3।।

भजन-175

तर्ज –जिन्दगी एक सफर है.....

गुरुपद से है प्रीति लगाना।
गुरुभक्ति के गीत है गाना।।
सुन भाई, सुन भाई, सुन भाई...।।टेक.।।

शान्तिसिन्धु आचार्य प्रवर।
उनके पट्टाचार्य प्रवर।।
वीरसागर जी का वर्ष सुहाना।
गुरुभक्ति के गीत है गाना।।
सुन भाई, सुन भाई, सुन भाई...।।1।।

प्रान्त महाराष्ट्र में जन्म हुआ।
वीर ग्राम तब उनसे धन्य हुआ।।
भाग्यवती माँ का लाल सुहाना।
गुरुभक्ति के गीत है गाना।।
सुन भाई, सुन भाई, सुन भाई...।।2।।

पिता रामसुख जी का भाग्य खिल गया।
हीरा जैसा हीरालाल पुत्र मिल गया।।
खुल गया माता-पिता का खजाना।
गुरुभक्ति के गीत है गाना।।
सुन भाई, सुन भाई, सुन भाई...।।3।।

हीरालाल बालब्रह्मचारी बन गये।
धीरे-धीरे वीरसागर मुनी बन गये।।
उनकी पुण्यकथा है सुनाना।
गुरुभक्ति के गीत है गाना।।
सुन भाई, सुन भाई, सुन भाई...।।4।।

इसीलिए ज्ञानमती माताजी ने।
दी है प्रेरणा गुरु का वर्ष मना लें।।

'चन्दनामती' यही है बतलाना।
गुरुभक्ति के गीत है गाना।
सुन भाई, सुन भाई, सुन भाई...।।5।।

भजन-176

तर्ज –भावों के फूलों से.....

गुरुओं की भक्ति से सब सुख मिलते हैं।
गुरुओं की शक्ति से सब दुख टलते हैं।।
सारी उमर क्योंकी तप ये करते हैं।।गुरुओं की.।।टेक.।।

हीरालाल जी ने एक बार सुन लिया।
शांतिसागर मुनि जी का नाम सुन लिया।।
फिर वे इक मित्र के संग घर से चलते हैं।
चलकर कोन्नूर में ये मुनि से मिलते हैं।।
उनसे निज मन की शंका दूर करते हैं।।गुरुओं की.।।1।।

बोले वे इस कलि युग में नहिं मुनि हो सकते हैं।
आपको भी हम कैसे मुनिवर कह सकते हैं।।
क्योंकि मुनि ऋद्धि सिद्धि सुख को वरते हैं।।गुरुओं की.।।2।।

शांतिसिन्धु ने उनको युक्ति से समझाया था।
'चन्दनामती' मुनिपद की महिमा को बतलाया था।।
दोनों ही मित्र गुरु के पद में झुकते हैं।।गुरुओं की.।।3।।

कुछ दिन में ही दोनों ने दीक्षा धारण कर ली।
क्षुल्लक एवं मुनि बनकर गुरुशिक्षा पालन कर ली।।
वीरसागर व चन्द्रसागर बनते हैं।।गुरुओं की.।।4।।

भजन-177

तर्ज –भगत माँ (दीवाना गुरुवर का).....

कहानी मुनिवर की, कहानी गुरुवर की,
रोमांचक है महान-कहानी मुनिवर की।।
वीरसिन्धु गुरुवर थे मानो, वीरप्रभू के समान.....कहानी.....।।टेक.।।

श्री आचार्य शान्तिसागर के पट्टाचार्य बने थे।
आगम एवं गुरु आज्ञा का पालन वे करते थे।।
चउविध संघ का संचालन करते थे पिता समान.....कहानी.....।।1।।

एक बार इक फोड़ा भयंकर उनकी पीठ में निकला।
असहनीय पीड़ाकारी डॉक्टर भी देख के पिघला।।
बिन बेहोशी आप्रेशन के देख थे सब हैरान.....कहानी.....।।2।।

समयसार का भेदज्ञान इनमें साकार हुआ था।
पुद्गल काया भिन्न है मुझसे यह आभास हुआ था।
तभी "चन्दनामती" इन्हें सब करते कोटि प्रणाम....कहानी....।।3।।

भजन-178

तर्ज –जपूँ मैं जिनवर जिनवर.....

सभी मिल बोलो जय जय, जैन सन्तों की जय जय।
मुक्तिमार्ग के ये ही पथिक हैं सच्चे, मुनिवर सच्चे, गुरुवर सच्चे।।
सभी मिल बोलो जय जय..।।टेक.।।

वीरसिन्धु आचार्य प्रवर थे, रत्नपारखी वे गुरुवर थे।
शिष्यरत्न बनते थे तभी तो उनके, मुनिवर सच्चे, गुरुवर सच्चे।।
सभी मिल बोलो जय जय..।।1।।

घटना है सन् उन्निस सौ छप्पन की, दीक्षा ज्ञानमती जी को दी थी।
अतिशयकारी नाम दिया तब तुमने, मुनिवर तुमने, गुरुवर तुमने।।
सभी मिल बोलो जय जय..।।2।।

नाम ज्ञानमती सार्थक हो गया, रत्नत्रय से युक्त हो गया।
वृद्धि हेतु गुरुकुल उपवन की उनसे, गुरुवर तुमसे, मुनिवर तुमसे।।
सभी मिल बोलो जय जय..।।3।।

युग युग कीर्ति बढ़े गुरुवर की, यही 'चन्दनामती' है विनती।
हमको भी आशीष मिले गुरु तुमसे, गुरुवर तुमसे, मुनिवर तुमसे।।
सभी मिल बोलो जय जय..।।4।।

भजन-179

तर्ज –णमोकार णमोकार, महामंत्र णमोकार.....

मुनिराज मुनिराज, वीरसागर मुनिराज।
जिनकी शरण में आकर सबके बन जाते हैं काज।।मुनिराज.।।टेक.।।

सभी शिष्य-शिष्याएँ अपना, सुख-दुख कहते गुरु से।
मंद मंद मुस्कान से गुरुवर हरते सबका दुख थे।।
माता-पिता-बन्धु बनकर वे रखते सबका ख्याल।।मुनिराज.।।1।।

एक बार गुरुवर ने कहा, दो रोग मुझे देख देते।
नींद व भूख यही दो मुझको, परेशान हैं करते।।
उनकी वाणी सुन शिष्यों ने झुका दिया निज माथ।।मुनिराज.।।2।।

बोले इक दिन सुई का काम करो कैंची नहीं बनना।
करो सृजन का काम "चन्दनामती" न विघटन करना।।
ऐसे सूत्र वचन से ही वे कहलाये गुरुराज।।मुनिराज.।।3।।

भजन-180

तर्ज –तू कितनी अच्छी.....

तू कितनी निस्पृह है, तू कितनी निश्छल है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.....ओ माँ.....
तेरी जो कृतियाँ हैं, अमर स्मृतियाँ हैं, सुरभि जगत्राता हैं।
ओ माँ.....ओ माँ.....।।टेक.।।
मन तेरा इतना चंचल है-2
तुम्हीं ने चंचलता वो, अपने मन की रोकी है
तू कितनी शीतल है, तू कितनी सुन्दर है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.....ओ माँ.....।।1।।

अज्ञान तिमिर जो फैला है-2
तुम्हीं ने ज्ञानकिरण से निज पर को अवलोका है।
तू कितनी ज्ञानी है, तू कितनी ध्यानी है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.....ओ माँ.....।।2।।

माँ ब्याही कन्या होती है-2
तुम्हारे सम दीक्षा लेकर, जग की माँ होती है
तू कितनी सच्ची है, तू कितनी भोली है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.....ओ माँ.....।।3।।

सागर मोती सी शीतलता-2
तू ही गंगा सम औ पूर्णिमा सी तुझमें निर्मलता।
तू कितनी प्यारी है, तू जग से न्यारी है, ज्ञानमति माता है।
ओ माँ.....ओ माँ.....।।4।।

भजन-181

तर्ज–रोम-रोम से निकले.....

रोम-रोम से निकले माता नाम तुम्हारा! हाँ नाम तुम्हारा।।
ऐसा दो वरदान कि पाऊं, निश दिन दर्श तुम्हारा।। रोम.....।।टेक.।।

ज्ञानमती माता के पद में, जग ने तुमको पाया।
एक सूर्य सम पूर्व दिशा ने, मानो तुम्हें उगाया।।
फैला दो आलोक ज्ञान का, यही तुम्हारा नारा।। रोम.....।।1।।

श्री चारित्र चक्रवर्ती ने, जैसे मुनिपथ बतलाया।
उसी तरह क्वाँरी कन्याओं, को तुमने पथ दर्शाया।।
सदी बीसवीं लेकर आयी, ज्ञानमती जयकारा।। रोम.....।।2।।

श्री चारित्र चन्द्रिका माँ के, चरणों में वन्दन है।
युग की पहली ज्ञानमती, माता को अभिवन्दन है।।
अवध प्रान्त की अद्भुत मणि से, आलोकित जग सारा।। रोम.....।।3।।

सरस्वती की प्रतिमूर्ति, ब्राह्मी सम त्याग तुम्हारा।
तभी 'चन्दनामती' जगत ने, तुमको गुरु स्वीकारा।।
गणिनी ज्ञानमती माता के, चरणों नमन हमारा।। रोम.....।।4।।

भजन-182

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।

तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
"चंदना" इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।

भजन-183

तर्ज-तुझसे मिलने को.....

तेरे दर्शन को मन करता है-2
हे माता! तेरे.....।।टेक.।।
बालपन से तुम्हें धर्म भाता रहा।
मोह का तुमसे कोई न नाता रहा।।
तेरे चरणों में सिर झुकता है-2।। माता.....।।1।।
ब्राह्मी और चन्दना की कथाएं सुनीं।
तुमको संयोग से मिल गए फिर मुनी।।
तुम सम बनने को मन करता है-2।। माता.....।।2।।

बालसतियों की बगिया का पहला कुसुम।
ज्ञानमति नाम से खिल गया था प्रथम।।
ज्ञान लेने को दिल करता है-2।। माता.....।।3।।

तेरी कृतियों ने अमरत्व को पा लिया।
युग का इतिहास तुमने स्वयं लिख दिया।।
उन्हें पढ़ने को मन करता है-2।। माता.....।।4।।

शब्दों की माला चरणों में अर्पण करूँ।
"चन्दनामति" तुझे सब समर्पण करूँ।।
तेरे चरणों में सिर झुकता है-2।। माता.....।।5।।

भजन-184

तर्ज–मनिहारों का रूप.....

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।

ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें "चन्दना"।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।5।।

भजन-185

तर्ज–ऐ मालिक तेरे बंदे हम.....

शरदपूनों का ये चांद हैं, गणिनी श्री ज्ञानमति मात हैं।
इनकी पूजा करें, इनकी भक्ति करें,
दिखती ये ब्राह्मी सी मात हैं।। शरद पूनो...।।टेक.।।

ज्ञान अमृत से ये तृप्त हैं।
हम तो जग में ही संतप्त हैं।।
इनको वंदन करें, ज्ञान के कण लहें,
देंगी श्रुतज्ञान की बात है।। शरद पूनो...।।1।।

ढाई सौ ग्रंथ रचना किया।
जम्बूद्वीप भी बनवा दिया।।
ज्ञानज्योती जली, देश भर में चली,
प्रेरणास्रोत ये ख्यात हैं।। शरद पूनो...।।2।।

बालसतियों की बगिया खिली।
ज्ञानमति मात पहली मिलीं।।
इनसे शिक्षा लहें, "चन्दनामति" कहें,
ज्ञान की ये सदा बात है।। शरद पूनो...।।3।।

भजन-186

आ जा रि चांदनी, हमारो पूनो चांद लेके आ जा-2।
हम सब आश लगाए-आ जा, तेरे दर्शन पाएं-आ जा।।
जीवन सफल बनाएं-आ जा।। आ जा...।।टेक.।।

धरती पर इक चांद जो आया, नभ का चांद स्वयं शरमाया।
ज्ञानमती बन ज्ञान लुटाया, जग को जीवन सार बताया।।
आ जा रि चांदनी...।।1।।

अवध की धरती मांग रही थी, अपने चांद को चाह रही थी।
पाकर मानो सब कुछ पाया, ज्ञानमती माता की छाया।।
आ जा रि चांदनी...।।2।।

तुम सी अद्भुत कन्या पाकर, धन्य टिकैतनगर रत्नाकर।
ऐसे तुमने किये हैं काम, हुआ ग्राम का जग में नाम।।
आ जा रि चांदनी...।।3।।

तुमने कई इतिहास रचे हैं, तेरे गुणों के बाग सजे हैं।
ग्रंथों का भण्डार भरा, तुझमें श्रुत का सार भरा।।
आ जा रि चांदनी...।।4।।

श्वेत वसन में तेरी सूरत, लगती जिनवाणी सम मूरत।।
सबको दें ऐसा वरदान, लहे "चन्दना" तुम सम ज्ञान।
आ जा रि चांदनी...।।5।।

भजन-187

तर्ज–पंखिड़ा.....

वंदना..... वंदना.....
वंदना करूँ मैं गणिनी ज्ञानमती की।
बीसवीं सदी की पहली बालसती की।। वंदना...।।टेक.।।

इनके मात-पिता का, गुणानुवाद मैं करूँ।
इनकी जन्मभूमि का भी, साधुवाद मैं करूँ।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वन्दना चरण में करके, पुण्य भरो जी।। वंदना...।।1।।

इनके ज्ञान की प्रशंसा, सारी दुनिया करती है।
इनके नाम की प्रशंसा, पुस्तकों में मिलती है।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।। वंदना....।।2।।

वीर के युग की ये, लेखिका पहली हैं।
ढाई सौ ग्रंथों की, लेखिका साध्वी हैं।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।। वंदना....।।3।।

इनके वात्सल्य में, माँ की ममता भरी।
इनके सानिध्य में, सबको समता मिली।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।। वंदना....।।4।।

इनके तप त्याग से, लाभ लेते सभी।
"चन्दना" भाग्य से, भक्ति करते सभी।।
मिलके आओ, मिलके गाओ, मिलके करो जी।
वंदना चरण में करके, पुण्य भरो जी।। वंदना....।।5।।

भजन-188

तर्ज–आने से जिसके आये बहार.....

ज्ञानमती माँ आईं प्रभु जी के द्वार।
भक्तों की भीड़ आई मां तेरे द्वार।।
तू जग में निराली है-मां ज्ञानमती,
तू सबसे पुरानी है मां ज्ञानमती।। टेक.।।

तुमने अपना उपवन अपने हाथों से माता सजाया।
रत्नत्रय में रमकर अपने जीवन को कुंदन बनाया।।

त्याग किया, वैराग्य लिया, तेरी पहली कहानी है–
मां ज्ञानमती, तू सबसे पुरानी है.....।।1।।

पूर्व भव में तुमने जाने कितनी तपस्या करी है।
उसके ही प्रतिफल में आज तुमको यह पदवी मिली है।।

निधि पाई, तुम हरषाईं, रोमांचक कहानी है–
मां ज्ञानमती, तू सबसे पुरानी है.....।।2।।

हम तेरे उपवन की, कलियां फूल बन मुस्कुराएं।
'चन्दनामति' तेरी, पदरज भी अगर हम पाएं।।

जग जानें, हम जानें, तेरी सच्ची कहानी है–
मां ज्ञानमती, तू सबसे पुरानी है.....।।3।।

भजन-189

तर्ज–धीरे-धीरे बोल.....

ज्ञानमती माताजी की वाणी सुन लो।।
वाणी सुन लो, जिनवाणी सुन लो।।
जनवाणी भव भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।टेक.।।

ज्ञान के मोती का हैं ये भण्डार
ज्ञान की ज्योती इनमें भरी अपार।
वीरसिंधु से दीक्षा ली स्वीकार,
पुनः ज्ञानमति नाम किया साकार।।
मुझे ज्ञान दो, विज्ञान दो,
जनवाणी भव-भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।1।।

जग में है अंधियारी काली रात,
उसमें दे आलोक तुम्हारी बात।
स्वारथ के सब बंधु भ्रात औ तात,
कैसे छोड़ूँ मोह बताओ मात।।
मुझे ज्ञान दो, विज्ञान दो,
जनवाणी भव-भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।2।।

आतम तत्त्व बताना इनका काम,
हम माने तो पाएँगे निजधाम।
सार्थक हो "चन्दना" हमारा नाम,
मिल जावे जब अपना आतमराम।।
मुझे ज्ञान दो, विज्ञान दो,
जनवाणी भव-भव में सुनी, जिनवाणी सुनकर ना गुनी।।
ज्ञानमती माताजी.....।।3।।

भजन-190

तर्ज–होठों से छू लो तुम.....

माता तेरे चरणों में, हम वन्दन करते हैं।
तेरे ज्ञान की गरिमा का, अभिवन्दन करते हैं।।टेक.।।

मेरे मन के अंधेरे में, कुछ ज्ञान प्रकाश भरो।
जीवन के सबेरे में, अब कुछ तो विकास करो।।

पावन पद कमलों में, शत वन्दन करते हैं।
तेरे ज्ञान की गरिमा का, अभिवंदन करते हैं।।1।।

चंचल चित का चिन्तन, चिरकाल से भी न रुका।
अज्ञान में उलझा मन, निज ज्ञान पे भी न टिका।।

श्रुतज्ञान के उपवन में, अभिसिंचन करते हैं।
तेरे ज्ञान की गरिमा का, अभिवंदन करते हैं।।2।।

शिवपथ की मंजिल का, हमें ज्ञान हुआ कुछ माँ।।
शुद्धातम मंदिर का, अब ज्ञान मिला कुछ माँ।।

"चंदना" तेरे पद में, हम वन्दन करते हैं।
तेरे ज्ञान की गरिमा का, अभिवंदन करते हैं।।3।।

भजन-191

तर्ज–क्या खूब दिखती हो.....

यह शान्त छवी तेरी, बड़ी सुन्दर लगती है।
मन्द मन्द मुस्कान सदा, चेहरे पे बिखरती है।।
त्याग तपस्या की किरणें, अन्तर से निकलती हैं।। यह.।।टेक.।।

तुमने जो पथ अपनाया-अपनाया,
वह वीतरागता का मारग कहलाया।
जहाँ ममता मोह न माया-नहिं माया,
जहाँ निर्ममता की मिलती शीतल छाया।
विश्वप्रेम की दृष्टि जहाँ नयनों से झलकती है,
त्याग तपस्या की किरणें, अन्तर से निकलती हैं।। यह.....।।1।।

जिनशासन की यह महिमा-हाँ महिमा।
जहाँ देव, शास्त्र, गुरु, तीन रतन की गरिमा।
अनमोल रतन इन्हें कहना-हाँ कहना,
निज आतम में अब, उन्हें संजोकर रखना।
उन रतनों की चमक तेरी, काया में झलकती है,
त्याग तपस्या की किरणें, अन्तर से निकलती हैं।। यह.....।।2।।

युग-युग तक तेरी गाथा-हाँ गाथा,
गाएगा यह संसार नमाकर माथा।
जो वंदन करने आता-हाँ आता,
"चन्दनामती" वांछित फल, पूर्ण कराता।।
यह प्रतिभा तव आकर्षक, मुद्रा से झलकती है,
त्याग तपस्या की किरणें, अन्तर से निकलती हैं।। यह.....।।3।।

भजन-192

तर्ज–चलो सम्मेदशिखर.....

सुनो! इक ध्यान कथा सुन लो, सुनो! इक ध्यान कथा सुन लो।
ध्यान के बल पर तीर्थों की उद्धार कथा सुन लो।।टेक.।।

अवध प्रान्त की इक कन्या ने, साध्वी पद धारा।
गणिनी माता ज्ञानमती बन, निज को शृँगारा।।
उन्हीं की ज्ञानकथा सुन लो,
ध्यान में उनने कब क्या पाया, सत्य कथा सुन लो।।
सुनो.....।।1।।

प्रभु पारस का ध्यान किया तो, रत्नत्रय पाया।
उसमें मन एकाग्र किया तो, गुरु दर्शन पाया।।
अमरवाणी गुरु की सुन लो,
जिसको सुन जीवन निखरा, वह शान्तिकथा गुन लो।।
सुनो.....।।2।।

गोमटेश का ध्यान किया, तो जम्बूद्वीप मिला।
हस्तिनापुर के उपवन में हो, वह साकार खिला।।
वहाँ की छवि मन में धर लो,
दर्शन करके जनम-जनम के, सब पातक हर लो।।
सुनो.....।।3।।

जम्बूद्वीप की प्रतिमाओं का, इक दिन ध्यान किया।
नगरि अयोध्या आदिनाथ का, दर्शन प्राप्त किया।।
वहाँ की भ्रमण कथा सुन लो,
महामस्तकाभिषेक उत्सव, की महिमा सुन लो।
सुनो.....।।4।।

ऋषभदेव की खड्गासन, प्रतिमा का ध्यान किया।
राजकीय उद्यान में, पद्मासन निर्माण किया।।
सौम्य प्रभु छवि मन में धर लो,
ध्यान बना निर्माण धरा पर, ध्यान पुनः कर लो।।
सुनो.....।।5।।

अहिच्छत्र में तीस चौबीसी, मंदिर की रचना।
त्रयचौबीसी समवसरण की, अयोध्या में रचना।।
यही प्रेरणा कथा सुन लो,
कथा न केवल सबका दर्शन, कर आतम भज लो।।
सुनो.....।।6।।

मांगीतुंगी में प्रभु की सबसे ऊँची प्रतिमा।
वीर जन्मभूमी कुण्डलपुर की देखो महिमा।।
चलो सब तीर्थ प्रयाग चलो,
ऋषभदेव का दीक्षा केवलज्ञान तीर्थ नम लो।।
सुनो.....।।7।।

तीर्थंकर की जन्मभूमियों का विकास करतीं।
कर प्रभावना दुनियां में नित नव प्रकाश भरतीं।।
'चन्दनामती' इन्हें नम लो,
इनकी पावन पदरज से मस्तक पावन कर लो।।
सुनो.....।।8।।

भजन-193

तर्ज–जिस गली में.....

चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।
पड़ गई दृष्टि जिस तीर्थ पर मात की,
कोटि दृष्टी में वे छा गए देश की।। टेक.।।

मुक्तिपथ पर चली जब वो कच्ची कली,
फूल बन बालसतियों की बगिया खिली। फूल बन.....
क्वांरी कन्याओं के खुल गए रास्ते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।। चल पड़े.....।।1।।

लेखनी ने लिखे सैकड़ों ग्रंथ जब,
अन्य माताओं ने भी लिखे ग्रंथ तब।। अन्य माताओं.....
ज्ञानज्योति के अब खुल गए रास्ते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।। चल पड़े.....।।2।।

तीर्थ उद्धार की प्रेरिका बन गईं,
मंत्र 'अर्हम्' की ये देशना बन गईं। मंत्र अर्हम्.....
दे गईं नव कृती रास्ते रास्ते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।। चल पड़े.....।।3।।

पार्श्वप्रभु के महोत्सव की दी प्रेरणा,
जन्मभूमि बनारस में उत्सव मना। जन्मभूमि.....
ऐसे उत्सव चलें सब शहर ग्राम में,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।। चल पड़े.....।।4।।

"चन्दनामति" ये चैतन्य तीरथ बनीं,
जैन संस्कृति की सचमुच ये कीरत बनीं। जैन.....
भक्त इनके सदा भक्ति में नाचते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।। चल पड़े.....।।5।।

भजन-194

तर्ज–तीरथ करने चली सती.....

तीरथ करने चलीं ज्ञानमति, निज को तीर्थ बनाने को।
मारग में जो आए तीरथ, उनकी कीर्ति बढ़ाने को।।

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप की, रचना को साकार किया।
तीर्थ अयोध्या को पावन, निधियाँ देकर विस्तार किया।।
राजधानी दिल्ली में पहुँची, ऋषभ जयंती मनाने को।
तीरथ.....।।1।।

अपनी कायिक जन्मभूमि, जिनमंदिर पर डाली दृष्टी।
ह्रीं और चौबिस तीर्थंकर, दिये वहाँ है धनवृष्टी।।
अतिशयक्षेत्र त्रिलोकपुरी में, पारिजात बनवाने को।
तीरथ.....।।2।।

दक्षिण भारत की यात्रा के, मध्य अनेकों कार्य हुए।
अतिशयक्षेत्र तिजारा में, सम्मेदशिखर के भाव हुए।।
चन्द्रप्रभू के चरणों में, पहुँची इक भेंट चढ़ाने को।। पहुँची इक.....
तीरथ.....।।3।।

महावीरजी में अपनी, दीक्षाभूमी को नमन किया।
शान्तीवीरनगर में प्रभु के, चरणों में शत नमन किया।।
कल्पवृक्ष मन्दार जिनालय, दी प्रेरणा बनाने को। दी प्रेरणा.....
तीरथ.....।।4।।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर, कमल जिनालय बना दिया।
इक सौ अठ फुट प्रतिमा के निर्माण की फिर प्रेरणा दिया।।
णमोकार का धाम सनावद, नगरी में बनवाने को।। नगरी.....
तीरथ.....।।5।।

महाराष्ट्र गुजरात व राजस्थान तथा हरियाणा में।
नूतन रचनाएँ दे दीं, 'चन्दनामती' जग को इनने।।
कई प्रान्त की यात्रा की, नूतन इतिहास बनाने को। नूतन.....
तीरथ.....।।6।।

भजन-195

तर्ज–रंग बरसे भीगे चुनरवाली.....

रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके..... हो.....
रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके..... हो.....।। टेक.।।

जग को होली का, रंग सुहाता-2।
तुमको सुहाती ज्ञान गंग, जगत तरसे रंग छलके..... हो.....
जग को सुहाती, जयपुर की चुनरिया-2।
तुम्हें भाती चरित्र चुनरिया, जो मन हरषे रंग छलके..... हो.....

जग को सुहाते, रत्नन के गहने-2।
तुम्हें भाते ज्ञान के गहने, रतन बरसे रंग छलके..... हो.....
जग को सुहाती, विषयों की लाली-2।
तुमको सुहाती जिनवाणी, जगत झलके रंग छलके..... हो.....

गणिनी माता, ज्ञानमती जी-2।
कहती हैं हितकर वाणी, सरल मन से रंग छलके..... हो.....

भजन-196

तर्ज–ऐ मेरे वतन के लोगों.....

श्री ज्ञानमती माता की, सुन करके त्याग कहानी।
परतंत्र धरा के युग की, आती कुछ याद पुरानी।।टेक.।।

भारत की आजादी का, जब जंग छिड़ा धरती पर।
अपनी भी आजादी का, ये स्वप्न देखती थीं तब।।
अंग्रेज से कम नहिं थी तब, सामाजिक रीति बखानी।
परतंत्र धरा.....।।1।।

गांधी बन इस धरती की, बाला ने कदम उठाया।
निज को स्वतंत्र करने को, मैना ने पहल रचाया।।
आजाद हिन्द भारत की, नीती उसने पहचानी।
परतंत्र धरा.....।।2।।

सन् बावन में आजादी, का पहला ध्वज फहराया।
आश्विन शुक्ला पूनो को, अपना संकल्प निभाया।।
यौवन की महकती काया, संयम से बनी श्रुतज्ञानी।
परतंत्र धरा... ...।।3।।

वीरों की माँ सम मोहिनी, माँ ने था तुमको पाला।
स्वर्णिम इतिहास बनाकर, निज नाम अमर कर डाला।।
भारत की इस कन्या से, शुरू हुई स्वतंत्र कहानी।
परतंत्र धरा.....।।4।।

आर्यिका ज्ञानमती बनकर, उद्यान ज्ञान का सींचा।
कुछ कार्य अलौकिक करके, निज पर सबका मन खींचा।।
"चन्दनामती" तब छाया, पाकर सब बनते ज्ञानी।
परतंत्र धरा.....।।5।।

भजन-197

तर्ज–ये क्या है.....

हम ज्ञानमती माता को वन्दन करते हैं।
निज श्रद्धा पुष्प चरण में अर्पण करते हैं।।
ये मां है, सारे जग की, गणिनी माँ हैं इस वसुधा की।
इनकी छवि ऐसी लगती है, शारद माँ जैसी लगती है।। टेक.।।

ये बाल ब्रह्मचारिणी प्रथम हैं कहलाईं।
इनकी माता आर्यिका रत्नमति कहलाईं।।
ये मां हैं सारे जग की, गणिनी मां हैं इस वसुधा की।
ये तो करुणा की मूरत हैं, मां सरस्वती की सूरत हैं।।1।।

ये रूखा सूखा खाकर अमृत देती हैं।
निज ज्ञान के सागर से गागर भर देती हैं।
ये मां हैं, सारे जग की, गणिनी मां हैं इस वसुधा की।
ये वीरसिंधु की शिष्या हैं, इनकी भी अनेकों शिष्या हैं।।2।।

रच दिए शताधिक ग्रंथ ज्ञान की गरिमा से।
पूजा विधान हैं प्राप्त तुम्हारी महिमा से।।
ये मां हैं सारे जग की, गणिनी मां हैं इस वसुधा की।
ये शिवपथ साधन करती हैं, श्रुतज्ञानाराधन करती हैं।।3।।

इनके तप से कितनों ने लाभ उठाया है।
इनके जप ने विघ्नों को दूर भगाया है।।
ये मां हैं सारे जग की, गणिनी मां हैं इस वसुधा की।
ये जिनशासन की महिमा हैं, इनकी विस्तृत गुणगरिमा है।।4।।

ये संघर्षों से कभी नहीं घबराती हैं।
"चन्दनामती' ये विजय तभी पा जाती हैं।।
ये मां हैं सारे जग की, गणिनी मां हैं इस वसुधा की।
ये शूल को फूल बनाती हैं, जग को अनुकूल बनाती हैं।।5।।

भजन-198

तर्ज–हे वीर तुम्हारे.....

भारत की कुछ ललनाओं ने, भारत का मान बढ़ाया है।
उनमें ही ज्ञानमती माँ ने, युग का इतिहास बनाया है।। टेक.।।

इस धरती पर ही झांसी की, रानी लक्ष्मी ने युद्ध किया।
सीता ने धधकता अग्निकुण्ड, अपने सतीत्व से शुद्ध किया।।
जलमयी सरोवर बना सती ने, अपना यश चमकाया है।
उनमें ही.....।।1।।

द्रौपदी का चीर बढ़ा सोमा का, नाग हार में बदल गया।
इतिहास रह गया पन्नों पर, सतयुग कलियुग में बदल गया।।
बीसवीं सदी में मैना बन, पूनो का चन्दा आया है।
उनमें ही.....।।2।।

इक नहीं हजारों बालाएँ, इस धरती का उपहार बनीं।
नर के समान ही नारी भी, आजादी में आधार बनी।।
'चन्दनामती' इस क्रम ने ही, युग का सन्मान बढ़ाया है।
उनमें ही.....।।3।।

भजन-199

तर्ज–मेरे देश की धरती.....

मेरे देश की धरती ज्ञानमती माता से धन्य हुई है
मेरे देश की धरती..... ।। टेक.।।

यह कृषि प्रधान है देश यहाँ, ऋषियों की तपस्या चलती है। ऋषियों.....
यहां संस्कारों के उपवन में, मानवता छिप-छिप पलती है।। मानवता.....
जहां सत्य, अहिंसा पालन की, पावनता मान्य हुई है,
मेरे देश की धरती.....।।1।।

जब तीर्थ अयोध्या की वसुधा, सुख शान्ति अमन थी चाह रही। सुख.....
तब ज्ञानमती माँ को पाकर, जनता को खुशी अपार हुई।। जनता.....
प्रभु आदिनाथ के महामहोत्सव, से वह धन्य हुई है,
मेरे देश की धरती.....।।2।।

हस्तिनापुरी में जम्बूद्वीप, रचना तुमने साकार किया है । रचना.....
इन्दिराजी को आशीर्वाद दे, ज्योति प्रवर्तन करा दिया। हां ज्योति.....
उसके स्वागत में हर प्रदेश की, जनता धन्य हुई है,
मेरे देश की धरती.....।।3।।

साहित्य रचा शिष्यों को बना, चेतन निर्माण किया तुमने। चेतन.....
"चन्दनामती" तुम कृतियों की, यशसुरभी फैल रही जग में।। यश.....
युग-युग तक अमर रहेगी तू, ब्राह्मी माँ सदृश हुई है,
मेरे देश की धरती.....।।4।।

भजन-200

तर्ज–जयति जय-जय माँ सरस्वती.....

जयति जय जय ज्ञानमति माँ!
जयति जय माँ शारदे!।।

जयति जय जय बालसति माँ!
जयति जय श्रुतशारदे।।टेक.।।

ज्ञान गंगा से तेरे हम, ज्ञान का कुछ नीर भर लें।
तेरी गरिमा कम न होगी, कितनों की तू पीर हर ले।।
जयति जय माँ भारती!
तू जग को सच्चा प्यार दे।। जयति.....।।1।।

न्याय की उत्कृष्ट गरिमा, तेरे ग्रंथों में भरी है।
त्याग की उत्कृष्ट महिमा, तेरे भावों में भरी है।।
जयति जय वागीश्वरी!
तू हम सभी को सार दे।। जयति.....।।2।।

तुम हो इस युग की विशल्या, ब्राह्मी का अवतार हो।
ज्ञानमति इस युग की पहली, ज्ञान का भण्डार हो।।
जयति जय श्रुतदेवते!
तू "चन्दना" को तार दे।। जयति.....।।3।।

भजन-201

तर्ज–महावीर प्रभु के चरणों में श्रद्धा के.....

श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में शीश नवाएं हम।
उनके सिद्धान्तों से अपने जीवन की ज्योति जलाएं हम।। टेक.।।

फूलों के महकते उपवन सा जीवन आदर्श हमारा हो।
मैत्री का ऐसा स्रोत बहे मानो गंगा की धारा हो।।
दीनों पर करुणा भाव रहे शत्रू को भी अपनाएं हम।।
उनके सिद्धान्तों.....।।1।।

नहिं धर्म, जाति, भाषा के लिए आपस में वैर बढ़ाना है।
यह है ऋषियों का देश यहाँ मानवता को पनपाना है।।
बस एक अहिंसा "विश्वधर्म" उसका ही पाठ पढ़ाएं हम।
उनके सिद्धान्तों.....।।2।।

तुमने निज आत्मा की तेजोमय प्रतिभा का जब दर्श किया।
अपना जीवन अनुशासित कर जग को सच्चा आदर्श दिया।।
"चन्दनामती" तुम आदर्शों को अपना ध्येय बनाएं हम।
उनके सिद्धान्तों.....।।3।।

हर मानव है भगवान यहाँ यह देश हमारा मंदिर है।
तेरी वाणी से झलक रहा सचमुच यह देश समन्दर है।।
इसकी सुन्दरता को लखकर सबको भी इसे दिखाएं हम।।
उनके सिद्धान्तों.....।।4।।

भजन-202

आई हैं आई हैं आई हैं, मां ज्ञानमती जी आई हैं।
लाई हैं लाई हैं लाई हैं, सन्देशा ज्ञान की लाई हैं।। टेक.।।

इक ग्राम में जन्मी बाला ने, अनुपम इतिहास बनाया है।
गणिनी मां ज्ञानमती बनकर, जग में प्रकाश फैलाया है।।
छाई हैं छाई हैं छाई हैं, ये जनमानस में छाई हैं।। आई हैं.....।।1।।

जो महाआत्माएं होतीं, युग में परिवर्तन करती हैं।
उनकी तप त्याग कथाएं ही, सबमें नवजीवन भरती हैं।।
पाई हैं पाई हैं पाई हैं, हमने अपनी निधि पाई हैं।। आई हैं.....।।2।।

ये प्रान्त अवध का गौरव हैं, ब्राह्मी माता की प्रतिकृति हैं।
शारद माता इनकी प्रतिभा में, देख रही निज अनुकृति हैं।।
गाई है गाई है गाई है, इनकी यशगाथा गाई है।। आई हैं.....।।3।।

चैतन्य ज्ञान की ज्योति, ज्ञानमति माता को हम करें नमन।
'चन्दनामती' पा सकते हैं, हम भी उस ज्ञान के कुछ रज कण।।
लाई हैं लाई हैं लाई हैं, ये ज्ञान का अमृत लाई हैं।। आई हैं.....।।4।।

भजन-203

तर्ज–माता ओ त्रिशला के लाल.....

माता जी मोहिनी की चाँद, ज्ञानमती मां आई हैं।
धरती पे सदियों के बाद, मानो ब्राह्मी माँ आई हैं।। टेक.।।

पूनों का चाँद बनीं, अमृत झराया-माता अमृत झराया।
नगरी का भाग्य बनीं, सबको जगाया-माता सबको जगाया।।
विषयों का ना लीना स्वाद, ज्ञानमती मां आई हैं।
माताजी मोहिनी.....।।1।।

भारत की नारियों को, सबला बनाया-माता सबला बनाया।
ब्राह्मी व चन्दना का, मारग बताया-माता मारग बताया।।
दूजी न कोई मिशाल, ज्ञानमति माँ आई हैं ।
माताजी मोहिनी.....।।2।।

हस्तिनापुरी को तुमने, स्वर्ग बनाया-माता स्वर्ग बनाया।
अयोध्यापुरी में तुमने, मेला लगाया-माता मेला लगाया।।
"चन्दनामती" कहती आज, ज्ञानमती माँ आई हैं ।
माताजी मोहिनी.....।।3।।

भजन-204

तर्ज–एक परदेसी मेरा.....

चन्दना सुनाती ज्ञानमती की कथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।
सुनो युग की पहली बालसती की कथा,
दूर होती जिससे अज्ञान की व्यथा।। टेक.।।

चन्दा ने नभ से देखा जो धरा पर,
सोचा ये दूसरा चाँद कैसे आया, चाँद कैसे आया।
देखा सलोना मुखड़ा तुम्हारा,
मन में भी पूनो का चाँद शरमाया, चाँद शरमाया।
धरती और नभ के चन्द्र मिलन की कथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।।1।।

धरती के चांद ने छोटी सी उमर में,
जग को अमृत का पान करवाया है, पान करवाया है।
मैना से आर्यिका ज्ञानमती बनकर,
जग को ज्ञान का मार्ग बतलाया है, मार्ग बतलाया है।
गुरुवर वीरसागर जी की शिष्या की कथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।।2।।

प्रांत अवध के टिकैतनगर में,
मानो इक देवी का जन्म हुआ था, जन्म हुआ था।
पितु छोटेलाल ने गोद में खिलाकर
अपना जन्म भी धन्य किया था, धन्य किया था।
पिता और पुत्री के वियोग की व्यथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।।3।।

तेरह रत्नों की मां मोहिनी ने,
तेरह विध चारित्र पालन किया था, पालन किया था।
मोहिनी से बनकर रत्नमति माता,
ज्ञानमति चरणों में नमन किया था, नमन किया था।

तेरह रत्नों में से प्रथम रत्न की कथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।।4।।

जिनके प्रभाव से हस्तिनापुर में,
जम्बूद्वीप की रचना बनी है, रचना बनी है।
जिनके प्रभाव से ज्ञानज्योति की,
भारत यात्रा पूर्ण बनी है, पूर्ण बनी है।
ज्ञानमती माता ज्ञानज्योति सर्वथा,
मोहिनी माता से जिनकी बनी है कथा।।5।।

कितने ही ग्रंथों को रच करके तुमने,
युग का प्रथम इतिहास बतलाया है, इतिहास बतलाया है।
गणिनी के पद पर पहुँच के तुमने,
बालसतियों का मान बढ़ाया है, मान बढ़ाया है।
सुनो ज्ञानमती मां के गुणों की कथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।।6।।

सुनते हैं पारसमणि को छूकर,
मानव स्वयं पारसमणि है बनता, पारसमणि बनता।
लेकिन ज्ञानमति पारस को छूकर,
मानव स्वयं पारसमणि है बनता, पारसमणि बनता।
'चन्दनामती' की स्वयं बीती ये कथा,
मोहिनी माता से जो जुड़ी है सर्वथा।।7।।

भजन-205

तर्ज–परदेसी, परदेसी.....

वन्दामि, वन्दामि, करते हैं हम, चरण में तेरे, माँ चरण में तेरे।
चरणों में तेरे माता, शीश झुकाएं, शीश झुकाके करें भक्ति से नमन।।
वंदामि.....।। टेक.।।

गणिनी माता ज्ञानमती है, नाम तेरा-नाम तेरा।
ज्ञानामृत वितरित करना है, काम तेरा-2।।
दो सौ ग्रन्थ कहते, तेरे ज्ञान की कहानी।। वंदामि.....।।1।।

जम्बूद्वीप की रचना तेरी, अमर कृती-अमर कृती।
ज्ञानज्योति रथ समवसरण का प्रवर्तन भी-2।।
तेरी कर्मठता की ये, सब बनीं निशानी।। वंदामि.....।।2।।

तुझमें कुछ ऐसी वत्सलता है, माता-है माता।
भक्त तेरे सम्मुख आ, तुझमें रम जाता-2।।
तेरी शान्तमुद्रा, सबके लिए है कल्याणी।। वंदामि.....।।3।।
हर दिन नया, तेरे जीवन का होता है-होता है।
नित्य नयी निर्माण प्रेरणा देता है-2।।
"चन्दना" सृजन की, तेरी खिरती है वाणी।। वंदामि.....।।4।।

भजन-206

तर्ज–सावरमती के संत तूने कर दिया कमाल.....

ले करके ज्ञानदीप को जला दिया मशाल।
हे ज्ञानमती मात! तूने कर दिया कमाल।।टेक.।।
साकेतपुरी के निकट टिकैतनगर में।
हर्षित हुए माता-पिता पूनो के चांद से।।
वह चांद आज विश्व का बना अनोखा लाल।
हे ज्ञानमती मात! तूने कर दिया कमाल।।1।।

नश्वर जगत के वैभव में तुम नहीं फंसीं।
संघर्ष सारे जीतकर मन में हुई खुशी।।
है त्याग ज्ञान में नहीं तेरी कोई मिशाल।
हे ज्ञानमती मात! तूने कर दिया कमाल।।2।।

इक ज्ञानज्योति का भ्रमण धरती पे कराया।
दूजी को निज हृदय में अखण्ड जलाया।।
पिच्छी व जिनवाणी से तेरी हो रही पहचान।
हे ज्ञानमती मात! तूने कर दिया कमाल।।3।।

गौरव अवध प्रदेश का तुमने बढ़ा दिया।
संसार में उसको प्रकाशमान कर दिया।।
जनता समूचे देश की तुमको रही निहार।
हे ज्ञानमती मात! तूने कर दिया कमाल।।4।।

हे युगप्रवर्तिका! तुम्हें शत शत करें नमन।
हे आर्यिकाशिरोमणि! गणिनी तुम्हें नमन।।
माता के पद में, 'चंदनामती' का झुका भाल।
हे ज्ञानमती मात! तूने कर दिया कमाल।।5।।

भजन-207

तर्ज–बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....

तव चरणों में नमन हमारा करो मात स्वीकार।
ज्ञानमती माताजी नैय्या लगा दो पार।। टेक.।।

सुनी है हमने देव-शास्त्र-गुरु की महिमा।
देखी तेरी वैसी ही गौरव गरिमा।।
बालसती बन करके तुमने किया जगत उद्धार।
ज्ञानमती माताजी नैय्या लगा दो पार।।1।।

गुरुओं में गुरु शांतिसागराचार्य हुए।
उनके पट्ट पर वीरसागराचार्य हुए।।
वीरसिंधु की शिष्या बनकर किया नाम साकार।
ज्ञानमती माताजी नैय्या लगा दो पार।।2।।

संघ आर्यिका बना विहार किया तुमने।
ज्ञान गंग की शाश्वत धार बहा तुमने।।
चन्दनबाला ब्राह्मी मां का किया मार्ग स्वीकार।
ज्ञानमती माताजी नैय्या लगा दो पार।।3।।

आए हम अज्ञान दूर करने माता।
देकर रत्नत्रय का दान करो साता।।
करे "चंदनामती" वंदना करो मात स्वीकार।
ज्ञानमती माताजी नैय्या लगा दो पार।।4।।

भजन-208

तर्ज–कभी तू.....

कभी तू माता लगती है, कभी तू बाला लगती है।
कभी उजियाला लगती है, ज्ञान का प्याला लगती है।।
जय माता की, बोलो जय माता की.....
तू सरस्वती मां की प्रतिमूरत लगती है।
प्रभु आदिनाथ की पुत्री जैसी सूरत लगती है।।
कभी तू माता लगती है, कभी तू बाला लगती है।
कभी उजियाला लगती है, ज्ञान का प्याला लगती है।।
कभी तू माता लगती है.....।। टेक.।।

तीर्थंकर की धरती पर जनम लिया है तुमने।
धरती औ नभ के चन्दा का मिलन हुआ आपस में।।
तू शारद माता की प्रतिमूरत लगती है।
मां ब्राह्मी जैसी तेरी कुछ-कुछ सूरत लगती है।।
कभी तू माता लगती है.....।।1।।

तीर्थंकर की ही धरती पर जम्बूद्वीप बनाया।
जप तप करके उसी भूमि का जीर्णोद्धार कराया।।

जिनवाणी माँ की तू प्रतिमूरत लगती है।
माँ ब्राह्मी जैसी तेरी कुछ-कुछ सूरत लगती है।।
कभी तू माता लगती है.....।।2।।

भजन-209

तर्ज–जिन्दगी एक सफर है.....

ओ मदर! मुझे दे दो कुछ नालेज,
मेरा जीवन बन जाए एक कॉलेज।
सुन माँ, सुन माँ, सुन माँ सुन.....।। टेक.।।

तुमने छोड़ दिये, अपने पैरेन्ट्स,
तभी बन पाई तुम, आज यूनिक सेन्ट।
ज्ञानमती माँ हैं, डिग्री कालेज,
ओ मदर! मुझे दे दो कुछ नालेज।
सुन माँ.....।।1।।

जग में महकते हैं, आज कितने सेन्ट,
लेकिन माँ तेरी, ज्ञान गन्ध परमानेन्ट।
तेरा जीवन है, एक चैलेन्ज,
ओ मदर! मुझे दे दो, कुछ नालेज,
सुन माँ.....।।2।।

तुमने लिखा है, कितना लिट्रेचर,
जिसे पढ़ बन रहे हैं, कितने लेक्चरर।
तुम हो सचमुच, मूवी रिसर्च कालेज,
ओ मदर! मुझे दे दो कुछ नालेज।
सुन माँ.....।।3।।

ज्ञानमती माताजी का ज्ञान गार्डेन।
फूल फल रहा है मानो, रीयल हैवेन।।

यह है 'चन्दना' सभी का ओपेन कालेज,
ओ मदर! मुझे दे दो कुछ नालेज।
सुन माँ.....।।4।।

भजन-210

हम दर पे तेरे माँ आए हैं, ज्ञानामृत अर्जित कर लेंगे।
ऐ माँ, ऐ माँ तेरे इन चरणों में, जीवन भी समर्पित कर देंगे।।
हम दर.....।। टेक.।।

भूले भटके प्राणी को, तू राह दिखाती है।
मुझ सम अज्ञानी को, तू ज्ञान सिखाती है।
तेरे ज्ञान की पावन गंगा में, अज्ञान विसर्जित कर देंगे।
हम दर.....।।1।।

तू सरस्वती कहलाती, तू शारद माता है।
तू शिवपथ को दर्शाती, तू तो गुरु माता है।।
माँ भारती तेरे दर्पण में, निज ज्ञान सुसज्जित कर लेंगे।
हम दर.....।।2।।

तेरे पद पंकज में, झुकते हैं जो प्राणी।
तेरी शीतल छाया में, बनते हैं वे ज्ञानी।।
"चन्दनामती" तेरे चरणों की, हम धूल भी संचित कर लेंगे।
हम दर.....।।3।।

भजन-211

तर्ज –झलक दिखला जा.....

वो ओ.....वो ओ.....
दरश दिखला जा-4, एक बार आ जा, आ जा, ज्ञानमती माँ आ जा।
एक बार आ जा, आ जा, ज्ञानमती माँ आ जा, एक बार आ जा.....

ज्ञान भरा है मन उपवन में, है अमृत भरा आतम प्रभु में।
दरश दिखला जा.....एक बार आ जा.....।।टेक.।।

अवध प्रान्त में सुन्दर ग्राम टिकैतनगर है।
जहाँ भक्त के मन में, बसे सदा प्रभुवर हैं-2 (धुन)
वहीं पिताश्री छोटे और मोहिनी माता
उनकी बगिया में वह पहला पुष्प खिला था।। (धुन)
दरश दिखला जा-4..... एक बार.....
जय जय जय जय, जय माँ ज्ञानमति-3.....जय
जय ज्ञानमती जी।।1।।

दीक्षा लेकर माता श्री ज्ञानमती कहलाईं
जम्बूद्वीप की रचना, गजपुर में प्रथम बनाई (धुन)
तीर्थ अयोध्या कुण्डलपुर अरु प्रयाग है पावन
मांगीतुंगी तीर्थ में देखो, महक उठा है सावन (धुन)
दरश दिखला जा-4..... एक बार.....
जय.....।।2।।

ढाई सौ ग्रंथों की रचना किया है तुमने
साधु जगत का गौरव बढ़ा है माता तुमसे
हो प्राचीन आर्यिका गणिनी शिरोमणी हो
नमन 'चंदनामति' का स्वीकारो भवतरिणी हो
दरश दिखला जा-4.....
एक बार.....जय.....।।3।।

भजन-212

तर्ज–तुम दिल की धड़कन में.....

ज्ञानमती माता की, कृतियाँ सभी निराली हैं।
ये तो तीर्थ बनाती हैं, खुद तीरथ सी प्यारी हैं।।
तभी तो इनकी भी कीरत, जग भर में निराली है।। टेक.।।

माँ मोहिनी की ये कन्या, जब से आर्यिका बनी हैं-2
मैना से ज्ञानमती बन, रत्नत्रय की धनी हैं-2
शरदपूर्णिमा की तिथि भी, हुई तब से सुहानी है
तभी तो.....।।1।।

है आश्चर्य मोहिनि भी, बनीं थीं रत्नमती माता-2
धर्मसिंधु से दीक्षा ले, बनाई इक यशोगाथा-2
यही तो जैनशासन की, कथा जग में पुरानी है
तभी तो.....।।1।।

कोई पूजा विधानों से, इन्हें पहचानते जग में-2
कोई तो 'चन्दना' इनको, तीर्थोद्धारिका कहते-2
जम्बूद्वीप की रचना, प्रथम इनकी निशानी है
तभी तो.....।।1।।

भजन-213

तर्ज –चांद मेरे आ जा रे.....

मात पद वंदन कर लो रे-2
सच्चे सुमन से, भक्ती कुसुम से, अर्पित करो अंजलियाँ।।मात पद.।।टेक.।।

इस पावन वसुन्धरा ने जब ब्राह्मी माता मांगीं।
तब ज्ञानमती माता ने आ उनकी प्रथा सम्भाली।।
मात गणिनी को नम लो रे-2.....।।1।।

नवमार्ग बनाने वाले होते हैं बिरले प्राणी।
उस पथ पर चलकर फिर तो बन जाते कितने ज्ञानी।
ज्ञान पथ वंदन कर लो-2.....।।2।।

साहित्य सृजन के द्वारा तुमने इतिहास बनाया।
शुभ ज्ञानज्योति के द्वारा जग में प्रकाश फैलाया।।
ज्ञान की ज्योती नम लो रे-2.....।।3।।

तेरी इस त्याग प्रथा में कितनी बालाएँ आई।
आर्यिका परम्परा ने क्वारीं कन्याएँ पाईं।।
बालसति पद में नम लो रे-2.....।।4।।

पर्वत व नदी से ऊँचे, विस्तृत आदर्श तुम्हारे।
"चंदनामती" हो जावें, तुम जैसे भाव हमारे।।
भाव से वंदन कर लो रे-2.....।।5।।

भजन-214

तर्ज–दिन रात मेरे स्वामी मैं भावना ये भाऊँ.....

हे मात आज तुमसे, वरदान मैं ये चाहूँ। वरदान.....
तुम सम निधी को पाकर, निज ज्ञान में समाऊँ। निज ज्ञान.....।। टेक.।।

कैसी भी स्थिती हो, धीरज मेरा न छूटे।
तेरा ही ध्यान धर के, सब विघ्न मैं भगाऊँ।। हे मात.....।।1।।

दीनों के प्रति हो करुणा, दुःखियों के प्रति दया हो।
उपकार पर का करके, निज को सुखी बनाऊँ।। हे मात.....।।2।।

निज शत्रु से कभी भी, बदला न लेना चाहूँ।
समकित की तेरी शिक्षा, मन में सदा बसाऊँ।। हे मात.....।।3।।

अनमोल तव वचन माँ, जब जब सुने हैं मैंने।
इच्छा सदा रही ये, तेरे वचन निभाऊँ।। हे मात.....।।4।।

पथभ्रष्ट होने से माँ, तू ही बचाने वाली।
लख 'चंदना' तेरा तप, तुझमें ही रमना चाहूँ।। हे मात.....।।5।।

भजन-215

तर्ज–कांची हो कांची रे.....

माता हो माता रे ज्ञान तेरा सांचा, सांची तेरी हर बात है।
हो.....।। टेक.।।

द्वादशांग वाणी का आधार लेकर,
कुन्दकुन्द वाणी में साकार होकर।
जिनवाणी कहती हो, जिनवाणी रचती हो, निजवाणी का रस घोल के।।
हो..... माता.....।।1।।

गुरु शांतिसागर का दर्शन किया है,
श्री वीरसागर से दीक्षा लिया है।
ज्ञानमती बन गईं, ज्ञानज्योति जल गयी, वीरा की जय जय बोल के।।
हो..... माता.....।।2।।

संसार को तुमने मारग दिखाया,
श्रुतज्ञान का सार सबको सिखाया।
तीर्थ उद्धार कर, धर्म का प्रचार कर, प्रभु नाम मन में घोल के।।
हो..... माता.....।।3।।

तेरे उद्यान में ज्ञान के फूल हैं,
'चंदनामती' तभी शूल भी फूल हैं।
सत्य के मार्ग पर, शांति और त्याग पर, चलती हो शक्ती को तोल के।।
हो..... माता.....।।4।।

भजन-216

तर्ज–काली तेरी चोटी है.....

ज्ञानमती माता तेरा जग में बड़ा नाम है।
सारे नर-नारी तेरा गाते गुणगान हैं।।
त्याग की मिसाल तूने करी कायम,
क्वाँरी कन्या हो प्रथम।। टेक.।।

पिता छोटेलाल जी व मोहिनी थीं माता।
उनकी बगिया में पहला पुष्प जो खिला था।
यही कहलाईं 'मैना' बालिका रतन,
क्वाँरी कन्या हो प्रथम।।1।।

युवावस्था में असिधारा व्रत पाला।
बीसवीं सदी में इतिहास रच डाला।
आर्यिका ज्ञानमती नाम जैसा पाया।
ज्ञान के क्षेत्र में कमाल दिखलाया।।
गणिनी शिरोमणि को करें सब नमन,
क्वाँरी कन्या हो प्रथम।।2।।

तुम्हें "युगप्रवर्तिका" मात कहते हैं।
भक्त तेरी भक्ति में मगन रहते हैं।
जम्बूद्वीप रचना सुनाती है कहानी।
तेरी कर्मठता की सच्ची है निशानी।।
तेरे चरणों में सारा जग झुकता है।
तेरी वाणी से मन झूम उठता है।।
'चंदनामती' का स्वीकारो माँ नमन,
क्वाँरी कन्या हो प्रथम।।3।।

भजन-217

तर्ज–सावनी गीत.....

अरे माता! तेरे ज्ञान की महिमा जगत में छाई है भारी।। टेक.।।
सोलह सिंगार की उमर जब आई।
मन में विरागी धुन थी समाई।।
अरे माता! छोड़ा कुटुम्ब परिवारा, बनी इक जोगन सुकुमारी।।1।।

ब्राह्मी न देखी हमने चंदना न देखी।
राजुल न देखी हमने सीता न देखी।।
अरे माता, तेरी छवी में दिखती, सभी माताओं की छवि प्यारी।।2।।

कुन्दकुन्द अकलंक देव नहीं देखे।
उनके लिखे हुए ग्रन्थ कई देखे।।
अरे माता, तेरे लिखे ग्रन्थों में, दिखती है उनकी छवि प्यारी।।3।।

हमने सुनी है, विशल्या की शक्ती।
निकली थी जिससे, लक्ष्मण की शक्ती।।
अरे माता, तेरी तपस्या की भी, देखी है शक्ती बहुत भारी।।4।।

कितने ही रोगी निरोगी हुए हैं।
कितने ही नर नारी त्यागी हुए हैं।।
अरे माता, देखी 'चंदनामति' ने, तेरी विरागी छवि न्यारी।।5।।

भजन-218

तर्ज–फूल तुम्हें.....

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।। टेक.।।

मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ब्रह्मचर्य का तेज अनोखा, साधक में साधकतम है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ना मैं तेरी कहकर मैना, उड़ आई गृहपिंजरे से।
सारी वसुधा बनी कुटुम्बी, एक कुटुम्ब को तजने से।।
इसीलिए इतिहास बन गया, कैसा सुन्दर जीवन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

कितने ग्रन्थों की रचयित्री, युग की पहली बालसती।
तेरे चरणों में आ करके, बन गए कितने बालयती।।
कहे 'चंदनामती' ज्ञान से, दूर हुआ मिथ्यातम है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

भजन-219

तर्ज–मेरा नम्र प्रणाम है.....

वन्दन शत-शत बार है
वाणी माँ जिनवाणी की प्रतिमूर्ति जहाँ साकार है।
ज्ञानमती माता के पद में वन्दन शत-शत बार है।। टेक.।।

रत्नत्रय की अडिग साधना करना जिनका काम है।
ज्ञान ध्यानरत इस प्रतिमा का ज्ञानमती शुभ नाम है।।
मोक्षमार्ग ऐसे ही साधक में होता साकार है।
ज्ञानमती माता के पद में वन्दन शत-शत बार है।।1।।

जिनको लखकर रागी मन भी वैरागी बन जाता है।
समयसार के सार रूप पावन सन्देश सुनाता है।।
हार नहीं स्वीकार जिन्हें बस जीत गले का हार है।
ज्ञानमती माता के पद में वन्दन शत-शत बार है।।2।।

धन्य हुई यह धरती माता इस माता को पा करके।
वीर की वाणी को फैलाया जिनने जग में आ करके।।
ज्ञानज्योति का उद्योतन जिनके जीवन का सार है।
ज्ञानमती माता के पद में वन्दन शत-शत बार है।।3।।

फूल शूल दोनों में समता भाव जिन्होंने दिखलाया।
संघर्षों पर विजय प्राप्त करने का सूत्र भी बतलाया।।
दृढ़ता से "चन्दनामती" बनते जिनके सब कार्य हैं।
ज्ञानमती माता के पद में वन्दन शत-शत बार है।।4।।

भजन-220

तर्ज–करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं.....

करती हूँ तुम्हारी भक्ती, स्वीकार करो माँ।
आये हैं तुम्हारे दर पे, भव से पार करो माँ।।
ओ पूज्य माता, ओ ज्ञान की दाता।। टेक.।।

ज्ञानमती तेरा नाम है, तू ज्ञान पुजारन।
बन जाओ इस जीवन की, तुम तरन और तारण।।
कष्ट करो निवारण, ये उपकार करो माँ।
आये हैं तुम्हारे दर पे, भव से पार करो माँ।।
ओ पूज्य माता, ओ ज्ञान की दाता।।1।।

बाल ब्रह्मचारिणी प्रथम, हो ज्ञान की दाता।
जीवन भर तेरी पूजा करूँ, दो ऐसा वर माता।।
उस ज्ञान की गंगा का, प्रचार करो माँ।
आये हैं तुम्हारे दर पे, भव से पार करो माँ।।
ओ पूज्य माता, ओ ज्ञान की दाता।।2।।

अमृतमयी वाणी से तुमने, लाखों को तारा।
हम भी आशा ले आए, माता दे दो सहारा।।
नमन करें चरणों में हम, उद्धार करो माँ।
आये हैं तुम्हारे दर पे, भव से पार करो माँ।।
ओ पूज्य माता, ओ ज्ञान की दाता।।3।।

भजन-221

ज्ञानमती जी को वंदन कर लो, सबहिं पाप कट जावेंगे-2 ।। टेक.।।

मस्तक में अज्ञान भरा है, श्रुत का सार नहीं भाता।
गुरु चरणों में शीश झुका लो, सबहिं पाप कट जाएंगे।।1।।

कर्णेन्द्रिय को अब जिनवाणी, सुनने का अभ्यास नहीं।
ज्ञानमती जी का प्रवचन सुन लो, सबहिं पाप कट जाएंगे।।2।।

रंग बिरंगे रूप देखना, इन अँखियन को भाता है।
बालसती का तेज निरख लो, सबहिं पाप कट जाएंगे।।3।।

इत्र फुलेल सुगंधित द्रव्यों, को घ्राणेन्द्रिय चाह रही।
मात की ज्ञान सुरभि यदि पा लो, सबहिं पाप कट जाएंगे।।4।।

रसना रसीले व्यंजन खाने, और बोलने में नामी।
माता का ज्ञानामृत चख लो, सबहिं पाप कट जाएंगे।।5।।

मखमल के तकिये गद्दों पर, काया को सुख मिलता है।
वह काया यदि इन सम कर लो, सबहिं पाप कट जाएंगे।।6।।

पंचेन्द्रिय विषयों को इनने, छुआ नहीं देखा भी नहीं।
तभी 'चंदनामति' इन नमते, सबहिं पाप कट जाएंगे।।7।।

भजन-222

द्वारे आए, हे माँ तुझे शीश झुकाएं।
ज्ञान सिखा दे मेरी माँ।। द्वारे.....।। टेक.।।

हम अज्ञानी भटक रहे हैं, दुनिया के चक्कर में।
बतला दो सन्मार्ग हमें, तो छूट सकें भव दुःख से।। द्वारे.....।।1।।

तुम दीपक तो मैं बाती हूँ, टिम-टिम मुझे जला देना।
तुम पूनो तो मैं मावस, अपने में मुझे मिला लेना।। द्वारे.....।।2।।

तेरे तप की शक्ति से माता, बहुतों ने फल पाया।
तेरे आतम बल के आगे, विघ्न नहीं टिक पाया।। द्वारे.....।।3।।

तू समता की सूरत है, वात्सल्य की बहती गंगा।
ज्ञान पियूष पिलाने वाली, तू पूनों का चंदा।। द्वारे.....।।4।।

जहाँ पड़े तव चरण वहाँ की, रज चन्दन बनती है।
तभी 'चंदनामती' तुझे, धरती वन्दन करती है।। द्वारे.....।।5।।

भजन-223

सुन लो ज्ञान की बात,
ज्ञानमती माता सुनाती हैं।। टेक.।।

पुण्य उदय से नर तन पाया।
फिर भी इसे विषयों में गंवाया।।
करो न इससे राग,
ये काया संग में न जाती है।। सुन लो.....।।1।।

इसमें इक भगवान छिपा है।
परमज्ञानियों को जो दिखा है।।
आतम से कर लो राग,
यही परमातम बनाती है।। सुन लो.....।।2।।

मुक्तिपथिक यदि बनना चाहो।
रत्नत्रय को मन में धारो।।
वही करे भव पार,
जहाँ गुण गरिमा समाती है।। सुन लो.....।।3।।

समय निकलता ही जाएगा।
अन्तकाल तू पछताएगा।।
गुरु पर कर विश्वास,
'चंदनामती' बताती है।। सुन लो.....।।4।।

भजन-224

तर्ज-कभी कुण्डलपुर जाना है.....

आज अभिनन्दन करना है, मातपद वन्दन करना है,
ज्ञान का अर्चन करना है, चरण में चर्चन करना है।
इस ज्ञान की गंगा में अवगाहन करना है।
इस सरस्वती प्रतिमा को शत वंदन करना है।। आज.....।। टेक.।।

तीर्थंकर की धरती पर, जन्मी है यह मैना।
छोटेलाल, मोहिनी माँ को, तज आई कह मैं ना।
तज आई कह मैं ना।।
श्री गणिनी ज्ञानमती का अभिवंदन करना है।
इस सरस्वती प्रतिमा को शत वंदन करना है।। आज.....।।1।।

ज्ञानमती माँ पहली, इस युग की ये कहलाईं।
इनकी कृतियों ने जग में, नारी की क्रान्ति दिखाई।
नारी की क्रांति दिखाई।।
इस ब्राह्मी माता का, अभिवन्दन करना है।
इस सरस्वती प्रतिमा को, शत वन्दन करना है।। आज.....।।2।।

हस्तिनागपुर उनकी, है तपोभूमि कहलाई।
जम्बूद्वीप बनाकर जहाँ पर, ज्ञान की ज्योति जलाई।
ज्ञान की ज्योति जलाई।।
इस शारद माता का, अभिवन्दन करना है।
'चंदनामती' का वन्दन माता, स्वीकृत करना है।। आज.....।।3।।

भजन-225

तर्ज-चल दिया छोड़ दरबार.....

सब छोड़ कुटुम्ब परिवार, अथिर संसार, मोह का नाता,
बन गईं ज्ञानमती माता।। टेक.।।

माँ मोहिनि जी हरषाई थीं।
जब घर में बजी बधाई थी।।
पितु छोटेलाल के हृदय हुई सुख साता, बन गईं ज्ञानमति माता।।1।।

चन्दा ने अमृत बरसाया।
दिन शरदपूर्णिमा का आया।।
दो चन्द्र चकोर मिलन कैसा मन भाता, बन गईं ज्ञानमति माता।।2।।

कैसी सुकुमार अवस्था में।
मैना वैराग्य धरे मन में।।
बोली मेरा नहिं जग से कोई नाता, बन गईं ज्ञानमती माता।।3।।

पितु मात सभी समझाते थे।
सब भाई बहन मनाते थे।।
नहिं सह सकती तुम भूख प्यास की बाधा, बन गईं ज्ञानमती माता।।4।।

मैना बोली सब सह लूँगी।
ब्राह्मी के पथ पर चल लूँगी।।
यह पथ ही तो जग का कल्याण कराता, बन गईं ज्ञानमती माता।।5।।

चारित्र चक्रवर्ती गुरुवर।
उन पट पर वीरसिंधु मुनिवर।।
उनकी शिष्या से बढ़ी त्याग की गाथा, बन गईं ज्ञानमती माता।।6।।

गणिनी के पद पर शोभ रहीं।
शुभ ज्ञानज्योति प्रद्योत रहीं।।
'चंदनामती' वंदना करे जगमाता, बन गईं ज्ञानमती माता।।7।।

भजन-226

तर्ज–दे दी हमें आजादी.....

दे दी जगत को ज्ञानमती मात सी मिसाल।
हे रत्नमती मात! तुमने कर दिया कमाल।। टेक.।।

तुमको दहेज में मिला इक ग्रन्थ अनोखा।
श्री पद्मनन्दि पंचविंशती था अनूठा।।
उस ग्रंथ के स्वाध्याय का रक्खा सदा खयाल।।हे रत्नमती...।।1।।

संसार से विराग का उससे सबक मिला।
तब ज्ञानमती नाम का पहला कुसुम खिला।।
इनसे जली है ज्ञानज्योति की नई मशाल।। हे रत्नमती.....।।2।।

माताओं के लिए तेरी आदर्श कहानी।
जीवित सदा रहेगी तेरी त्याग निशानी।।
माता स्वयं पुत्री के चरण में नवाती भाल।। हे रत्नमती.....।।3।।

यह जम्बूद्वीप की कृती तेरी ही कृती है।
उसके सभी कणों में बसी रत्नमती हैं।।
माता की वंदना में 'चंदना' का झुका भाल।। हे रत्नमती.....।।4।।

भजन-227

मैय्या मगन निज धुन में, शास्त्र चिंतन में,
आत्म चिंतन में उन्हीं के गुण गाना है।। टेक.।।

हाथ में इनके पिच्छी शोभे।
लेखनी भी सबका मन मोहे।।
लिखतीं ग्रन्थ ये कलम से, ज्ञान चिंतन से, सदा शुभ मन से।
उन्हीं के गुण गाना है।।1।।

शीश माता के शारदा स्वर है।
मुख से झरते वचन निर्झर हैं।।
इनके अमर प्रवचन से, खिलें जन मन हैं, हुए पावन हैं।
उन्हीं के गुण गाना है।।2।।

रत्नत्रय आभूषण इनका।
स्वार्थ 'चन्दना' नहिं कुछ इनका।।
अमृत वचन झरते हैं, कलुष हरते हैं, मनुज सुनते हैं।
उन्हीं के गुण गाना है।।3।।

भजन-228

तर्ज –जहाँ डाल-डाल पर.....

श्री ज्ञानमती जी के दर्शन से मिटता अज्ञान अंधेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।

जहाँ धर्मध्यान और ज्ञानदान का निशदिन रहता डेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।टेक.।।

जिन के पद पंकज में झुकती हैं, ज्ञानपिपासू बाला।
जिनकी वाणी से आत्मकमल को, मिलता ज्ञान उजाला-2।।
जहाँ मुक्तिमार्ग और ज्ञानलक्ष्मी का निशदिन शाम सबेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।जिन.।।1।।

जिनके यश की गौरवगाथा, नर नारी निशदिन गाते।
निज भक्तिभाव से भाक्तिक जन आ, चरण में शीश झुकाते-2।।
चन्दनामती उनके सानिध्य से, जन्म सफल हुआ मेरा।
है वंदन उनको मेरा.....2।।जिन.।।2।।

भजन-229

तर्ज –मैं ससुराल.....

माता जिनमत का सार बताती हैं, सुनो वाणी तो इनकी।।टेक.।।
पहली निधी बाहुबलि जी से पाई,
जम्बूद्वीप की रचना बनाई।
वो तो आगम का सार बताती हैं, छवि देखो तो उनकी।।1।।

दूजी निधी हस्तिनापुर से पाई,
जम्बूद्वीप के ध्यान से आई।
वो तो तीरथ अयोध्या जाती हैं, रुचि देखो तो उनकी।।2।।

मस्तकाभिषेक आदिनाथ का कराया,
दो-दो वहाँ जिनमंदिर बनाया।
वो तो तीर्थोद्धार कराती हैं, रुचि देखो तो इनकी।।3।।

तीजी निधी अयोध्या जी से पाई,
ऋषभदेव की एक प्रतिमा बनवाई।
वो तो मांगीतुंगी जाती हैं शक्ति देखो तो उनकी।।4।।

अहिच्छत्र में तीस चौबीसी प्रतिमा,
पारिजात त्रीलोकपुरी मा।
इनकी प्रेरणास्रोत कहलाती हैं, भक्ति देखो तो उनकी।।5।।

ऐसे ही कितने अतिशय हुए हैं,
"चंदनामती" कई तीरथ बने हैं।।
वो तो श्रुत का सार बताती हैं, सुनो वाणी तो इनकी।।6।।

भजन-230

तर्ज–पुरवा सुहानी आई रे.....

घड़ियाँ सुहानी आई रे.....घड़ियाँ
गणिनी ज्ञानमती जी की, पावन जन्म जयंती की,
खुशियाँ सभी में छाई रे.....।। टेक.।।

नहिं कल्पवृक्षों के फूल मेरे पास।। हो.....
केवल भक्ति सुमनों से पूजा करूँ मात।। हो.....
भक्ती का भाव ले, मन में उछाव ले,
जनता उमड़ आई रे.....घड़ियाँ....।।1।।

मणियों का दीप मैं लाऊँ कहाँ से। हो.....
कंचन का थाल मैं सजाऊँ कहाँ से।। हो.....
माटी का दीप ले, बाती की प्रीत ले,
आरती सजाई रे.....घड़ियाँ.....।।2।।

युग की प्रथम ज्ञानमति माता हैं ये। हो.....
जग की प्रथम बालसति माता हैं ये।। हो.....
श्री वीरसिंधु से, आर्यिका के व्रत ले,
जग भर में ये छाईं रे.....घड़ियाँ.....।।3।।

तीर्थों के उद्धार की प्रेरिका हैं। हो.....
साहित्य की ये प्रथम लेखिका हैं।। हो.....
देश और विदेश में, ज्ञान के क्षेत्र में,
महिमा इन्हीं की गाई रे.....घड़ियाँ.....।।4।।

धरती सदा चाहती इनकी छाया। हो.....
युग युग जिये "चन्दना" इनकी काया।। हो.....
ब्राह्मी का रूप बन, गणिनी स्वरूप बन,
जग भर में ये छाईं रे..... घड़ियाँ.....।।5।।

भजन-231

तर्ज–मेरी तो पतंग.....

जब से तेरा दर्श हुआ, मुझको बड़ा हर्ष हुआ,
ज्ञानज्योति मन में जल गई रे।
ज्ञानमती माता मिल गईं रे।।टेक.।।
तुम्हीं ब्राह्मी औ चंदना हो-2।
तुम्हीं तीर्थ की वंदना हो-2।।
तुम्हीं पूनो की चन्द्रमा हो-2।
तुम्हीं रोशनी औ शमां हो-2।।
तुमने ऐसा त्याग किया, जग को नया मार्ग दिया,
ज्ञानज्योति मन में जल गई रे,
ज्ञानमती माता मिल गईं रे।।1।।
अष्टसहस्री आदि कितने-2।
ढाई सौ लिखे हैं ग्रंथ तुमने-2।।

चलती फिरती विश्वविद्यालय हो-2।
अन्य गुणों में भी हिमालय हो-2।।
तेरा समयसार पढ़ा, तेरा नियमसार पढ़ा,
ज्ञानज्योति मन में जल गई रे,
ज्ञानमती माता मिल गईं रे।।2।।
गणिनीप्रमुख मात अब तुम्हारी-2।
जन्म जयंती आई प्यारी-2।।
हर मन में खुशियाँ हैं छाईं-2।
"चंदनामती" शरण में आई-2।।
धन्य हुआ भाग्य मेरा, मिला आशिर्वाद तेरा,
ज्ञानज्योति मन में जल गई रे,
ज्ञानमती माता मिल गईं रे।।3।।

भजन-232

तर्ज –अरे रे.....

जयति जय ज्ञानमती जी, गणिनि माँ ज्ञानमती जी।
वंदना करूँ मैं तेरी मात रे।
शरदपूर्णिमा का तू है चांद मेरी मात,
करती है ज्ञान की तू सदा बरसात।
छोटेलाल मोहिनी ने दिया ऐसा चांद,
जिसकी नहीं दुनिया में कोई मिशाल।।
जयति जय.....।।टेक.।।
तीर्थों में जैसे सम्मेदशिखर है,
मूर्तियों में जैसे गोमटेश प्रभु हैं।
गुरुओं में जैसे शान्तिसिन्धु हुए हैं,
माताओं में ज्ञानमती मात वैसे हैं।।
जयति जय.....।।1।।

तीर्थ को बना के तीर्थ स्वयं बन गईं,
तुम तो जैनशासन की ही कीर्ति बन गईं।
शास्त्र लिख-लिखके स्वयं शास्त्र बन गईं,
ज्ञानियों में ज्ञान का उद्यान बन गईं।।
जयति जय.....।।2।।

ऐसी आत्माएँ कभी-कभी जन्म लें,
जन्म लेके इस धरा को धन्य कर दें।
भारत माँ का आँचल नहीं तुमसे सूना हो,
"चंदनामती" प्रभाव दिन दूना हो।।
जयति जय.....।।3।।

भजन-233

तर्ज–ऐसी लागी लगन, मीरा.....

ऐसी लागी लगन, भक्ति में हो मगन,
ज्ञानमति माता सबको बताने लगीं।
लेके श्रद्धा सुमन, करके प्रभु को नमन,
वे तो दुनियां को मारग दिखाने लगीं।। ऐसी.....।।टेक.।।

पहले राजा महाबल, बना देवता,
फिर वो राजा बना, भोगभूमी गया।
भोगभूमी की महिमा बताने लगीं।। ऐसी.....।।1।।

उनको सम्यक्त्व से, देवगति मिल गई।
उनकी सत्कर्मों से, आत्मकलि खिल गई।
देव श्रीधर की बातें, बताने लगीं।। ऐसी.....।।2।।

सुविधि राजा से वे, अच्युतेन्द्र बने,
चक्री सम्राट वे, वज्रनाभि बने।
उनकी वैराग्य चर्चा, बताने लगीं।। ऐसी.....।।3।।

फिर वे सर्वार्थसिद्धि के, अहमिन्द्र हो,
तत्वचर्चा में ही मग्न, आजन्म हो।
उनकी पदवी की महिमा, बताने लगीं।। ऐसी.....।।4।।

अन्त में दशवें भव में, ऋषभदेव बन,
कर्मयुग के हुए, तीर्थंकर वे प्रथम।
उनके उपकार जग को, बताने लगीं।। ऐसी.....।।5।।

उनका निर्वाण उत्सव, मनाओ सभी,
"चन्दना" मिल के नर नारी, आओ सभी।
सबको कल्याण का पथ, दिखाने लगीं।। ऐसी.....।।6।।

भजन-234

तर्ज–हे वीर.....

हे ज्ञानमूर्ति, मां ज्ञानमती, तव ज्ञान किरण यदि पा जाऊं।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।टेक.।।

उपकार करूँ सारे जग का, यह भाव हृदय में आता है।
दुःखियों को देख हृदय रोता, मन करुणा से भर जाता है।।
दो शक्ति मुझे मैं सब जग का, दुःख दूर स्वयं ही कर पाऊँ।।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।1।।

भारत इक था गुलजार चमन, हिंसा ने उसको नष्ट किया।
सच्चाई के इस उपवन को, स्वार्थी तत्त्वों ने भ्रष्ट किया।।
ऐसी शक्ती मैं प्रगट करूँ, जो विश्वशांति को ला पाऊँ।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।2।।

भगवान न यदि बन सकूँ तो मैं, इंसान की श्रेणी पा जाऊँ।
यदि साधु नहीं बन सकूँ तो मैं, सज्जन की श्रेणी पा जाऊँ।
निज पर को भी "चंदनामती", मैं सज्जनता सिखला पाऊँ।
अज्ञान अंधेरा दूर भगा, निज ज्ञानज्योति को प्रगटाऊँ।।3।।

भजन-235

(मुक्तक)

सुनते हैं चन्दा की शीतल, किरणों से अमृत झरता है।
चाँदनी स्वयं विकसित करके जग को आलोकित करता है।।
कुछ मन्द मन्द मुस्कान लिये, मानो वह हमें बुलाता है।
जग को आलोकित करने का, वह पाठ हमें सिखलाता है।।1।।

उस चन्द्र चाँदनी की शीतल, छाया मैना को प्राप्त हुई।
निज ज्ञान किरण को विकसित कर, जन-जन मानस में व्याप्त हुई।।
जब सोलह कला पूर्ण करके, शशि शरदऋतू में उदित हुआ।
दो चन्द्र चकोर मिलन लखकर, दिन शरद पूर्णिमा विदित हुआ।।2।।

चन्दा तो केवल निशिवासर, निशि में प्रकाश दरशाता है।
यह चाँद अनोखा रात्रि दिवस, सर्वदा रश्मि बिखराता है।।
नहिं अतिशयोक्ति होगी यदि हम, यह कहें कि आज धरातल पर।
ब्राह्मी माँ की साकार मूर्ति, है ज्ञानमती माँ के अन्दर।।3।।

बीसवीं सदी की प्रथम देन, अबला से सबला मान्य हुई।
गौरव द्विगुणित कर धर्मनीति का, बालसती यह प्रथम हुई।।
साहित्य सृजन के अनुपम क्रम में, वर्तमान गौरवशाली।
इस ज्ञानगंग की धारा से, भारत की रज प्रतिभाशाली।।4।।

इन शब्द प्रसूनों की अंजलि से, स्वागत क्या कर सकते हैं।
कस्तूरी की इस सौम्य सुरभि को, नहीं छिपा हम सकते हैं।।
अवनीतल का आँचल माँ के, साये से कभी न सूना हो।
'चंदनामती' तप ज्ञान व संयम, का प्रकाश दिन दूना हो।।5।।

भजन-236

कोटि-कोटि मस्तक ने तेरा, वरदहस्त जो पाया है।
इसलिए माँ ज्ञानमती कह, सबने प्यार लुटाया है।। टेक.।।

नारी जब संतान जनमती, तब माता कहलाती है,
इससे पूर्व कभी उसकी, माता संज्ञा नहिं आती है,
पर क्या कोई क्वांरी कन्या, माँ का रूप सजाती है,
जग से वैरागी बन तुमने, जगमाता पद पाया है।
इसीलिए माँ ज्ञानमती कह, जग ने प्यार लुटाया है।।1।।

महावीर के बाद कोई, इतिहास नहीं बन पाया था,
किसी जैन साध्वी का कोई, ग्रन्थ लिखा नहिं आया था,
कवियों ने कविताओं में, सतियों का रूप बताया था,
उसी रूप को तुमने अपनी, कृतियों से दर्शाया है।
इसीलिए माँ ज्ञानमती कह, जग ने प्यार लुटाया है।।2।।

सभी राजनेता तेरे, चरणों में आकर झुकते हैं,
तेरी त्याग तपस्या से, संस्कृति को धन्य समझते हैं,
विद्वज्जन भी आ तुमसे, शास्त्रों का सार समझते हैं,
क्योंकि 'चंदनामति' युग ने, तुम सम विद्वान न पाया है।
इसीलिए माँ ज्ञानमती कह, जग ने प्यार लुटाया है।।3।।

भजन-237

(गुरु वंदना)

वंदना के शुभ क्षणों में, मैं करूँ गुरुवंदना।
ज्ञानमति गणिनी चरण में, मैं करूँ अभिवन्दना।। टेक.।।

धूल भी माँ तेरे पद की, मुझको यदि मिल जाएगी।
मन की सोई ज्ञानकलियाँ, भी तुरत खिल जाएँगी।।

फिर तो फैलेगी सुगन्धी, ज्ञान की ही चन्दना।
ज्ञानमति गणिनी चरण में, मैं करूँ अभिवन्दना।।1।।

ज्ञान औ वैराग्य में तेरी मिशाल न है कोई।
ग्रन्थ लेखन में तुम्हारे सम न माता है कोई।।
ज्ञान की रजकण मिले अज्ञान की हो वंचना।
ज्ञानमति गणिनी चरण में, मैं करूँ अभिवन्दना।।2।।

फूल जैसी काया को तप से सुगन्धित कर लिया।
आत्मा का सार मानो आत्मा में भर लिया।।
मन वचन तन से करूँ हे मात! तेरी वन्दना।
ज्ञानमति गणिनी चरण में, मैं करूँ अभिवन्दना।।3।।

भजन-238

–वसन्ततिलका छन्द –

गौरवमयी पद जिन्होंने प्राप्त करके।
संसार में सुमति ज्ञान प्रचार करके।।
वैराग्यमूर्ति श्रुत के परिवेष में हैं।
श्री मात ज्ञानमति को नित ही नमूँ मैं।।1।।

माँ मोहिनी जो बनीं शुभ रत्नमति थीं।
सहजात्म शुद्ध रत्नत्रय युक्त मति थीं।।
जननी सुज्ञानमति की पदरज नमूँ मैं।
श्री मात ज्ञानमति को नित ही नमूँ मैं।।2।।

श्री शांतिसिंधु गुरुवर से ज्ञान पाया।
श्री वीरसिन्धु मुनि से पदभान आया।।
निज नाम सार्थक किया निज ही गुणों से।
श्री मात ज्ञानमति को नित ही नमूँ मैं।।3।।

साहित्य सर्जन किया बहु पुण्यकारी।
बन ज्ञानज्योति फैली तव कीर्ति प्यारी।।
जम्बू सुद्वीप रचना में संचरूँ मैं।
श्री मात ज्ञानमति को नित ही नमूँ मैं।।4।।

श्री वीर के समवसृति में चन्दना थीं।
गणिनी बनीं जिनचरण जगवन्दना थीं।।
गणिनी वही पदविभूषित को नमूँ मैं।
श्रीमात ज्ञानमति को नित ही नमूँ मैं।।5।।

– दोहा –

मुख में जिनके शारदा, सरस्वती भण्डार।
नमन 'चंदनामति' करे तुमको बारम्बार।।

भजन-239

पूछकर शशि धरातल के चाँद को कुछ बहाने से।
ज्योत्स्नाओं से बह निकले सुधा निर्झर सुहाने से।।
यही तो चाँद है जिसको मेरा अमृत पिलाना है।
गगन औ भूमि में अमरत्व का संदेश लाना है।।1।।

णमंसामि क्रिया जिनके चरणरज को नमन करती।
नीर से भर कलशझारी पादकमलों में नित नमती।।
आर्यिका पद में दिखती है अकिंचन सौम्य मुद्रा है।
रत्न माँ मोहिनी का जो सूर्य के सम चमकता है।।2।।

श्री लक्ष्मी ज्ञान श्री से जगत को वश में कर डाला।
ज्ञानसिंधू में रम करके सृजन साहित्य कर डाला।।
महकती है तुम्हारे गुण की सौरभ आज दुनिया में।
तीर पाने को भवदधि का दिखाया मार्ग दुनिया में।।3।।

मानकर हार चंदा ने कलंकित मुँह न दिखलाया।
तानकर सो गया फिर शरदपूनो को निकल आया।।

जीत होती सदा वैराग्य के सच्चे पुजारी की।
कीर्ति प्रसरित हुई जग में ज्ञान वैराग्यधारी की।।4।।

जन्मदात्री की गोदी को परम पावन किया तुमने।
यशकला में गुरू का नामयश द्विगुणित किया तुमने।।
तुम्हारे जन्मदिन पर मात इक वरदान माँगूं मैं।
'चन्दनामति' ज्ञान संयम की सरिता में नहा लूँ मैं।।5।।

भजन (गुजराती)-240

तर्ज –काली तेरी .....

ज्ञानमती माताजी नो दुनिया मा नाम छे।
वद्धा नरनारी एम ना गावे गुणगान छे।।

बालब्रह्मचारिणी आ गणिनी छे प्रथम,
एमनो करूँ छू नमन।।टेक.।।

श्रुत ना समन्दर भरा एमनो मन मा।
ग्रथ नो भण्डार भरो ज्ञान उपवन मा।।

एटलेज ज्ञानमती नाम थया धन्य धन्य
एमनो करूँ छू नमन।।1।।

जम्बूद्वीप रचना साकार थई गई छे।
हस्तिनापुर नी शोभा वृद्धि थई गई छे।।

तीर्थ मांगीतुंगी अयोध्या पण जाई ने।
ज्ञान नी ज्योति जनमानस मा जलाई ने।।

कर्यु जिनवरो मा आपणी श्रद्धा अर्पण
एमनो करूँ छू नमन।।2।।

वाणी नी मधुरता मन मुग्ध करे छे।
मुद्रा नी तेजस्विता तप तेज भरे छे।।

"चंदनामती" ना स्वीकारो वंदन
एमनो करूँ छू नमन।।3।।

भजन-241

तर्ज –थक गया.....

एक अकलंक धरती पे आया है फिर,
जिसने सोते से सबको जगाया है फिर।
जिसने प्राचीन इतिहास पाया है फिर,
बुझते दीपक को जिसने जलाया है फिर।।1।।

उसके कार्यों की महिमा जगत ख्यात है,
नाम उस प्रतिभा का ज्ञानमति मात है।
चाहे हो कल्पद्रुम पाठ या रथ चला,
विश्वमैत्री का उनसे मिला पाठ है।।2।।

कान में उंगलियाँ डाल बैठे थे हम,
सुनते आए महावीर से जिनधरम।
क्या ये स्वीकार है बोलो भाई-बहन ?
बस है पच्चिस सौ वर्षों से ही जिनधरम ?।।3।।

इस कथन पर हिली गर्दनें सबकी हैं,
तेरे संग स्वीकृती मात हम सबकी है।
जैनशासन का ध्वज तेरे हाथों में हो,
ध्वज के नीचे सभी जैन की शक्ति है।।4।।

बज गया फिर बिगुल ज्ञानमति मात का,
होगा निर्वाण उत्सव ऋषभदेव का।
राजधानी सजे एक दुल्हन सदृश,
सब घरों पर दिखे लहलहाती ध्वजा।।5।।

दो पगों के ही संग कोटि पग चल दिए,
स्वर में स्वर को मिला कोटि स्वर खुल गए।
मेरा जिनधर्म है प्राकृतिक धर्म बस,
"चन्दनामति" सदा मिष्ट फल देता ये।।6।।

श्री ऋषभदेव ने कर्म युग आदि में,
षट्किया असि,मषी आदि बतलाई है।

उनके उपकारों का संस्मरण आज हो,
प्रभु का निर्वाण उत्सव इसी हेतु है।।7।।

भजन-242

यह ज्ञानामृत से पूर्ण चाँद!
यह अपना अमृत बाँट रहा इसका चख लो तुम अमर स्वाद।
नभ में तो चाँद सदा रहता यह है धरती का अमिट चाँद।
यह ज्ञानामृत से पूर्ण चाँद।।1।।
नारी को अबला कहकर जब, नर ने उसके संग किया स्वांग।
तब एक तपस्वी कन्या ने, ले जन्म धरा की भरी माँग।।
यह ज्ञानामृत से पूर्ण चाँद।।2।।
गंगा अपनी सीमा में है, पर्वत भी हैं विस्तृत विशाल।
पर ज्ञानमती माताजी सम, जग में नहिं दूजी है मिशाल।।
यह ज्ञानामृत से पूर्ण चाँद।।3।।
जिस बगिया की तुम फूल बनीं, जिस गुरुकुल की तुम स्वर निनाद।
वह स्वयं वृद्धि की चमरसीम बन करे "चंदना" तुम्हें याद।।
यह ज्ञानामृत से पूर्ण चाँद।।4।।

भजन-243

(मुक्तक)

त्याग तपस्या की मूरत तुम, ज्ञान ध्यान की प्रतिमा हो।
कलियुग की सुकुमार तपस्वी, नारी की गुण गरिमा हो।।
ब्राह्मी माँ के पदचिन्हों पर चलकर लुटा रहीं चंदन।
गणिनी माता ज्ञानमती जी, स्वीकारो मेरा वंदन।।1।।

शांतिसागराचार्य गुरू की वाणी तुमने अपनाई।
वीरसागराचार्य गुरू से ज्ञानमती दीक्षा पाई।।

निन्दा स्तुति में समता, धरतीं हरतीं जग का क्रन्दन।
गणिनी माता ज्ञानमती जी स्वीकारो मेरा वंदन।।2।।
धन्य पिता श्री छोटेलाल जी मात मोहिनी धन्य हुईं।
धन्य हुए वे भगिनी भ्राता मातृभूमि भी धन्य हुई।।
बचपन से पाया तुमने माँ से शास्त्रों का सम्बोधन।
गणिनी माता ज्ञानमती जी स्वीकारो मेरा वंदन।।3।।
रत्नत्रयधारिणी मात तुम, अगणित गुण से मण्डित हो।
चारों अनुयोगों के अध्यन, प्रवचन में तुम पण्डित हो।।
इस युग की माँ सरस्वती, विद्वानों की शृंगार सदन।
गणिनी माता ज्ञानमती जी, स्वीकारो मेरा वंदन।।4।।

भजन (संवाद)-244

तर्ज –सावन का महीना.....

चन्दनामती – तू पूनो का चन्दा, और मैं मावस की रात
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।1।।

श्री ज्ञानमती माताजी – मैंने तुझे चखाया, ज्ञानामृत का जो स्वाद।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।2।।

चन्दनामती – जीवन के इन स्वर्ण क्षणों को, नहि सोचा था बचपन में।
देखा पहली बार तुझे जब, विस्मय होता था मन में।।
मैं क्या जानूँ तेरी, पदवी है जग में ख्यात।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।3।।

श्री ज्ञानमती माताजी – ग्यारह वरष उमर में तू, मेरे दर्शन को आयी थी।
उस क्षण ही मैंने तुझको, कुछ ज्ञान की बात सिखाई थी।।
वही ज्ञान की शिक्षा, हो आई तुझको याद।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।4।।

चन्दनामती – बाल उमर में मुझको माता, तुमने जो संस्कार दिये।
उसका ही फल मैंने तुमसे, तीन रत्न स्वीकार किये।।
तू है ज्ञान की गंगा, पावनता तेरी ख्यात।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।5।।

श्री ज्ञानमती माताजी – मेरे ज्ञान की सरिता से तुम, चाहे कितना ज्ञान भरो।
रत्नत्रय की वृद्धी करके, निज पर का कल्याण करो।।
गुरु आज्ञा में बिताए, तुमने अपने दिन रात।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।6।।

चन्दनामती – जिस जननी ने जन्म दिया, मैं उसको कभी न भूलूँगी।
तेरे वचनों के मोती, मैं अपने दिल में भर लूँगी।।
युग युग तक तू मुझको, दे अपना आशीर्वाद।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।7।।

श्री ज्ञानमती माताजी – महावीर की परम्परा में, कुन्दकुन्द आचार्य हुए।
इस क्रम में ही शांतिसिंधु, इस सदि के प्रथमाचार्य हुए।।
उनके दर्शन करके, पाया मैंने सन्मार्ग।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।8।।

चन्दनामती – शांतिसिंधु के पट्टशिष्य, श्री वीरसिंधु की शिष्या तुम।
दृढ़ता औ संकल्प की मूरत, हरतीं जग का मिथ्यातम।।
कहे 'चन्दनामती' सदा मैं, चाहूँ तेरा साथ।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।9।।

भजन-245

तर्ज–दीदी तेरा देवर.....

शरदपूर्णिमा का दिन आया, माँ ज्ञानमती ने जनम पाया।
सबको ज्ञान अमृत पिलाया, माँ ज्ञानमती ने जनम पाया।।टेक.।।

अवधप्रान्त के इक टिकैतनगर में,
पिता छोटेलाल व मोहिनि के घर में।

आश्विन सुदी पूर्णिमा शुभ तिथी में,
रात्री को नौ बज के पन्द्रह मिनट पे।।
पहला चाँद घर में था आया, माँ ज्ञानमती ने जनम पाया।।1।।

नानी से 'मैना' यह शुभ नाम पाकर,
बचपन से यौवन की बगिया में आई।
खिला पुष्प माली को सौंपा न तुमने
स्वयं अपने फूलों की बगिया सजाई।।
पहला जो इतिहास बनाया, माँ ज्ञानमती ने जनम पाया।।2।।

इसी पूर्णिमा को किया त्याग गृह का,
फिर दीक्षा ले बन गईं गणिनी माता।
ये ''चन्दनामति'' साहित्य वारिधि,
तीर्थों की उद्धारिका ज्ञानदाता।।
''डी.लिट्.'' पद का गौरव बढ़ाया, माँ ज्ञानमती ने जनम पाया।।3।।

भजन-246

तर्ज–धीरे-धीरे बोल कोई.....

जन्मदिन आया है वन्दन कर लो,
वन्दन कर लो, अभिनंदन कर लो।
तिथि शरदपूर्णिमा आ गई,
माँ ज्ञानमती में समा गई।। जन्मदिन...।।टेक.।।

नभ का चन्दा निज रश्मी बिखरा रहा,
तभी धरा पर एक चाँद मुस्का रहा।
छोटेलाल का चाँद सलोना था प्रथम,
मोहिनी माँ ने जनम दिया कन्या रतन।।
वही बन गईं, माँ ज्ञानमति-2, जो गणिनीप्रमुख महान हैं।
दुनिया में उनका नाम है।। जन्मदिन...।।1।।

युग युग तक जीवन्त रहे माता मेरी,
जनमजयंती सौ सौ बार मने तेरी।
यही "चन्दनामति" अभिलाषा है मेरी,
शरदपूर्णिमा ज्ञानपूर्णिमा हो तेरी।।
वन्दन करूँ, सुमिरन करूँ-2, तुझे शत-शत अभिवंदन करूँ।
तेरे चरणों में वन्दन करूँ।। जन्मदिन...।।2।।

तू धरती पर सरस्वती अवतार है,
तुझमें सारा भरा ज्ञान भण्डार है।
पर उपकार तेरे जीवन का सार है,
इसीलिए गुण गाता सब संसार है।।
वन्दन करूँ, सुमिरन करूँ-2, तुझे शत-शत अभिवंदन करूँ।
तेरे चरणों में वन्दन करूँ।। जन्मदिन...।।3।।

भजन-247

तर्ज–सपने में.....

श्री ज्ञानमती माता की हो हो.....
श्री ज्ञानमती माताजी की जयंती आई है
तिथि शरदपूर्णिमा याद दिलाने आई है-2।। टेक.।।

कहें भक्त सुनो मेरी माता, हम सबका तुमसे नाता।
हम करें तेरी जयकारा, गूँजे जिससे जग सारा।।
हम सबमें तूने ज्ञान की ज्योति जलाई है।
तिथि शरदपूर्णिमा याद दिलाने आई है-2।। श्री ज्ञानमती...।।1।।

तुमने इतिहास रचे हैं, उपवन तव गुण के सजे हैं।
कभी तीर्थोद्धार करातीं, कभी श्रुत का सार बतातीं।।
कई निधियाँ तुमसे इस धरती ने पाई हैं।
तिथि शरदपूर्णिमा याद दिलाने आई है-2।। श्री ज्ञानमती...।।2।।

प्रार्थना करें प्रभु से हम, युग युग जीवन्त रहो तुम।
"चन्दनामती" यह सृष्टी, पावे माता तव दृष्टी।।
यह दिव्य अलौकिक शक्ती हमने पाई है।
तिथि शरदपूर्णिमा याद दिलाने आई है-2।। श्री ज्ञानमती...।।3।।

भजन-248

तर्ज–ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है.....

माता की जन्मजयंती है, सब मिलके मनाओ।
मिलके मनाओ, सभी खुशियाँ मनाओ।।
माताजी की..... ।। टेक.।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी,
शरदपूर्णिमा तिथि में जन्मीं।
उनकी ही जन्मजयंती है, सब मिलके मनाओ।।
माताजी की.....।।1।।

यौवन को अपने तप में बिताया,
तप से ही मन को कुन्दन बनाया।
उनकी है जन्मजयंती है, सब मिलके मनाओ।।
माताजी की.....।।2।।

ज्ञानमती नाम सार्थक किया है,
जग को ज्ञान का अमृत दिया है।
उनकी ही जन्मजयंती है, सब मिलके मनाओ।।
माताजी की.....।।3।।

जिनधर्म की कीर्ति इनसे बढ़ी है,
श्रुतज्ञान की इनसे सरिता बही है।
उनकी ही जन्मजयंती है, सब मिलके मनाओ।।
माताजी की.....।।4।।

भजन-249

तर्ज–देखो जम्बूद्वीप के अन्दर.....

देखो जन्मजयंती आई, ज्ञानमती माताजी की-2।।टेक.।।

ज्ञान की मूरत ज्ञान की सूरत, ज्ञान की गंगा हैं माता-2।
ज्ञानदीप से करें आरती, ज्ञानमती माताजी की।।1।।

जिनवर कन्या गणिनी माता, जग की पूज्य धरोहर हैं।
अष्टद्रव्य से करें अर्चना, ज्ञानमती माताजी की।।2।।

मूलाचार व नियमसार अरु समयसार इनमें दिखता।
इसीलिए हम करें वंदना, ज्ञानमती माताजी की।।3।।

कुंदकुंद अकलंक देव अरु, वीरसेन सूरी जैसी।
साहित्यिक कृतियाँ मिलती हैं, ज्ञानमती माताजी की।।4।।

हीरे सी प्रतिभा है मुख पर, स्वर्णिम छवि है आत्मा की।
जन्मतिथी है शरदपूर्णिमा, ज्ञानमती माताजी की।।5।।

हम को तेरा हीरे सम व्यक्तित्व सुहाना लगता है।
करे "चंदनामती" वंदना, ज्ञानमती माताजी की।।6।।

भजन-250

तर्ज–इक परदेशी.....

शरदपूर्णिमा की आज, तिथि आ गई,
मेरे घर में मैना जैसी, पुत्री आ गई।
देखते ही देखते, उजियारी छा गई,
मोहिनी माँ गोदी में, इक देवी पा गईं।। टेक.।।

दादी ने आकर, दे दी बलइयाँ,
बोली पहला फूल है, गाओ जी बधाइयाँ।
देखते ही देखते, उजियारी छा गई,
मेरे घर में मैना जैसी, पुत्री आ गई।।1।।

सारे कुटुम्बियों ने, पाला खुशी से,
नगरी में हो गया, उजाला तभी से।
देखते ही देखते, उजियारी छा गई,
मोहिनी माँ गोदी में, इक देवी पा गईं।।2।।

वैराग्य हो गया तो, माता ये बन गईं,
शास्त्रों के अध्ययन से, ध्याता ये बन गईं।
माता ज्ञानमती की, जयंती आ गई,
मेरे घर में चांदनी, बसंती छा गई।।3।।

भजन-251

तर्ज–बहारों फूल बरसाओ.....

खुशी के गीत मिल गाओ, अवध का चाँद आया है। मेरे घर.....
सभी मिल पुष्प बरसाओ, जनम दिन आज आया है। जनमदिन.....
खुशी के गीत .....।। टेक.।।

वो दिन था एक, जब माँ मोहिनी ने तुमको पाया था।
शरद पूनो की रात्री में, धरा पर चाँद आया था।।
सुधारस उससे भर लाओ, मुझे वह स्वाद भाया है। मुझे.....
खुशी के गीत.....।।1।।

त्याग का शुभ दिवस भी था, शरदपूनो का ही प्यारा।
जनमदिन हो गया सार्थक, लिया जब व्रत असीधारा।।
गुणों की चाँदनी लेकर, सुधाकर आज आया है।। सुधाकर.....
खुशी के गीत.....।।2।।

ये हैं वात्सल्य की गंगा, तथा समता की सूरत हैं।
इन्हें निरखो तो लगता है, ये शारद माँ की मूरत हैं।।
तभी तो 'चंदना' जग ने, इन्हें मस्तक नवाया है।। इन्हें.....
खुशी के गीत.....।।3।।

भजन-252

तर्ज–जन्मदिन पर बधाई गीत.....

हम सब मनाएं मिल खुशियाँ, मनाएं मिल खुशियाँ।
जनमदिन आया है-2 ।। टेक.।।

ज्ञानमती माता की जयंती।
साथ में शुभ वैराग्य दिवस भी।।
खुश है ये सारी नगरिया, ये सारी नगरिया।
पूनो का चाँद आया है।। हम.....।।1।।

घर को छोड़ा जग को पाया।
अपने ज्ञान का बाग सजाया।।
हम भी सजायें निज बगिया, सजाएं निज बगिया।
धरती का चाँद आया है।। हम.....।।2।।

जहाँ चरण पड़ते माँ तेरे।
वहीं 'चंदनामति' हों मेले।।
सब मिल करें तेरी बतियाँ, करें तेरी बतियाँ।
पूनो का चाँद आया है।। हम.....।।3।।

भजन-253

तर्ज–मेरे अंगने में.....

ज्ञानमती माता का जनमदिन आज है।
शरद पूनो रात्री में आया एक चांद है।। टेक.।।

नभ का चंदा मामा अमृत की वृष्टि करता है।
पूनों के इस चंदा से ज्ञान की बरसात है।। ज्ञानमती.....।।1।।

जम्बूद्वीप रचना की पावन हैं प्रेरिका।
ज्ञानज्योति यात्रा का श्रेय इन्हें प्राप्त है।। ज्ञानमती.....।।2।।

नारियाँ तो मधुरस की लाली कही जाती हैं।
त्यागमूर्ति पहली ही ज्ञानमति मात हैं।। ज्ञानमती.....।।3।।

प्रभु की जन्मभूमियों से तुमको बहुत प्यार है।
तभी 'चंदनामती' वे भूमियाँ साकार हैं।। ज्ञानमती.....।।4।।

भजन-254

(मुक्तक)

सूर्य किरण के पड़ते ही जग अंधकार भग जाता है।
ज्ञानसूर्य के उगते ही अज्ञान तिमिर नश जाता है।।
ज्ञानमती ने उसी ज्ञान से जिन पर को चमकाया है।
वंदन कर लो इन चरणों में जन्मदिवस शुभ आया है।।1।।

ब्राह्मी चंदनबाला की इतिहास कथित गाथाएँ हैं।
पर तुममें वह सहज रूप लख हर्षित दशों दिशाएँ हैं।।
ज्ञानज्योति की यशसौरभ ने तव गुण गौरव गाया है।
शत शत वंदन तव चरणों में जन्मदिवस शुभ आया है।।2।।

जब कन्याएँ त्यागमार्ग में कदम नहीं रख पाई थीं।
सन् उन्निस सौ बावन में तुमने वह लड़ी लड़ाई थी।।
अबलाओं की बनीं मसीहा सबको मार्ग दिखाया है।
पद वंदन स्वीकार करो माँ जन्मदिवस शुभ आया है।।3।।

युग की प्रथम ज्ञानमति अरु सबसे प्राचीन साधिका हो।
शांतिसिन्धु की पट्टावलि में तुम चारित्रचंद्रिका हो।।
गणिनी बन गुरु वीरसिन्धु का गौरव सदा बढ़ाया है।
शत वंदन स्वीकार करो माँ जन्मदिवस शुभ आया है।।4।।

मिला पूर्णिमा और अमावस का संयोग निराला है।
मुझ आमावस के जीवन में तुमने किया उजाला है।।
शरदपूर्णिमा के दिन तुमने जन्म अवध में पाया है।
करे "चंदनामती" वंदना जन्मदिवस शुभ आया है।।5।।

भजन-255

रत्नमती माताजी को हम नित प्रति शीश झुकाते हैं।
उनके मंगल आदर्शों का किंचित् दर्श कराते हैं।।टेक.।।
नारी शील कहा जग में, आभूषण अवनीतल में।
सर्व गुणों की छाया है, कैसी अनुपम माया है।।

इसीलिए इस नारी ने, तीर्थंकर से पुत्र जने।
भारत जिससे धन्य हुआ, सर्वकला सम्पन्न हुआ।।
यहीं वृषभ तीर्थंकर ने, आदिब्रह्म शिवशंकर ने।
शांति मार्ग को बतलाया, जग में जीना सिखलाया।।

यहीं है सीतापुर नगरी, जहाँ महमूदाबाद पुरी।
वहीं मोहिनी जन्म लिया, जीवन जिनका धन्य हुआ।
भक्तिसुमन का हार लिये हम, माँ के चरण चढ़ाते हैं।
उनके आदर्शों को पालें, यही भावना भाते हैं।।1।।

मोहिनि से इक निधी मिली, संस्कारों की विधि फली।
मैना का जब जन्म हुआ, इक अपूर्व आनंद हुआ।।
मैना पिंजड़े से उड़कर, गृह बंधन में ना पड़कर।
आई इस भूमण्डल पर, ज्ञानमती माता बनकर।।

सरस्वती अवतार हुआ, चकित आज संसार हुआ।
जिनकी ज्ञान कलाओं से, भाव भरी प्रतिभाओं से।।
वर्णन हम क्या कर सकते, जग को नहिं बतला सकते।
उन अनन्य उपकारों को, सम्यग्ज्ञान विचारों को।।

भक्तिसुमन का हार लिए हम, माँ के चरण चढ़ाते हैं।
उनके आदर्शों को पालें, यही भावना भाते हैं।।2।।

जो कुछ भी है तेरा है, माँ का ही सब घेरा है।
माँ के संस्कारों की दुनियाँ, जिनका साँझ सबेरा है।।
उनमें ही अवतीर्ण हुआ, एक चाँद विस्तीर्ण हुआ।
शीतल चन्द्र रश्मियों से, अमृतमयी झरिणियों से।।

मानो सुधाबिन्दु झरतीं, स्याद्वाद वाणी खिरती।
ज्ञानमती का ज्ञान विमल, शुद्धात्मा श्रद्धान अमल।।
तुमने उन्हें प्रदान किया, निज का भी उत्थान किया।
रत्नत्रय को प्राप्त किया, आत्मतत्त्व श्रद्धान किया।।

भक्तिसुमन का हार लिए हम, माँ के चरण चढ़ाते हैं।
उनके आदर्शों को पालें, यही भावना भाते हैं।।3।।

एक प्रकाश और आया, झिलमिल ज्योति जला लाया।
उसका एक नजारा है, जन जन का वह प्यारा है।।
मनोवती इक कन्या ने, ज्ञानमती पथ कदम चुने।
उनकी भी कुछ गाथा है, अमर विराग सुनाता है।।

ज्ञानमती से ज्ञान लिया, अनेकान्त का सार लिया।
आत्मा का उद्धार किया, अभयमती पद प्राप्त किया।।
ज्ञान किरण प्रतिभा द्वारा, बहा काव्य रस की धारा।
मानवता को जगा दिया, अंधकार को भगा दिया।।

भक्ति सुमन का हार लिए हम, माँ के चरण चढ़ाते हैं।
उनके आदर्शों को पालें, यही भावना भाते हैं।।4।।

माता हो तो ऐसी हो, जीवन परम हितैषी हो।
मोक्षमार्ग में साधक हो, मिथ्यातम में बाधक हो।।
जाने कितनी माताएँ, सन्तानों की गाथाएं।
केवल ममता भरी कथा, छिपी हृदय में मोह व्यथा।।

हर कोई नहिं कर सकता, आत्मनिधी नहिं भर सकता।
निधी 'माधुरी' आत्मा में, प्रगट किया परमात्मा ने।।

जैनधर्म महिमाशाली, ग्रहण करे प्रतिभाशाली।
सुखद शान्ति का दाता है, परमातम प्रगटाता है।।
भक्तिसुमन का हार लिए हम, माँ के चरण चढ़ाते हैं।
उनके आदर्शों को पालें, यही भावना भाते हैं।।5।।

भजन-256

तर्ज–दे दी हमें आजादी.....

दे दी जगत को ज्ञानमती मात सी मिसाल।
हे रत्नमती मात! तुमने कर दिया कमाल।। टेक.।।

तुमको दहेज में मिला इक ग्रन्थ अनोखा।
श्री पद्मनन्दि पंचविंशती था अनूठा।। हे रत्नमती.....।।1।।

संसार से विराग का उससे सबक मिला।
तब ज्ञानमती नाम का पहला कुसुम खिला।।
इनसे जली है ज्ञानज्योति की नई मशाल।। हे रत्नमती.....।।2।।

माताओं के लिए तेरी आदर्श कहानी।
जीवित सदा रहेगी तेरी त्याग निशानी।।
माता स्वयं पुत्री के चरण में नवाती भाल।। हे रत्नमती.....।।3।।

यह जम्बूद्वीप की कृती तेरी ही कृती है।
उसके सभी कणों में बसी रत्नमती हैं।।
माता की वंदना में 'चंदना' का सजा थाल।। हे रत्नमती.....।।4।।

भजन-257

तीरथ करने चली मोहिनी, शान्ति मार्ग अपनाने को।
धर्मसागराचार्य संघ में, ज्ञानमती श्री पाने को।।

एक बार जब गई मोहिनी, साधु चतुर्विध संघ जहाँ।
वह अजमेर धर्म की नगरी, दिखता चौथा काल वहाँ।।

तीर्थवंदना शुरू वहीं से, हुई मुक्तिपथ पाने को।
धर्मसागराचार्य संघ में, ज्ञानमती श्री पाने को।।

धन्य तिथि मगसिर बदि तृतिया, वरदहस्त गुरु का पाया।
संयम की अनमोल डोर वे, भवसागर से तिरवाया।।

रत्नमती बन गई मोहिनी, गाथा अमर बनाने को।
धर्मसागराचार्य संघ में, ज्ञानमती श्री पाने को।।

सुखशान्ती का वैभव पाकर कहें मोहिनी माता है।
जैनी दीक्षा त्याग तपस्या, का विराग से नाता है।।

जग की ममता नहीं "माधुरी" हुई सफल माँ पाने को।
धर्मसागराचार्य संघ में, ज्ञानमती श्री पाने को।।

भजन-258

तर्ज –जरा सामने तो.....

जय जय बोलो अभयमति मात की,
जय जय हो इनके तप और त्याग की।
धर्मसागर व ज्ञानमति मात से,
दीक्षा ले जो हुईं विख्यात जी।।टेक.।।
छोटेलाल पिता एवं माता मोहिनि से जन्म लिया।
बचपन में ही त्याग भाव से अपना जीवन धन्य किया।।
ब्रह्मचर्य की महिमा अपार थी,
क्वांरी कन्या ने किया गृहत्याग भी।
जय जय बोलो अभयमति मात की,
जय जय हो इनके तप और त्याग की।।1।।
पक्षी पिंजरे से बाहर आकर स्वतंत्र उड़ता जैसे।
कन्या मनोवती वैसे ही निकल पड़ीं गृह पिंजरे से।।
कोई शक्ती चली ना राग की,
जीत होती सदा वैराग की।
जय जय बोलो अभयमति मात की,
जय जय हो इनके तप और त्याग की।।2।।

मृत्यु महोत्सव के अवसर पर, श्रद्धांजली समर्पित है।
शब्दमाल "चन्दनामती", कर रही चरण में अर्पित है।।

मेरा वन्दन करो स्वीकार जी,
पाओ शीघ्र मुक्ति का द्वार भी।।
जय जय बोलो अभयमति मात की,
जय जय हो इनके तप और त्याग की।।3।।

भजन-259

(गुरुओं के आहार के पश्चात् बोलने वाला भजन)

तर्ज–चाँद मेरे आजा.....

मेरे मन खुशियाँ छाई हैं,
आहार देकर मन में मेरे, गुरुभक्ती समाई है।
मेरे मन.....।।टेक.।।

प्रभु ऋषभ ने इस धरती पर, पहला आहार लिया था।
हस्तिनापुरी के राजा, श्रेयांस ने उन्हें दिया था।।
याद वह घड़ियाँ आई हैं,
आहार देकर मन में मेरे, गुरुभक्ती समाई है।।
मेरे मन.....।।1।।

हैं चार दान आगम में, श्रावक के लिए बताए।
उनको शक्ती सम करके, निज जीवन सफल बनाएं।।
आज वह घड़ियाँ आई हैं,
आहार देकर मन में मेरे, गुरुभक्ती समाई है।।
मेरे मन.....।।2।।

महावीर प्रभू आए थे, चन्दनबाला के घर में।
आहारदान की महिमा, जानी थी तब जन-जन ने।।
दान की महिमा गाई है,
आहार देकर मन में मेरे, गुरुभक्ती समाई है।।
मेरे मन.....।।3।।

आहारदान से घर में, अक्षय संपति आती है।
गुरुचरणों से चौके की, पावनता बढ़ जाती है।।
दान की घड़ियाँ आई हैं,
आहार देकर मन में मेरे, गुरुभक्ती समाई है।।
मेरे मन.....।।4।।

प्रतिदिन मेरे जीवन में, यह अवसर मिलता आए।
आहारदान दे गुरु को, नवजीवन खिलता जाए।।
चेतना मन में आई है,
आहार देकर मन में मेरे, गुरुभक्ती समाई है।।
मेरे मन.....।। 5।।

भजन-260

(गुरुओं के आहार के पश्चात् बोलने वाला भजन)

तर्ज–माई रे माई.....

आओ रे आओ, खुशियाँ मनाओ, यह है मंगल बेला।
मेरे घर का, कण-कण पावन, गुरु चरणों से बनेगा।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।टेक.।।

बड़े पुण्य से गुरुओं के, आहार का अवसर आता,
साधु मुनी आर्यिका को, भक्ती से पड़गाया जाता,
चौक बनाकर घर के आगे.....
चौक बनाकर घर के आगे, लगा भक्ति का मेला,
मेरे घर का, कण-कण पावन, गुरु चरणों से बनेगा।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।1।।

निरन्तराय आहार कराकर, मन में खुशी हुई है,
मानो आज मुझे कोई, निधि ही अनमोल मिली है,
जय-जयकार करो अब गुरु की.....
जय-जयकार करो अब गुरु की, अवसर बड़ा रंगीला,

मेरे घर का, कण-कण पावन, गुरु चरणों से बनेगा।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।2।।

यह आहार की महिमा, शास्त्रों में बतलाई जाती,
पंचाश्चर्य वृष्टि करने, देवों की टोली आती,
भोजन भी अक्षय हो जाता.....
भोजन भी अक्षय हो जाता, उस दिन उस चौके का,
मेरे घर का, कण-कण पावन, गुरु चरणों से बनेगा।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।3।।

शक्ती के अनुसार दान दे, अपना पुण्य बढ़ाओ,
इस अवसर पर अपने घर में, मंगलाचार कराओ,
जीवन मंगलमयी सदा हो.....
जीवन मंगलमयी सदा हो, अपना और सभी का,
मेरे घर का, कण-कण पावन, गुरु चरणों से बनेगा।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय।।4।।

भजन-261

(रक्षाबन्धन के शुभ अवसर पर गाने वाला भजन)

तर्ज–फिरकी वाली.....

पर्व आया,
प्रेम भर लाया, धरम पथ भाया, कथा विख्यात है,
रक्षाबंधन सभी को याद है।।टेक.।।

जन्मभूमि में विष्णुमुनी ने, निज वात्सल्य दिखाया था।
सप्तशतक मुनियों की रक्षा, कर कर्तव्य निभाया था।।
हस्तिनापुर की, धरती तब, उपसर्ग से कांप रही थी,
ऐसे क्षण में,
महामुनिवर ने, मुनीपद तज के, किया सब शान्त है,
रक्षाबंधन सभी को याद है।।1।।

उस दिन चौके में सबने, सिंवई की खीर बनाई थी।
जले कण्ठयुत उन मुनियों को, कोमल खीर खिलाई थी।।

पुनः सभी ने, खुश हो मन में, रक्षासूत्र बंधाया,
उस दिन से ही,
धर्मरक्षा का, नियम ले लिया था, सभी नर नारि ने,
रक्षाबंधन सभी को याद है।।2।।

पैंसठ लाख वर्ष से, रक्षाबंधन पर्व मनाते हैं।
भाई ले संकल्प बहन से, रक्षासूत्र बंधाते हैं।।
भूल गये उन, मुनि की यादें, खीर लगे खुद खाने,
मेरे बंधू!
धरम को न तजना, याद सदा रखना, कथा जो बेमिशाल है,
रक्षाबंधन सभी को याद है।।3।।

श्रावण सुदी पूर्णिमा को तुम, हस्तिनापुर को याद करो।
श्री अकम्पनाचार्य विष्णुमुनि, का पूजन सत्कार करो।।
साधु मिलें "चन्दनामती" जो, उनकी वाणी सुनना,
भाई बहनों!
यही है कहानी, पर्व की निशानी, जो प्रेम की मिशाल है,
रक्षाबंधन सभी को याद है।।4।।

भजन-262

(रक्षाबन्धन के शुभ अवसर पर गाने वाला भजन)

अब तक बहुत मनाया, रक्षाबन्धन का त्योहार है।
आओ आज मना लें, आतमरक्षा का त्योहार है।। टेक.।।

आतमप्रभु पर चार घातिया, कर्म मंत्रियों का हमला।
मोह बली मंत्री मुझसे, ले रहा पूर्व का यह बदला।।
भव अग्नी में झुलसाकर, करता उपसर्ग अपार है।
आओ आज मना लें, आतमरक्षा का त्योहार है।।1।।

ध्यानलीन होने पर आतम, शक्ति विष्णुमुनि आएंगे।
मेरी रक्षा करके बलि को, बांध स्वयं ले जाएंगे।।

ज्ञानामृत की खीर से होगा, तब मेरा आहार है।
आओ आज मना लें, रक्षाबंधन का त्योहार है।।2।।

निज रक्षा करके ही, पररक्षा के योग्य बना जाता।
व्यवहारिक रक्षाबन्धन, 'चंदनामती' यह सिखलाता।।
रक्षासूत्र गहो समता का, यही पर्व का सार है।
आओ आज मना लें, रक्षाबन्धन का त्योहार है।।3।।

भजन-263

(दीपावली पर्व के शुभ अवसर पर गाने वाला भजन)

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

आज दीवाली आई है,
सारे जहाँ ने दीपक जलाकर खुशियाँ मनाई हैं।। आज.....।। टेक.।।

कार्तिक कृष्णा मावस को पावापुरि के उपवन में।
निर्वाण धाम को पाया, महावीर वीर प्रभुवर ने।।
आज दीवाली आई है।।1।।

पच्चिस सौ वर्षों से वह, सरवर भी लहर रहा है।
कमलों से युत सरवर बिच, प्रभु मंदिर महक रहा है।।
आज दीवाली आई है।।2।।

महावीर मोक्ष में पहुँचे, गौतम हुए केवलज्ञानी।
गणधर गणेश कहलाए, लक्ष्मी कैवल्य की मानी।।
आज दीवाली आई है।।3।।

अगणित दीपों को जलाकर, तुम खुशियाँ खूब मनाओ।
'चंदनामती' निज आतम, में ज्ञान की ज्योति जलाओ।।
आज दीवाली आई है।।4।।

भजन-264

तर्ज-चाँद मेरे आ जा रे.....

पर्व दशलक्षण आया है-2
भक्तों ने प्रभु की भक्ति से अपना, उपवन सजाया है।। पर्व...।। टेक.।।

दशलक्षण का ये बगीचा, कितना सुन्दर लगता है।
भादों शुक्ला पंचमि से, चौदस तक यह सजता है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।1।।

कर्मों की विलक्षण गति है, ये सबको नाच नचाते।
इनसे मुक्ती पाने की, युक्ती ये धर्म बताते।।
पर्व दशलक्षण आया है।।2।।

यह पर्व क्षमागुण का शुभ, संदेश लिए आता है।
भव-भव के वैर भुलाकर, मैत्री को सिखलाता है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।3।।

मेरे आतम में भी प्रभु, ये धर्म दशों बस जावें।
पारस प्रभु सम कष्टों में, भी धैर्य हृदय बस जावे।।
पर्व दशलक्षण आया है।।4।।

यह धर्म कल्पतरु मुझको, सौभाग्य से प्राप्त हुआ है।
"चन्दनामती" नरभव का, अब सच्चा ज्ञान हुआ है।।
पर्व दशलक्षण आया है।।5।।

भजन-265

उत्तम क्षमा धर्म

तर्ज-आवाज देकर.....

क्षमा धर्म से अपनी बगिया सजाओ।
गुणों की सुरभि अपने जीवन में लाओ।। टेक.।।

न क्रोधी प्रकृति आत्मा की कही है।
वहाँ तो सदा शान्ति सरिता बही है।।
नहीं क्रोध कर अपनी गरिमा घटाओ।
गुणों की सुरभि.....।।1।।

हो यदि कोई दुश्मन तुम्हारा जगत में।
उसे जीत सकते हो तुम प्रेम बल से।।
सहनशीलता धैर्य शक्ती बढ़ाओ।
गुणों की सुरभि.....।।2।।

प्रभू पार्श्व ने ही क्षमा धर्म पाला।
इसे धार ऋषियों ने उपसर्ग टाला।।
उन्हीं सबके चरणों में मस्तक झुकाओ।
गुणों की सुरभि.....।।3।।

करूँ प्रार्थना प्रभु मुझे भी क्षमा दो।
प्रभो! मेरे मन को भी चन्दन बना दो।।
यही भावना "चन्दनामति" बनाओ।
गुणों की सुरभि.....।।4।।

भजन-266

उत्तम मार्दव धर्म

तर्ज-हाय हाय ये.....

धर्म मार्दव को सब मिल निभाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।। टेक.।।
मान मानव का गुण बन गया है,
जब कि अवगुण ही उसको कहा है।
अवगुणों को हृदय से हटाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव.....।।1।।

इस अहं ने ही सबको ठगा है,
इन्द्रिय विषयों में ही मन लगा है।
सोच अब मन को विनयी बनाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव.....।।2।।

ज्ञानियों की विनय करना सीखो,
संयमी की विनय करना सीखो,
संयमी बनके संयम निभाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव.....।।3।।

फल सहित वृक्ष झुकता सदा है,
ऐसे ही गुण सहित मन कहा है।
मन का उपवन गुणों से सजाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव.....।।4।।

विनय विद्या प्रदाता कही है,
ऋद्धि सिद्धी की दाता वही है।
"चन्दनामति" हृदय मृदु बनाना, धर्म का रूप जग को दिखाना।।
धर्म मार्दव.....।।5।।

भजन-267

उत्तम आर्जव धर्म

तर्ज-दिन रात मेरे स्वामी.....

हे नाथ! आपसे मैं, वरदान एक चाहूँ। वरदान.....
ऋजुता हृदय में लाकर, आर्जव धरम निभाऊँ। आर्जव.....।। टेक.।।

ना जाने क्यों कुटिलता का भाव आ ही जाता।
हे प्रभु! उसे हटा कर समता का भाव लाऊँ।। समता का.....।।1।।

माया में फंसके मैंने मानव जनम गंवाया।
अनमोल इस रतन को अब ना गंवाने पाऊँ।। अब ना.....।।2।।

यह भी सुना है माया से पशुगती है मिलती।
उस पशुगती में हे प्रभु! अब मैं न जाना चाहूँ।। अब मैं.....।।3।।

शायद अनादिकालिक संस्कार संग लगे हैं।
मैं चाहकर भी हे प्रभु! उनसे न छूट पाऊँ।। उनसे न.....।।4।।

यह पुण्यकर्म ही जो गुरु देशना मिली है।
फिर 'चन्दनामती' मैं, मन में उसे बिठाऊँ।। मन में.....।।5।।

भजन-268

उत्तम सत्य धर्म

तर्ज–झिलमिल सितारों का.....

सत्य धरम जब पालन होगा, पापों का प्रक्षालन होगा।
इसका पालन वचन सिद्धि का साधन होगा।। सत्य धरम.....।। टेक.।।

जाने कितने झूठ भी मैंने, जनम जनम में बोले हैं।
स्वार्थसिद्धि के कारण अपने, वचन न मैंने तोले हैं।।
अब उन सबका क्षालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.....।।1।।

बहुत से विषकण मिलकर जैसे, अमृत नहिं बन सकते हैं।
कई झूठ मिलकर वैसे ही, सत्य नहीं बन सकते हैं।।
धर्म सदा अमृत सम होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।।सत्य.....।।2।।

साधू उत्तम सत्य वचन को, पूर्णरूप से धरते हैं।
श्रावक भी सच्चाई का, आंशिक पालन कर सकते हैं।।
अतः झूठ वच टालन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.....।।3।।

राजा वसु ने झूठ बोलकर, अधोगती को प्राप्त किया।
सत्यवादियों ने हि "चन्दनामती", ऊर्ध्वगति प्राप्त किया।।
धर्म सदा मनभावन होगा, सत्य धरम जब पालन होगा।। सत्य.....।।4।।

भजन-269

उत्तम शौच धर्म

तर्ज–जिस गली में.....

जिस गती में न उत्तम धरम मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।
जिस मती से धरम शौच पल ना सके,
उस मती को भी हे नाथ! पाना नहीं।। टेक.।।

हीरा सा यह मनुज तन मिला आज है।
लोभ में ही गया यदि तो क्या लाभ है।।
लोभ में ही गया यदि.....
जिस गती में धरम लाभ ना मिल सके,
उस गती में मुझे नाथ! जाना नहीं।। जिस.....।।1।।

कुछ तो सीमा करो अपनी इच्छाओं की।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी निजात्मा में भी।।
फिर तो शुचिता बढ़ेगी.....
लोभ का त्याग पूरा भी कर ना सको,
तो भी ज्यादा उसी में लुभाना नहीं।। जिस.....।।2।।

लोभवश चक्रवर्ती नरक में गया।
भरत सम्राट् ने तज उसे शिव लहा।।
भरत सम्राट् ने तज.....
'चन्दनामति' जहाँ लक्ष्य की पूर्ति हो,
रत्नत्रय धारकर मुझको जाना वहीं।। जिस.....।।3।।

भजन-270

उत्तम संयम धर्म

तर्ज–बाबुल की दुआएं.....

उत्तम संयम के पालन से, मानव को शिव का द्वार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।टेक.।।

पारसमणि को पाना जैसे, दुर्लभ ही नहीं अतिदुर्लभ है।
वैसे ही संयमरूपी मणि को, पाना भी अतिदुर्लभ है।।
यदि मिल जावे वह रत्न तो समझो, मोक्षपंथ साकार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।1।।

इन्द्रिय संयम प्राणी संयम से, संयम द्वैविध माना है।
इनका पालन करने वालों को, शिवपद निश्चित पाना है।।
श्रावक को भी किंचित् संयम, पालन से सुख आधार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।2।।

यदि संयम पालन कर न सको, निंदा न संयमी की करना।
उनकी पूजन आहार आदि से, निज आतम शुद्धी करना।।
"चन्दनामती" संयम व संयमी, में ही सुख का सार मिले।
निज मन पे नियंत्रण करने से, रत्नत्रय का भंडार मिले।।3।।

भजन-271

उत्तम तप धर्म

तर्ज–हम लायें हैं तूफान से.....

हे वीतराग प्रभु! मुझे तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।। टेक.।।

विपरीत अर्थ करके तप का पतित हो गया।
मैं क्षणिक सुख को भोगकर उसमें ही खो गया।।

हे नाथ! इन दुखों से मुझको मुक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।1।।

कन्या अनंगशरा ने तप किया था वनों में।
बन करके विशल्या दिखाई शक्ति क्षणों में।।
हे नाथ! मुझे भी वही तपशक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।2।।

उत्तम तपो धरम से मुनी मोक्ष जाते हैं।
श्रावक भी करें तप यदी तो स्वर्ग पाते हैं।।
प्रभु! 'चन्दनामती' को भी कुछ युक्ति दीजिए।
जब तक तपस्या कर न सकूँ भक्ति दीजिए।।3।।

भजन-272

उत्तम त्याग धर्म

तर्ज–तुमसे मिलने को.....

त्याग लेने का मन करता है।
हे प्रभो! त्याग लेने का मन करता है।। टेक.।।

भ्रान्तिवश मैंने शुभ कर्म को तज दिया।
विषय भोगों में ही अपना मन कर लिया।।
उसे तजने का मन करता है।।हे प्रभो.....।।1।।

त्याग की महिमा अब मैंने जानी प्रभो।
दान की गरिमा अब मैंने मानी प्रभो।।
दान देने का मन करता है।।हे प्रभो.....।।2।।

देना आहार औषधि अभयदान भी।
ज्ञान का दान दे तजना अज्ञान भी।।
ज्ञान लेने का मन करता है।। हे प्रभो.....।।3।।

साधु ही त्याग उत्तम धरम पालते।
आज भी वे परम शांति को धारते।।
शांति पाने को मन करता है।। हे प्रभो.....।।4।।

दान देकर के श्रावक जनम धन्य हो।
"चन्दनामति" मेरा मन भी धन धन्य हो।।
सुरभि लेने का मन करता है।। हे प्रभो.....।।5।।

भजन-273

उत्तम आकिंचन्य धर्म

तर्ज–तुमसे लागी लगन.....

धर अकिंचन धरम, कर ले तू शुभ करम, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।। टेक.।।

ना मे किंचन अकिंचन धरम है, पर को निज मानना ही भरम है।
तज दे मिथ्या भरम, पाल ले दश धरम, भव्य प्राणी।
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।1।।

पांच पापों में परिग्रह भी इक है, इसको मुनिवर न धरते तनिक हैं।
उनके पद में नमन, करके पावन हो मन, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।2।।

इसका कुछ त्याग श्रावक भी करते, पांच अणुव्रत का पालन जो करते।
अणुव्रतों का कथन, जिनवरों का वचन, भव्य प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।3।।

व्रत सहित श्रेष्ठ मानव जनम है, व्रत रहित मन को रखना न तुम है।
व्रत से शिक्षा लें हम, 'चन्दनामति' है मन, सुन ले प्राणी,
धन्य होगी तेरी जिन्दगानी।।4।।

भजन-274

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

तर्ज–दीदी तेरा देवर.....

ब्रह्मचर्य व्रत को निभाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।
झुकता उसके आगे जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।टेक.।।

जो विषयों का त्यागी, है आत्मा का रागी,
वही ब्रह्मचर्य सहित है विरागी।
महासाधुगण की, निधी यह धरोहर,
वही इसके बल पर बने वीतरागी।।
उनको जग ने पावन है माना, हे नाथ! कठिन है उसे पाना।।1।।

सती सीता ने इसका कुछ अंश पाला,
हुई शीलव्रत की परीक्षा विशाला।
बनी जल की सरिता वो अग्नी की ज्वाला,
सुदर्शन का भी व्रत ने उपसर्ग टाला।।
उनकी जय से गूंजा जमाना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।2।।

मुझे भी प्रभो! इसका पालन करा दो,
मेरी आतमा को भी पावन बना दो।
विषयों से मुझको विरागी बना दो,
मुझे 'चन्दना' आत्मस्वादी बना दो।।
जिससे हो ना भव भव में आना, हे नाथ! कठिन है इसे पाना।।3।।

भजन-275

क्षमावणी पर्व

तर्ज–तीरथ कर लो पुण्य कमा लो.....

क्षमागुण को मन में धर लो, क्षमा को वाणी में धर लो।
शत्रु मित्र सबमें समता का भार हृदय धर लो।।
क्षमा गुण को मन में धर लो।। टेक.।।

मैत्री का हो भाव सभी प्राणी के प्रति मेरा,
गुणीजनों को देख हृदय आल्हादित हो मेरा।।
वही आल्हाद प्रकट कर लो,
क्रोध बैर भावों को तजकर मन पावन कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।1।।

चिरकालीन शत्रुता भी यदि किसी से हो मेरी।
उसे भूलकर मित्रभावना बने प्रभो! मेरी।।
भावना सदा सरल कर दो,
चन्दन सी शीतलता से मन को शीतल कर दो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।2।।

एक-एक ईंटों को चुनने से मकान बनता।
एक-एक धागा बुनने से परीधान बनता।।
यही क्रम गुण में भी धर लो,
एक-एक गुण से आत्मा को परमात्मा कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।3।।

दश धर्मों के आराधन से मृदुता आती है।
भावों में 'चंदनामती' तब ऋजुता आती है।।
रत्नत्रय को धारण कर लो,
पर्वों का इतिहास यही जीवन में अमल कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।4।।

भजन (वर्षायोग महिमा)-276

तर्ज–सोनागिरि में.....

जिनशासन में वर्षायोग की महिमा है।
साधु सन्त के चातुर्मास की गरिमा है।।
मूलाचारादिक ग्रंथों में जो लिखा, वही रूप मुनि और आर्यिका में दिखा।।
जिनशासन.....।।टेक.।।

मूलगुण मुनि-आर्यिका के एक सदृश हैं।
दोनों महाव्रती सदा जग से विरक्त हैं।।
इन संग क्षुल्लक क्षुल्लिका भी श्रावकोत्तम हैं।
पिच्छी कमण्डलु से समन्वित संघ चउविध है।।
इनके संघ विहार की जग में महिमा है।
साधु सन्त के चातुर्मास की गरिमा है।।जिनशासन.।।1।।

बीसवीं सदि के प्रथम आचार्य गुरुवर ने।
दिखला दिया सच्चा दिगम्बर पंथ मुनिवर ने।।
संयम करो धारण कभी डरना न संयम से।
श्रावक बनो जब तक न संयम पल सके तुम से।।
श्रावक-साधु दोनों की ही महिमा है।
साधु संत के चातुर्मास की गरिमा है।।जिनशासन.।।2।।

अवसर मिला है गुरुजनों से ज्ञान लेने का।
चउ संघ को भक्ती सहित आहार देने का।।
मानव ही क्या पशुओं का भी जीवन बदलता है।
तब "चंदनामति" नर जनम का सार मिलता है।।
सब गतियों में मनुषगती की महिमा है।
साधु संत के चातुर्मास की गरिमा है।।जिनशासन.।।3।।

भजन-277

तर्ज –महाकुंभ का पर्व महान, चलो रहे प्रयाग चलो.....

आया वर्षायोग महान, करो गुरुभक्ती करो।
करो गुरुभक्ती करो, करो गुरुभक्ती करो,
इनसे पाना है सच्चा ज्ञान, करो गुरुभक्ती करो।।आया।। टेक.।।

वर्षा ऋतू का मौसम है आया, भक्तों ने गुरुओं का सान्निध्य पाया।
दो भक्ती से आहारदान, करो गुरुभक्ती करो।।आया....।।1।।

श्री शांतिसागर का सुमिरन कर लो, प्रथमाचार्य का वंदन कर लो।
सब उनका ही है वरदान, करो गुरुभक्ती करो।।आया....।।2।।

मुनि आर्यिकाओं के प्रवचन सुनना, 'चन्दनामती' ज्ञान भण्डार भरना।
सब गुरुओं का करो सम्मान, करो गुरुभक्ती करो।।आया....।।3।।

भजन-278

(ध्वज गीत)

तर्ज –फूलों सा.....

केशरिया झण्डा मेरा, जिनमत की पहचान है।
साथिया निशान है, जैनियों की शान है, उत्सव का सम्मान है।।टेक.।।
जिनवर के मंदिर शाश्वत बने जो,
उन सबपे भी ध्वज लहराते हैं।
रत्नों से निर्मित फिर भी हवा के,
चलने से वे ध्वज लहराते हैं।।
देव जहाँ जाते, कीर्ति प्रभु की गाते, जिनचैत्य की वंदना कर रहे।
जय जय हो जय जय प्रभो
केशरिया ध्वज धाम है।
साथिया निशान है, जैनियों की शान है, उत्सव का सम्मान है।।1।।

आकाश सी ऊँचाई को कहता,
झण्डा ये देखो फहराया है।
फूलों से गूंथा घंटी से गूँजा,
जिनवाणी का स्वर लहराया है।।
महामहोत्सव में, आज के उत्सव में, "चन्दनामती" ध्वज वंदना करो।
जय जय हो, जय जय प्रभो, सिद्धों का यह धाम है।
साथिया निशान है, जैनियों की शान है, उत्सव का सम्मान है।।2।।

भजन (ध्वज गीत)-279

जन जन के हितकारी हो प्रभु, युग के आदिविधाता।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर तुम ही, वृषभेश्वर जग त्राता।।

तुमने जन्म लिया जब,
कण-कण धन्य हुआ तब।
इन्द्र सिंहासन डोला
मेरु सुदर्शन पांडुशिला पर, सबने जय जय बोला।
जय हे जय हे जय हे, जय जय जय जय जय हे।।
युग के आदि विधाता।।1।।

नाभिराय मरुदेवी के नन्दन, हुए प्रथम अवतारी।
पञ्चकल्याणक के हो स्वामी, सब जन मंगलकारी।।
सब मिल जय प्रभु बोलो
जग के बन्धन खोलो
गूँज उठे जग सारा
मुक्तिमार्ग के तुम्हीं प्रणेता, शत-शत नमन हमारा।
जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय जय हे।।
युग के आदि विधाता।।2।।

भजन-280

(गर्भकल्याणक गीत)

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
चन्दा सूरज करें आरती, छुटते जनम मरण हैं।।
सौ सौ बार नमन है।।
ऋषभदेव जिनवर को युग का, सौ-सौ बार नमन है।।टेक।।

प्रभु का गर्भकल्याणक उत्सव, इन्द्र मनाया करते।
छः महिने पहले कुबेर, रत्नों की वर्षा करते।।

तीर्थंकर माँ के आँगन में, बरसें खूब रतन हैं।,
सौ सौ बार नमन है।। ऋषभदेव.....।।1।।

पिता उन्हीं रत्नों को जनता, में वितरित कर देते।
रत्न प्राप्तकर श्रावक जन, निज भाग्य धन्य कर लेते।।
धरती स्वर्णमयी बन जाती, पुलकित हुआ गगन है।
सौ सौ बार नमन है।। ऋषभदेव.....।।2।।

एक रत्न उनमें से प्रभु यदि, आज मुझे मिल जावे।
तब मेरा भी भाग्य 'चन्दनामती', स्वयं खिल जावे।।
तुम सम गर्भागम मेरा भी, होवे यही जतन है।।
सौ सौ बार नमन है।। ऋषभदेव.....।।3।।

भजन-281

(जन्मकल्याणक गीत)

आदीश्वर तेरी नगरी में धूम मची है-2।
मची है, धूम मची है-2।।आदीश्वर.।।टेक.।।

सुना है इन्द्र भी दर पे तिहारे आते थे,
तेरे गुण को वे सभी मिल के यहाँ गाते थे।
तूने जब जन्म लिया रत्नवृष्टि करते थे,
तेरा जन्माभिषेक मेरू गिरि पे करते थे।।
यादों में वही मानो तस्वीर बसी है।।आदीश्वर....।।1।।

इसी नगरी को अयोध्या जी सभी कहते हैं,
यहीं जिनवर के सदा जन्म हुआ करते हैं।
ऋषभ भगवान की यह जन्मभूमि कहलाई,
पुनः श्रीराम की भी मातृभूमि कहलाई।।
दुनिया में इसी नगरी की धूम मची है।।आदीश्वर....।।2।।

ज्ञानमति माँ तेरे दर्शन को यहाँ आ गईं,
तीन चौबीसी औ समवसरण बना गईं।
ब्राह्मी माँ के समान पितु की शरण आ गईं,
ऋषभ भगवान की छवि उनके हृदय भाई गई।।
'चन्दना' तेरी नगरी चहुँ ओर सजी है।।आदीश्वर....।।3।।

भजन-282

(पालन गीत)

आदीश्वर झूले पलना, मरुदेवी लोरी गावें-2।
मरुदेवी लोरी गावें, सब देवी उसे सुलावें।।आदीश्वर..।।

कहाँ प्रभू को जनम भयो है-2
कौन झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर..।।

नगरि अयोध्या में जनम भयो है-2
किनने जायो ललना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर..।।

नाभिराय पितु धन्य हुए हैं-2,
मरुदेवी जायो ललना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर..।।

स्वर्ग से इन्द्र-इन्द्राणी आये-2,
सभी झुलाएं पालना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर..।।

माता पाकर धन्य हुई हैं-2,
तीर्थंकर सा ललना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर..।।

यही "चन्दनामति" मैं चाहूँ-2,
पाऊँ प्रभु सा पालना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर..।।

भजन-283

(राजदरबार का गीत)

तर्ज-लिया प्रभू अवतार.....

लगा प्रभू दरबार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।
अवध के राजकुमार, जय जयकार जय जयकार जय जयकार।।

आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।
खुशियाँ अपरम्पार, जय जयकार.....।।लगा.....।।1।।

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हरषा-हरषा।
बजे दुन्दुभी सार, जय जयकार.....।।लगा.....।।2।।

नाभिराय ने ऋषभदेव का, राज्यपट्ट अभिषेक किया था।
सबको हर्ष अपार, जय जयकार.....।।लगा.....।।3।।

प्रभु ने राजनीति सिखलाई, धर्मनीति की बात बताई।
धर्म ही जग में सार, जय जयकार.....।।लगा.....।।4।।

आवो हम सब प्रभु गुण गावें, धन्य 'चन्दनामति' हो जावें।
सब जग मंगलकार, जय जयकार.....।।लगा.....।।5।।

भजन-284

(भगवान ऋषभदेव की दीक्षा के समय का गीत)

तर्ज-दिल के अरमां.....

प्रभु जी सिद्धि कांता वरने चल दिये।
संग में चार हजार राजा चल दिये।।प्रभु जी.।।

सारी धरती पर प्रभू का राज्य था।
किन्तु प्रभु को हो गया वैराग्य था।।

तज के सब संसार, वे तो चल दिये।
संग में चार हजार राजा चल दिये।।1।।

वन में जाकर नग्न दीक्षा धार ली।
अवध की जनता दुःखी अपार थी।।

पंचमुष्टी केशलुंचन कर लिये।
संग में चार हजार राजा चल दिये।।2।।

दीक्षा लेकर वे तो ध्यान मग्न हुए।
बाकी सब राजा नियम से च्युत हुए।।

सम्बोधा वनदेव ने नहिं मुनिमार्ग ये।
संग में चार हजार राजा चल दिए।।3।।

छह महीने के बाद चले आहार को।
हुआ जहाँ आहार, धरा गजपुर की वो।।

तभी "चन्दनामती" मुनी व्रत पल रहे।
संग में चार हजार राजा चल दिए।।4।।

भजन-285

(भगवान ऋषभदेव की दीक्षा के समय का गीत)

तर्ज-चल दिया छोड़.....

सब अथिर जान संसार, तजा घर बार, ऋषभप्रभु स्वामी।
फिर नहीं किसी की मानी।

पहले तो ब्याह रचाया था, सबको सब कुछ सिखलाया था।
राजाओं ने भी राजनीति तब जानी-
फिर नहीं किसी की मानी।।1।।

इक दिन नीलांजना नृत्य हुआ, प्रभु का मन पूर्ण विरक्त हुआ।
दे पुत्र भरत को राज्य बने वे ज्ञानी-
फिर नहीं किसी की मानी।।2।।

प्रभु नगरि अयोध्या छोड़ चले, पहुँचे प्रयाग के उपवन में।
हुई केशलोंच से उनकी शुरू कहानी-
फिर नहीं किसी की मानी।।3।।

वटवृक्ष तले ध्यानस्थ हुए, केवलज्ञानी भी यहीं हुए।
"चन्दनामती" यह तीर्थ उन्हीं की निशानी, फिर नहीं किसी की मानी।।
फिर नहीं किसी की मानी।।4।।

भजन-286

(अक्षय तृतीया-आहार गीत)

तर्ज-एक परदेशी.....

प्रभु ऋषभदेव का आहार हो रहा,
हस्तिनापुरी में जयजयकार हो रहा।।
प्रथम प्रभू का प्रथम पारणा, प्रथम बार जब हुआ महल में।।हुआ...।।
पंचाश्चर्य की वृष्टि हुई थी, चौके का भोजन अक्षय हुआ तब।।
अक्षय....।।
भक्ती में विभोर सब संसार हो रहा,
हस्तिनापुर में जयजयकार हो रहा।।प्रभू.....।।1।।
भरत ने नगरि अयोध्या से आकर, श्रेयांस का सम्मान किया था।।
श्रेयांस....।।
दानतीर्थ के प्रथम प्रवर्तक, कहकर उन्हें बहुमान दिया था।।बहुमान....।।
राजा के महलों में मंगलाचार हो रहा,
हस्तिनापुर में जयजयकार हो रहा।।प्रभू.....।।2।।
सब मिलकर अक्षय तृतिया को, आहार दान का पर्व मनाओ।
गुरुओं को आहार दे 'चन्दनामति', सबको गन्ने का रस भी पिलाओ।।
रस भी पिलाओ।।
देखो कैसा धर्म का प्रचार हो रहा,
हस्तिनापुर में जयजयकार हो रहा।।प्रभू.....।।3।।

भजन-287

(समवसरण गीत)

तर्ज-सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर समवसरण आया था.....समवसरण आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।टेक.।।

करोड़ों साल पहले भी, हजारों साल पहले भी।
ऋषभ महावीर इस धरती पर खाए और खेले भी।।
भारत की वसुधा पर तब, स्वर्ग उतर आया था.....स्वर्ग उतर आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।1।।

हुआ था जिनवरों को दिव्य केवलज्ञान जब वन में।
तभी ऐसे समवसरणों की रचना की थी धनपति ने।।
इन्द्र मुनी चक्री सबने लाभ बहुत पाया था-लाभ बहुत पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।2।।

आज के इस महाकलियुग में नहिं साक्षात् जिनवर हैं।
तभी हम मूर्तियों को प्रभु बनाकर रखते मंदिर में।।
सतियों ने इनकी भक्ति करके नाम पाया था-करके नाम पाया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।3।।

अधर आकाश की रचना धरा पर आज दिखती है।
बीच में 'चन्दना' देखो प्रभू की गंधकुटि भी है।।
समवसरण का यह वर्णन शास्त्रों में आया था.....शास्त्रों में आया था।
मैंने न जाने तब कहाँ जनम पाया था।।4।।

भजन-288

(ज्ञानकल्याणक गीत)

तर्ज-माई रे माई.....

आओ रे आओ खुशियाँ मनाओ, उत्सव सभी मनावो।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।

पुरिमतालपुर के उपवन में, ज्ञान हुआ जब प्राभु को।
इन्द्राज्ञा से धनपति ने, रच डाला समवसरण को।।
नभ में अधर विहार करें वे, दर्शन कर सुख पाओ।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।1।।

चरण कमल तल स्वर्णकमल की, रचना इन्द्र करे हैं।
सोने में होती सुगंधि है, यह साकार करे हैं।।
उन जिनवर के दर्शन करने, भव्य सभी आ जावो।
बोलो रे जय जय जय.....।।2।।

बीस हजार हाथ ऊपर है, समवसरण की रचना।
अंधे-लूले-लंगड़े-रोगी, चढ़कर कभी थकें ना।।
यही 'चन्दनामती' प्रभू की, महिमा सब मिल गाओ।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ है, समवसरण रचवाओ।।
बोलो रे जय जय जय.....।।3।।

भजन-289

(केवलज्ञान गीत)

तर्ज-तुम तो ठहरे परदेशी.....

समवसरण दर्शन करो, तो भव्य कहलाओगे।
यदि तुम अभव्य हुए, तो दर्श नहीं पाओगे।।टेक.।।

प्रभु जी की धर्म सभा, में जो भी आता है।
तुम भी दिव्यध्वनि को सुनो, तो भव से तिर जाओगे।।
समवसरण.....।।1।।

गूंगे भी वहाँ जाकर, बोलने लग जाते हैं।
तुम भी आज श्रद्धा करो, तो आत्मसुख पाओगे।।
समवसरण.....।।2।।

इन्द्रभूति गौतम का भी, मान गलित हुआ था वहाँ।
देखो वही मानस्तंभ, मुक्तिपथ पाओगे।।
समवसरण.....।।3।।

दर्शनों के भावों से, मेढक से देवगति ली।
दर्शन करो तुम भी तो, देवगती पाओगे।।
समवसरण.....।।4।।

भव्य या अभव्यपने की, "चन्दना" परीक्षा करो।
दर्शन से भव्यत्व की, श्रेणी में आओगे।।
समवसरण.....।।5।।

भजन-290

(सामूहिक नृत्य गीत)

तर्ज-रंग बरसे भीगे चुनर वाली.....

रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके.....
हो.....रंग छलके ज्ञान गगरिया से रंग छलके.....हो.....।।टेक.।।

जग को होली का रंग सुहाता-2
तुमको सुहाती ज्ञान गंग, जगत तरसे रंग छलके.....हो.....।।1।।

जग को सुहाती, जयपुर की चुनरिया-2
तुम्हें भाती चरित्र चुनरिया, जो मन हरषे रंग छलके....हो.....।।2।।

जग को सुहाते, रत्नन के गहने-2
तुम्हें भाते ज्ञान के गहने, रतन बरसे रंग छलके.....हो.....।।3।।

जग को सुहाती, विषयां की लाली-2
तुमहो सुहाती जिनवाणी, जगत झलके रंग छलके.....हो....।।4।।

कहे 'चन्दना' सब मिल आओ-2
हम भी सुनें जिनवाणी, ज्ञान बरसे रंग छलके.....हो.....।।5।।

भजन-291

(निर्वाणकल्याणक गीत)

तर्ज-माई रे माई.....

ऋषभदेव निर्वाण महोत्सव, मिलकर सभी मनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।

कोड़ा-कोड़ी वर्ष पूर्व तिथि माघ कृष्ण चौदश थी।
अष्टापद से मोक्ष पधारे, ऋषभदेव जिनवर जी।।
तब स्वर्गों से इन्द्रों ने आ, दीप असंख्य जलाए।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

ऋषभदेव से महावीर तक, हैं चौबिस तीर्थंकर।
इन सबका उपदेश एक ही, धर्म अहिंसा हितकर।।
जिओ और जीने दो सबको, यह संदेश सुनाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।2।।

सिद्धक्षेत्र की भक्ती करके, हम भी सिद्ध बनेंगे।
जब तक सिद्ध नहीं बनते, तब तक प्रभु भक्ति करेंगे।।

सभी 'चन्दनामती' खुशी से, यही भावना भाएँ।
आओ इस भारत वसुधा पर, अगणित दीप जलाएँ।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय जय जय।।1।।

जिनवाणी स्तुति-292

हे सरस्वती माता, अज्ञान दूर कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।। टेक.।।

श्रुत का भण्डार भरा, तेरे ज्ञान की गंगा में।
जन मन श्रृंगार करा, गुरुवर मुनि चन्दा ने।।
श्रृंगार सहित माता, श्रुतज्ञान पूर्ण कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।1।।

प्रभु वीर की वाणी सुन, गणधर ने संवारा है।
मुनिगण उस पथ पर चल, निज ज्ञान सुधारा है।।
निज ज्ञान किरणदाता, आलोक ज्ञान भर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।2।।

चंदन चंदा गंगा, तन शीतल कर सकते।
मुक्ता मालाएँ भी, नहिं मन को हर सकते।।
'चंदनामती' सबको, शारद माँ का वर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।3।।

णमोकार भजन-293

-शिखरिणी छंद-

णमो अरिहंताणं, नमन है अरिहंत प्रभु को।
णमो सिद्धाणं में, नमन कर लूँ सिद्ध प्रभु को।।
णमो आइरियाणं, नमन है आचार्य गुरु को।
णमो उवज्झायाणं, नमन है उपाध्याय गुरु को।।।1।।

णमो लोए सव्वसाहूणं पद बताता।
नमन जग के सब, साधुओं को करूँ जो हैं त्राता।।
परमपद में स्थित, कहें पाँच परमेष्ठि इनको।
नमन इनको करके, लहूँ इक दिन मुक्तिपद को।।2।।
सभी के पापों को, शमन करता मंत्र यह ही।
तभी सब मंगल में, प्रथम माना मंत्र यह ही।।
जपें जो भी इसको, वचन मन कर शुद्ध प्रणति।
लहें वे इच्छित फल, हृदय नत हो 'चन्दनामति'।।3।।

भजन-294

तर्ज–कभी राम बनके.....

निज ध्यान करने, गुणगान करने,
चले आना आतम में चले आना।। टेक.।।

बड़ा चंचल है मन इसको बांधो।
बड़ा नश्वर है तन इसको साधो।।
शुद्धात्म भजने, परमात्म भजने,
चले आना आतम में चले आना।।1।।

कभी ॐकार में मन रमाओ।
कभी मन में प्रभू को बसाओ।।
मंत्र जाप करने, मन को साफ करने,
चले आना आतम में चले आना।।2।।

मन के मंदिर में वेदी बनाओ।
उसपे आतम प्रभू को बिठाओ।।
पूजा पाठ करने, मन एकाग्र करने,
चले आना आतम में चले आना।।3।।

भावों का छत्र प्रभु पे लगाओ।
"चन्दना" श्रद्धा चंवर ढुराओ।।

प्रभु को प्राप्त करने, आतम लाभ वरने,
चले आना आतम में चले आना।।4।।

भजन-295

तर्ज–तन डोले.....

ॐकार बोलो, फिर आँखें खोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे,
नर जन्म सफल हो जाएगा।। टेक.।।

प्रातःकाल उषा बेला में, बोलो मंगल वाणी।
हर घर में खुशियाँ छाएँगी, होगी नई दिवाली।। हे भाई.....
प्रभु नाम बोलो, निजधाम खोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे।
नर जन्म सफल हो जाएगा।। ॐकार.....।।1।।

परमब्रह्म परमेश्वर की, शक्ती यह मंत्र बताता।
णमोकार के उच्चारण से, अन्तर्मन जग जाता।। हे भाई.....
नौ बार बोलो, सौ बार बोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे,
नर जनम सफल हो जाएगा।। ॐकार.....।।2।।

ॐ शब्द का ध्यान 'चंदना-मति' मन स्वस्थ बनाता।
इसके ध्यान से मानव इक दिन, परमेष्ठी पद पाता।। हे भाई.....
नौ बार बोलो, सौ बार बोलो, सब कार्य सिद्ध हो जाएँगे।
नर जन्म सफल हो जाएगा।। ॐकार.....।।3।।

भजन-296

अन्तर्यात्रा गीत

तर्ज–आवाज देकर हमें तुम.....

चलो मन को अन्तर की, यात्रा कराएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।। टेक.।।

मेरी आतमा सत्य, शिव सुन्दरम् है।
कुसंगति से उसमें, हुआ मति भरम है।।
पुरुषार्थ कर, शुद्ध आतम को ध्याएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।।1।।

ये यात्रा वचन मन, व तन शुद्ध करती।
ये यात्रा अमन चैन, परिपूर्ण करती।।
इसी यात्रा से, मन को तीरथ बनाएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।।2।।

न हम हैं किसी के, न कोई हमारा।
सभी से जुदा, आतमा है निराला।।
उसे 'चंदना', खोज करने से पाएं।
भटकते विचारों को, मन से हटाएं।।3।।

भजन-297

शाम सबेरे दो घड़ी, तू आतम ध्यान लगाया कर।
यही तपस्या है बड़ी, तू राग और द्वेष हटाया कर।।टेक.।।
सोचा कर तू मन में मैं हूँ, कौन कहाँ से आया हूँ।
क्या करना था मुझे यहाँ पर, क्या कुछ कर मैं पाया हूँ।
जाना है किस ठोर को तू, दिल में ख्याल ये लाया कर।।यही तपस्या..।।1।।
पाप और पुण्य किया है कितना, रोज हिसाब लगाया कर।
पाप अगर हो जाए अधिक तो, उस पर पश्चाताप कर।।
और कभी फिर भूल कर भी, वह न पाप कमाया कर।।यही तपस्या..।।2।।
पाप कर्म को छोड़ो भाई, पुण्य कर्म को कर दीजे।
पाप कर्म संसार का कारण, यह दृढ़ निश्चय कर लीजे।।
पाप कर्म को छोड़कर तू, भाव विशुद्ध बनाया कर।।यही तपस्या..।।3।।
मैं न किसी का कोई नहि मेरा, तन से भी मैं न्यारा हूँ।

रागद्वेष नहि भाव हमारा, दर्शन ज्ञान भंडारा हूँ।।
ऐसा दिल में सोचकर तू, परपद में नहिं जाया कर।।यही तपस्या..।।4।।
मैं ही ब्रह्मा मैं ही विष्णु, मैं ही तो परमेश्वर हूँ।
मेरा आतम है परमातम, मैं शुद्धात्म जिनेश्वर हूँ।।
ऐसा दिल में सोचकर तू, निज पद में ही आया कर।।यही तपस्या..।।5।।

भजन-298

तर्ज–मैं चंदन बनकर.....

हे प्रभु! मैं अपने आतम, में ऐसा रम जाऊँ।
संसार के बन्धन से, मैं मुक्त हो जाऊँ।। हे प्रभु.....।। टेक.।।
संकल्प विकल्पों का यह, सागर संसार है।
सागर की तरंगों से अब, मैं ऊपर उठ जाऊँ।। हे प्रभु.....।।1।।
दुःखों की पर्वतमाला, कब टूट पड़ेगी मुझ पर।
उस पर्वत पर हे भगवन!, मैं कैसे चढ़ पाऊँ।। हे प्रभु.....।।2।।
आतम सुख के अमृत में, मैं डूब गया अब स्वामी।
उसका आस्वादन लेकर, 'चंदनामती' सुख पाऊँ।। हे प्रभु.....।।3।।

भजन-299

तर्ज –क्या खूब.....

निज ध्यान करने से, आतमनिधि मिलती है।
तन मन की मुरझाई, कलियाँ खिलती हैं,
अन्तर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।टेक.।।
संसार भयानक वन है-हाँ हाँ वन है,
तो भी वहाँ पर इक खिला धर्म उपवन है।

हमें पाना है उसकी छाया-हाँ हाँ छाया,
बस इसीलिए यह आतम ध्यान लगाया।
सुख शांती की प्राप्ति सदा इससे ही मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।1।।

मेरा मन मंदिर निर्मल-हाँ हाँ निर्मल,
इसके अंदर इक कमल की वेदी सुन्दर।
जहाँ शांत विराजे भगवन्-हाँ हाँ भगवन्,
उस भगवन का ही करना है मुझे दर्शन।।
उस दर्शन से सच्ची दृष्टी हमको मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।2।।

मैं ही ब्रह्मा मैं विष्णू-हाँ हाँ विष्णू,
मैं कष्टों को सहने में बनूँ सहिष्णू।
मैं अविचल अडिग सुमेरू-हाँ हाँ मेरू,
मैं निज मन को नहिं आकुलता से घेरूँ।
यह शक्ती "चन्दनामती" जिनवर से मिलती है,
अंतर के कोने में इक ज्योती जलती है।।निज.।।3।।

भजन-300

तर्ज–फिरकी वाली.....

भोले प्राणी!
तेरी दुनिया में, है सब कुछ नश्वर, न कुछ अविनश्वर, शरीर भी न तेरा है।
फिर भी सबको तू कहे मेरा मेरा है।। टेक.।।

टंकोत्कीर्ण अमूर्तिक केवल, आत्मतत्त्व है अविनश्वर।
उससे जुड़े वचन मन काया, का व्यापार सभी नश्वर।।
क्षणभंगुर हैं जीवन के क्षण, मिले नहीं अक्षय कण,
तू है ज्ञानी, आत्मविज्ञानी, तत्त्वश्रद्धानी, शुद्धात्म तत्त्व तेरा है।
फिर भी सबको तू कहे मेरा मेरा है।।1।।

एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, जीव अनन्तानन्त कहे।
हैं व्यवहार से संसारी सब, निश्चय से परमात्म रहें।।
सूर्योदय से भगे अंधेरा, फैले स्वर्ण उजेरा।
यूँ ही ध्यानी, तू सुन प्रभु वाणी, परमकल्याणी, मिटे भव फेरा है।
फिर भी सबको तू कहे मेरा मेरा है।।2।।

अध्यातमवादी बनकर, व्यवहार क्रियाएँ मत छोड़ो।
पाप त्याग से पूर्व 'चंदना', पुण्य से नाता मत तोड़ो।।
सत्यम शिवम् सुन्दरम् को, पाने का यही है साधन,
हे श्रुतज्ञानी, न बन अज्ञानी, समझ सुन प्राणी, कर्मों ने डाला डेरा है।
फिर भी सबको तू कहे मेरा मेरा है।।3।।

भजन-301

तर्ज–एक तेरा साथ.....

देव शास्त्र गुरु का ही, जीवन में सहारा है।
नहिं कोई भी किनारा है।। देव.....।। टेक.।।

तीन रत्न ये जिनशासन में, सच्चे माने जाते,
इनके आराधन से मानव, तीन रतन को पाते।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित ही.....
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित ही सच्चा मुक्तिद्वारा है।
नहिं कोई.....।। देव.....।।1।।

देव मंदिरों में रहते, श्रीशास्त्र वहीं पर देखे।
गुरुजन शहरों की गलियों में, विचरण करते देखे।।
ये ही गुरुवर जन-जन को.....
ये ही गुरुवर जन-जन को भवदधि से करते पारा हैं।
नहिं कोई.....।। देव.....।।2।।

गुरु के चरणों से जिस घर का, कण-कण पावन होता है।
उनके दिव्य प्रवचनों से भी, जो मन पावन होता है।।
उसकी काया का ही 'चंदना'.....
उसकी काया का ही चंदना हो जाता उद्धारा है।
नहिं कोई.....।। देव.....।।3।।

जब भी साधु मिलें या साध्वी, उन सबका सम्मान करो।
अपने भावों को न छुपाकर, निज पर का उत्थान करो।।
इसी अनादी परम्परा को.....
इसी अनादी परम्परा को हम सबने स्वीकारा है।
नहिं कोई.....।। देव.....।।4।।

भजन-302

तर्ज –सांची कहें तोरे.....

सांची कहूँ प्रभु दर्शन से हमरे, मन के भागे विकार हो जी।
समता की सूरत, वीतराग मूरत, अपने प्रभू को निहार लो जी।।टेक.।।

दर्शन से मिटता है मिथ्या अंधेरा,
हट जाएगा काले कर्मों का डेरा।
भाव बढ़ा लो, पूजा रचा लो, भरो पुण्य भंडार हो जी।।1।।

निशदिन ध्यान धरूँ प्रभु तेरा,
हो जाएगा तब सम्यक् उजेरा।
ध्यान लगा लो, कर्म जला लो, करो धर्म संचार हो जी।।2।।

जिसने तुमको मन में ध्याया,
आत्मोन्नति कर मुक्ती पाया।
कहे "चन्दना" लो प्रभु शरणा, हो जावेगा उद्धार हो जी।।3।।

भजन-303

तर्ज–सन्त साधू.....

मिल गया मानव जनम, भव भव के पुण्य प्रताप से,
नाथ! अब सद्बुद्धि दे दो, छूट जाऊँ पाप से।। टेक.।।
जीव के संग कर्म का, सम्बन्ध काल अनादि से।
इस ही क्रम से चल रहा, संसार द्वन्द अनादि से।।
मात्र नरतन से ही हो, सकता है द्वन्द समाप्त ये।।
नाथ! अब सदबुद्धि.....।।1।।

स्वर्ण का पाषाण जैसे, शुद्ध होता अग्नि से।
आतमा भी वैसे ही हो, शुद्ध तप की अग्नि से।।
नहिं तपस्या होवे जब तक, पाप काटूँ जाप से।
नाथ! अब सदबुद्धि.....।।2।।

कमल कीचड़ में ही खिलता, है पता संसार को।
फिर भी निज सौन्दर्य से, पाता है सबका प्यार वो।।
आत्मा का कमल यूँ ही, 'चन्दना' सुखसार है।
नाथ! अब सदबुद्धि.....।।3।।

भजन-304

तर्ज–ऐसी शक्ति हमें.....

ऐसी शक्ति मिले हमको भगवन्! पाप से दूर जब रह सकें हम।
हम चलें मुक्तिपथ के पथिक बन,
पथ से भटकें न प्रभुवर कभी हम।। ऐसी.....।। टेक.।।

मन में आए अहं यदि कभी भी, उससे पहले विनय गुण प्रगट हो।
पर को दुख देने से पूर्व निज में, उसकी अनुभूति कर मन सजग हो।।
सबके प्रति सुख व हित भावनाएँ,
मन में आएँ मेरे नाथ हरदम।। हम.....।।1।।

मोह ममता में हमने अनादी, काल से अपना जीवन बिताया।
सात व्यसनों में यदि फंस गया तो, नरक पशुगति में जा दुख उठाया।।
रोते रोते वहाँ काल बीता,
पुण्य से पाया फिर मैंने नर तन।। हम.....।।2।।

हमको करना है अब प्रभु की भक्ती, और गुरुओं की सत्संगती भी।
इससे ही एक दिन पाऊँ मुक्ती, "चन्दनामति" मिले ऐसी शक्ती।
हँसते-हँसते बिता करके जीवन,
स्वर्ग सम सुख करें प्राप्त हरदम।। हम.....।।3।।

भजन-305

मनवा! तेरी न कोई सीमा।
ढूँढा जग में सभी जगह, पर मुझको मिला कहीं ना।।
मनवा! तेरी न कोई सीमा।। टेक.।।

ऊँचे पर्वत गहरी नदियाँ, लम्बी चौड़ी वसुधा।
सबको युग ने नाप लिया, पर तुझको नाप सका ना।।
मनवा! तेरी न कोई सीमा।।1।।

तू मस्तक में है या दिल में, बोल कहाँ तेरा बीमा।
सबको वश में करता है तू, फिर भी दिखे कहीं ना।।
मनवा! तेरी न कोई सीमा।।2।।

तुझको वश में करने वाले, आज भी हैं दुनिया में।
छोड़ परिग्रह सन्त बने जो, तुझमें रमें कभी ना।।
मनवा! तेरी न कोई सीमा।।3।।

छोड़ दे अपना अहम तू मनवा, मेरे वश में आ जा।
रमण निजातम में हो 'चंदना', तब पूरी हो सीमा।।
मनवा! तेरी न कोई सीमा।।4।।

भजन-306

तर्ज-हमरी गुलाबी चुनरिया.....

भक्ती की भर ली गगरिया, कि भव पार कर दो संवरिया।। टेक.।।
क्षीर समुद्र से जल भर लाए-2
रिमझिम सी बरसे बदरिया, कि भव पार कर दो सांवरिया।।1।।
इन्द्राणी प्रभु का तन अंगोछे-2
लेकर शुद्ध चदरिया, कि भव पार कर दो सांवरिया।।2।।
ऐरावत हाथी पे बिठाया-2
पांडुक वन की डगरिया, कि भव पार कर दो सांवरिया।।3।।
चरण 'चंदना' ध्यान लगाए-2
पार लगा दो नवरिया, कि भव पार कर दो सांवरिया।।4।।

भजन-307

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

सार्थक हो जीवन मेरा, पाया जो वरदान है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।। टेक.।।
इस तन में है इक चैतन्य आत्मा,
उसका ही सारा चमत्कार है।
जिस दिन निकल जाय तन से वो आत्मा,
रह जाता पुद्गल का संसार है।।
नरजनम को पाके, आत्मतत्त्व ध्याके, पाना परममुक्ति का धाम है।
जड़ चेतन को समझूँ अलग, यही ज्ञानी की पहचान है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।1।।

चारों गती में मानुषगती ही,
कहलाती सबसे उत्तम यहाँ।

क्योंकि उसी के द्वारा सभी जन,
करते हैं आतमचिंतन यहाँ।।
सिद्ध जो बने हैं, सिद्ध जो बनेंगे, नरतन से ही पाते निजधाम हैं।
विषयों में फंसना नहीं, देते गुरू ज्ञान हैं।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।2।।
जिनवर की पूजा, गुरुओं की भक्ती,
स्वाध्याय करके संयम धरूँ।
शक्ती के अनुसार करके तपस्या,
दानी बनूँ कुछ नियम भी करूँ।
चन्दनामती ये, कर्म षट् कहे हैं, हो इनसे आतम का कल्याण है।
क्रम क्रम से पाना है फिर, संयम सकल धाम है।
पुण्यकार्य कर सकूँ, भवसमुद्र तर सकूँ, मन में ये अरमान है।।3।।

भजन-308

गंधोदक की महिमा

तर्ज-सुनो रे.....

सुनो रे सुनो गंधोदक की महिमा-2
जिनके न्हवन से पावन हुआ जल,
मंदिर में है प्रतिमा।। सुनो रे.....।। टेक.।।

मैना सुन्दरी ने गंधोदक, से पतिकुष्ट मिटाया।
अन्य सात सौ राजाओं को, रोगमुक्त करवाया।।
गुरुमुख से जानी थी उसने, सिद्धचक्र की गरिमा।। सुनो रे.....।।1।।

एक धनन्जय नामक कवि ने, गंधोदक का फल पाया।
अपने सुत पर चढ़े सर्प विष, को भी दूर भगाया।।
उन्होंने कर डाली तब, विषापहार स्तोत्र की रचना।। सुनो रे.....।।2।।

ज्ञानमती माताजी ने, बाल्यावस्था में दर्शाया।
अपने दो भ्राताओं को चेचक, महामारी से बचवाया।।
गन्धोदक को लगाकर उन्होंने, बतलाई उसकी महिमा।। सुनो रे.....।।3।।

एक नहीं कितनी ही कथाएँ, ग्रन्थों में बतलाई हैं।
तन मन पावन करने की, महिमा इसमें दर्शाई है।।
इसीलिए 'चंदनामती' तुम, जानो उसकी महिमा।। सुनो रे.....।।4।।

भजन-309

तर्ज-अरे! हट जा.....

अरे, जग जा रे चेतन! नींद से,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।टेक.।।
काल अनादी से इस जग में-2
भ्रमण करे तू चारों गति में-2।
अरे, मोह नींद को दूर भगा,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।1।।
मानुष तन दुर्लभ है जग में-2,
सदुपयोग इसका तू कर ले-2।
अरे, विषय कषाय को त्याग दे,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।2।।
पर का कुछ उपकार भी कर ले-2,
सज्जन का सत्कार भी कर ले-2।
अरे, कर ले आतम ध्यान भी,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।3।।
सात व्यसन का त्याग तू कर दे-2,
पाँच पाप भी मन से तज दे-2।

अरे, धर्म में कर अनुराग रे,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।4।।

कहे "चन्दनामती" सभी से-2,
कर लो मैत्री भाव सभी से-2।
अरे, भज ले प्रभु का नाम रे,
तुझे सतगुरु आये जगावन को।।5।।

भजन-310

तर्ज-हम लाए हैं तूफान से.....

हम आए हैं निगोद से, आशाएँ संजोके।
मानुष जनम को पाके, फिर निगोद न लौटें।। टेक.।।

केवल जनम मरण में ही, पर्याय बिताई।
कुछ पुण्य का संयोग, त्रस पर्याय अब पाई।।
शक्ती मिले चिन्तन करें, आतम मगन होके।
मानुष जनम को पाके, फिर निगोद न लौटें।।1।।

स्वर्गों के सुख भोगे, पशू की योनि भी पाई।
नरकों में रो-रोकर, वहाँ की आयु बिताई।।
नर तन प्रभो सार्थक करूँ, अब शांत मन होके।
मानुष जनम को पाके, फिर निगोद न लौटें।।2।।

सम्यक्त्व की महिमा से, आतम शुद्ध बनाऊँ।
शुभ देव शास्त्र गुरु के प्रति कर्त्तव्य निभाऊँ।।
फिर 'चंदनामति' क्रम से स्वर्ग मोक्ष भी होते।
मानुष जनम को पाके फिर निगोद न लौटें।।3।।

भजन-311

स्वामी! हम तो आए तेरे द्वारे पे, आये तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।
बाबा हम तो आए तेरे द्वार पे, आये तेरे द्वार पे, तेरी हम पे.....
तेरी हम पे नजर कब होगी।। टेक.।।

रत्नों के स्वामी तुम, गुणरत्नाकर कहलाते हो।
तीन रत्न मुझको भी दे दो, क्यों प्रभु देर लगाते हो।।
स्वामी हम तो.....।।1।।

पाँच-पाँच कल्याणक तेरे देव मनाते हैं आकर।
एक बार मेरा भी कुछ कल्याण करो प्रभु जी आकर।।
स्वामी हम तो.....।।2।।

मुझे नहीं कुछ चाह 'चंदनामति' केवल शिवपद देना।
बहुत दिनों तक भ्रमण किया है अब निज सम ही कर लेना।।
स्वामी हम तो.....।।3।।

भजन-312

तर्ज-काली तेरी चोटी.....

अहिंसा प्रधान मेरी इण्डिया महान है।
इण्डिया में जन्मे महावीर और राम हैं।
यहाँ की पवित्र माटी बनीं चन्दन, उसे करो सब नमन।। टेक.।।

जहाँ कभी बहती थीं दूध की नदियाँ।
वहाँ अब करुणा की माँग करे दुनिया।।
अत्याचार पशुओं पे होगा कब खतम, उसे करो सब नमन।।1।।

प्रभु महावीर का अमर संदेश है।
लिव एण्ड लेट लिव का दिया उपदेश है।।

मानवों की मानवता की यही पहचान है।
जाने जो पराए को भी निज के समान है।।
तभी अहिंसा का होगा सच्चा पालन, उसे करो सब नमन।।2।।

अहिंसा के द्वारा ही इण्डिया फ्री हुई।
ब्रिटिश गवर्नमेंट की जब इति श्री हुई।।
चाहे हों पुराण या कुरान सभी कहते।
अहिंसा के पावन सूत्र सब में हैं रहते।।
यही मेरे देश की कहानी है पुरानी।
अहिंसक देशप्रेमियों की ये निशानी।।
'चंदनामती' यह देश ऋषियों का चमन, उसे करो सब नमन।।3।।

भजन-313

सुनो रे सुनो कुन्दकुन्द की कहानी, कौण्डकुण्डपुर ग्राम की निशानी।
कलियुग में बतलाई जिनने, वीर प्रभू की वाणी।। टेक.।।

समयसार है प्रगट जहाँ, वहाँ मूलाचार भी छिपा नहीं है।
नियमसार में वर्णित रत्नत्रय संगम की धार वहीं है।।
सुनो रे, सुनो रे.....।।1।।

कुन्दकुन्द ने निश्चय अरु व्यवहार समन्वय बतलाया।
जिसे साधकर स्वयं उन्होंने निज आत्मा को लख पाया।।
यदि एकान्त रहेगा मन में नहिं होगा सम्यग्ज्ञानी।
सुनो रे, सुनो रे.....।।2।।

नहीं शास्त्र को शस्त्र बनाओ, गुरुमुख से अध्ययन करो।
कहे 'चंदनामति' श्रावक, मुनिचर्या का चिन्तवन करो।।
पद के योग्य क्रिया करने से, बनोगे तुम श्रद्धानी।
सुनो रे, सुनो रे.....।।3।।

भजन-314

तर्ज–बोल राधा बोल.....

मुझ जैसे अज्ञानी को, तेरे जैसे ज्ञानी का,
बोल भगवन बोल दर्शन होगा कि नहीं, बोल.....।। टेक.।।

कितनी बार नरक में मैंने तुझसे वादे कर डाले।
पर इस नरतन को पाकर के मैंने उन्हें नहीं पाले।।
कुछ दोष नहीं है तेरा, यह काला धन्धा मेरा।
फिर बोल भगवन बोल दर्शन होगा कि नहीं।।1।।

कुछ पापों से हल्का होकर तेरी भक्ती को आया।
द्रव्य भाव के सुमन संजोकर मैंने तेरा गुण गाया।।
भगवन तेरी भक्ती, नहीं करने की है शक्ती।
फिर बोल भगवन बोल दर्शन होगा कि नहीं।।2।।

अब मेरी इक इच्छा है प्रभु निज में ही बस रम जाऊँ।
तेरे चरण छोड़कर स्वामी कहीं नहीं जाना चाहूँ।।
प्रभु तू ऐसा वर दे, 'चंदनामती', गुण भर दे।
तो फिर बोल भगवन बोल दर्शन होगा ही सही।।3।।

भजन-315

तर्ज–मैं.....

मैं समयसार को निज आतम में ध्याऊँगा,
बन अन्तरात्म शुद्धात्म भावना भाऊँगा।
ये क्या है ? परमागम है, आध्यात्मिकता का साधन है।
यह कुन्दकुन्द का कुन्दन है, जिससे होता मन पावन है।।
ये क्या है.....।। टेक.।।

प्रभु कुन्दकुन्द ने समयसार को समझाया,
आत्मा का सहज स्वरूप ग्रन्थ में दरशाया।

ये क्या है ? प्रभु महिमा है, आतम स्वभाव की गरिमा है।
ये जीवों का कल्याण करे, संसार जलधि से पार करे।।
ये क्या है.....।।1।।

श्रावक गृहस्थ में भी वैरागी बन करके,
शुद्धात्म अवस्था किंचित् भी नहिं पा सकते।
ये क्या है ? जिनवाणी है, जन-जन की यही कल्याणी है।
मुनिधर्म हमें सिखलाती है, आत्मा का सार बताती है।।
ये क्या है.....।।2।।

अशुभोपयोग को तज हम शुभ में लग जावें,
यह भाव 'चंदनामती' शुद्धता पा जावें।
ये क्या है ? जिनभक्ती है, बस समयसार की शक्ती है।
जो जन इसका श्रद्धान करें, वे निज स्वरूप का पान करें।।
ये क्या है.....।।3।।

भजन-316

(दर्शन प्रतिज्ञा की कहानी)

तर्ज–सौ साल पहले.....

बीते युगों में यहाँ पर, एक सती आई थी-2।
गजमोतियों की कथा, उसने बनाई थी।। टेक.।।

हस्तिनापुर की कन्या मनोवती बल्लभगढ़ ब्याही थी।
प्रतिज्ञा देवदर्शन की, सदा उसने निभाई थी।।
लज्जा के कारण उसने, बात नहिं बताई थी-2।
गजमोतियों की कथा.....।।1।।

भरे भंडार मोती के, कभी उस बल्लभगढ़ में थे।
किन्तु दर्शन की निंदा से, सेठ भी बने भिखारी थे।।
परिवार ने बेटे के, संग बहू निकाली थी-2।
गजमोतियों की कथा.....।।2।।

सती की उस प्रतिज्ञा से, देव आसन भी कांपे थे।
रत्नपुरि में वे मंदिर और मोती देने आते थे।।
सात उपवासों को करके, महिमा दिखाई थी-2।
गजमोतियों की कथा.....।।3।।

पति-पत्नी ने मंदिर एक, रत्नपुरि में बनाया था।
वहीं फिर बल्लभगढ़ वालों से मिलने का क्षण आया था।।
दर्शन प्रतिज्ञा तब से, सबने निभाई थी-2।
गजमोतियों की कथा.....।।4।।

यह कहानी प्रभू दर्शन की, महिमा को बताती है।
आत्मज्योती जलाने में, भक्ति ही काम आती है।।
"चन्दनामती" यह महिमा, शास्त्रों में गाई थी-2।
गजमोतियों की कथा.....।।5।।

भजन-317

(कहानी चार अनुयोगों की)

इक बार की बात सुनो भाई, इक बच्चा माँ के संग चला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।। टेक.।।

होता क्या है कुछ दूर पहुँचकर, बच्चा ठोकर खाता है।
माँ की अंगुली को छोड़ वहीं, मुन्ना रोने लग जाता है।।
माँ बोली कल तेरे भैया को चोट लगी, वह नहिं रोया।
तू भी तो उसका भाई है चल खेल खिलौना भी खोया।।
प्रथमानुयोग ऐसे आदर्शों, को बतलाता सदा चला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।1।।

बच्चे का रोना नहीं रुका, माँ के इस सम्बोधन पर भी।
तब माँ भी और तरीके से, समझाने लगी सड़क पर ही।।

कल तूने अपने भैया को हंस-हंसकर और चिढ़ाया था।
उसके फल में ही गिरा आज तू इसी मार्ग पर आया था।।
करणानुयोग शुभ-अशुभ कर्म के सुख-दुःख फल को रहा चला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।2।।

इतना कहते ही और चिढ़ गया मुन्ना रोकर कहता है।
भैया पर मैंने हंसा कभी, वह भी तो मुझ पर हंसता है।।
माँ भी कुछ गुस्से में बोली, तुमने नीचे क्यों नहिं देखा।
पथ देख के चलने वाला मानव, नहिं गिरता हमने देखा।।
चरणानुयोग पथ देख-देख चलने की सिखलाता है कला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।3।।

तो भी वह बालक चुप न हुआ, आँसू का झरना फूट पड़ा।
रोना सिसकी में बदल गया, माँ के आंचल पर कूद पड़ा।।
माँ तो ममता की मूरत है, उसने मुन्ने को उठा लिया।
तू मेरा राजा बेटा है, नहिं चोट तुझे लगती भइया।।
द्रव्यानुयोग आत्मा को राजा बेटा कह जड़ से बदला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।4।।

ऐसे ही सरस्वती माता जग को यह कला सिखाती है।
चारों अनुयोगों में निबद्ध जिनवाणी राह दिखाती है।।
प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग स्वाध्याय करो।
क्रम-क्रम से फिर द्रव्यानुयोग में, आत्मा का अध्याय पढ़ो।।
'चंदनामती' जग इसी तरह से, सीखेगा अध्यात्म कला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।5।।

भजन-318

तर्ज–इक रोज तो चलना है.....

जिनवाणी सुन प्राणी, शिवमार्ग बताती है।
जन-जन की कल्याणी, प्रभु द्वार दिखाती है।। टेक.।।

क्रोधादि कषायों ने, तुझे जग में भ्रमाया है।
अनमोल रत्न चेतन, विषयों में गंवाया है।।
बनो शीघ्रमोक्षगामी, यह सार सुनाती है।
जन-जन की कल्याणी, प्रभु द्वार दिखाती है।।1।।

सोचो निज जीवन में, हमने क्या जाना है।
पर परिणति चिन्तन में, आतम सुख माना है।।
अज्ञान छोड़ ज्ञानी, यह ज्ञान सिखाती है।
जन-जन की कल्याणी, प्रभु द्वार दिखाती है।।2।।

स्वाध्याय परम तप से, दृष्टी सम्यक् होती।
चारित्र ज्ञान गंगा, भवि के कल्मष धोती।।
'चंदनामती' प्रभु की, वाणी समझाती है।
जन-जन की कल्याणी, प्रभु द्वार दिखाती है।।3।।

भजन-319

तर्ज –फूलों सा चेहरा तेरा.....

कल्पद्रुम पूजा महा, कलियुग में वरदान है,
कार्य की सिद्धि हो, जग में सुख समृद्धि हो, अतिशय परमधाम है।।टेक.।।
तीर्थंकरों के समवसरण में,
इस पूजा को चक्रीगण करते हैं।
कलियुग के श्रावक ही चक्रवर्ति बन,
इस कल्पद्रुम पूजा को करते हैं।।
दान भी देते हैं, भक्ति भी करते हैं, पाते हैं वैसा ही फल सर्वदा-2
चौबीसों तीर्थंकरों के, जपते सदा नाम हैं,
कार्य की सिद्धि हो, जग में सुख समृद्धि हो, अतिशय परमधाम है।।1।।

दुर्भिक्ष, भूकम्प, तूफान, संकट,
टल जाते सब इस महायज्ञ से।

तन मन निरोगी हो वृद्धि धन की,
यदि पूजा हो श्रद्धा अरु शुद्धि से।।
प्रभु की दिव्यध्वनि से, नाम शिखामणि से, तिर जाते हैं प्राणी संसार से,
श्रावक के कर्त्तव्य दो, पूजा तथा दान हैं,
कार्य की सिद्धि हो, जग में सुख समृद्धि हो, अतिशय परमधाम है।।2।।

जो कल्पनामात्र से फल को देवे,
वह कल्पद्रुम पाठ कहलाता है।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमति जी रचित,
कल्पद्रुम यह प्रथम काव्य सुखदाता है।।
चरणों में नमन है, श्रद्धा से वंदन है, तू माँ चिरंजीवी हो विश्व में।
यह तेरी कृति "चंदनामति", भक्ती का परिणाम है,
कार्य की सिद्धि हो, जग में सुख समृद्धि हो, अतिशय परमधाम है।।3।।

भजन-320

तर्ज–कभी कुण्डलपुर जाना है.....

प्रभू की पूजन करना है, प्रभू की भक्ति करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है।।
प्रभु भक्ती गंगा में अवगाहन करना है।
सिद्धों के गुण की सबको, मिल अर्चा करना है। प्रभू की पूजा.....।। टेक.।।
जनम-जनम के शुभ कर्मों का फल यह सिद्ध अवस्था।
सिद्धशिला पर शाश्वत राजें यही अनादि व्यवस्था-यही अनादि व्यवस्था।
उन सिद्धों की प्रतिमा, का वन्दन करना है।
जिनके दर्शन वन्दन से, भवसागर तरना है।।
प्रभू की पूजा करना है, प्रभू की भक्ती करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है.....।।1।।
कितनी सतियों ने प्रभु के, दर्शन से पाप नशाए।
तेरे अतिशय से जलती, अग्नी भी जल बन जाए। अग्नी भी.....

सीता चन्दनबाला का, इतिहास बताता है।
भक्तीरस तो माँ ज्ञानमती की जीवन गाथा है।।
प्रभू की पूजा करना है, प्रभू की भक्ती करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है.....।।2।।

जिसने सिद्ध प्रभू को, निज हृदय कमल में ध्याया।
वीतराग परमातम पद में, लीन परम सुख पाया। लीन परम.....
निज ध्यान की धारा में अवगाहन करना है।
'चंदनामती' पहले तो, प्रभु भक्ती करना है।।
प्रभू की पूजा करना है, प्रभू की भक्ती करना है,
निजातम शक्ती भरना है, मुझे मुक्तिश्री वरना है.....।।3।।

भजन-321

तर्ज –हम लाए हैं तूफान से .....

दुनिया में जैनधर्म सदा से ही रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।टेक.।।
जब से है धरा आसमाँ सौन्दर्य प्रकृति का।
तक से ही प्राणियों में है विश्वास धर्म का।।
हर जीव के सुख का यही आधार रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।1।।
जो कर्म शत्रुओं को जीत ले जिनेन्द्र है।
जिनवर के उपासक ही असलियत में जैन हैं।।
यह धर्म जाति भेद से भी दूर रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।2।।
चांडाल सिंह सर्प भी धारण इसे करें।
मिश्री की भाँति मिष्ट फल को प्राप्त वे करें।।
यह सार्वभौम विश्व धर्मरूप रहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।3।।

इस प्राकृतिक उद्यान को सींचा है सभी ने।
इससे ही अहिंसा धरम सीखा है सभी ने।।
यह आदि अंत से रहित अनादि कहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।4।।

इसका कभी न अंत होगा सदा रहेगा।
कलियुग के कालचक्र का संकट भी सहेगा।।
यह धर्म "चंदनामती" जिन सूर्य कहा है।
प्रभु ऋषभ महावीर ने भी यही कहा है।।5।।

भजन-322

तर्ज–जंगल के काटों पे.....

प्रभु! मेरा मन कब पावन होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।
गुरु वाणी को सुनकर तन मन पावन होगा।।प्रभु! मेरा.।। टेक.।।

कभी सताया निर्बल प्राणी, हिंसा में आनंद लिया।
कभी झूठ चोरी के कारण, अशुभ कर्म का बंध किया।।
सोचा न इसका क्या फल होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।।1।।

कभी पशू बनकर मैंने भी, दुःख असंख्य उठाये हैं।
कभी नरक में जाकर, कर्मों के फल मैंने पाये हैं।।
पाप कर्म का यह फल होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।।2।।

पुण्ययोग से नर तन पाकर, तीरथ व्रत अरु भजन किया।
दीन दुखी की सेवा करके, निज मन को सन्तुष्ट किया।।
इनसे ही सुरगति पावन होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।।3।।

नर तन से चारों गतियों का, मार्ग प्राप्त हो सकता है।
नर ही तो 'चंदनामती', नारायण भी बन सकता है।।
करना निजातम चिन्तन होगा, पाप रहित कब यह मन होगा।।4।।

भजन-323

तर्ज–चूड़ी मजा न देगी.....

उत्सव बहुत मनाया, जिनवर को भी रिझाया।
जन-जन को जिनधरम से परिचित नहीं कराया।।टेक.।।
जाती व सम्प्रदायों में धर्म को न बाँटो।
इन्सान बँट गया अब भगवान को न बाँटो।। भगवान को न बांटो।
उत्तम सुखों का दायक, यह धर्म ही बताया।।उत्सव.।।1।।
नहिं धर्म कोई कहता, आपस में वैर करना।
मतभेद हों भले ही, मनभेद ना समझना। मनभेद ना समझना।
मानव की भद्रता का, परिचय यही बताया।।उत्सव.।।2।।
है प्राकृतिक अनादी, सृष्टी सुरम्य जैसे।
जिनधर्म की व्यवस्था, सर्वोदयी है वैसे। सर्वोदयी है वैसे।
ईश्वर को वीतरागी, इस धर्म ने बताया।।उत्सव.।।3।।
इक प्रेरणा मिली है, गणिनी माँ ज्ञानमती की।
प्रभु ऋषभ देशना ही, दुनिया को स्वस्थ करती। दुनिया को स्वस्थ करती।
इस हेतु "चंदनामति", सबने बिगुल बजाया।।उत्सव.।।4।।

भजन-324

तर्ज–सावनी गीत.....

ज्ञानियों का कहना है कि संयम को सभी पालना।। टेक.।।
बहु दुःख पाया तूने कर्मों के चक्र से, हाँ कर्मों के चक्र से।।
इनसे यदि बचना है तो संयम को सभी पालना।।1।।
कई बार सहे तूने नरकों के दुःख हैं-हाँ नरकों के दुःख हैं।
इनसे यदि बचना है तो संयम को सभी पालना।।2।।
हाथी घोड़ा बैल बना पशुओं की योनि में-हाँ पशुओं की योनि में।
इनसे यदि बचना है तो संयम को सभी पालना।।3।।

भोगों में ही फूल रहा, देवता की योनि में-हाँ देवता की योनि में।
भोगों में न रमना है तो संयम को सभी पालना।।4।।

पुण्य उदय आ गया तो मानुष गति मिल गई-हाँ मानुष गति मिल गई।
इनको सफल करना है तो संयम को सभी पालना।।5।।

हिंसा झूठ चोरी आदि पापों को त्याग दो-हाँ पापों को त्याग दो।
मुक्ति यदि वरना है तो संयम को सभी पालना।।6।।

'चंदना' चतुर्गति के दुखों को न सह सकूँ-हाँ दुखों को न सह सकूँ।।
पंचमगति वरना है तो संयम को सभी पालना।।7।।

भजन-325

यह सम्यग्ज्ञान का प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।। टेक.।।

ज्ञान ही सच्चा भोजन जग में, ज्ञान ही सच्चा बन्धु जग में।
ज्ञान का पान निराला, कोई पियेगा किस्मत वाला।।1।।

ज्ञान गुरू दे, ज्ञान शिष्य ले, ज्ञान सभी मिथ्यातम हर ले।
ज्ञान ही अमृत प्याला, कोई पियेगा किस्मत वाला।।2।।

ज्ञान ही औषधि, ज्ञान वैद्य है, ज्ञान से मिलता सुख व चैन है।
ज्ञान सुधारस आला, कोई पियेगा किस्मत वाला।।3।।

ज्ञानी से ही ज्ञान मिलेगा, अज्ञानी से नहीं मिलेगा।
ज्ञान नहीं मतवाला, कोई पियेगा किस्मत वाला।।4।।

ज्ञान ही सूरज, ज्ञान ही चन्दा, ज्ञान छुड़ाता है सब फंदा।
ज्ञान ही किरणों की माला, कोई पियेगा किस्मत वाला।।5।।

गुरु बिन सच्चा ज्ञान न होता, ज्ञानी सम्यग्ज्ञान संजोता।
ज्ञान है इक पाठशाला, कोई पियेगा किस्मत वाला।।6।।

भजन-326

षट्खण्डागम वन्दना गीत

तर्ज–मेरा नम्र प्रणाम है.....

वन्दन बारम्बार है,
षट्खण्डागम ग्रन्थराज को, वन्दन बारम्बार है।
श्री सिद्धान्त सुचिन्तामणि, टीका जिसमें साकार है।।
षट्खण्डागम.....।। टेक.।।

वीरप्रभू के शासन का, सबसे पहला यह ग्रन्थ है।
लिखने वाले पुष्पदन्त, अरु भूतबली निर्ग्रन्थ हैं।।
श्रीधरसेनाचार्य से जिनको, मिला ज्ञान भण्डार है।
षट्खण्डागम ग्रन्थराज को, वन्दन बारम्बार है।।1।।

वीरसेन सूरी ने उस पर, धवला टीका रच डाली।
प्राकृत संस्कृत के वचनों में, मोती माल बना डाली।।
गूढ़ रहस्यों सहित ग्रन्थ वह, विद्वत्मणि सरताज है।
षट्खण्डागम ग्रन्थराज को, वन्दन बारम्बार है।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, नव इतिहास बनाया है।
संस्कृत टीका सरल रची, सिद्धान्तसार समझाया है।।
चिन्तामणि सम चिन्तित फल, देने में जो साकार है।
षट्खण्डागम ग्रन्थराज को, वन्दन बारम्बार है।।3।।

श्रीधरसेन व पुष्पदन्त, आचार्य भूतबलि को वन्दन।
वीरसेन गुरु को वंदूँ, अरु गणिनी ज्ञानमती को नमन।।
इनसे ही 'चंदनामती', यह मिला जिनागम सार है।
षट्खण्डागम ग्रन्थराज को, वन्दन बारम्बार है।।4।।

भजन-327

तर्ज–ये क्या है.....

तीर्थंकर माता ने देखे सोलह सपने।
वे पूछ रहीं उनके फल स्वामी से अपने।।
ये माँ हैं, इस जगती की। गुण गरिमा हैं इस पृथिवी की।
ये पाएंगी जिनवर शिशु को। तीर्थंकर नाथ परम प्रभु को।।
ये माँ हैं.....।। टेक.।।

पहले सपने में ऐरावत हाथी देखा।
उत्तुंग बैल के बाद शेर को भी देखा।।
ये क्या कहने आए हैं ? त्रैलोक्य विजयी को लाए हैं।
त्रय ज्ञानी सुत को पाएंगी। ये शक्तिमान शिशु लाएंगी।।
ये माँ हैं.....।।1।।

स्नान युक्त लक्ष्मी दो मालाएं देखीं।
जन्माभिषेक सद्धर्मप्रवर्तक फल देंगी।।
फिर देखा, चंदा मामा। इनका फल खुशियों का पाना।
प्रभु सूर्यबिम्ब का फल क्या है ? तेजस्वी बालक पाया है।।
ये माँ हैं.....।।2।।

दो मछली अष्टम सपने में देखीं स्वामी।
इसका फल अतिशय उत्तम सुत जग में नामी।।
फिर देखे कलश युगल मैंने। अमृत से भरे आकंठ सजे।
इसका फल बोलो प्रभु क्या है ? वह शिशु पाएगा निधियाँ है।।
ये माँ हैं.....।।3।।

कमलों से युक्त सरोवर रत्नों का सागर।
फिर सिंह पीठ अरु दिव्य विमान दिखा आकर।।
हे स्वामी इनका फल क्या है ? शुभ लक्षण ज्ञान की माया है।
त्रैलोक्यपती सुत आएगा। स्वर्गों से चय कर आएगा।।
ये माँ हैं.....।।4।।

नागेन्द्र विमान रतन राशी देखी मैंने।
निर्धूम अग्नि को देख बहुत हर्षी थी मैं।।
हे प्रभु इनका शुभ फल क्या है ? बतलाओ होगा कल क्या है ?
अवधिज्ञानी गुणरत्नमयी। होगा सुत पापों से विरहित।
ये माँ हैं.....।।5।।

मानो माँ ने तत्क्षण तीर्थंकर पा ही लिया।
उत्तर पाकर ऐसा आनन्दित हृदय हुआ।।
ये सपने सच हैं अपने। इन्हें देखे सब जिनवर माँ ने।
'चंदना' तभी प्रभु मात बनीं। तीर्थंकर माँ जगमात बनीं।।
ये माँ हैं.....।।6।।

भजन-328

तर्ज –जिनवर की.....

तीरथ का, इसकी कीरत का, कैसे मैं करूँ गुणगान-2।
भक्ती से, इसकी भक्ती से, होगा सभी का कल्याण-2।।टेक.।।

भवसागर से जो तिरवाते, वे ही तीरथ माने जाते-2।
उसकी रज से जीवन होगा महान.....।।तीरथ.।।1।।

गर्भ जन्म जहाँ प्रभु के होते, उनके दर्शन अघमल धोते-2।
पावन दीक्षा व ज्ञान निर्वाण.....।।तीरथ.।।2।।

भारत वसुधा गौरवशाली, हुए जहाँ पर कितने अवतारी-2।
तभी दुनिया में है इसका नाम.....।।तीरथ.।।3।।

ऋषभ वीर श्री राम का कहना, मानव जीवन सार्थक करना।
तभी तुम भी बनोगे भगवान.....।।तीरथ.।।4।।

जिनशासन की अमिट धरोहर, कहे "चंदना' पूज्य ये तीरथ।
इसके वन्दन से मिलता मुक्तीधाम.....।।तीरथ.।।5।।

भजन-329

तर्ज –करती हूँ तुम्हारी भक्ति.....

जब तक सूरज चंदा का प्रकाश रहेगा।
तब तक कल्पद्रुम पूजन का इतिहास रहेगा।
ओ ज्ञानमती माता, ओ ज्ञान की दाता।।टेक.।।

षट्खंडाधिप चक्री कभी यह पूजन करते थे।
भंडार खोलकर दान किमिच्छक सबको देते थे।।
उनकी गरिमा का यह युग भी एहसास करेगा।
तब तक कल्पद्रुम पूजन का इतिहास रहेगा।
ओ ज्ञानमती माता, ओ ज्ञान की दाता।।1।।

श्री समवसरण में चतुर्मुखी प्रतिमा विराजतीं।
बारह सभा की दृष्टि जिनकी छवि निहारतीं।।
शुभ कल्पवृक्षों का सदा संवास रहेगा।
तब तक कल्पद्रुम पूजन का इतिहास रहेगा।
ओ ज्ञानमती माता, ओ ज्ञान की दाता।।2।।

यह आज के मानव को अवसर प्राप्त हुआ है।
कल्पद्रुम पूजन कर चक्री सुख सार्थ हुआ है।।
"चंदनामती" युग-युग तक शांतीवास रहेगा।
तब तक कल्पद्रुम पूजन का इतिहास रहेगा।
ओ ज्ञानमती माता, ओ ज्ञान की दाता।।3।।

भजन-330

तर्ज –चलो सम्मेदशिखर.....

चलो सब मिल पूजन कर लो, कल्पद्रुम की पूजन कर लो।
कल्पद्रुम से मनवांछित फल की प्राप्ती कर लो।।चलो.।।टेक.।।

तीर्थंकर के समवसरण का, दृश्य सुहाना है,
दिव्यध्वनि सुन, जनम मरण का दुःख मिटाना है।।
दिव्य उपदेश पान कर लो,
सुन्दर समवसरण की प्रतिकृति, का दर्शन कर लो।।चलो.।।1।।

ऋषभदेव से महावीर तक, चौबिस जिनवर हैं।
उन सबकी पूजा करने का, अद्भुत अवसर है।।
वही अवसर स्वर्णिम कर लो,
एक साथ चौबिस कल्पद्रुम, का दर्शन कर लो।।चलो.।।2।।

चक्रवर्ति सम्राट्, कल्पद्रुम पूजन करते हैं।
दान किमिच्छक देकर सबकी, झोली भरते हैं।।
दान तुम भी वितरित कर लो,
भोजन, औषध, शास्त्र, अभय, ये चार दान कर लो।।चलो.।।3।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, जब से पाठ लिखा।
इस कलिकाल में तब से ही, भक्ती का ठाठ दिखा।।
भक्तिरस का आनंद भर लो,
संगीतों की स्वर लहरी में, नृत्यगान कर लो।।चलो.।।4।।

मुंहमांगा फल देने वाला, कल्पवृक्ष यह है।
सब रोगों को हरने वाला, परमामृत यह है।।
इसी में अवगाहन कर लो,
चक्रवर्ति बन करके "चन्दनामती" पुण्य भर लो।।चलो.।।5।।

भजन-331

तर्ज–मैं चंदन बनकर.....

तू भक्ति करके प्रभु की, भवसागर तिर जाये।
तू पूजा करके प्रभु की, खुद पूज्य बन जावे।। तू भक्ति...।। टेक.।।

पर निन्दा करने से, निज निन्दा होती है।
तू वन्दन करके प्रभु का, खुद वन्दित हो जावे।।1।।

जो छत्र लगाता प्रभु पर, वह छत्रपति बनता है।
तू चंवर ढुरा के प्रभु पर, शीतलता पा जावे।।2।।

जो नृत्य करे प्रभु सम्मुख, वह धन्य धन्य होता है।
तू गा ले गीत प्रभू के, तो कविवर बन जावे।।3।।

भगवन नहिं देते हैं कुछ, वे वीतराग जिनवर हैं।
तू अपने शुभ कर्मों से, बंधन से छुट जावे।।4।।

"चन्दनामती" यह मानव, सब कुछ पा सकता है।
तू अपने पुरूषारथ से, खुद जिनवर बन जावे।।5।।

भजन-332

तर्ज–ऐसी लागी लगन.....

इक कहानी कहूँ, प्रभु की वाणी कहूँ,
ऋषभ महावीर की जिनवाणी कहूँ।। टेक.।।

सुबह मंदिर में जा, प्रभु का दर्शन करो।
पाँचों अंगों से झुक, प्रभु का वन्दन करो।।
बन्द मुट्ठी से, अक्षत चढ़ाया करो।। इक.....।।1।।

जैन शास्त्रों को करके, नमन भक्ति से।
कर लो स्वाध्याय कुछ, आत्मशक्ती मिले।।
चार पुंजों को धर, उसकी वाणी गहो।। इक.....।।2।।

साधु साध्वी मिलें, तो नमोस्तु करो।
तीन रत्नों के धारक को, त्रय पुंज दो।।
उनकी साक्षात् उपदेश, वाणी सुनो।। इक.....।।3।।

जैन मंदिर से तुम, वापसी जब चलो।
प्रभु के गंधोदक से, तन को पावन करो।।
पीठ प्रभु को न दे, सीधे-सीधे चलो।। इक.....।।4।।

मूलगुण आठ को, पालो सब श्रावकों।
"चंदनामति" तभी, सच्चे श्रावक बनो।।
देव गुरु शास्त्र, तीनों की भक्ती करो।। इक.....।।5।।

भजन-333

तर्ज –जरा सामने तो.....

तीरथयात्रा का पुण्य विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।टेक.।।

कोई गंगा को तीरथ कह, उसमें डुबकी लगाते हैं।
कोई संगम तट पर जाकर, निज को शुद्ध बनाते हैं।।
सच्चे तीरथ की कीरत विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।1।।

सत्य अहिंसा करुणा की, नदियाँ जहां कल कल बहती हैं।
उनमें पापों के क्षालन को, जनता आतुर रहती है।।
वही तीरथ अलौकिक विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।2।।

कहीं किसी पर्वत पर जाकर, महामुनी तप करते हैं।
वृक्षों के नीचे भी तपकर, केवलज्ञानी बनते हैं।।
वे ही तीरथ कहाते विशाल हैं, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा भवसागर से होकर पार है।।3।।

ये सब द्रव्य तीर्थ हैं चेतन भाव तीर्थ कहलाता है।
चलते फिरते तीर्थ साधुगण जिनका मोक्ष से नाता है।।
"चंदनामति" ये तीरथ विशाल है, इसकी दूजी न कोई मिशाल है।
इससे आत्मा बनेगी परमात्मा, भवसागर से होकर पार है।।4।।

भजन-334

तर्ज–जिंदगी प्यार का गीत है.....

जन्म मानव का पाया है जो,
उसे सार्थक तो करना पड़ेगा।
वंश उत्तम ये पाया है जो,
मूल्यांकन तो करना पड़ेगा।।टेक.।।

कई जन्मों का पुण्य खिला, जिससे जिनधर्म उत्तम मिला।
गुरु का उपदेश ऐसा मिला, ज्ञान का दीप मन में जला।।
पाके सम्यक्त्व के रत्न को,
शिव डगर पे तो चलना पड़ेगा।।1।।

शुद्ध भोजन करोगे यदी, बुद्धि अच्छी बनेगी तभी।
छानकर जल पिओगे यदी, वाणी पावन बनेगी तभी।।
मन की शुद्धी के हेतू तुम्हें,
स्वच्छ भोजन तो करना पड़ेगा।।2।।

जाति औ कुल की रक्षा करो, शास्त्र औ गुरु की शिक्षा वरो।
दान-पूजन के योग्य बनो, आगे दीक्षा के योग्य बनो।।
शुद्ध खानदान रखना है यदि,
जाति में ब्याह करना पड़ेगा।।3।।

अपने बच्चों को संस्कार दो, पिण्ड शुद्धी का उपहार दो।
मुक्ति का मार्ग साकार हो, निज व पर का भी उपकार हो।।
"चन्दनामति" सुनो भाइयों!
तुम्हें कुल शुद्धि रखना पड़ेगा।।4।।

भजन-335

तर्ज–जपूँ मैं जिनवर जिनवर.....

सभी मिल बोलो जय जय, ज्ञानमती माता की जय,
जन्मजयंती का आया है शुभ अवसर,
आया है अवसर.....सभी मिल बोलो जय.।।टेक.।।

शरदपूर्णिमा का दिन सुन्दर, सन् उन्निस सौ चौंतिस का दिन,
मोहिनी माता धन्य हुईं इन्हें पाकर,
कन्या पाकर-2, सभी मिल बोलो जय जय.।।1।।

पुनः शरदपूनो ही आई, सन् बावन की तिथि हरषाई।
ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया अति सुन्दर,
घर भी दिया तज-2, सभी मिल बोलो जय जय.।।2।।

वे ही गणिनी ज्ञानमती हैं, युग की पहली बालसती हैं।
इनकी महिमा दिखती है टी.वी. पर,
लगती सुखकर-2, सभी मिल बोलो जय जय.।।3।।

ग्रंथ सैकड़ों लिख दिये इनने, तीर्थ कई विकसित किए इनने।
"चन्दनामति" ये चेतन तीर्थ हैं सुखकर, तीर्थ हैं सुखकर-2
।।सभी मिल.।।4।।

भजन-336

तर्ज–इस युग की माँ शारदे.....

शिरडी के पारस प्रभू, स्वर्णिम तेरा धाम है।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ ये महान है, सबका परम धम है।।शिरडी के.।।

जिनधर्म के चौबिस जिनवरों में,
तेइसवें प्रभु पारसनाथ हैं।

उपसर्गजेता इन्द्रिय विजेता,
हम सबके प्रभु पारसनाथ हैं।
सबको शक्ति देके, सिद्धिप्रिया लेके, तीनलोक के बन गये नाथ हैं।
केतू ग्रह की शान्ति हो, लें पार्श्वप्रभु नाम हैं।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ यह महान है, सबका परमधाम है।।1।।

यदि आपके जन्म की कुण्डली में,
है काल के सर्प का योग भी।
शिरडी के पारस प्रभु की कृपा से,
नश जाते सब रोग अरु शोक भी।।
तुम भी करो भक्ती, तब मिलेगी शक्ती, भौतिक सभी सुख की प्राप्ति हो।
चिंतामणि पारसप्रभू, इनका अपर नाम है।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ यह महान है, सबका परम धाम है।।2।।

गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माताजी का,
आशीष सब भक्तों को मिला।
सुंदर कमल का मंदिर तभी तो,
जल में कमल पुष्प सदृश खिला।
"चन्दनामती" यह, मूर्ति मनोहर है, सबके लिए मानो वरदान है।
शिरडी में जाकर जपो, पारसप्रभू नाम है।
ज्ञानतीर्थ नाम है, तीर्थ यह महान है, सबका परम धाम है।।3।।

भजन-337

तर्ज-ढपली वाले! ढपली बजा.....

शिरडी वाले-पारस प्रभू, तेरे दर्शन से भक्तों के, हो...
कि संकट शांत हों.....।।टेक.।।

मानव का जीवन, संघर्षमय है, उनसे न विचलित होना।
आ जावें संकट, तो भी सदा ही, प्रभु नाम मन में जपना-हो हो हो

कि शिरडी में जाकर, प्रभू पार्श्व से तुम, सभी दुख सुखों को कहना।।
शिरडी.।।1।।

सुनते हैं पारस, पत्थर को छूकर, लोहा भी सोना बनता।
लेकिन प्रभू पारस पद को छूकर, मानव है पारस बनता-हो हो हो
कि बनना है पारस तो, पारस प्रभू की, भक्ती में तन्मय होना।।
शिरडी.।।2।।

सच्चे हृदय से सुमिरन करो तो, मनचाहा फल तुम पाओ।
शिरडी में जा करके "चन्दनामति", पारस प्रभू को मनाओ-हो हो हो
कि पारस हों मन में, हों पारस वचन में, हे भक्तों! यही ध्यान रखना।।
शिरडी.।।3।।

भजन-338

अन्धकार के मौन क्षणों में,
चलो सृजन के दीप जलाएँ।
ला दें भावों के आंगन में,
नई उमंगों की अरुणाई।
जीवन की संध्या में भर दें,
संकल्पों की नव तरुणाई।।
श्रम के उठते मधु गीतों में,
धरती का सहलाएँ यौवन।
आज चेतना के शिखरों पर,
नए राष्ट्र का सपन जगाएँ।।
चलो सृजन के दीप जलाएँ।
शुष्क युगों के मन अम्बर में,
आज खिला दें थोड़े बादल।
सूखे अधरों पर इठलाएँ,
मुस्कानों के दल पर नवदल।।

खिले दीप सा जीवन उपवन,
हर क्षण हो प्रभु ध्यान तुम्हारा।
नेह भरी पलकों से झांके,
ऐसा अपना मार्ग बनाएँ।।
चलो सृजन के दीप जलाएँ।

भजन-339

तर्ज –रोम रोम.....

गोम्मटगिरि के बाबा तेरा रूप निराला। हाँ रूप निराला....
दक्षिण भारत की प्रतिमा सा दिखता यहीं नजारा।।गोम्मटगिरि.।।टेक.।।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव के पुत्र बाहुबलि कहलाए।
अपनी त्याग तपस्या से भगवान की श्रेणी में आए।।
चक्रवर्ती का चक्र प्राप्तकर नहीं उसे स्वीकारा।
गोम्मटगिरि के बाबा.....।।1।।

प्रान्त मालवा मध्यप्रदेश इंदौर शहर का भाग्य खिला।
बाहुबली की प्रतिमा से गोम्मटगिरि का सौभाग्य खिला।।
ऋषि मुनियों की पद रज से वह तीर्थ बना अति प्यारा।
गोम्मटगिरि के बाबा.....।।2।।

दशवर्षीय प्रथम उत्सव कुछ नई क्रान्ति लेकर आया।
गणिनी माता ज्ञानमती जी की पावन सन्निधि छाया।।
विश्वधर्म के आदर्शों का गूँजा था फिर नारा।
गोम्मटगिरि के बाबा.....।।3।।

आओ हम सब मिलकर जग में मैत्री का संदेश भरें।
जन जन में "चंदनामती" आपसी प्रेम सद्भाव भरें।।
बाहुबली के आदर्शों से परिचित हो जग सारा।
गोम्मटगिरि के बाबा.....।।4।।

भजन-340

(माता के 16 स्वप्न दर्शन)

पहले स्वपन में माता गज देख रही हैं।
सुन्दर सफेद हाथी गर्जन से युक्त है।।
त्रैलोक्य पूज्य पुत्र को वह प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।1।।

उत्तुंग वृषभ देखतीं द्वितीय स्वप्न में।
अति रून्द्रतर ध्वनी से युक्त शुभ गवेन्द्र है।।
त्रयज्ञानधारि श्रेष्ठ सुत को प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।2।।

माँ देख रही सिंह को तृतीय स्वप्न में।
पर्वत समान गज का भी मद नाश करे है।।
आनंत शक्तियुक्त पुत्र प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।3।।

चौथे स्वपन में देखतीं कमलासनी लक्ष्मी।
जो स्वर्णकुम्भ से स्नान प्राप्त कर रहीं।।
जन्माभिषेकयुक्त सुत को प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।4।।

मंदार की माला युगल ये देख रहीं हैं।
सुंदर खिली पंचम स्वपन में देख रहीं हैं।।
सद्धर्म प्रचारक सुपुत्र प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।5।।

छट्ठे स्वपन में श्वेत दुग्ध सम है चंद्रमा।
माता को मानो दे रहा अमृत सुखोपमा।।
त्रैलोक्य आल्हादक सुपुत्र प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।6।।

सप्तम स्वपन में सूर्यबिम्ब देख रहीं माँ।
जग का तिमिर विनाश वह प्रकाश भर रहा।।
इस फल में माँ तेजस्वी पुत्र प्राप्त करेगीं।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।7।।

मछली युगल को देख रहीं मात नींद में।
अष्टम स्वपन में क्रीड़ा करती हुई मीन हैं।।
अतिशय प्रसन्न पुत्र को वे प्राप्त करेंगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।8।।

दो स्वर्ण कुंभ देखतीं माँ नवम स्वप्न में।
सुन्दर सजे अमृत से वे आकण्ठ भरे हैं।।
निधियों की प्राप्ति वाले सुत को मात लहेंगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।9।।

दसवें में प्रफुल्लित कमल से युक्त सरोवर।
माँ देख रहीं स्वप्न में सुन्दर सा सरोवर।।
वे पुत्र सहस लक्षणों युत प्राप्त करेंगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।10।।

रत्नों से युक्त सागर लहराता हुआ है।
माता को ग्यारवें स्वपन में दीख रहा है।।
वे केवलीज्ञानी सुपुत्र प्राप्त करेंगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।11।।

रत्नों की कांतियुक्त सिंहपीठ देखतीं।
माँ बारवें स्वपन में सिंहासन को देखतीं।।
त्रैलोक्यपती पुत्र को वह प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।12।।

मणियों से बना देव का विमान दिख रहा।
अब तेरवें स्वपन में माँ को पूर्ण सुख कहा।।
स्वर्गावतीर्ण पुत्र को वह प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।13।।

देखा स्वपन में चौदवें शुभ नाग विमाना।
माता को वह विमान मानो सूर्य समाना।।
वह अवधिज्ञानयुक्त पुत्र प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।14।।

पन्द्रहवें स्वप्न में रतन की राशि देखतीं।
जो अपनी चमक से दिशाओं को प्रकाशती।।
माता अनन्तगुणी पुत्र प्राप्त करेगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।15।।

निर्धूम अग्नि देखतीं सोलहवें स्वप्न में।
सर्दी व अंधेरे को दूर जो करे क्षण में।।
पापों से रहित पुत्र को वे प्राप्त करेंगी।
जननी जगत जननी का लाभ प्राप्त करेगी।।16।।

–शंभु छंद –

ये स्वप्न देखकर माता प्रातः सुखद नींद से जगती हैं।
बाजों व प्रभाती के मंगल स्वर सुनकर निद्रा तजती हैं।।
उन स्वप्नों का फल पति से फिर सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुईं।
मानों मैंने तीर्थंकर सुत को पा ही लिया वे तृप्त हुईं।।17।।

भजन-341

तर्ज –श्री सिद्धचक्र का पाठ.....

गंधोदक का माहात्म्य, सुनो मन शांत भाव से प्राणी,
फल पायो मैना रानी।।टेक.।।
इक मैना का इतिहास सुना।
जिनधर्म कर्मसिद्धान्त सुना।।
श्री सिद्धचक्र का पाठ है उसकी निशानी, फल पायो मैना रानी।।1।।

दूजी इक मैना और हुई।
जो जिन भक्ती में प्रसिद्ध हुई।।
इस कन्या ने सम्यक्त्व की महिमा जानी, फल पायो मैना रानी।।2।।
है ग्राम टिकैतनगर सुन्दर।
मैना का जन्म हुआ जहाँ पर।।
मोहिनी व छोटेलाल की प्रथम निशानी, फल पायो मैना रानी।।3।।
इक बार महामारी फैली।
घर-घर में थी चेचक निकली।।
मैना के दो भ्राता की बनी कहानी, फल पायो मैना रानी।।4।।
फैली कुरीति थी नगरी में।
शीतला मात पूजन कर लें।।
ऐसी श्रद्धा करते थे सब अज्ञानी, फल पायो मैना रानी।।5।।
मैना जिनमत श्रद्धानी थी।
कर्मों की गति पहचानी थी।।
प्रभु शीतलनाथ की भक्ती उसने ठानी, फल पायो मैना रानी।।6।।
गंधोदक रोज लगा करके।
कर दिया स्वस्थ भ्राता अपने।।
पर कितनों की हो गई मृत्यु नहिं मानी, फल पायो मैना रानी।।7।।
यह चमत्कार देखा सबने।
तब जिनवर के दृढ़ भक्त बने।।
मिथ्यात्व दूर हो गया बने सब ज्ञानी, फल पायो मैना रानी।।8।।
यह मैना ही बनी ज्ञानमती।
जो बालयोगिनी प्रथम कही।।
इस युग की गणिनीप्रमुख आर्यिका मानी, फल पायो मैना रानी।।9।।
तुम भी दृढ़ श्रद्धानी बनना।
गंधोदक पर श्रद्धा रखना।।
'चन्दनामती' यह सच्ची कही कहानी, फल पायो मैना रानी।।10।।

भजन-342

तर्ज-जनगण मन.....

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय ज्ञान का आलय।
महावीर के उच्चादर्शों का जो महा हिमालय।।
समता-शान्ति-समन्वय,
मैत्री भाव में तन्मय।
रहते सन्त जहाँ हैं,
उस भारत की धरती पर सुख क्षेम का सदा उदय हो।
जय हो जय हो जय हो, जय जय जय जय हो, महावीर की जय हो।।1।।

शिक्षा का है सार यही, गुण विनय को मन में धारें।
लौकिक आध्यात्मिक विद्या से मानव जनम सवारें।।
आत्मसृजन की वाणी
होवे जनकल्याणी
ऋद्धि सिद्धि अक्षय हो,
तभी "चन्दनामती" जगत में विश्वशांति की जय हो।
जय हो जय हो जय हो, जय जय जय जय हो, महावीर की जय हो।।2।।

भजन-343

तर्ज-जहाँ डाल-डाल पर सोने की.....

तीर्थंकर श्री महावीर विश्वविद्यालय परिसर न्यारा,
यहाँ बना जिनालय प्यारा।।टेक.।।

जिनशासन के चौबिसवें जिनवर महावीर कहलाए।
जिनके सर्वोदय शासन में, हर जीव शांति-सुख पाए।।हर.....
उन वीर की जय जयकारों से गूंजा धरती नभ सारा,
यहाँ बना जिनालय प्यारा।।1।।

श्री ज्ञानमती माताजी का प्रेरक आशीष मिला है।
जिनबिम्ब विराजित करने में उनका सानिध्य मिला है।।उनका....
सोने में सुगंधी के समान उत्सव बन गया निराला,
यहाँ बना जिनालय प्यारा।।2।।

जैसे भोजन हर जनमानस के तन को पुष्ट बनाता।
प्रभु दर्शन भी "चंदनामती", आत्मा को स्वस्थ बनाता।।
जीवन्त रहे युग तक टी.एम.यू. का नाम निराला,
यहाँ बना जिनालय प्यारा।।3।।

भजन-344

तर्ज-माई रे माई.....

आओ रे आओ खुशियाँ मनाओ, वीर जयंती आई।
कुण्डलपुर नगरी में चारों ओर खुशी है छाई।।
बोलो महावीर की जय-4।
चैत्र सुदी तेरस का दिन था, वीर प्रभू जब जन्मे।
श्री सिद्धार्थ पिता माँ त्रिशला रानी के आँगन में।।
धनकुबेर ने रत्नों की....
धनकुबेर ने रत्नों की, मोटी धारा बरसाई।
कुण्डलपुर नगरी में चारों ओर खुशी है छाई।।
बोलो महावीर की जय-4।।1।।
आज उसी कुण्डलपुर में, इक नंद्यावर्त महल है।
ज्ञानमती माताजी की, प्रेरणा का जो प्रतिफल है।।
महावीर मंदिर में प्रभु की.....
महावीर मंदिर में प्रभु की, प्रतिमा है अतिशायी।
कुण्डलपुर नगरी में, चारों ओर खुशी है छाई।।
बोलो महावीर की जय-4।।2।।

भजन-345

तर्ज-महाकुंभ का पर्व महान.....

जिनमंदिर का निर्माण, करो सब मिलके करो।
करो सब मिलके करो, करो सब मिलके करो...,
इससे मिलता है पुण्य महान, करो सब मिल के करो।।टेक.।।

मंदिर में राजें जिनवर प्रतिमा, तीर्थंकर चौबीसों की महिमा।
चौबीसों प्रभू का गुणगान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।1।।

मंदिर में बजते हैं घंटे झालर, जिनवर पे ढुरते हैं चौंसठ चामर।
प्रभु आरती का पुण्य महान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।2।।

मंदिर व प्रतिमा निर्माण जैसा, दूजा न कोई है पुण्य वैसा।
धन बढ़ता है करने से दान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।3।।

मंदिर में सोने की ईंट लगाओ, सोना ही सोना जीवन में पाओ।
अपनी आत्मा को स्वर्ण समान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।4।।

मंदिर के दर्शन की कर लो प्रतिज्ञा, "चन्दनामती" आज लेना ये शिक्षा।
सम्यग्दर्शन से आत्मा महान, करो सब मिलके करो।।जिन.।।5।।